चोट्टि मुंडा और उसका तीर

राधाकृष्ण द्वारा प्रकाशित महाश्वेता देवी की अन्य रचनाएँ

जंगल के दावेदार

1084वें की माँ

घहराती घटाएँ

भटकाव

अग्निगर्भ

चोट्टि मुंडा और उसका तीर

महाश्वेता देवी

हिन्दी रूपान्तर
जगत शङ्खधर



राधाकृष्ण

अपने पिता
मनीश घटक को—
जो आजीवन संघर्षशील
मानव के प्रति आस्था में
अविचल रहे।

एक

आदमी का नाम था चोट्टि मुंडा। चोट्टि एक नदी का नाम भी है। नदी के नाम पर उसका नाम होने की एक कहानी है। उसको लेकर हमेशा किस्से चलते रहते हैं। उसका पुरखा पूर्ति मुंडा जहाँ जाता, वहीं मिट्टी में या तो अबरक निकलती, या कोयला। इसके परिणामस्वरूप उसे लेकर भी उसी तरह बातें चलती। पूर्ति अपनी पत्नी-लड़के-लड़की को चाईबासा से पलामू जिला ले आया। वहाँ जंगल साफ़ कर रहने का प्रबंध किया। इस बार उसके खेत की मिट्टी के नीचे से निकले पत्थर के औज़ार। उसे लेकर बातें चलीं और अचानक एक दिन अंग्रेज़-बंगाली-बिहारी—तरह-तरह के लोगों ने आकर उसे उसके ठिकाने से हटा दिया। जब प्रस्तर युग के औज़ार मिले हैं, तो उस क्षेत्र पर *पुरातत्व विभाग का अधिकार है।*

उसका मन टूट गया। उसके मिट्टी खोदने पर कोयला या अबरक क्यों निकलता है और साथ-ही-साथ आ पहुँचते हैं अंग्रेज़-बंगाली-बिहारी लोग। इसका कारण क्या है? उसे कहीं शान्ति से रहने को क्यों नहीं मिलता? वह कैसी ही निर्जन जगह क्यों न जाये, वहाँ की मिट्टी के नीचे से कुछ-न-कुछ ज़रूर निकलता और वहाँ अच्छी-ख़ासी बस्ती बन जाती। उसकी मुंडा धरती और भी छोटी हो जायेगी। उसे तो कुछ नहीं चाहिए। बस, एक छोटा-सा गाँव हो, जहाँ सब बाशिन्दे आदिवासी हों—हरम देवता की पूजा करने वाले। पहान के अनुगत।

उसकी पत्नी ने भी वही बात कही। बोली, "तुम जहाँ जाते हो, वहाँ मिट्टी के नीचे से इधर-उधर की चीज़ें क्यों निकल पड़ती हैं?"

"चलो, कहीं और चलें।"

उन्होंने चोट्टि नदी के किनारे घर बनाया। नदी का पाड़ पहाड़ की तरह था, वहीं घर। साँझ को बहन दी में से मछली पकड़ता। एक दिन झुटपुटे में मछली पकड़ने जाने पर वह अचम्भे में पड़ गया—उसके जाल में

जो बालू आयी थी, उसमें सोने के कण थे !

वह रेत पर बैठ गया। कोयला और अबरक देखकर अँग्रेज और बिहारी जिस तरह बड़े लालच में भरकर आ जाते, क्षण-भर में आदिवासियों की जगह को घनी ईंटों और मकानों से भोंडी बस्ती बना देते—यह उसे याद था। सोना देखकर पता नहीं वे लोग क्या करें ! यह पहाड़-जंगल-नदी सब बरबाद हो जायेंगे। बड़े टूटे दिल से उसने फिर अँजुली भरकर रेत उठायी। उसमें भी सोना था। अब उसने अपने मन को स्थिर किया।

हिन्दू सदान संन्यासी, ईसाई मिशनरी और चाय बागान के कुलियों के ठेकेदार—तीनों ही उसे लेना चाहते हैं। पूर्ति मुंडा कुलियों के ठेकेदार की तलाश में चला। पत्नी-बेटा-बेटी तो जिन्दा रहें। जाने के पहले पत्नी से कह गया, 'तेरे पेट में बच्चा है। लड़का हो तो उसका नाम चोट्टि रखना।'

पूर्ति मुंडा बड़ा अभागा था। ठेकेदार की तलाश में चलते-चलते एक भरे-पूरे हिन्दू गाँव में आकर वह आम के पेड़ के नीचे सो गया। उसके नीचे से ज़मींदार के चोरी गये बर्तन निकले। परिणामस्वरूप वह पकड़ा गया और जेल गया। जेल से निकलते ही ठेकेदार के पास और फिर मॉरिशस। उसके बाद पता नहीं उसका क्या हुआ। लेकिन उसके वंश के लड़कों के नामकरण में नदी के नाम आते रहे। इसीलिए पूर्ति मुंडा के परपोतों के दोनों नाम नदी के नाम पर थे—चोट्टि मुंडा और कोयल मुंडा। चोट्टि नदी के किनारे ही उनका मकान था। आज भी है। लेकिन पूर्ति मुंडा की आशा पूरी नहीं हुई। सोने की तलाश में बाहर से आकर लोग उस जगह को उलट-पलट कर डालेंगे, इसी डर से वह भागा था। अब उस जगह से तीन मील दूर होकर साउथ ईस्टर्न रेलवे चली गयी है। चोट्टि नाम से एक स्टेशन है। स्टेशन उस जनपद के कारण बना है जिस जनपद में बिहारी, बंगाली, पंजाबी रहते हैं। आदिवासी लोग दूर-दूर पर गाँव में रहते हैं। बरस में एक बार चोट्टि स्थान आदिवासियों से भर जाता है—विजयादशमी के दिन चोट्टि मेला में। उस दिन पच्चीस-तीस गाँवों के आदिवासी उस मेले में आते। बाँस के बनाये आकारों पर काग़ज़ लगा कर वे लोग बड़े-बड़े बाघ, हाथी, घोड़े बनाते। उनको उठाकर नाचते। लड़कियाँ भी नाचतीं। महुआ की शराब पीते। उस मेले में नाच के आस-पास ग़ैर-आदिवासी मर्दों के जाने का निषेध था। जाने पर [illegible] लोग आदिवासी

लम्बे-चौड़े मैदान में लगता। उसी मैदान में आदिवासियों की तीर चलाने की प्रतियोगिता होती। टार्गेट क्रमशः पीछे हटा दिया जाता था। अन्त में जो आखिरी निशाना लगाना होता, वह बहुत ही मुश्किल होता। एक-पर-एक दो बाँसों में लोहे के छल्ले बाँधे जाते। इस तरह के तीन छल्ले रहते। उनके पीछे आँख बना बोर्ड रहता। छल्लों में होकर उस आँख का निशाना लगाना होता था।

यह तीरन्दाजी की बहुत कठिन परीक्षा होती। पुरस्कार होता—आदिवासियों की ओर से एक सूअर। लेकिन इधर कई सालों से थाने के दारोगा पाँच रुपये देते थे। तीरथनाथ लाला पाँच रुपये देते थे, ईंटों के भट्टे के मालिक हरबंस चड्ढा पाँच रुपये देते थे, फलों के व्यापारी अनवर पाँच रुपये देते। हर बरस इस परीक्षा को जीतने के लिए बड़ी प्रतिद्वंद्विता होती। दारोगा हर बरस सोचते, कहीं दंगा न हो जाये। किन्तु हर बरस ही इस प्रतियोगिता के सूअर के साथ और भी दो-चार सूअरों को मारकर सारे प्रतिद्वंद्वी मांस, भात खाकर और मद पीकर रात बिताते। जो लोग जीतते या जो हारते, उनमें झगड़ा न होते देखकर दारोगा को हर बार ताज्जुब होता।

चोट्टि मुंडा कहता, "झगड़ा क्यों होगा? एक-एक बार एक गाँव जीतता है। यह तो मेल है। इसमें झगड़ा क्यों होगा?"

अठारह बरस पहले तक चोट्टि मुंडा ने हर बरस यह प्रतियोगिता जीती। लेकिन अन्तिम बार जब वह जीता तो उस बार उसके वंश के डोनका मुंडा ने फ़ैसला करने वालों से कहा, "यह ठीक नहीं है।"

"क्या ठीक नहीं है?"

"चोट्टि मुंडा को मैदान में उतारना।"

"क्यों?"

"सब जानते हैं कि उसके तीर मंतर-पढ़े रहते हैं। वह अगर आँख बंद करके भी छोड़े, तो भी तीर निशाना वेध देंगे।"

"चोट्टि, क्या यह सच है?"

चोट्टि ने कहा था, "हाँ।"

उसके बाद सबको अचंभे में डालकर उसने निशान से किसी का तीर उठा लिया। डोनका से बोला, "अपना धनुष तो दे।"

डोनका के धनुष पर तीर चढ़ा, चिल्ला खींच उसने तीर से कहा था, "बच्चा, अगर निशाना न वेध सका तो तेरी बदनामी होगी, जा तो बेटा, निशानी छेद आ।"

बात कहते-कहते ही उसने तीर छोड़ा और निशाना वेध दिया।

जो वालू आयी थी, उसमें सोने के कण थे !

वह रेत पर बैठ गया। कोयला और अबरक देखकर अँग्रेज़ और बिहारी जिस तरह बड़े लालच में भरकर आ जाते, क्षण-भर में आदिवासियों की जगह को घनी ईंटों और मकानों से भोंडी वस्ती वना देते—यह उसे याद था। सोना देखकर पता नहीं वे लोग क्या करें ! यह पहाड़-जंगल-नदी सब बरबाद हो जायेंगे। बड़े टूटे दिल से उसने फिर अँजुली भरकर रेत उठायी। उसमें भी सोना था। अब उसने अपने मन को स्थिर किया।

हिन्दू सदान संन्यासी, ईसाई मिशनरी और चाय बागान के कुलियों के ठेकेदार—तीनों ही उसे लेना चाहते हैं। पूर्ति मुंडा कुलियों के ठेकेदार की तलाश में चला। पत्नी-बेटा-बेटी तो ज़िन्दा रहें। जाने के पहले पत्नी से कह गया, 'तेरे पेट में बच्चा है। लड़का हो तो उसका नाम चोट्टि रखना।'

पूर्ति मुंडा बड़ा अभागा था। ठेकेदार की तलाश में चलते-चलते एक भरे-पूरे हिन्दू गाँव में जाकर वह आम के पेड़ के नीचे सो गया। उसके नीचे से ज़मींदार के चोरी गये बर्तन निकले। परिणामस्वरूप वह पकड़ा गया और जेल गया। जेल से निकलते ही ठेकेदार के पास और फिर मॉरिशस। उसके बाद पता नहीं उसका क्या हुआ। लेकिन उसके वंश के लड़कों के नामकरण में नदी के नाम आते रहे। इसीलिए पूर्ति मुंडा के परपोतों के दोनों नाम नदी के नाम पर थे—चोट्टि मुंडा और कोयेल मुंडा। चोट्टि नदी के किनारे ही उनका मकान था। आज भी है। लेकिन पूर्ति मुंडा की आशा पूरी नहीं हुई। सोने की तलाश में बाहर से आकर लोग उस जगह को उलट-पलट कर डालेंगे, इसी डर से वह भागा था। अब उस जगह से तीन मील दूर होकर साउथ ईस्टर्न रेलवे चली गयी है। चोट्टि नाम से एक स्टेशन है। स्टेशन उस जनपद के कारण बना है जिस जनपद में बिहारी, बंगाली, पंजाबी रहते हैं। आदिवासी लोग दूर-दूर पर गाँव में रहते हैं। बरस में एक बार चोट्टि स्थान आदिवासियों से भर जाता है—विजयादशमी के दिन चोट्टि मेला में। उस दिन पच्चीस-तीस गाँवों के आदिवासी उस मेले में आते। बाँस के बनाये आकारों पर काग़ज़ लगा कर वे लोग बड़े-बड़े बाघ, हाथी, घोड़े बनाते। उनको उठाकर नाचते। लड़कियाँ भी नाचतीं। महुआ की शराब पीते। उस मेले में नाच के आस-पास ग़ैर-आदिवासी मर्दों के जाने का निषेध था। जाने पर बाहरी लोग आदिवासी लड़कियों के साथ असभ्यता कर सकते थे और सूखी घास में आग लगाना सरकार को पसन्द न था। उस तरह की कोई वारदात न हो जाये, इसलिए तोहरी थाने से पुलिस आती। वह नाच सवेरे के ग्यारह बजे से तीन बजे तक चलता। उसके बाद चोट्टि मेला का असली आनन्द शुरू होता। मेला एक

लम्बे-चौड़े मैदान में लगता। उसी मैदान में आदिवासियों की तीर चलाने की प्रतियोगिता होती। टार्गेट क्रमश: पीछे हटा दिया जाता था। अन्त में जो आखिरी निशाना लगाना होता, वह बहुत ही मुश्किल होता। एक-पर-एक दो बाँसों में लोहे के छल्ले बाँधे जाते। इस तरह के तीन छल्ले रहते। उनके पीछे आँख बना बोर्ड रहता। छल्लों में होकर उस आँख का निशाना लगाना होता था।

यह तीरन्दाजी की बहुत कठिन परीक्षा होती। पुरस्कार होता—आदिवासियों की ओर से एक सूअर। लेकिन इधर कई सालों से थाने के दारोगा पाँच रुपये देते थे। तीरथनाथ लाला पाँच रुपये देते थे, ईंटों के भट्टे के मालिक हरबंस चड्ढा पाँच रुपये देते थे, फलों के व्यापारी अनवर पाँच रुपये देते। हर बरस इस परीक्षा को जीतने के लिए बड़ी प्रतिद्वंद्विता होती। दारोगा हर बरस सोचते, कहीं दंगा न हो जाये। किन्तु हर बरस ही इस प्रतियोगिता के सूअर के साथ और भी दो-चार सूअरों को मारकर सारे प्रतिद्वंद्वी मांस, भात खाकर और मद पीकर रात बिताते। जो लोग जीतते या जो हारते, उनमें झगड़ा न होते देखकर दारोगा को हर बार ताज्जुब होता।

चोट्टि मुंडा कहता, "झगड़ा क्यों होगा? एक-एक बार एक गाँव जीतता है। यह तो मेल है। इसमें झगड़ा क्यों होगा?"

अठारह बरस पहले तक चोट्टि मुंडा ने हर बरस यह प्रतियोगिता जीती। लेकिन अन्तिम बार जब वह जीता तो उस बार उसके वंश के डोनका मुंडा ने फैसला करने वालों से कहा, "यह ठीक नहीं है।"

"क्या ठीक नहीं है?"

"चोट्टि मुंडा को मैदान में उतारना।"

"क्यों?"

"सब जानते हैं कि उसके तीर मंतर-पढ़े रहते हैं। वह अगर आँख बंद करके भी छोड़े, तो भी तीर निशाना वेध देंगे।"

"चोट्टि, क्या यह सच है?"

चोट्टि ने कहा था, "हाँ।"

उसके बाद सबको अचंभे में डालकर उसने निशान में किसी का तीर उठा लिया। डोनका से बोला, "अपना धनुष तो दे।"

डोनका के धनुष पर तीर चढ़ा, चिल्ला खींच उसने तीर से कहा था, "बच्चा, अगर निशाना न वेध सका तो तेरी बदनामी होगी, जा तो बेटा, निशानी छेद आ।"

बात कहते-कहते ही उसने तीर छोड़ा और निशाना वेध दिया।

डोनका ने घुटना छूकर सम्मान प्रदर्शित किया था। चोट्टि ने कहा था, "जितने लोग न कर सकें, उतने लोगों के धनुक लेकर दिखा दूँगा! मन्तर पढ़ा तो है। लेकिन देखो, मंतर-पढ़ा तीर नहीं चला रहा हूँ। जिस तीर से निशाना लगाया है, वह मेरे नाती का तीर है। यह बात भी सच है कि मन्तर पढ़ा हुआ तीर पास रहते मैं निशाना नहीं चूकूँगा।"

किसी ने कहा, "तब तो तुम्हारा तीर का खेलना ठीक नहीं है। साठ बरस की उमर हुई, तुम फ़ैसला करने वाले क्यों नहीं बन जाते? एक आदमी तो तुम्हारे समाज से रहता ही है।"

"वही बनूँगा।"

तभी से चोट्टि मुंडा इस तीरों के खेल में निर्णायक बनता है। दारोगा ने कहा था, "तेरा ऐसा हाथ है। अगर कहीं बंदूक चलाता होता तो!"

चोट्टि ने जवाब दिया था, "तीर छोड़ते हैं मरद। गोली चलाते हैं नामरद।"

बात चोट्टि ने कही थी, इसीलिए दारोगा पी गया। चोट्टि की बात क्यों पी ली, उसका एक क़िस्सा है। चोट्टि मुंडा के जीवन में तरह-तरह के कारणों से तमाम क़िस्से हैं।

दो

जिस साल चोट्टि का जन्म हुआ, उस साल चोट्टि नदी में असाधारण बाढ़ आयी हुई थी। बाढ़ के बहाव से पत्थर बह जाते थे। चोट्टि के पैदा होने के साथ ही बाढ़ का ज़ोर कम हुआ। उस समय ब्राह्मण स्टेशन-मास्टर ने कहा कि यह लड़का सामान्य नहीं है।

यह हुई शुरू की कहानी। स्टेशन-मास्टर को पता भी न था कि चोट्टि पैदा हुआ है। मालूम होने पर भी वे उस बात को न कहते। कहने पर भी कोई समझता नहीं, क्योंकि स्टेशन-मास्टर की जीभ थुलथुली थी। बात अटक जाती। वे इशारों से ही काम चलाते थे। ये सब बातें बताना बेकार है। क़िस्सा बहुत दिनों से चला आ रहा है। बाढ़ के क़ायदे से बाढ़ उतर गयी थी। वह बात भी किसी को याद नहीं है।

चोट्टि बचपन से ही ज़िद्दी था। तीर-धनुक में कोयेल का हाथ बहुत पक्का था। लेकिन चोट्टि की हठ थी कि पक्का धानुकी बनेगा, चोट्टि के मेले में लक्ष्य-वेध करेगा। वह जब किशोर था, तब अपनी बहन की ससुराल

गया। वहाँ उसने बहन के ददियाससुर धानी मुंडा को देखा। उसने जब देखा, तब धानी की उम्र निश्चय ही अस्सी-नब्बे की होगी। धानी के पास उसकी उम्र का हिसाब इस तरह था—उसके बचपन में अब तक जंगलों में दो-चार साल गाछ, सागौन के पेड़ पूरी उम्र के और पक्के हो गये थे।

धानी मुंडा बुड्ढा था लेकिन उस पर बुढ़ापा अभी छाया न था। उसने आँखें मटका कर चोट्टि से कहा, "मेरे पास एक मंतर पढ़ा हुआ तीर है। आकाश में अगर दस चिड़ियाँ उड़ी जा रही हों, और मैं तीर से कहूँ कि तीसरी चिड़िया ला दे तो वह ला देगा।"

"सच बात है?"

"सच है या झूठ, यह अपनी उस परमी दीदी से पूछ ले।"

बहन के साथ बकरी दुहाने जाते हुए चोट्टि ने पूछा, "दीदी, उसने जो कुछ कहा, वह क्या सच है?"

परमी बोली, "कोई नहीं जानता। लेकिन वह तीर चलाना जरूर जानता है। पर वह अगर तीर छोड़ेगा तो उसे पकड़कर थाने ले जायेंगे।"

"क्यों?"

"सो मुझे नहीं पता।"

चोट्टि बहुत जोश में आ गया। उस समय उसकी उम्र चौदह बरस की थी। सूखा पड़ रहा था। चोट्टि का अंचल जल गया था। परमी का ससुर भला आदमी था। चोट्टि की माँ से बोला था, "तुम लोगों के मैदान में घास नहीं है, नदी के कलेजे की बालू धूप की तपन में हवा में मिलकर उड़ती है। बड़े लड़के को भेज दो। गायें चरायेगा। इस ओर आजकल सूखा नहीं है।"

कोयल बोला था, "मैं भी जाऊँगा।"

बहन के ससुर ने कहा था, "दोनों को नहीं रख सकूँगा।"

इसी कारण चोट्टि परमी की ससुराल गया। बड़ा गाँव था। रहना राह के किनारे था। थाना मिशन-पुरोहित के आश्रम के पास था। गाँव में कभी यही लोग रहते थे, यह समझने का कोई साधन न था। गाँव में बिहार की दूसरी जातियों की प्रमुखता थी। उच्च वर्ण के गरीब और धनी लोग थे। मुंडा लोग दूर रहते थे। उनकी बस्ती भी घटी थी। इस गाँव में मुंडा लोग हिन्दुओं के खेत-खलिहान में मेहनत-मजूरी करते। चोट्टि की बहन की सास बकरी का दूध बेचती। यहाँ पर वैसा प्रचंड सूखा नहीं था। चोट्टि बरस-भर रह गया। खूब मेहनत किया करता था। फसल होने पर जब परमी का ससुर, उसका पति, देवर, सास—सभी बेगारी देने जाते, उस समय वह अकेले गाय-बकरी दुहता, दूध बाँटता, गाय-बकरियों को

चराता। परमी के सास-ससुर उसका बहुत ध्यान रखते। अफ़सोस की बात है कि उनके कोई अविवाहित लड़की नहीं है। होती तो लड़के को जमाई बना लिया जाता। लेकिन उन दोनों ने चोट्टि से एक बात कही, "धानी मुंडा के पास मत जाना।"

"क्यों ?"

"यह मत पूछो। और कभी उससे तीर-धनुक लेने को मत कहना। धानी मुंडा हमारे परदादे का भाई है। फिर भी कहते हैं, उसके हाथों में जब धनुक उठेगा तो मुंडा समाज, मुंडा परिवार पर विपत्ति आ जायेगी।"

ये बातें सुनकर चोट्टि के मन में धानी के प्रति आकर्षण बहुत अधिक बढ़ गया। धानी ने क्या किया है ? क्यों उसके बारे में सबके मन में यह भय-मिश्रित सम्मान है ?

वह धानी को छिप-छिपकर देखता। धानी दिन-भर कुछ न करता। बलोया-फरसा सभी मुंडा लोगों के पास रहता है। धानी का बलोया बहुत ही पैना था और बलोया की लकड़ी के हत्थे पर कुछ अजीब किचिर-मिचिर लिखा हुआ था। दिन-भर लकड़ी काट-काटकर धानी मुंडा बच्चों को सुंदर खिलौने बनाकर देता। किसी से बोलता न था। अपना भात खुद राँध लेता। वह घाटो नहीं खाता था। गाँव के लुहार दाव, साग-मछली काटने की बैरी, छुरी-बलोया-हँसिया-दराँती-कुदाल-खुरपी बनाते। लुहारखाने के सामने बैठकर धानी सबके लकड़ी के हत्थे और मुट्ठे बना देता। उसने यह बढ़ई का काम कहाँ से सीखा था ?

परमी कहती, "किसी को पता नहीं।"

धानी बहुत ही गण्यमान्य व्यक्ति था। लुहारखाने के सामने शिरीष के पेड़ की छाया में उसे न देखकर धानी की खोज में थाने से कांस्टेबल चला आता। जो पुलिस हाट में पैसा लेती, मालिक-महाजन के घर होली-दीवाली पहुँचती, वही सर्वशक्तिमान पुलिस धानी के पास आकर बड़े कोमल स्वर में कहती, "क्यों रे धानी, कई दिन से दिखायी क्यों नहीं पड़ा ?"

"मन दुख रहा था।"

"धानी ! जानता तो है सब-कुछ। कहीं जाना मत, बाबा ! मेरी नौकरी चली जायेगी। बुढ़ा गया है। थोड़ा समझकर चल।"

"तेरी नौकरी, तू जाने।"

"दुहाई तेरी।"

"जिस दिन तबीयत होगी, मनर के बल से गायब होकर चला जाऊँगा।"

"जाना मत, धानी!"

"हाट में मुंडा लोगों पर जुलुम कर पैसे क्यों लेना है?"

"किसने कहा?"

"मैंने कहा। दारोगा से कहना होगा। तुलाई के पैसे उठाकर मुंडा लोगों को खफा करने पर फिर...। समझा? तब दारोगा को भी जवाब देना पड़ेगा। हाँ, मैं मुंडा लोगों को नाराज नहीं करूँगा। लेकिन गौरमेन भी चाहती है कि नये जुलुम हों और मुंडा लोग बिगड़ जायें।"

नये जुल्म नहीं, पुराने जुल्म ही होते रहते। कौन-सा जुल्म नया और कौन-सा पुराना था, इसे चोट्टि नहीं समझता था। समझता कि परमी के ससुर सभी फसलों में महाजन के यहाँ बेगार देने जाते।

"कहाँ जा रहा है?" धानी गरज उठा, "बेगार देने?"

"हाँ, दादा!"

"बेगार देने जा रहे हो? तुमको मालूम नहीं—वह जिन तमाम जुलुमों के लिए लड़ा था, उनमें बेगारी भी एक था।"

"वह नहीं, दादा! उनका नाम तुम भूले जा रहे हो।"

"हाय बीरसा! अभी पन्द्रह बरस भी नहीं बीते हैं। जुलुम के डर से मुंडा उसी तरह काँपते हैं।"

धानी घर से निकल गया। दीदी ने दोपहर में चोट्टि से कहा था, "घर के लोगों के बुलाने से यह नहीं आयेगा। तू बुला ला।"

"कहाँ गया है?"

"जंगल में।"

"तू मुझे उसकी बातें क्यों नहीं बताती? कहाँ खोजूं? बुला लाऊँगा, तब खायेगा?"

"हम लोगों का खाना नहीं खाता है।"

"तो देखूं।"

चोट्टि धानी की तलाश में निकला। उसे तलाशने जाने के मामले ने उसे एक नये और महत्वपूर्ण किस्से के साथ बाँध दिया।

चोट्टि मुंडा के जीवन में सारा कुछ एक-एक किस्सा था। मुंडा जीवन की और कहानियों की तरह यह कहानी भी महाकाव्य-सी थी। पृथ्वी किस तरह बनी, वह पृथ्वी सेंगेल दा की आग में किस तरह जल गयी थी, दो नर-नारी किस तरह बच गये, किस प्रकार नयी पृथ्वी की सृष्टि हुई—मुंडा जीवन में यह चिरकाल से चली आती कहानी थी। मुंडा जीवन का

महाकाव्य बीस बरस पहले उत्पन्न हुआ था, यह चोट्टि को नहीं पता था।

धानी ने उसे बताया। धानी के साथ उसका जो सम्बन्ध बन गया, उसके परिणामस्वरूप चोट्टि भी महाकाव्य के नायकों की तरह विशाल और संभावनापूर्ण था।

यह 1915 के साल की कहानी है। तब चोट्टि की उम्र पंद्रह थी। खोजते-खोजते उसने धानी को घने जंगल में पाया था। एक गढ़ैया के किनारे पत्थर पर धानी बैठा था। चोट्टि को देखकर उसने नज़र उठायी।

चोट्टि ने उसके पैर पकड़ लिये।

"पैर क्यों पकड़ता है?"

"मुझे तीर चलाना सिखा दो।"

"मैं?"

"हाँ, तुम तीरन्दाजों के हरमदेउ हो।"

"क्यों सीखना चाहता है? तीर तो सारे मुंडा चलाते हैं। मैं तुझे कौन-सी नयी विद्या सिखाऊँगा?"

"मैं चोट्टि मेला में जीतना चाहता हूँ।"

"ओहो, इसलिए?"

"तो क्या यह बेकार की बात है?"

चोट्टि का दमकता चेहरा देखकर धानी सहसा हँसा था। बोला था, "कैसे सिखाऊँ? तीर उठाने पर पुलिस फिर मुझे जेहल में डाल देगी!"

"क्यों?"

"ये सब बड़ी बातें हैं। बातें बताना चाहता हूँ लेकिन सुनने वाला आदमी नहीं है। यहाँ के मुंडा लोगों की तो कमर टूट गयी है, दिकू लोगों की दया पर रहते हैं। मुझे चाईबासा में रहने न देंगे। वहाँ मेरी बातें सुनने वाले आदमी अभी हैं लेकिन वहाँ रहने नहीं देंगे।"

"कौन नहीं रहने देगा?"

"गौरमेन।"

"क्यों?"

"वह एक पुराना क़िस्सा है। तू तो मुंडा है। तुम सब लोगों के लिए दुनिया में एक आदमी आया था—धरती का आबा। बीरसा भगवान।"

"उसकी कहानी तो मुझे मालूम है।"

"मालूम है? किसने बतायी?"

"मेरी माँ के आबा ने। मेरे नाना ने।"

"उसका क्या नाम है?"

"हारा मुंडा। बड़ा बलोया[1] हुआ था। उसी में बीरसा भगवान मर गये थे। उसके बाद पुलिस ने बड़े जुलुम किये। उसके बाद नाना रांची से यहां चले आये। बस, और कुछ नहीं मालूम।"

"मैं, धानी मुंडा, उसका साथी था।"

"तुम! तुम तो बूढ़े हो।"

"तो क्या हुआ?"

"तुमने उसे देखा था?"

"बहुत दिनों तक। जेहल में भी खटा। उसी कारण घर से अलग हूँ और इसी से मेरे लिए हाथ में तीर लेना मना है।"

"क्यों?"

धानी, मानो बात न कर पा रहा हो इस प्रकार असह्य कष्ट से बोला, "वे जानते हैं कि मैं तीर में हरमदेउ हूँ। वे सोचते हैं कि मैं तीर उठाऊँगा तो फिर उलगुलान[1] का नारा लगाऊँगा।"

"मैं किसी से बताऊँगा नहीं।"

"उलगुलान! कहाँ क्या है? कहाँ छोटे-से गाँव पर कब्जा? कहाँ महाजनों के खाते नहीं हैं? कहाँ बेगार नहीं है? कहाँ मुंडा सुख से है? फिर भी इन्हें डर लगता है। मेरे तीर उठाने से पुलिस उन पर जुलुम करेगी। मैं यहाँ नहीं रहूँगा।"

"कहाँ जाओगे?"

"उससे तुझे क्या? जा, जा, यहाँ से जा।"

उस दिन चोट्टि चला आया। लेकिन जब तक वह बेगार चलती रही, उतने दिन धानी लड़के निकल जाता मानो मुंडा लोगों की बेगार उसे सहन न होती हो। अपना काम-काज निबटाकर चोट्टि उसके पीछे-पीछे फिरता। इस बीच एक दिन बड़ा शोरगुल हुआ। परमी की सास बोली, "कल से मैं नहीं जाऊँगी, मेरे लड़के नहीं जायेंगे।"

"क्यों?" धानी को कुतूहल हुआ।

आदिवासी समाज में बुड्ढे-बुढ़ियों का बहुत सम्मान है। परमी की सास बोली, "तुम उमर में सबसे बड़े हो। तुम सोचकर कहो, मैं क्यों जाऊँ?"

"जाती तो थी!"

"क्यों जाती थी? तुम्हारे भाई, इस लड़के के बाप के परदादा के कारन। तुम लड़ाकू थे, तुमने गौरमेन को अपने भाई-बाप-लड़के का

---

1 मुंडा लोगों के आंदोलन।

हाकाव्य वीस वरस पहले उत्पन्न हुआ था, यह चोट्टि को नहीं पता
ा।

धानी ने उसे वताया। धानी के साथ उसका जो सम्वन्ध वन गया, उसके परिणामस्वरूप चोट्टि भी महाकाव्य के नायकों की तरह विशाल और संभावनापूर्ण था।

यह 1915 के साल की कहानी है। तव चोट्टि की उम्र पंद्रह थी। खोजते-खोजते उसने धानी को घने जंगल में पाया था। एक गढ़ैया के किनारे पत्थर पर धानी वैठा था। चोट्टि को देखकर उसने नज़र उठायी।

चोट्टि ने उसके पैर पकड़ लिये।

"पैर क्यों पकड़ता है?"

"मुझे तीर चलाना सिखा दो।"

"मैं?"

"हाँ, तुम तीरन्दाजों के हरमदेउ हो।"

"क्यों सीखना चाहता है? तीर तो सारे मुंडा चलाते हैं। मैं तुझे कौन-सी नयी विद्या सिखाऊँगा?"

"मैं चोट्टि मेला में जीतना चाहता हूँ।"

"ओहो, इसलिए?"

"तो क्या यह वेकार की वात है?"

चोट्टि का दमकता चेहरा देखकर धानी सहसा हँसा था। वोला था, "कैसे सिखाऊँ? तीर उठाने पर पुलिस फिर मुझे जेहल में डाल देगी!"

"क्यों?"

"ये सव वड़ी वातें हैं। वातें वताना चाहता हूँ लेकिन सुनने वाला आदमी नहीं है। यहाँ के मुंडा लोगों की तो कमर टूट गयी है, दिकू लोगों की दया पर रहते हैं। मुझे चाईवासा में रहने न देंगे। वहाँ मेरी वातें सुनने वाले आदमी अभी हैं लेकिन वहाँ रहने नहीं देंगे।"

"कौन नहीं रहने देगा?"

"गौरमेन।"

"क्यों?"

"वह एक पुराना क़िस्सा है। तू तो मुंडा है। तुम सव लोगों के लिए दुनिया में एक आदमी आया था—धरती का आवा। वीरसा भगवान।"

"उसकी कहानी तो मुझे मालूम है।"

"मालूम है? किसने वतायी?"

"मेरी माँ के आवा ने। मेरे नाना ने।"

"उसका क्या नाम है?"

"हारा मुंडा। बड़ा बलोया[1] हुआ था। उसी में बीरसा भगवान मर गये थे। उसके बाद पुलिस ने बड़े जुलुम किये। उसके बाद नाना रांची से यहां चले आये। बस, और कुछ नहीं मालूम।"

"मैं, धानी मुंडा, उसका साथी था।"

"तुम! तुम तो बूढ़े हो।"

"तो क्या हुआ?"

"तुमने उसे देखा था?"

"बहुत दिनों तक। जेहल में भी खटा। उसी कारण घर से अलग हूँ और इसी से मेरे लिए हाथ में तीर लेना मना है।"

"क्यों?"

धानी, मानो बात न कर पा रहा हो इस प्रकार असह्य कष्ट से बोला, "वे जानते हैं कि मैं तीर में हरमदेउ हूँ। वे सोचते हैं कि मैं तीर उठाऊँगा तो फिर उलगुलान[1] का नारा लगाऊँगा।"

"मैं किसी से बताऊँगा नहीं।"

"उलगुलान! कहाँ क्या है? कहाँ छोटे-से गाँव पर कब्जा? कहाँ महाजनों के खाते नहीं हैं? कहाँ बेगार नहीं है? कहाँ मुंडा सुख से है? फिर भी इन्हें डर लगता है। मेरे तीर उठाने से पुलिस इन पर जुलुम करेगी। मैं यहाँ नहीं रहूँगा।"

"कहाँ जाओगे?"

"उससे तुझे क्या? जा, जा, यहाँ से जा।"

उस दिन चोट्टि चला आया। लेकिन जब तक यह बेगार चलती रही, उतने दिन धानी तड़के निकल जाता मानो मुंडा लोगों की बेगार उसे सहन न होती हो। अपना काम-काज निबटाकर चोट्टि उसके पीछे-पीछे फिरता। इस बीच एक दिन बड़ा शोरगुल हुआ। परमी की सास बोली, "कल से मैं नहीं जाऊँगी, मेरे लड़के नहीं जायेंगे।"

"क्यों?" धानी को कुतूहल हुआ।

आदिवासी समाज में बुड्ढे-बुढ़ियों का बहुत सम्मान है। परमी की सास बोली, "तुम उमर में सबसे बड़े हो। तुम सोचकर कहो, मैं क्यों जाऊँ?"

"जाती तो थीं!"

"क्यों जाती थी? तुम्हारे भाई, इस लड़के के बाप के परदादा के कारन। तुम लड़ाकू थे, तुमने गौरमेन को अपने भाई-बाप-लड़के का

---

1 मुंडा लोगों का आंदोलन।

परिचय नहीं दिया। तुम्हारा भाई कैसा था?"

"मुझे पता नहीं। मैंने जिसे भाई माना, वह कोई नहीं है। तेरी तरह मैंने किसी जगह धरती में बीज नहीं बोये। साँउताल के हूल[1] में मैं कहाँ गया था, कहाँ सरदारों की लड़ाई में धनुप-बाण उठाया था, आज याद नहीं आता। यह भगवान सिखा गये हैं कि खून का संबंध ही सब-कुछ नहीं होता।"

परमी की सास सूखी और गंभीर आवाज़ में बोली, "वह पता है। तुम्हारे आगे नहीं कहती, लेकिन मन में तुम्हारे लिए गरब रख रखती हूँ, और कुछ नहीं कहती, क्योंकि पुलिस के जुलुम करने पर कहीं ठाँव नहीं है।"

"अब बता भी।"

"तुम्हारे भाई ने कब किस अकाल में दस कच्चे सेर चावल लिये थे, उसके लिए बेगार दिया, उसके लड़के ने, मेरे ददिया ससुर ने, मेरे ससुर ने। हम देते सो नहीं दी। देखें, तो हमारी जमीन जरा-सी है। दो दिन को छुट्टी चाहिए, धान काटेंगे, सो छुट्टी नहीं देगा। न दे छुट्टी, मैं नहीं जाऊँगी। जो करना हो करे। तुमसे भी कहे दे रही हूँ, भगवान का उल-गुलान अगर होता, तो मुंडा बच जाते। बचे? बताओ।"

धानी ने सिर हिलाया। उसके बाद बोला, "तुम लोगों का महाजन भला नहीं है। महाजन भले नहीं होते। और सब बेगार दे रहे हैं, तेरे अकेले न देने से लाभ नहीं है। फिर यहाँ सब हिन्दू रहते हैं, आदिवासी कहाँ हैं? अकेले लड़कर मारी जायेगी?"

"हिरन धान खाये जा रहे हैं।"

"नहीं खायेंगे।"

"क्यों? हिरन क्या भले हो गये हैं?"

धानी बोला, "यह भी नये जमाने की रीत है। पहले नहीं मालूम था कि बूढ़े आदमी के कुछ कहने पर बेटे की बहू जवाब देगी।"

दूसरे दिन धानी ने परमी से कहा, "घर से चावल लेकर भात राँध-के रखना। मैं और चोट्टि धान काटेंगे। दोपहर को चोट्टि आकर हम दोनों का भात ले जायेगा। देख, जाल में खरगोश पकड़ा है। मांस पकाना।"

उस समय भी जंगल बहुत था। खरगोश-वराह-हिरन-साही-तीतर-फ़ाख्ता थे। मांस की कमी न थी।

बीघे-भर ज़मीन थी। धानी और चोट्टि ने धान काटे। पहले दिन धान

---

1. आंदोलन।

काटने के बाद धानी बोला, "रात में हम लोग मचान पर रहेंगे। नहीं तो जितने हिरन हैं उतने ही मोर हैं।"

चोट्टि को अचानक धानी का साथ, सहकर्मी की हैसियत मिली। ठंडी-ठंडी अगहन की रात में तारों भरा आकाश जब चोरी से धरती के आस-पास उतर आया, जाजपुर के राजा के जंगल में हाथी बाँस के पेड़ को तोड़ रहा था। ऐसे अलौकिक समय में धानी चोट्टि से बोला, "तीर चलाना सीखेगा? इस अँधेरे में सतवाला हिरन घास खा रहा है। उसे मार सकता है?"

"दिखायी नहीं देगा।"

"अपना धनुक दे।"

धानी मचान पर खड़ा हो गया। उसने जरा-सा झुककर तीर छोड़ा। बोला, "कल उसे खींचकर ले जाना होगा। मांस खायेंगे। चल, पास चलकर पहरा दें। नहीं तो भेड़िया आकर खा जायेगा।"

चोट्टि को यह सब जादू-मन्तर का खेल लगा। लेकिन हिरन तो सच-मुच का था। अच्छा-खासा चीतल था। दोनों वहीं बैठ गये। धानी बोला, "मैं तो चला ही जाऊँगा, पर तुझे सिखा जाऊँगा।"

"मेरा धनुक छोटा है।"

"अच्छा!"

"हाँ। जंगल में छिपाकर रख दिया है। मेरा बलोया हाथ में ले। बेंट पर उँगलियाँ फेर।"

"कौन-सा नक्शा खुदा है?"

तारों के प्रकाश में धानी अरण्य की दुर्जय आत्मा की तरह हँसा। बोला, "भगवान ने अपने हाथों से नाम लिख दिया है। यह उनका नाम है। पढ़ना तुझे नहीं आता, मुझे भी नहीं आता। जरूरत भी नहीं है। इस पर उँगलियाँ फेरने से तेरे हाथों में भी मन्तर आ जायेगा।"

"आ जायेगा?"

"जरूर।"

"तब?"

"तब तू चोट्टि मेला में जीत जायेगा? तेरे समय में भगवान नहीं है, उलगुलान नहीं है, मुंडा लोगों का जीवन बदल जाये, इसके लिए कलेजे में आग नहीं है, उस आग की गर्मी से महाजन-मुनिम-सिपाहियों को तीर से बेधना नहीं है, चोट्टि का मेला है। गोरमेन ने मुंडा जाति को इस तरह भुला रखा है।"

हिरन किसने मारा यह सब लोग समझ गये लेकिन किसी ने कुछ

कहा नहीं। धान की कटाई हो जाने पर धानी ने कहा, "कागजी धान से तुम लोगों की कितने दिन की खूराक होगी? मिर्चा लगाओ, उसमें पैसे जादा मिलते हैं।"

परमी का ससुर वोला, "जमीन लाला लोगों की है। अच्छी फसल न होगी इसलिए मुझे दे रखी है। जव पता चलेगा कि मिर्चें हो रही हैं तो ले लेंगे। मिर्च होती है यह हमें भी पता है। जानकर भी कुछ कर सकने की राह नहीं है। यह जो धान हो रहा है, वही अच्छा है।"

"सारी जमीन मुंडा और उराँव लोगों की वसायी हुई है।"

"वह तुम्हारे जमाने में थी। हमने कभी नहीं देखा कि मुंडा और उराँव जमीन के मालिक हों। कव से वह दिकू लोगों की जमीनें हैं।"

"हमने ही क्या देखा है!"

"अव और भी जुलुम होते हैं। हिरन का मांस सभी खायेंगे, मजे आयेंगे। मुंडा लोगों को नाच-गाना करते देख कर भी वे डरते थे। पुलिस यों आती है कि उसे देखते ही वनता है। पुलिस वाले आने पर खायेंगे, रहेंगे, जाने-आने का खर्च लेंगे।"

"लड़ाई खतम नहीं हुई?"

"तुम्हें पता है, तुम्हारे नाती के वेटे जुजुहातू में रहते हैं?"

"इसके जानने से मुझे क्या फ़ायदा?"

धानी को जैसे कहीं कुछ याद आ रहा था। वह चोट्टि को जंगल ले गया। वह जंगल को अपनी माँ कहता था। कहा, "तुझे जंगल पहचनवा दूं। जंगल पहचान लेने पर भूखा नहीं मरेगा। जंगल में क्या नहीं है?"

धानी के साथ रहना-सहना कितनी मूल्यवान जानकारी थी। तभी चोट्टि ने सीखा कि किस लता की जड़ में मीठा कन्द होता है, किस गढ़ैया में मछली है, किस तरह फंदा लगाकर हिरन पकड़ा जाता है। मोरों के नाच की विशेप जगह से गिरे हुए पंख कव लाये जाते हैं और उन्हें वाज़ार में वेचा जाता है।

"तीर चलाना नहीं सिखाओगे?"

"वन में लाल और काली घुघंचियाँ हैं। घुँघचियों से कुचला विप वनता है...।" धानी के अन्दर कहीं वहुत जल्दी थी, नहीं तो वह चोट्टि को इतनी वातें क्यों सिखाता भला? चोट्टि तो ग़रीव मुंडा किशोर है। वहन के घर इसलिए आया था कि अकाल वाले वरस दो कौर खाकर रह जायेगा। उसके जीवन का एकमात्र स्वप्न था चोट्टि मेला में तीर चलाकर जीतना।

धानी उसे सारे पुराने विद्रोहों की वातें तोते की तरह सुनाता। चाई-

बासा के स्कूल में जब बीरसा विद्यार्थी था, उस समय धानी ने ही उससे कहा था, "तू धरती पर आबा बनने के लिए ही पैदा हुआ है।"

हमेशा का पगला धानी सांउतालों के हूल विद्रोह में बीस बरस का लड़का था। खरवारों का विद्रोह, सरदारों की मुल्की लड़ाई और अन्त में बीरसा का विद्रोह। युद्ध और लड़ाई भी एक नशा है। मुंडा लोग शांति से अपने अधिकार के लिए जंगल की उपयुक्त जमीन पर गाँव बसाकर खेती करेंगे और दूसरे आदिवासी भी वैसा ही करेंगे, इसी के लिए सारे विद्रोहों में वह गया था। लेकिन खेती करने वाले शांत मुंडा लोगों को देखकर वह समझता कि यह शांति उसे नहीं चाहिए। महाजन, गोरमेन और दिकू लोगों से मुक्त किसी अंचल में जाने पर भी शांति मिलती या नहीं, यह नहीं पता था, क्योंकि आदिवासियों का वैसा जीवन भारत में कहीं नहीं है। उसे बहुत अकेलापन लगता। फिर इक्यासी बरस के बूढ़े धानी मुंडा के हाथों में धनुष देखते ही पुलिस चौकन्नी हो जायेगी। कहीं मुंडा लोग फिर कोई गड़बड़ न खड़ी कर दें। सारा मामला बहुत ही पेचीदा था।

तीर के मामले में सबसे जरूरी चीज एकाग्रता है। एक लक्ष्य पर स्थिर होना और तीर छोड़ना। "वह देख, पका फल लटक रहा है। गिरा दे उसे। वह देख हिरनों का झुंड। मार तो नर को। शिकार की बातें सुन। जब मारेगा तो एक तीर से घायल करेगा। बेकार के लिए कष्ट नहीं देगा। चिल्ला खींचने में हाथ क्यों कांपता है?"

धानी को भी कहीं किसी चीज की प्रेरणा थी। चोट्टि को बीच-बीच में क्रूरता से मारता। कहता, "इतने जतन से तो सिखाता हूँ और तू सब भूल जाता है? पेड़ से फल को गिरा। डाल में तीर क्यों लगा?"

जिस दिन चोट्टि ने शाम के झुटपुटे में हरे पत्तों की ओट में हरे हारियल को मारा, उस दिन धानी बोला कि तेरा होगा।—उस दिन मचान पर बैठे-बैठे धानी बोला, "चोट्टि, सो गया?"

"नहीं, तारे देख रहा हूँ।"

"उत्तर में वह तारा देख, वह हिलता-डुलता नहीं। जंगलों-पहाड़ों में उस तारे को देखकर हम राह की पहचान करते थे।"

"देखा है।"

"टेसन पर पुरोहित ब्राह्मण लोग महाभारत गा रहे हैं, सुन रहा है?"

"हाँ।"

"तीरों का युद्ध था।"

"हाँ।"

"उन तीरों को चलाना हिन्दू देवी-देवताओं ने कहाँ से सीखा?"

"कहाँ से ?"

"हम से।"

"हम से ?"

"हाँ।"

"याद रहेगा।"

"चोट्टि मेला में जीतने के लिए तीर चलाना सीखने के लिए जाद दिन नहीं हैं। लेकिन खाना या न खाना, तीर जरूर चलाना। अभ्यास न रहने से विद्या चली जाती है।"

"चलाऊँगा।"

"वह सीख जाने पर असली विद्या सिखाऊँगा।"

"सिखाओगे ?"

"हाँ, सीखने का अन्त नहीं। अब अँधेरे में नजर दौड़ाना सीख। देख, खेत के किनारे कितने पेड़ हैं।"

"तीन।"

"नहीं, पाँच हैं। सवेरे देखना। अँधेरे में देखना सीखना पड़ेगा। अँधेरे में जंगल में चलना सीखना होगा।"

"क्यों ?"

"पता नहीं। चाहता हूँ कि तुझे सिखा जाऊँ। मैं अब थोड़े दिनों का मेहमान हूँ। और कौन मुंडा लड़का मुझसे तीर चलाना सीखने आयेगा ?"

"तुम क्या मर जाओगे ?"

"हूल नहीं है। मुल्की लड़ाई नहीं है। उलगुलान नहीं है। भगवान ने कहा था, धानी, मैं फिर मुंडा माँ के पेट से पैदा होऊँगा। उसका भी कोई चिह्न नहीं। मुंडा लोग अब सिर झुकाये बेगार देते हैं, महाजनों के हाथों मारे जाते हैं। तमाम जगह रेलें बिछ गयी हैं, पुलिस चौकियाँ हैं, राजा-महाजन-दारोगा के जुलुम हैं—इनका अन्त नहीं है। अब दुनिया में मेरा मन नहीं लगता, चोट्टि !"

"तुम मरना मत।"

"तुझे असली विद्या सिखाकर मरूँगा।"

सच तो यह था कि धानी के साथ रहने की बात ऐसी उत्तेजक और आनन्द देने वाली थी कि चोट्टि के मन में मेले में तीर चलाने की बात धीरे-धीरे गौण होती जा रही थी। तीर चलाना सिखाने का काम पूरा करने के लिए धानी को बहुत मेहनत करनी पड़ती। सवेरे परमी आदि के जोते हुए खेत पर खेती का काम करता। दोपहर से जंगल में चोट्टि को शिक्षादान चलता। शाम होते-होते लुहारखाने के आगे बैठना पड़ता। नहीं

तो पुलिस खोज करने के लिए घर पर आ धमकती।

उस समय भी इस रेल-मार्ग पर अधिक गाड़ियाँ नहीं चलती थीं। आस-पास उस समय भी बहुत घना जंगल था। मारवाड़ी ठेकेदारों ने पत्थर तोड़ मोरम बजरी को चालान करना शुरू नहीं किया था। जंगल विभाग ने साल के पुराने जंगल को काटना शुरू नहीं किया था। इसमें जानवर बहुतायत में थे। राजे-जमींदार भी बहुत-से थे। निजी जंगल भी बहुतेरे थे। चोट्टि के तीर चलाना सीखने के कारण हिरन-माही का मांस खूब खाने को मिलता। परमी का ससुर भी खुश था। धानी अब इन लोगों के साथ ही खाता।

लेकिन वह भात खाता था। कहता था, "घाटो नहीं खाऊँगा रे। भगवान मुंडा-दिकू लोगों की तरह भात खाने के लिए लड़े थे। जिन कारणों से लड़े थे, उनमें यह भी एक कारण था।"

जंगल के बीच एक छोटी-सी उपत्यका थी। उस पर घास छायी हुई थी। पेड़ों पर धानी चूने से आँख बना देता। चोट्टि तीर चलाता। धानी दूरी बढ़ा देता। कहता, "चोट्टि, जल्दी-जल्दी सीख ले।"

उस दिन दो पेड़ों के बीच में एक पेड़ पर बनायी आँख पर चोट्टि ने निशाना लगाया। उस दिन धानी बोला, "बस। अब रोज अभ्यास करने पर तू चोट्टि मेला में जरूर जीत जायेगा।"

"अब असली विद्या सिखाओ।"

"सिखाऊँगा।"

'सिखाऊँगा' कहने के साथ ही धानी मानो क्षण-भर के लिए बदल गया। ज्यों असंभव रूप से वह हजारों-लाखों बरस का बूढ़ा हो गया। इतनी उम्र हो जाने पर बुढ़ापा ध्यान से झरने लगता है, उसी तरह जैसे विपाणगढ़ के हिन्दुओं के देवता के मंदिर में। सात सौ बरस बीत जाने पर भी मंदिर पर खुदे आदमी-वानर-हाथी-पक्षियों की उम्र बढ़ती नहीं। धानी उस तरह का हो गया। धीमी आवाज में जैसे किसी से बोला, "मैं अब अकेला नहीं रह सकता। मेरा समय आ गया।"

उसके बाद वह पहचाना हुआ धानी हो गया। चोट्टि से बोला, "दो दिन रुक जा। एक काम की बात समझ लूँ।"

"जल्दी करना पड़ेगा।"

"क्यों?"

"होली पास आ रही है। सभी लोग जंगल में शिकार खेलेंगे।"

"दो दिन बीतने दे। तू जा। मैं थोड़ा अकेला रह लूँ।"

"अकेले-अकेले तुम कान लगाकर क्या सुनते हो?"

सांस छोड़कर धानी बोला, "किसी का रोना सुन रहा है ?"

"नहीं तो !"

"वह सुन सकता था।"

"कौन ?"

धानी ने उस बात का जवाब न दिया। बात को आगे बढ़ाकर बोला, "जंगल रोता है। उससे कहता था, दिकू-मालिक साहब—सबने मिलकर मुझे अशुच, नंगा, बिना कपड़ों का कर दिया। बीरसा, तू मुझे शुद्ध कर दे। चोट्टि, किरिया खा, तुझसे जितनी बातें कही हैं, किसी से नहीं कहेगा ?"

"नहीं कहूँगा। तीर छूकर किरिया खाता हूँ।"

किरिया लेने के साथ-ही-साथ चोट्टि की समझ में आया कि उसकी उम्र बढ़ गयी है। धानी की बात पर गोपनीयता रखकर चलना—वह दुस्सह भार उसे ही उठाना पड़ेगा।

दो दिन बाद धानी बोला, "आज चल।" वह चोट्टि को वन की गहनता में ले गया। बोला, "सामने देख।"

दो दिन में धानी ने आदमी का एक पुतला बनाया था। पेड़ के आगे आदमी का पुतला खड़ा किया।

"चोट्टि, उसे अच्छी तरह देख।"

"देख तो रहा हूँ।"

"असल शिक्षा यही है, चोट्टि।"

"आदमी को किसलिए मारूँगा ?"

"बीच-बीच में मारना पड़ता है।"

धानी की आवाज में कोई परेशानी की बात थी। उसके पास समय नहीं था, बिलकुल समय नहीं था। सिदू-कानू के हूल के समय वह जवान था। हूल से खारुआ के, खारुआ से मुल्की लड़ाई, मुल्की लड़ाई से उलगुलान, एक विद्रोह से दूसरे विद्रोह पर चलते-चलते, कुचला विष खुरचते-खुरचते, 1915 में उसकी उम्र इक्यासी हो गयी थी। अब वह बहुत परेशान था। चाईबासा से निष्कासित। "धानी मुंडा इज़ नाट टू एंटर चाईबासा पोलिस स्टेशन एरिया ऑन द पेरिल ऑफ़ हिज डेथ।"[1] और धानी मुंडा केवल वहीं रहना चाहता था। अभी भी वहाँ वे सब गाँव हैं, जहाँ वह बीरसा की लड़ाई में शामिल होकर लड़ा था। धानी उलगुलान का 'बोलपे-बोलपे' गीत सुनना चाहता है। बीरसा का दत्तक पुत्र परिवा,

1. धानी मुंडा अपनी मौत का खतरा उठाकर चाईबासा पुलिस स्टेशन में प्रवेश नहीं करेगा।

मत्रशिप्या साली को देखना चाहता है। वीरसा के अन्तिम युद्ध-क्षेत्र डोमवारी पर्वत पर सैलराकार में मरना चाहता है।

धानी मुंडा यहाँ बहुत ही अकेला और सूना-सूना अनुभव करता है, लेकिन चोट्टि ने उससे तीर चलाना सीखना चाहा था। असल शिक्षा उसी को सिखा कर चला जायेगा मानो कहीं किसी की पुकार है, वक्त नहीं है। धानी अब समझ सकता है कि अवसर पर वह जीवित रहने की तरह जीवित रहा था। वह समय अतीत हो गया है। मुंडा लोग किमानी करने वाले हैं। धानी कभी भी वैसा नहीं था। अपनी जाति के लिए वह एक शान्तिमय जीवन छीन लेगा। उसी के लिए लड़ाई है, लेकिन जिसके लिए लड़ाई है, वह नहीं मिला। चोट्टि को सिखाया जाये। चोट्टि को फूस के आदमी को बेधना सिखा कर वह उसे किस्सा-कहानियों के मुंडा जीवन के साथ गूँथ कर जाना चाहता है। लेकिन चोट्टि ने क्या कहा था ?

"बीच-बीच में आदमी को क्यों मारना पड़ता है ?"

"हमने मारे थे।"

"क्यों ?"

"यह निश्चय कर कि घाटो नहीं खायेंगे, महाजन-दिकू-पुलिस के जुलुम नहीं मानेंगे। आबादी जमीन और किराये पर उठायी खेती के गाँव पर दखल करेंगे, जंगल का अधिकार लेने के लिए।"

"लिया था ?"

"न। कुछ नहीं मिला। हम लोगों को एक आदमी ने राह दिखायी थी। हम लड़े थे। तुम लोगों को कोई राह दिखा सकता है। सब कारण तो बचे ही रह गये, चोट्टि ! अगर वैसे दिन आयें तो तू भी मारना। और हाँ, धानी मुंडा का नाम लेकर मारना। उससे मुझे शान्ति मिलेगी।"

"आदमी मारूँगा ?"

"अगर दरकार हो तो।"

"तुम्हारे...तुम्हारे हाथों में क्या है ?"

"मेरा धनुक, देख। छाती में मारूँगा, इस तरह से। जा, तीर ले आ। बहुत दामी तीर है। देख, तुझे दिखाये जा रहा हूँ। वह फूस के आदमी के पीछे पेड़ पर एक पछी है। हारियल। पछी को यह मारा। उस पछी का झुंड आकाश में है। कई मारूँ ? अपना तीरकमान दे। तू देख। बहुत-से पाखी हैं, घर में बहुत-से खाने वाले हैं। अब देख, फिर आदमी की छाती पर मारता हूँ। ले, धनुक उठा।"

एक ही दिन नहीं। एक-एक कर अनेक दिन। अन्त में धानी ने कहा था, "और जो होगा, अभ्यास से होगा। जीवन के आरंभ में जो सीखना

होता है, इतनी जल्दी नहीं होता।"
"तुम कहीं जाओगे?"
"क्यों? यह क्यों पूछ रहा है?"
धानी सावधान हो गया था। चोट्टि को क्या पता कि वह लौट चाहता है साली के पास, परिवा के पास, जहाँ शान्ति है।
"होली में शिकार खेलूंगा न? सबको अचंभे में डाल दूंगा।"
"होली में? देखें।"
"महाजन मद देगा, रंग देगा।"
"और क्या करेगा?"
"महाजन के घर के आगे नाच होगा।"
"सब जायेंगे?"
"सब।"
धानी की आँखें धुंधली हो गयीं। मामूली-सा हँस कर वह बोला, "तब तो होली का मजा देखकर जाना होगा।"
"हाँ।"
होली का दिन आ पहुँचा। धानी ने कहा, "जा, शिकार खेलने जा। आज की बात याद कर तुझे अपना यह तीर दिया।"
"अपना तीर? मुझे?"
"हाँ। बहुत मजबूत तीर है, सैलराकार में यह तीर लिया था! इस तीर को पास रख, चोट्टि, जब तक बहुत ही ज़रूरत न हो मत छोड़ना। इसको पास रखने पर कभी भी कोई तुझे हरा नहीं सकेगा, पर अभ्यास चालू रखना।"
"जरूर।"
मुरुडि में उस दिन होली की मस्ती थी। हिन्दुओं की होली थी। आदिवासियों का शिकार का उत्सव था। शिकार के बाद मद पीकर गान और नाच। महाजन ने आदिवासियों को शराब दी थी। अंत्यज गाँव वालों को रंग दिये। चोट्टि ने एक दाँतों वाला वराह मारा था। उसकी खूब वाह-वाही हुई। सबके शिकार लेकर गाँव लौटने में शाम हो गयी। धानी घर पर न था।
धानी जो घर छोड़कर निकला तो फिर न लौटा। पुलिस आती खोज-खबर लेती। चोट्टि को मालूम था कि धानी अब न लौटेगा।
चोट्टि मुंडा के जीवन की एक और कहानी थी बीरसा भगवान के साथी धानी मुंडा के साथ दोस्ती। कहानी का उपसंहार चोट्टि ने बाद में सुना था। मुरुडि लौट जाना बाद में हुआ।

कहानी किवदन्ती की तरह थी, जैसे कि किवदन्ती सदा किसी-न-किसी जगह किसी-न-किसी तरह घटित होती रहती है। इस तरह चीजों के घटित होने से ही इतिहास आगे बढ़ता है। किवदन्ती ऐसी थी कि धानी मुंडा उसी में अमर हो गया। उसका भूखा और लड़ाकू अस्तित्व महाकाव्य के समान विशाल और विशिष्ट हो गया।

किवदन्ती इस प्रकार थी।

बीरसा मुंडा के नेतृत्व वाले मुंडा विद्रोह के मुकदमे में अभियुक्त और जेल काटने वाला असामी धानी मुंडा राँची जेल में सजा काट रहा है। निकलने के बाद उसे राँची और चाईबासा से बाहर रहने की आज्ञा देकर पलामू भेजा गया, टाहाड़ थाने के अधीन मुरुडि गाँव में। मुरुडि में पुलिस चौकी है। धानी खतरनाक असामी है। उसके बारे में चौकी को सावधान कर दिया गया। उसका नजरबन्दी की हालत में रहना ही अच्छा था, क्योंकि वह जेल में पड़े बीरसा के 'मैं फिर लौटकर आऊँगा' जैसे प्रलाप पर विश्वास करता था। मरे हुए के प्रलाप पर विश्वास करना खतरनाक है। धानी के हाथों में किसी हथियार का रहना भी खतरे की बात थी। खासकर तीर-कमान। कुछ दिन इस तरह रख सकने पर धानी समय के नियम से मर जायेगा।

धानी के गायब होने से मुरुडि पुलिस चौकी और टाहाड़ थाना बड़ी मुसीबत में पड़ गया। किसी भी तरह उसका पता न चला और राँची और चाईबासा को सावधान कर दिया गया। मुंडा लोग अपने घर में मरना अच्छा मानते हैं। धानी कायदे से अलग किस्म का आदमी था। चाईबासा उसका घर नहीं था और जिन्हें वह छोड़कर गया था वही उसके अपने थे। लेकिन चाईबासा कभी उसका कर्मक्षेत्र था। धानी कहाँ जा सकता है? पन्द्रह बरस पुराने खाता-पत्तर खोजने पर बहुत-से गाँवों के नाम मिले। उन सारे कागजात को उलटते-पुलटते अचानक अधिकारप्राप्त अफसर को रोशनी की एक किरण दिखायी दी। चाईबासा मिशन के मुंडा भाषा जानने वाले एक उत्साही फादर थे। वे बोले, बीरसा की मृत्यु के दिन बीरसा के साथ के पुराने योद्धा सैलराकार जाते हैं और उसे याद करते हैं छिपकर। इसलिए धानी कहाँ जा सकता है, उसके लिए और लंबा-चौड़ा इलाका नहीं है। समझ लिया जाये कि जेजुड़ थाना ही उसके जाने की जगह के सबसे पास का थाना है। जून महीने में बीरसा की मृत्यु का दिन जिस तरह समीप आता जाता है, बहुतेरे धानी मुंडा पकड़े जा सकते हैं। 'धानी' नाम बहुतों का है। अफसोस की बात है, पकड़े जाने वालों में कोई भी वह असली धानी मुंडा नहीं है। बहुत जोश दिखाने वाली पुलिस, और तो

हार-पीटकर दस-बीस धानी मुंडा पकड़ लाती है और थाने के मुंशी परेशानी में डाल देती है। धीरे-धीरे लगता है कि सारी घटना गढ़ी हुई नी है।

सब लोग फिर ऊब गये और एक दिन शाम को जेजुड़ के हाट में बड़ी ल-पहल हो उठी।

धानी मुंडा आ रहा है! सिपाही ने बताया। हेड कांस्टेबल को लेकर रोगा मुनेश्वर सिंह फ़ौरन चल पड़े और एक ग़ैर-मामूली दृश्य देखा। खकर डरते हुए बन्दूक निकाली।

एक हाथ में वलोया और दूसरे हाथ में धनुष सिर की ऊँचाई तक उठाये एक कमजोर और पकी देह का वृद्ध मुंडा बढ़ रहा था। उसके दोनों ओर आदिवासी जनता थी। उसने हाँक लगाकर कहा, "मैं धानी मुंडा हूँ। मुझे भगा दिया था। मैं फिर आ गया हूँ। कहाँ है थाना? मैंने कोई भी थाना नहीं देखा। मैं कोई भी रुकावट नहीं जानता। मैं आ गया हूँ।'

"ठहरो, रुको।" मुनेश्वर सिंह चीखे।

धानी विना दाँत के मुँह को कँपा कर बच्चों की-सी खुशी में हँसा और बोला, "कोई भी पुलिस मुझे रोक नहीं सकती। मैं आ गया हूँ, मैं वही धानी मुंडा हूँ।"

"धानी मुंडा! धानी!"

"तू डोनका है!"

"धानी!"

"तू वही खोया मुंडा है।"

"धानी!"

"अरे कानू! साली कहाँ है? परिवा कहाँ है?"

बूढ़े खुशी के साथ बूढ़ों से बातचीत करते रहे। मुनेश्वर सिंह एक और मुंडा विद्रोह की संभावना देख रहे थे। धानी बड़े उल्लास से वलोया और धनुष शून्य में घुमाकर नाचते हुए बोला, "मैं घर लौट आया हूँ। नीचा होकर बैठूं, धूल खाऊँ, घर की धूल खाऊँगा। घर की धरती में भात की सुगन्ध है। मिट्टी खाऊँगा!"—सचमुच धरती में मुँह रगड़ डोनका रो पड़ा, धानी हँसता था और रोता था। मुनेश्वर सिंह ने धानी के सिर पर गोली चलायी।

इस तरह देश-निकाले की आज्ञा की उपेक्षा के परिणामस्वरूप खतरनाक धानी मुंडा की मृत्यु हुई और जिनकी लिखित भाषा नहीं है, उन सारे मुंडाओं ने धानी की कहानी को वीरता की कहानी के साथ मिलाकर गान बनाकर धानी को अमर बना दिया।

"तुम जानो।"

"लड़का साधारण नहीं है। नदी के नाम पर उसका नाम है।"

"वह तो वंश का एक नियम है।"

उसके बाद...मुरुडि में...सब कहते हैं कि लगता है उसने धानी मुंडा से कोई मंतर सीख लिया है।

"इस बात को छोड़ो। धानी मुंडा ! मेरे बेटे की बातों में उसका नाम क्यों लेते हो ? कोई मुसीबत लानी है ? पुलिस पकड़ बुलायेगी।"

"नहीं, नहीं।"

"तुम्हारा उधर ध्यान क्यों गया ? धानी था बीरसाइत, और बीरसा भगवान तो पहानों को नहीं मानते थे ?"

"फिर भी...!"

चोट्टि लोगों के समाज में माँ का सम्मान बाप के समान था। चोट्टि की माँ ने सब-कुछ सुनकर पति से कहा, "बात बुरी नहीं है। पहान के साथ दारोगा, लाला, ठेकेदार, जंगल के बाबू—सभी का अच्छा संबंध है। हमें तो कहने को कुछ भी नहीं है, पूर्ति मुंडा को सोना मिलने की कहानी एक सम्पत्ति की तरह है, चोट्टि का मंतर पढ़ा हुआ तीर अब नयी सम्पत्ति बन रहा है।"

"वह क्या ?"

"सभी कहते हैं कि तीर में मन्तर था। मन्तर। असल में उसका हाथ बहुत पक्का है। हिरन मारता है, पाखी मारता है, हमें मांस खाने को मिलता है, इससे सब चिढ़ते हैं। नहीं तो तीर में कैसा मन्तर ?"

"तो ब्याह की बात ?"

"होने दो।"

"समाज को भोज देना होगा।"

"उधार ले लेंगे।"

"उधार ले लेंगे ! वंश में किसी ने नहीं लिया।"

"सभी लेते हैं।"

"उधार लेने से चुकती नहीं होता।"

"पता है।"

"मकान-जमीन छोड़कर निकलना पड़ता है।"

उनका पहान भरत मुंडा बोला, "अच्छी जमीन होने पर महाजन कर्जा देता है। तेरी वह जमीन बेकार है, महाजन उधार न देगा। उस जमीन पर दखल करने से उसे फायदा ?"

"तब कोई आसान बात बताओ।"

कहानी पुलिस के द्वारा मुरुडि पहुँची और क्रमश: चोट्टि को पता लगा। चोट्टि के जीवन के साथ इस तरह एक कहानी और जुड़ गयी। चोट्टि मुंडा के जीवन में सब-कुछ एक-न-एक कहानी थी।

तीन

चोट्टि मुंडा के जीवन में सब कहानियाँ हैं। मुंडा लोगों की भाषा की लिपि नहीं है। इसीलिए महत्वपूर्ण घटनाओं की कहानी बनाकर वे किंवदन्ती बना देते हैं, गाना बनाकर रखे रहते हैं। वही उनका इतिहास भी है। धानी मुंडा का समाचार पुलिस की रिपोर्ट के अनुसार मुरुडि पुलिस चौकी पर ठीक-ठीक पहुँचा।

चोट्टि ग्राम में क्रम से समाचार पहुँचा : बीरसा भगवान जब जेहल में थे, इस बात को अकेले धानी मुंडा जानता था कि भगवान फिर लौटकर आयेंगे। उनके शरीर का मरण है, लेकिन उनकी आत्मा का विनाश नहीं हो सकता है। वह धरती के आबा हैं, पृथ्वी के जनक। धानी यह जानता था। भगवान की देह मर जाती है। धानी जेल में मेहनत करता है।

धनुक और तीर तुम उठाओगे नहीं।
रांची और चाईबासा में आओगे नहीं
जब तुम जेहल से निकले
पुलिस के बड़े साहब ने यह बात कही॥
धानी, तुम जेहल से निकले
एक आग के तीर ने तुम्हें राह दिखायी,
तुम मुरुडि में आये
जहाँ जेहल से निकले थे॥
मुरुडि में तुम जिसके यहाँ ठहरे वे पुण्यात्मा हैं
मुरुडि का जल-आकाश-माटी पवित्र हो गये हैं
धानी, मुरुडि में तुम्हारे रहने से
धानी, तुमको धरती के आबा ने पुकारा है
उनकी देह के मरण के दिन सैलराकार में

सुनकर अँधेरे में तीर छोड़कर वराह मारता था। संध्या को चंद्रमा की रोशनी में उड़ते पक्षी मारता था। उसके तीर में मंतर है। उसको हराना किसी के वस का नहीं है।" चोट्टि ने सब वातें सुनीं। उसने मन-ही-मन धानी को याद किया।

कुम्हड़ा तीर की चोट से गिर गया, कलसी रह गयी। विसरा और पहान ने आश्चर्य से एक-दूसरे की ओर देखा। उसके वाद पहान ने नाचना शुरू किया। जीत गया, चोट्टि गाँव जीत गया। दस वरस वाद पहान का वेटा दूसरा पुरस्कार ले गया था। उसके वाद कोई न ले सका।

एक सूअर, एक कपड़ा, पाँच रुपये।

सूअर मारकर स्थानीय आदिवासियों के साथ उत्सव मनाया गया। जो लड़का द्वितीय हुआ, उसने चोट्टि से कहा, "माघ मास में जुजुहातू के मेले में चलेंगे। वहाँ सूअर देते हैं, दस सेर चावल देते हैं।"

"दस सेर चावल!"

"हाँ जी। तुम्हारे रहने पर हिम्मत होगी।"

"वाप से पूछ लूँ। पहान से पूछ लूँ।"

पहान ने शराव पीते-पीते कहा, "जरूर चलेंगे।"

चोट्टि सोचते-सोचते घर लौटा। लौटकर वाप से वोला, "आवा, एक वरस तक आसपास जितने मेले होते हैं, उन मेलों में जाने दोगे?"

"जाकर तीर खेलेगा? उससे जिंदगी चलेगी?"

"तुम्हारी तरह महाजन का खेत जोतकर जीवन नहीं वीतेगा, वावा। तीर सभी चलाते हैं। लेकिन यह अभ्यास की चीज है।"

"तू कहना क्या चाहता है?"

"तीर चलाकर अगर रुपये मिलते हैं तो उन रुपयों से भोज देंगे।"

"सिर्फ चावल खरीदना होगा?"

"चावल ख़रीदेंगे, मद वनायेंगे, मांस मैं ले आऊँगा।"

विसरा चुप लगाये रहा।

माँ वोली, "उधार नहीं लेंगे?"

"न! उधार लेने से वेगार करनी होगी। और वेगार तेरे वंश में सवने की है। मुरुडि में देखा। यहाँ भी देख रहा हूँ।"

चोट्टि के जीवन में सव कहानी थीं। कोई मुंडा लड़का उसकी तरह आचरण नहीं करता था। लाला वैजनाथ ने विसरा से कहा था, "रुपयों के लिए क्या सोच? उधार ले ले। वेगार कर चुका देना।"

"ना, उधार नहीं लूंगा।"

"नहीं लेगा?"

"ना।"

"नही लेगा, तुम लोगों की बुद्धि जंगली है।"

"बुरा मत मानना, महाराज।"

"बुरा ? बुरा क्यों मानूंगा ? लडका तीर खेल रहा है, तमाम रुपये लाता है। लेकिन यह मतर-पढे तीर की बात क्या सुनी जा रही है ?"

"यह किस्सा-कहानी है, महाराज।"

लाला बैजनाथ ने पुलिस के दारोगा से कहा, "बिसरा मुडा की बात नही समझा।"

"क्यों ? वह तो बडा भला आदमी है।"

"उधार क्यों नही लेता ?"

"नही लेता। देखिये लाला बाबू, इसे लेकर गडबड़ मत करना। मेरे थाने में आदिवासी लोगों को लेकर कोई हंगामा नही है। मैं कोई हंगामा नहीं चाहता। सात बरस और नौकरी है, शांति से नौकरी करके जाना चाहता हूं। आदिवासी लोगों को लेकर गडबड करने से मुश्किल होगी।"

"न-न, हंगामा क्यों होगा ?"

"बिसरा का लड़का सारे तीर के खेलों में कैसे जीतता है ?"

"उसका तीर मतर-पढा है।"

"क्या ऐसा होता है ?"

"जरूर होता है। एक कहानी सुनिये।"

"कहिये।"

"नरसिंहगढ के राजा को जानते हैं ?"

"मैं ऐसे रईस आदमी को कैसे जानूंगा ? बस नाम-भर जानता हूं।"

"उसके सौतेले भाई थे। उनके ही राजा बनने की बात थी। गद्दी पर उन्हें ही बैठना था। वे गये शिकार खेलने, और जंगल में एक कोठी में थे, छप्पर के छाजन का बंगला। उनके ही राज में। वर्तमान राजा की माँ ने दीवान को पकड़ा। उसके बेटे को राजा बनाना होगा। लेकिन कमिश्नर साहब तो सुन नहीं रहे थे। दीवानजी ने वादा किया।"

"इसमें मतर की क्या बात है ?"

"उनके इलाके में था भरत महतो। बहुत बडा गुनी था। दीवानजी की बात पर वह बोला, काम पूरा करूंगा, लेकिन मुझे लगान की दस बीघा ज़मीन देनी होगी। दीवानजी ने उस बात को मान लिया। भरत ने तभी रात में मतर पढ़कर जलता दीपक हवा में उडा दिया। उस दीये ने चलते-चलते जाकर जंगल का बंगला जला दिया। बडे कुमार मर गये।"

"छोटे कुमार राजा बन गये ?"

"बन गये, लेकिन और भी क़िस्सा है।"

"क्या ?"

"दीवानजी को कुबुद्धि आयी। भरत को बुलाकर उन्होंने कहा, 'ले ...ना दस रुपये। ज़मीन तुझे नहीं मिलेगी।' तो भरत बोला, 'जी मेहरबान, ...यह रुपये आप रखिये।' लेकिन काम पूरा होने पर बाद में दीवानजी कच-...हरी में बैठे थे। सहसा सबके सामने उनके पूरे शरीर में आग भड़क उठी। जलते-जलते मर गये।"

"ऐसा तो हो सकता है।"

"तो बिसरा के बेटे का तीर मंतर-पढ़ा क्यों नहीं हो सकता है ?"

"लालाजी, जिसका मंतर-पढ़ा तीर होगा, उसके दिन क्या भूखे रह-कर बीतेंगे, लँगोटी पहनकर !"

"ठीक कह रहे हैं।"

"वह तीर जिस हाथ में जायेगा वही निशाना लगायेगा ?"

"अरे बाबा ! वह तीर हुआ उसके बस में। और किसी के उस तीर को लेने पर तीर गेहुँअन साँप बनकर उसे डँस लेगा।"

"जाने दो उसकी बात। मुंडा लोग, जंगली लोग, तीर तो हमेशा ही छोड़ते हैं। तीर उनके संगी-साथी हैं।"

"हाँ।"

चोट्टि को पता भी न था कि मुंडा समाज के बाहर भी उसे लेकर किस्से बन रहे हैं। उस समय वह रोज़ तीर का अभ्यास करता था और शिकार करता था। हाट के दिन से पहले शिकार की चिड़ियाँ, हिरन का मांस चौकी के पुलिस वाले मोल ले लेते। स्टेशन के बाबू भी ख़रीदते। हिरन मारने पर खाल को नमक और राख घिसकर बड़ी हाट में बेच देता। इसके सिवा मेले में तीर छोड़ने की प्रतियोगिता में जाता। कोयेल ने कहा, "चोट्टि, तुझे तो मंतर-पढ़ा तीर मिल गया है, तो पागलों की तरह रोज तीर का अभ्यास क्यों करता है ?"

"वह अभ्यास ही मन्तर है।"

चोट्टि तीर खेल-खेलकर ही एक बरस में पच्चीस रुपये लाया। 1915-16 में पच्चीस रुपये बहुत होते थे। उसकी माँ ने एक गाय और ख़रीद ली। भोज का भात, मद सब हुआ, चोट्टि की बहू की नाक में चाँदी की नथुनी तक। बहुत खुशी की बात हुई। और चोट्टि के माँ-बाप दोनों की गाँव में मर्यादा भी बढ़ गयी। बहू लायी एक सूअर, एक बकरी। माँ की दो गायें थीं। इसी समय रेल लाइन तोहरी तक खुल गयी और रेल

लोगों की छावनी पडी। यह बाहर से आये लोग थे। इन्हें चोट्टि की माँ दूध दिया करती थी।

चोट्टि के लोगों के जीवन में यह समय सबसे अधिक सुख और शान्ति का समय था। मगर समय बहुत मामूली कारणों से बिगड जाता है।

बिसरा मुडा के घर का सुख-चैन लाला बैजनाथ को अच्छा न लगा। उसका सबसे बड़ा कारण था—बैजनाथ के खेत-खलिहान का काम स्थानीय मुडा, उराँव लोग करते थे। इनके सिवा कुछ अत्यज जाति के लोग थे। आदिवासियो से काम कराना बैजनाथ को ज्यादा अच्छा लगता था। आदिवासी लोग कल्पना से भी कम मजदूरी पर काम करते थे। खिटखिट पसद नही करते। जैसी बात करते, वैसा काम कर देते।

आदिवासियो का कर्जदार होना बडी सीधी बात थी। कागज पर एक बार अँगूठा-निशानी से जन्म-जन्म तक बेगार देते रहते। यह ठीक है कि यह बात अत्यज लोगो पर भी उसी तरह लागू होती थी।

अत्यजों और मुडा लोगो, जिनके साथ बैजनाथ का कर्जदार और महाजन का सबध था, के साथ काम करने मे ही अधिक चैन था। जिस तरह भी हो, अत्यज और आदिवासी लोगों का गरीब रहना ही उचित था। बिसरा अब वैसा गरीब न था। बिगडकर बैजनाथ ने एक दिन बिसरा को बुला भेजा।

"उधार न लेना हो तो न ले। खेत-जमीन के काम से तो आयेगा ? तू तो दिखायी ही नही पड़ता। तू क्या मुडा लोगो का महाजन बन गया है ?"

बैजनाथ ने 'महाजन' शब्द गौरव के लिए कहा। वह भूल गया था कि महाजनी कारबार मुडा लोग नही करते। बिसरा को इस बात से अप-मान लगा और वह बोला, "चोट्टि, कोयेल, मैं—गाय चराना, बकरी चराना, सूअर भगाना इन सब कामो से निबट नही पाते, इसीलिए नहीं आते। मुडा लोग उधार-कर्ज लेते है किन्तु महाजनी नही करते। महाजनी करके भाइयो का खून नही चूसते। तुमने महाजन कहकर मुझे गाली दी, महाराज।"

दोनो एक-दूसरे का मतलब न समझने के कारण गुँथ गये।

बैजनाथ बोला, "महाजन कहना गाली देना होता है ?"

"मुडा तो महाजन नही होते।"

"मैंने गाली दी ?"

"तुमको अगर कहूँ कि मुंडा हो गये हो ?"

"मुझे गाली दी ?"

"इससे भी बडी गाली होती है ?"

"मुंडा क्या घृणा की चीज़ होते हैं ?"

गुस्से में विसरा गाँव चला आया। पहान के घर गया और बोला, "लाला वैजनाथ ने मुंडा लोगों को 'महाजन' कहा।"

धीरे-धीरे चोट्टि गाँव के सारे मुंडा विगड़ गये। 'महाजन', 'सूद' इत्यादि शब्द मुंडा लोगों के निकट बहुत घृणा के थे। बड़े दुख की बात थी। महाजन की बात के अनुसार कागज़ पर अँगूठा-निशानी लगाकर वे सूद के जाल में जकड़ जाते हैं। फ़सल की बुआई के समय मुंडा लोग नहीं आये।

सब बोले, "लाला पुलिस के पास जायेगा।"

पहान बोला, "जाये! कुछ अपराध नहीं किया है। और दारोगा मुकुन्द पाँडे है। वह मुझे पहचानता है।"

वैजनाथ पुलिस के पास गया। जय बाबा विश्वनाथ। मुकुन्द पाँडे रहता तो कहता, आदिवासियों के साथ गड़बड़ मत करो लालाजी। मेरे इलाक़े में कोई गड़बड़ नहीं है। सात बरस और मेरी नौकरी है और मैं शांति से नौकरी करना चाहता हूँ।

मुकुन्द पाँडे नहीं था। छपरा में उसकी ज़मीन-जायदाद को लेकर मामला चल रहा था। वह छुट्टी पर गया हुआ था। उसके बदले जो दरोगा था उसका नाम महावीरसहाय था। उसके आगे पंद्रह बरस की नौकरी थी और उसका खून गरम था, और नौकरी में शुरू से ही 'शान्ति चाहिए' कहकर चिल्लाने वालों से वह ख़फ़ा रहता था। चोट्टि अंचल यों ही दूर है, अगर यहाँ कुछ हो जाये तो राँची तक ख़बर पहुँचेगी भी—इस बात का विश्वास उसे नहीं था।

क्या हुआ, क्या नहीं हुआ, उसने सब जान लिया। बोला, "आप जाइये, मैं देखता हूँ।"

लाला वैजनाथ उसी चोट्टि ग्राम का रहने वाला था। हर आदमी उसका जाना-पहचाना था। वह उधार देता था, सूद लेता था, बेगार लेता था। लेकिन चूँकि उसका संसार भी उस गाँव में था, इसलिए ऐसी कुछ ज़ोरदार कार्रवाई भी नहीं करना चाहता था जिसका नतीजा बुरा हो। आदिवासी मजूरों को ख़फ़ा करने की तो उसकी ज़रा भी इच्छा न थी।

महावीरसहाय बोले, "वही कहता हूँ। ज्यादा कहने क्यों जाऊँगा? थोड़ा कहने से ही अगर काम हो जाये तो?"

"विसरा से मत कहियेगा। पहान से कहियेगा।"

वैजनाथ के यह बात कहने के मतलब हुए कि आदिवासी समाज-व्यवस्था में उनके पहान या पुरोहित हुए ग्रामसमाज के सिरमौर। वे कोई

समस्या होने पर पहान के पास बैठकर सोच-विचार कर ठीक कर लेते हैं। ऐसा भी हो सकता है कि पहान और ग्राम-प्रधान अलग-अलग हों। तब इस हालत में ऐसा न होता। बैजनाथ को आदिवासी समाज का नियम मालूम था।

महावीरसहाय ने सोचा, बैजनाथ सोच रहा है बिसरा से सीधे-सीधे कुछ कहने का अर्थ है गड़बड़ पैदा करना। निश्चय ही बिसरा शैतान आदमी है। उसने बिसरा को पकड़कर लाने के लिए दो कांस्टेबल भेजे।

चोट्टि ग्राम के मुंडा-उरांव लोगों ने कभी नहीं देखा था कि उनको पकड़ने के लिए गांव में पुलिस आती हो। उनकी समझ में नहीं आया कि मामला क्या है। चोट्टि नदी के बहाव से ऊपर पानी का एक छोटा झरना है, वहीं नदी तक दो सौ फुट उतरकर फिर समतल है जहां यायावर बतखें मारने के लिए अंग्रेज़ों का कैंप लगता था। रांची के साहब लोगों का। गांव वालों ने सोचा, उसी कैम्प के किसी काम से पुलिस आयी है। उस समय भी बीच-बीच में घूम-घूमकर तम्बू गाड़कर ज़िले के अफ़सर लोग आंचलिक समस्याओं का समाधान और उन पर विचार करते थे जिसके फलस्वरूप आदिवासी और ग्रामवासी लोगों की बहुत-सी प्रार्थनाओं पर वहीं-का-वहीं विचार हो जाता। गरीब लोग बहुत-से झंझटों से बच जाते। इस नियम से ज़मींदार-रैयत-महाजनों को विशेष असुविधा होती है, इसलिए इस कायदे को दूसरे कारण दिखाकर वापस ले लिया गया। अफ़सर और प्रजावर्ग के लोगों में असली सबंध हो जाना सरकार की, विदेशी या स्वदेशी सरकार की, इच्छा नहीं होती। संपर्क का पूरी तरह अवास्तविक स्तर पर रहना ही सरकार के लिए अच्छा है। ऐसा होने पर अफ़सर की नज़र में आदमी लोग नीचे से पाये परिसंख्यक अंकों के गणित-भर थे। लोगों की नज़र में प्रशासन राजा के हाथी के रूप में रहता है—ऐसा हाथी जो उनके काम नहीं आता और जिसे उनको पालना-पोसना पड़ता है।

गांव के लोगों की नज़रों में दोनों कांस्टेबल पहले तो कुतूहल की चीज़ बने रहे। शांत जीवन में हाथ में बैटन, लाल पगड़ी और मचमचाते बूटों वाली पुलिस देखने में अच्छी लगती है। लड़के-बच्चे उनके पीछे लग गये।

दोनों कांस्टेबल जब गाय चराने में व्यस्त बिसरा को कमर में रस्सी बांध-पकड़कर ले चले तो पहले तो सब अचंभे में पड़ गये, उसके बाद वह डर की बात हो गयी। ख़बर पहुंची पहान तक। पहान तभी बोला, "चल, चलकर देखूं कि हुआ क्या है।" पर सहसा उसे लगा कि वह बहुत ही बूढ़ा हो गया है। थाना-पुलिस-प्रशासन—उसे दुर्बोध्य लगे। बिसरा-से दब्बू और डरपोक आदमी की दारोगा को क्यों ज़रूरत पड़ सकती है? यह उनकी

समझ में नहीं आ रहा था। मुंडा लोग कभी समझ नहीं सकते कि प्रशासन की नज़रों में उनका कौन-सा अपराध सजा के क़ाबिल है।

दो-चार आदमी पहान के साथ चले। सना मुंडा डाक-बॅगले में पंखा-कुली का काम करता है, इसलिए आसपास के मुंडा समाज में, दिकू और पुलिस की हरकतें समझने के सिलसिले में उसकी शोहरत थी। उसने कहा, "चल, मैं चलूँ।" चलते-चलते पहान बोला, "तू आया, अच्छा हुआ। कौन जाने वह दारोगा मुंडारी बात समझता है या नहीं।" सना ने एक लोटा ले लिया क्योंकि पुलिस के पकड़ने पर प्यास ज़्यादा लगती है। जीभ नहीं हिलती, लगता है मुँह की लार बरगद का दूध बन गयी है।

वे जब पहुँचे तब तक महावीरसहाय ने बिसरा को लात-घूँसे-थप्पड़ मार-मारकर लहूलुहान कर दिया था। पहान के कातर प्रश्न के उत्तर में सहाय बोले, "इसे छोड़ा नहीं जायेगा। यह खुद लाला बैजनाथ के घर काम करने नहीं जाता, तुम लोगों को भी भड़काया है।"

"इसका क्या होगा?"

"जेल होगी।"

"जेहल?"

पहान की आवाज़ पहचानकर बिसरा रो पड़ा, "मैं जेहल नहीं ाऊँगा।"

"जाओगे या नहीं, यह लाला समझें।"

सना ने पूछा, "इसे हजित में रखेंगे?"

"नहीं तो क्या?"

"ज़रा छोड़ दीजिये, पानी पिला दें।"

"पानी हमारे पास नहीं है?"

सिर हिलाकर पहान बोले, "चलो, लाला के पास चलें।"

लाला बैजनाथ पहान की सारी बातें जानकर खुश भी हुए और घब भी गये। अभी भी चोट्टि वैसी ख़राब जगह नहीं हुई है कि मुक़दमा क आदिवासी-हरिजनों को क़ाबू में लाना पड़े। लाला की बात ही काफ़ी मुक़दमा करने पर लाला को खलारी भागना पड़ेगा। अभी वह समय है। और इस कारण अगर आदिवासी बिगड़ जायें? दूसरे गाँवों के दार-किसान लाला को ही दोष देंगे। आदिवासी बिगड़ सकते हैं। स जाति है। सारा कुछ होने के बाद दारोगा भी हाथ अलग कर लेगा। मुश्किल होगी।

बैजनाथ बोला, "मैं जाकर देखूँगा।"

"अभी चलो।"

"अभी क्यों ? मुझे गाली दे गया, थोड़ी उसकी सज़ा भुगत ले। मैंने भली बात कही, उसने गाली दी।"

पहान बोला, "महाराज, तुम्हारी बात हम कभी नहीं समझते। आज भी नहीं समझे। तुमने उससे कहा, वह महाजन है। मुंडारी में यह गाली होती है। तुम्हारा दोष नहीं है। उसने कहा, तुम मुंडा। वह गाली हुई, बिसरा का कसूर भी हुआ। हमारे लिए खुद के सिवा हमारा अपना कोई नहीं होता। एक आदमी के शरीर पर लगने से सबको कष्ट होता है। आज हो रहा है। लड़कों को होगा या नहीं, मालूम नहीं। बिसरा काम पर नहीं आता, गाय-बकरी की देखभाल करता है। हम सब आ रहे थे। उसका अपमान होने से हम सब नहीं आये। तुमने दारोगा से कहा कि बिसरा सारे मुंडा लोगों को भड़का रहा है?"

"यह बात मैंने नहीं कही।"

"तुम सच कह रहे हो या दारोगा सच कह रहा है? देखो महाराज! अभी भी मुंडा लोगों ने कुछ नहीं किया है। बिसरा अगर थाने पर मर जाता है, तो तुम्हारे कसूर से मरेगा। तुम्हें पाप होगा। तब अगर सब लोग भड़क जायें तो? उसका लड़का है, उसे तीर चलाने के खेल में कितना सम्मान मिला है, वह मानेगा?"

यह बात सुनते ही लाला के मन में मन्तर-पढ़े तीर की बात आयी। बाप रे! तिल का ताड़ बन गया। कहीं जान न चली जाये!

"चलो, मैं चलता हूँ।"

बैजनाथ के साथ पहान आदि फिर थाने आये। चोट्टि आकर बैठा हुआ था। घटना घटने के वक्त वह घर पर नहीं था।

बैजनाथ और दारोगा के बीच क्या बातें हुईं इसका पता न चला लेकिन दारोगा ने बिसरा को छोड़ दिया। बोला, "उसे जेल नहीं दी, छोड़ दिया। इसलिए गाँव पर जरीमाना हुआ। मुंडा लोग मुझे थाने पर पाँच रुपये दे जायें। तीन दिन के अन्दर।"

चोट्टि आगे बढ़कर आया। "अभी नहीं दूँगा। मेला में खेल जीतकर तुमको रुपया दूँगा। अभी तो गाँव में पाँच रुपये नहीं हैं।"

"तू कौन है?"

"मेरे बाप को पकड़ा था।"

"रुपये देगा? तू देगा?"

"मैं दूँगा। मुंडा लोग झूठ नहीं बोलते।"

वे लोग चले गये। दोनों कांस्टेबल बहुत डरे-डरे रहने लगे। वे भी यहीं रहते हैं और आसपास की खबर रखते हैं। पहले के दारोगा दूसरी

तरह के थे। इस दारोगा की वात पर वे लोग विसरा को पकड़कर ले आये थे ज़रूर, लेकिन उन्होंने मारा नहीं था। अब वे आपस में वातें करते। चोट्टि गाँव में बैठकर मंत्रपूत तीर चलाकर मार सकता है। चोट्टि का तीर मंत्र-पढ़ा है, इसमें उन्हें कोई सन्देह नहीं। मंत्रपूत तीर न होता तो हर मेले में चोट्टि जीतता नहीं। थाना और दारोगा चोट्टि के पिता को विना कसूर तंग कर मारना चाहते थे। मरें! वे मरना नहीं चाहते।

दोनों सलाह कर रात के अँधेरे में विसरा के घर गये। चोट्टि को वुला कर वाहर ला दोनों ने हाथ जोड़े। वोले, "चोट्टि, अपने वावा से पूछ, उसको ले तो गये थे, वदन को हाथ नहीं लगाया। फिर भी हम ले गये थे, कसूर किया। तू जरीमाना के यह पाँच रुपये रख। हम दे रहे हैं। वन-जंगल में चाकरी करते हैं, इसी से डर लगता है। तू अपना तीर भेजकर हमें मत मारना। हमारे घर हैं, वच्चे हैं।"

चोट्टि वोला, "तुमको मारने को कहा था?"

"सवको मालूम है, तू मंतर जानता है। तेरे तीर भेज देने से वह दस थाने पारकर आदमी मारकर तेरे पास लौट आयेगा।"

वे रुपये रखकर भाग गये। तारों के प्रकाश में खड़े चोट्टि ने समझने की कोशिश की, मामला क्या है। उसके चारों ओर क़िस्सा वन रहा है। वह किंवदन्ती वना जा रहा है। रुपयों को उठाकर उसने घर में रख दिया। दूसरे दिन पहान से वोला, "थाने के सिपाही जरीमाना के रुपये दे गये। क्या करूँ?"

पहान वोला, "तुझ पर हरमदेउ की किरपा है।"

"क्यों?"

"अरे, लाला डर गया कि मंतर-पढ़ा तीर भेजकर तू उसे मारेगा। उसने भी कल रात मुझे वुलाकर तुझसे कहने को कहा था कि तू उसे माफ कर दे। उसने भी जरीमाना के रुपये दिये हैं।"

"यह कैसी वात है?"

"तुझे तो मंतर आता है, मेरे वाप। नहीं तो मुंडा ग्राम पर जरीमाना हो और लाला वह जरीमाना दे, यह किसी से नहीं सुना। जो वाप से नहीं हुआ, तूने लड़का होकर दिखा दिया।"

"पर सुनो।"

"कहो।"

चोट्टि की कहने की तवीयत हुई, उसे मंत्र-वंत्र नहीं आता। मगर फिर उसने यह भी समझा कि इस वात का पहान भी विश्वास नहीं करेगा।

"कह रे।" वह फिर बोला।

पहान खिन्न और गंभीर आवाज में बोला, "रुपये तेरे कारण से हैं, तुझे बता दिया। अब जिस-जिस के रुपये हैं, उन्हें लौटाना होगा।"

"मैं भी वही कहने आया था।"

"चोट्टि रे! दस रुपये बहुत होते हैं। रुपये में मन-भर चावल आता है। लेकिन मुंडा जात में ऐसे रुपये कोई नहीं लेता।"

"तीर खेलकर रुपये दूंगा, यह कहा है। वही दूंगा। नहीं तो मेरा धर्म नहीं रहता। मेरा बाबा सूअर काटने पर रोता है। ऐसे बाबा को जिसने पकड़वाया, जिन्होंने पकड़ा, उनके रुपये लेकर बाबा का जरीमाना का रुपया नहीं दूंगा।"

"ठीक। मैं रुपये लौटा आता हूं। एक काम अच्छा हुआ, हम बिना दोष उनसे पंद्रह आना डरे रहते हैं। वे तेरे कारन हमसे एक आना डरे रहते हैं। लाला भी डर गया है।"

चोट्टि घर लौटा। बाप से बताया। सारी बातें बतायीं। बिसरा सुनते-सुनते अचानक बोल पड़ा, "तीर मेला के रुपयों से और थोड़ी-सी जमीन मोल लेनी होगी।"

"क्यों?"

बिसरा पिटी हुई डरी आंखों में बोला, "तेरी बहन का ब्याह हो गया है। कोयल का ब्याह होगा। तुम लोगों की गृहस्थी बढ़ेगी। तब इस जमीन से काम चल पायेगा?"

"खरीदी तो हुई है न।"

"वह भी बेकार जमीन। अच्छी जमीन लेने पर लाला ले लेगा।"

"न बाबा, नहीं लेगा।"

"प्रायश्चित भी करना पड़ेगा।"

"किस बात का?"

"मुझे जेल में लिया था न।"

"जेहल में कहां, बाबा? थाने में।"

"तू जानता है? तो जान। तेरा तीर मतर-पढ़ा है।"

"ना, बाबा, ना।"

कई दिन बाद बिसरा बोला, "उस दिन से मन बहुत दुखी है, चोट्टि! अच्छा, अगर तू मंतरबल से तीर चलाये तो वह तीर दारोगा के हाथों को जख्मी नहीं कर सकता?"

"देखूं।"

चोट्टि मां के पास गया। मां बोली, "वह किये बगैर फिर क्या बात

ई। हाँ चोट्टि, आँखें घुमाकर क्या कहता है, पागल हो गया है क्या?

पहान ने सब-कुछ सुनकर कहा, "यह बहुत चिन्ता की बात है। तू आ, तुझे सब बताऊँगा। बिसरा की माँ मेरी दूध की माँ थी। मैं बिना माँ का बेटा हूँ।"

"अब धान काटने का समय है।"

"तू तो जाना मत।"

"नहीं। मन नहीं करता।"

"इससे लाला ने समझ लिया है कि तू उसे जरूर मारेगा। मैं कहता हूँ, नहीं मारेगा। पता नहीं उसने क्या समझा है। वह जलपान देता है, और दो पैसे भी।"

"जलपान और दो पैसे?"

"तू मत जा। कोयल को भेज दे।"

चोट्टि की माँ गुस्से से भरी थी। वह बोली, "तेरे बाप के रहते ऐसा नहीं चलता। हुँह, दो पैसे! दो पैसों में नमक-मिर्च-तेल भी खरीद नहीं सकते।"

पहान भी बोला, "कह दूँगा, चोट्टि को समय नहीं है। कोयल को देख-कर जानेगा कि तुझे उस पर गुस्सा नहीं है।"

चोट्टि गहरी साँस लेकर बोला, "सचमुच समय नहीं मिलता। गाय बज्जात हैं। जंगल में घुस जाती है। कभी बाघ मार देगा।"

बाघ की बात उठने पर पहान बोला, "नेउन्द्रा में एक बाघ ने बहुत परेशान कर दिया है। बहुत-से गाय-बछड़े मार डाले हैं। वहाँ के पहान ने हा है, तू मार देगा तो तुझे बहुत-सा चावल देगा। तुझसे कहने को कहा।"

"वहाँ कोई नहीं है?"

"पकड़ में नहीं आता। मरे जानवर की लहास में जहर लगाने से नहीं खाता। कहते हैं कि बाघ नहीं, शैतान है। कोई बुरा आदमी प्रेत बन गया होगा। तेरे तीर से घायल होगा।"

"देखूँ।"

चोट्टि ठंडी साँस लेकर उठ आया। पिता के लिए उसके मन में बड़ी फ़िक्र थी। ऐसा कामकाजी आदमी अजीब अवसाद से सदा खिन्न रहे। जहाँ तक हो सके बात न करता। बीच-बीच में अपने-आप दो-एक बात कहता। पता नहीं उन बातों के क्या अर्थ होते! उस दिन अचानक बोला, "हमेशा घाटा खाता था, बेटे के भाग्य से बहुत दिनों से भात खाया, कोरा कपड़ा पहनता हूँ, यही जान कर मुझे जेहल में बन्द कर दिया। मुंडा क

भात खाना, कोरा कपड़ा पहनना कसूर होता है। यही आगे से पानी में सोना देखने पर मेरे पुरखे भाग खड़े हुए थे।"

आज आँगन में खड़ा-खड़ा कह रहा था, "यह सीधा पेड़ यहाँ कैसे आया? पहले तो नहीं था। गाछ काट देना पड़ेगा।"

गाछ हमेशा से था। इस पेड़ की डाल में झूला डाल बच्चों को सुला कर माँ काम करती थी। बाबा क्या पागल हुए जा रहे हैं?

यह एक फिक्र थी। घर-बार के काम का भार माँ के उठाने की बात थी। माँ तक बात-बात में चोट्टि के चेहरे की ओर देखती। यह सब लोगों का विश्वास था कि चोट्टि को मंत्र आता था, चोट्टि असाधारण है। इस विश्वास के पत्थर के-से भार से चोट्टि थक गया था। वह अकेला पड़ता जा रहा था। सेजुन्दा ग्राम जाकर वह बाघ मारेगा। इसका क्या ठिकाना?

चोट्टि की माँ बोली, "मैं तुझे जाने न दूँगी।"

"पहान ने कहा है।"

"पहान का बेटा जाये। वह बाघ नहीं है। बड़ा सियार है। तू मारेगा तो तुझे मारेगा। कोयल बीमार रहता है। बाघ अगर चोला आ रहा है, तुझे भी खो दूँगी?"

"उन लोगों ने आकर मुझसे क्यों कहा?"

"तू मत जाना।"

चोट्टि को बाघ न मारना पड़ा। रेन्ज के इन्जीनियर साहब ने गोली से बाघ को मार दिया। चोट्टि समझा कि अगर वह अभ्यास करेगा तो फिर की बाजी उसे जीतनी होगी। जीवन यात्रा में खुशी होती है, जीवन में सम्मान होता है, ईनाम मिलता है। एक बाजी जीतने के बाद दूसरी बाजी को लेकर उसके लिए किंवदन्ती बन गयी, उस किंवदन्ती को बनाए रखना उसका दायित्व है। लेकिन वह किंवदन्ती का नायक नहीं बनना चाहता था। चोट्टि मेला के तीर के खेल में जीतने वाले का जो सम्मान होता है, उसे वही पाना चाहता था। धानी मुंडा ने उसका जीवन उलट-पलट कर दिया था। लेकिन धानी ने वह कैसे किया उसे चोट्टि समझ नहीं सकता था।

दूर पहाड़ के नीचे के एक पत्थर पर चोट्टि ने तीर चलाने का अभ्यास करने के लिए जाना शुरू किया। उसके जीवन में एक किस्सा और जुड़ गया।

चोट्टि नदी के किनारे एक पेड़ के तले बसा था। गाँव का मुंडा था। चोट्टि गाँव के लोगों ने सोचा था मुंडा बनकर ही उजियाला-उद्गम होगा। लेकिन कुछ दिनों में ही पता चला कि मुंडा पूरा व्यस्त है। दुःख-धी-मान को भी सुनना है, उनका बैर रहा है। चढ़ाव का दूसरा और भी

घोड़े लेकर आया है। पहान बोला, "घोड़े की घास मोल लेने पर दाम देता है। दिन-भर घूम-घूम कर तसवीरें बनाता है, शाम को तंबू में बैठ कर कुछ लिखता है, बीच-बीच में चिड़ियाँ मारता है।"

चोट्टि के मन में इससे भी कोई कुतूहल नहीं हुआ। इक्कीस बरस की उम्र में समर्थ बाप के रहते गृहस्थी का भार उस पर है। मन बहुत खिन्न है। अब वह अपनी ज़मीन की देखभाल करता, भाई गाय चराता। खराब जानवर थे, इसलिए उसे भी बीच-बीच में जाना पड़ता था। कोयेल की उम्र उन्नीस हो गयी थी। उसका ब्याह आदि न कराना अन्याय होगा। उसकी अपनी पत्नी प्रसूता थी। माँ का हाथ बटाने के लिए एक बहू की ज़रूरत थी। वक़्त निकाल कर वह तीर चलाने का अभ्यास करता रहता। धानी के दिये तीर को उसने उठाकर रख दिया था। केवल तीर के खेल के दिन वह उस तीर को साथ ले जाता। धानी अब गीत बन गया था। काले मेघ पर सवार होकर वह सैलराकार में मिल गया था। बीच-बीच में चोट्टि को सन्देह होता कि धानी किसी दिन था भी? या वह केवल कल्पना, स्वप्नमात्र था? तब वह तीर को देखता था। पुलिस! पुलिस ने धानी को मारा था। पुलिस ने उसके बाप को पकड़कर बेकसूर मारा था। अब दारोगा भी डरता था कि चोट्टि तीर भेज कर उसे मार सकता है। वैसा अगर होता, तब तो चोट्टि धानी के तीर से कह देता कि जिस आदमी ने धानी को मारा है, जाकर उसे मार आ। चोट्टि कौन-सा अलौकिक काम नहीं कर सकता है, उसे लेकर तमाम किस्से हैं।

धानी नहीं था, इसलिए बहुतेरी बातें चोट्टि को नहीं मालूम थीं, मालूम न हुई। मुंडा लोग जब स्वतंत्र थे, जब उनके जीवन में दिकू और गौरमेन और ठेकेदार और कुली भरती करने वाले और मिशनरी नहीं घुसे, उस समय की ही बात सुनने को नहीं मिली।

सोचते-सोचते वह तीर छोड़ता। छोड़ता रहा। हाथ की तैयारी है या नहीं, यह देखने के लिए उस दिन संध्या के समय झीनी पूर्णिमा की ज्योत्स्ना में उसने उड़ती बत्तख मारी। मरी बत्तख निकालने नदी में उतरा और खड़ा हो गया। सामने साहब, हाथ में बत्तख। साहब साफ़ मुंडारी भाषा में बोला, "तुमने मारी?"

"हाँ।"

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"चोट्टि मुंडा।"

"नदी के नाम पर नाम!"

"नदी के नाम पर।"

"क्यो ? किस बार को पैदा हुआ था ?"

"सोमवार को।"

"तो फिर सोमरा, सोमाई, सोमना क्यो नही है ?"

"हमारे वश मे नदी के नाम पर नाम रखते है।"

"तुमने तीर चलाना कहाँ सीखा ?"

"क्यो ? खुद ही।"

"वाह ! खूब। शाम की चांदनी मे मैं तो बन्दूक से उड़ती हुई बत्तख नही मार सकता।"

"बत्तख तुम लोगे ?"

"नही, नही।"

"लो, मैं फिर मार लूँगा।"

"इससे अच्छा है कि कल आना, तुम्हारे साथ मे भी मारूँगा।"

"साहब, तीर मे आवाज़ नही होती। बन्दूक छोड़ने पर आवाज होती है और बत्तख डर कर उड़ जाती है। तुम तो तीर छोड न सकोगे।"

"यहाँ क्या कर रहे थे ?"

"अभ्यास।"

"क्यों ?"

"मेले मे तीर खेलूँगा।"

'कहाँ है मेला ?"

"नेउन्द्रा का मेला आने वाला है।"

"कल आना।"

"क्यो ?"

"तुम्हारी तसवीर बनाऊँगा।"

"मेरी ! तसवीर !"

"हाँ।"

घर लौट कर चोट्टि बोला, "माँ, साहब पागल है। कहता है, कल आना, तुम्हारी तसवीर बनाऊँगा।"

"शायद तेरा नाम और यश मालूम हो गया है।"

"दुत्, पगला है।"

दूसरे दिन साहब ने उसे सही-सही पकड लिया। बोला, "मैं तसवीरें खींचने ही आया हूँ। चलो, तुम्हारे गाँव चले। पहले मेरे तबू मे चलो।"

सचमुच साहब चोट्टि के साथ गाँव मे आया। पेंसिल को कई बार चला कर पहान की तसवीर खींची, हरमदेउ के थान की। बोला, "मैं यहाँ

ने और तसवीरें बनाने ही आता हूँ। इसीलिए तुम्हारी तसवीरें ...
हा हूँ।"

"मुंडारी क्यों बोल रहे हो ? तुम क्या मिशनरी हो ?"

"ना। लेकिन मुंडारी सीख ली है।"

"कहाँ ?"

"राँची में।"

सब चुप रहे। साहब अपने-आप बोला, "गजब ढंग है। ये लोग आपस में बातें करते हैं। मेरी बात का केवल जवाब देते हैं, बस।"

पहान ने चोट्टि की ओर देखा। साहब माने गौरमेन। चोट्टि गौरमेन को साथ ले आया है। ऐसी बात पहले कभी नहीं हुई। इसीलिए ऐसा होने पर लोग क्या करें, क्या कहें, कुछ पता नहीं।

सबको बचाया पहान की पत्नी ने, औरतों की सहज बुद्धि से। मुंडारी औरतें सामान्यतः मुसकराती रहती हैं। बहू ने हँसते-हँसते बानों से बना हुआ स्टूल लाकर साहब को बैठने को दिया। उसके बाद बोली, "तुम लोग आओ।"

गाँव की औरतें आगे बढ़ीं। एक के हाथों में पीतल की चमचमाती थाली में भुट्टे की खीलें, गुड़ का टुकड़ा था। एक और स्त्री पानी ले आयी। पहान की बहू बोली, "ठाकुरथान पर आये। जरा पानी पी लो। उसके बाद हमारी तसवीर बना दो।"

असल में पुरुषों को बगलें झाँकते देखकर स्त्रियों को मज़ा आया। साहब जब खाने लगा तो औरतों ने मुँहज़बानी गीत बनाकर गाया :

घर गौरमेन आयी है
गौरमेन ने तसवीर बनायी है
गौरमेन बन्दूक लेकर आयी नहीं
हम लोगों को मारा नहीं
गौरमेन ने परसाद खाया।

तभी साहब बोला, "और गाओ।" उसने गाना लिख लिया। औरतों ने फिर गाया। उसके बाद सब हँसने लगीं। सना की माँ ज्ञानी बुढ़िया थी। वह बोली, "पागल नहीं है रे। अच्छी गौरमेन है।"

साहब उसके बाद चोट्टि को लेकर उसका घर देखने गया। मुंडा का घर देखे, दीवारों पर बनी तसवीरें देखे, यह उसकी बड़ी इच्छा थी।

साहब का नाम था रोनाल्डसन। बिहार के छोटे लाट के दफ़्तर के सेक्रेटरी का भाई था। राँची में घूमने आने पर हफ़मैन की डिक्शनरी पढ़-कर पहले मुंडारी भाषा और मुंडा लोगों के बारे में उत्सुकता जागी

अनुसंधान किया। विलायत में कुछ काम न कराये जाने पर भी मुंडा भाषा सीखने की उसकी तबीयत हुई। मुंडा ग्राम और वहाँ के निवासियों की जानकारी के बारे में किताब लिखने की इच्छा जागी। चित्र बनाने की दक्षता उसमें थी ही। इन सब कारणों से उसका आना हुआ।

चोट्टि के बारे में फैले प्रवादों का उसे पता चल गया था और चोट्टि के साथ वह नेउन्दा मेले में गया। हमेशा की तरह चोट्टि ने लक्ष्यभेद किया। सूअर मारा गया और चोट्टि के अनुरोध पर मुंडा लोगों ने इन पगले गोरसेन को अपने भोजन का साथी रहने दिया। साहब ने मद न पीकर उन्हें ताज्जुब में डाल दिया और पेंसिल से सबकी आकृति बनाकर सबको खुश कर दिया। नेउन्दा का पहान बोला, "तू अगर अच्छा गोरसेन है तो हमें इतना कष्ट क्यों है?"

साहब बोला, "इस बात का जवाब उसे मालूम नहीं। लेकिन उन लोगों को चाहिए कि जब जहाँ अफसरों का तंबू लगे, वहाँ जाकर सीधे उनको अर्जी दें।"

पहान बोला, "कौन सुनेगा?"

"देकर देखा है?"

"नहीं।"

"देकर देखो।"

इसके बाद चोट्टि और साहब, साहब के तंबू में लौटे। साहब ने उसी आधी रात के वक्त चोट्टि को अपनी बनायी तसवीर दिखायी। अचानक चोट्टि ने देखा, धनुक और बलोया ऊँचा किये हुए धानी मुंडा की तसवीर है।

"यह तसवीर तुमने कहाँ खींची?"

"जेजुड़ में।"

"तुम जेजुड़ गये थे?"

साहब बोला, "यह एक आश्चर्यजनक आदमी था। ज्यों ही देखा कि वह आ रहा है, मैंने तसवीर खींच ली, उसकी तसवीर बनायी। लेकिन दारोगा ने उसे मार डाला। वह शायद बहुत बड़ा विद्रोही था। उसका नाम धानी मुंडा था।"

"तसवीर मुझे दोगे?"

'लो। ठहरो, कल लेना। मैं एक नकल बना लूँ।"

मद के नशे में भी चोट्टि ने नहीं कहा कि वह उसे जानता है। दूसरे दिन उसकी तसवीर और धानी की तसवीर उपहार में देकर साहब ने तंबू उठाया। चोट्टि ने धानी की तसवीर छिपाकर रखी। उसके बाद स्टेशन के

उसके सिवा दुनिया में भागने की जगह बहुत कम है।

मुंडा लोग बोले, "तीरथनाथ के पास जायेंगे।"

"क्यों?" चोट्टि ने पूछा।

"उधार लेंगे।"

"उधार देगा?"

"अँगूठा-निशानी लेने पर उधार देगा।"

"अँगूठा-निशानी देने पर कामिया—मजूर—बनकर बेगारी देना पड़ेगी।"

"देंगे। अभी तो जिन्दा रहना है।"

"पहान क्या कहता है, सुन।"

पहान बोला, "अँगूठा-निशानी देकर बेगारी देंगे। लिखी खुराकी चावल-गेहूँ में जुड़ जाती है, उसके लिए मैं 'हाँ' नहीं कहूँगा। यह बेगार दस पुरखों में भी नहीं चुकती। इसके फंदे में सब फँसते हैं। गंजू, दुसाध, चमार, धोबी—सबको देख लो बेगार में बँधे हैं। मैं किसी से 'हाँ' नहीं कहूँगा। पर इस बात में 'न' भी किसी से नहीं कही जाती। क्यों नहीं कहूँगा? तब तुम लोग कहोगे, कागज पर निशानी देने से खाने को मिलता।"

चोट्टि बोला, "छुटकारा कैसे हो?"

"छुटकारा नहीं है।"

"एक साथ काम-काज करते हैं, फिर भी गंजू-दुसाधों से पूछ लो न?"

उनका प्रधान बोला, "जिसकी तबीयत हो टीप देकर कर्ज ले। मैं क्या कहूँ? सुना है कि चोट्टि मुंडा हर काम कर सकता है।"

"क्या करने को कहते हो?" चोट्टि बिगड़ उठा।

"गुस्सा क्यों होता है? तुम लोग गरीब हो, हम भी हैं। हम कहते हैं, तोहरी में साहब आयेगा, देखेगा कि अकाल है या नहीं, तब खैराती देगा, और गौरमेन के 'अकाल' मानने पर मिशन के साहब-मेम भी आयेंगे। वहाँ जाकर अर्जी दे न।"

"थाने में अर्जी नहीं दूंगा।"

"यह दारोगा? यह तहसीलदार?"

"जाकर कहूँ।"

दारोगा बोला, "तुम लोगों को क्या समझायें? जंगली छोटे लोग। हाँ, सूखा है, लेकिन अकाल कहाँ है? अकाल में आदमी मरते हैं, गाँव छोड़कर भागेंगे, तब होगा न अकाल! सरकार का पैसा क्या ऐसा सस्ता है?"

"तीरथनाथ के सिवा किसी के घर गेहूँ-चावल नहीं है।"

"वह तो देना चाहता है।"

"टीप देने को कहता है।"

"बिना टीप के क्यों दे ?"

"तुम अर्जी नहीं दोगे ?"

"जब देनी होगी, तब दूँगा।"

धरम दुसाध थाने से निकलकर बोला, "चोट्टि, कुछ समझा ?"

"क्या समझूँ ?"

"तीरथनाथ और दारोगा आपस में मिले हुए हैं। दारोगा अभी अगर अर्जी देता, तो कुछ खैराती मिल जाती। तब तीरथनाथ बेगार के फंदे में इस गाँव को नहीं बाँध पाता। उसे इस मौसम में दो सौ किसानों की जरूरत है। बेगार में किसान मिल जायें तो काम बिना खर्च के निकल जायेगा। मैं जानता हूँ, मेरे परदादा ने उसके परदादा से टीप देकर सात पाई भुट्टा लिये थे। आज भी उसके लिए बेगार देते हैं।"

"इसलिए अर्जी नहीं देगा।"

"अब असाढ़ है। पानी नहीं है। लेकिन पलास, डाहार, कोमान्डि में पानी हुआ है। यहाँ भी हो सकता है। तब कौन टीप देगा ?"

"जा।"

" 'जा' क्यों ? चल। सबको चलना पड़ेगा।"

तीरथनाथ के कानों में भी खबर पड़ी। वह मन-ही-मन घुमड़ता रहा। स्टेशन ही यहाँ एक घूमने की जगह थी, उसके सिवा इस सूने अंचल में, स्टेशन पर जाने से दुनिया-भर की खबरें मिलती हैं। स्टेशन पर बैठकर उसने स्टेशन-मास्टर से कहा, "इस चोट्टि मुंडा ने बहुत शैतानी कर रखी है। उसके बाबा और मेरे बाबा में ऐसा क्या हुआ कि उसका गुस्सा ठंडा नहीं हो रहा है।"

"क्यों ? चोट्टि मुंडा तो बहुत शान्त लड़का है।"

"इस सूखे में, लोगों को धान-गेहूँ देने के लिए बैठा हुआ हूँ। न खुद लेगा, न औरों को लेने देगा। और उसके साथ सब छोटी जात वाले इकट्ठा हुए हैं। क्या ? मैं कागज लिखाऊँगा, बेगार लूँगा। आदिवासी और अछूत से बेगार लेना तो मेरा धरम है।"

तीरथनाथ की एक धोबिन प्रेमिका थी। उसके प्रेम-प्रसंग में मोतिया धोबिन ने कुटनी का काम किया था। मोतिया स्टेशन आयी थी अपने भांजे की तलाश में। मोतिया ने घर जाते हुए तीरथनाथ से कहा, "तुम्हारे बाप ने चोट्टि के बाप को 'महाजन' कहा था, उसमें यह सब गड़बड़ हुई।

इसके वाद तुमने चोट्टि के नाम कहा, 'शैतान जमा किये हैं।'

"कव कहा ?"

"अरे वाप ! कहकर 'न' कहते हो, महाराज ! यही तुम्हारा धरम है ? चोट्टि किसे भड़का रहा है ?"

झटपट मोतिया चोट्टि के पास चली गयी। सारी वात साफ़-साफ़ कहकर वोली, "दे वावा, उसे एक तीर मार दे। झगड़ा दूर हो।"

चोट्टि वोला, "अभी तोहरी जाऊँगा। साहव से कहूँगा। तुझे भी चलना पड़ेगा।"

"गौरमेन मार तो न देगी ?"

"ना, ना। मैं गौरमेन के पास गया हूँ। मैं जानता हूँ।"

"तेरे पास गौरमेन आया था न ?"

पहान भी वोला, "तो चल।" चोट्टि समझ गया कि पहान के रहने पर भी उसके ऊपर चोट्टि मुंडा समाज के नेतृत्व का भार चला आ रहा है और तीर के मामले में उसके मंत्रसिद्ध होने की वात पर सवके विश्वास करने के कारण आपत्ति-विपत्ति में दुसाध-गंजू-चमार-धोवी भी उसे काम का आदमी समझकर चलेंगे। वहुत ही गड़वड़ की वात है।

1924 के जून महीने में चोट्टि से जो दल पाँच मील वन पार कर तोहरी गया, इसके पहले वैसा दल कभी भी ऐसे उद्देश्य से नहीं गया। ज़मीन की पैमाइश के अफ़सर कैम्प डाले हुए थे। साथ ही, उस अंचल में दुर्भिक्ष है या नहीं, यह देखने का दायित्व भी उनका था। इस ख़वर का चोट्टि के दारोगा के पास से ही आना स्वाभाविक था। ग्रामांचल में दारोगा ही सरकार का प्रतिनिधि होता है। सरकार का नदी किनारे का अंचल चोट्टि था, नहीं तो सारा राजा और ज़मींदार का इलाक़ा था। मगर ये लोग तो दारोगा नहीं, ये लोग कौन थे ? आफ़िसर वंगाली थे। इस अंचल में कर्मक्षेत्र होने से मुंडारी, उराँव, आंचलिक हिंदी जानते थे। तीन पुरखों से राँची के वाशिंदे थे।

दारोगा वोला, "यह क्या ? मुंडा, गंजू, दुसाध—सव एक साथ ?"

"अर्जी है ?"

"भीषण सूखा है, कौए मर रहे हैं। किसी के घर गेहूँ नहीं है, मक नहीं है, चावल नहीं है, धान नहीं है। भूखे मर रहे हैं।"

"अर्जी है क्या ?"

"वहाँ दारोगा से कहा, वता दो—अकाल हो गया है। वह वता नहीं।"

"तुम कौन हो ?" अफ़सर ने पूछा।

"चोट्टि गाव।"

दारोगा बोला।

गाव जानते थे। यह जान-
कारी उन्हें थी। आंचलिक जमीदार या किसान और दारोगा आपसी
स्वार्थ देखते हैं।

चोट्टि ने सबकी ओर देखा। उसके बाद बोला, "मैं ही बता रहा हूँ।"

उसने सब साफ-साफ कहा, "तीरथनाथ ने कहा है, मैं सबको मिलाये
हुए हूँ। हम एक हो गये हैं, भूख की परेशानी में। किसी को खफा नहीं
करते।"

अफसर बोले, "ऐसा तो नहीं लगता कि सरकार यहाँ कोई सेंटर
खोलेगी।"

"क्यों ?"

दुगन दुसाध ने कुछ दिनों कोयला खान में काम किया था। हिंदी
लिखना-पढ़ना जानता था। वह बोला, "हुजूर, हम तो बिना खाये मर
जायेंगे।"

"मान लो अगर खैराती जाये तो उसमें भी समय लगेगा।"

इस दारोगा के साथ तीरथनाथ के स्वार्थ का कोई संबंध नहीं था।
वह बोला, "तुम सभी अगर तीरथ लाला के खेत में काम करो तो वह
देगा ?"

"बेगार के खाते में टीप लेगा।"

लोगों के सूखे और दीन चेहरे देखकर अफसर बोले, "देखूँ।"

वे प्रशासन को राजी न कर सके। लेकिन जैन मिशन और सरतोली
के बैपटिस्ट मिशन को खबर भेजी। इन दोनों मिशनों ने चोट्टि आकर
लंगर खोला और लगभग महीने-भर खाना बाँटने का काम चलाया।
उसके बाद अचानक वर्षा हो गयी। इन दोनों मिशनों की सहायता का यश
भी चोट्टि को मिला। पहान घमंड के साथ कहता फिरता, "चोट्टि के साथ
गौरमेन का परिचय है। इसी कारण सहायता मिली।"

"बेगारी के कागज पर अँगूठा नहीं लगायेंगे।"

"खुराकी कर्ज दो।"

"जिसे जो दोगे मजूरी में काटोगे।"

तीरथ ने कहा, "मारोगे क्या ? तो हम पर चोट क्यों ? खैरात देगी
तो गौरमेन देगी। मैं क्या गौरमेन हूँ ? टीशन का बाबू गौरमेन का आदमी
है। उसके पास जाओ। सूखा मैं लाता हूँ ?"

"महाराज, काश अगर मार सकते! मारने की इच्छा होती है। यह

मारे हाथ में धनुक जो झूल रहा है। तीर कहता है, लहू चाहिए।
"मारने पर तुझे फाँसी होगी, चोट्टि !"
"तुम तो लौटकर नहीं आओगे !"
तभी चील की तरह चिल्लाकर तीरथ की माँ ने बुलाया। बोली, "तेरा बाप इस जंगली देश में खेती करके चोट्टि के बाप को घायल कर खुद मर गया। तू भी मरना चाहता है? हमारे भाइयों ने इस मौके पर धरमक्षेत्र खोल दिया। हम जैन हैं। दे देने से तुझे कमी पड़ेगी? दे, उन लोगों को खुराकी दे। मंतर पढ़कर तीर भेज देने पर तू जिन्दा रहेगा? तुझे डर नहीं लगता ?"
पत्नी बोली, "जंगली जात का गुस्सा! उन्हें जेहल, फाँसी का डर है? गुस्से में वह जात लाश को कंधे पर लादकर थाने चली जाती है। कहती है, गुस्से से मार दिया। उसके बाद जेहल-फाँसी चढ़ते हैं। जब धोबिन घर से आयेगी, तीर मार देगी।"
"हाँ, तीर मारना हो गया।"
"कौन बचायेगा? दारोगा?"
माँ बोली, "अरे गधे, तू मर गया तो तू तो गया। उसके बाद जिसे जेहल, जिसे भी फाँसी लगे उससे क्या तेरी जान लौट आयेगी?"
इन सारी बातों की सचाई के बारे में गुमाश्ता भी हाँ-में-हाँ मिलाता और कहता, "हमें छुट्टी दे दीजिये। उस लातेहर में ज़मींदार के लगान बढ़ाने पर गुमाश्ते को तीर मार दिया। मैं उस जंगली जात से डरता हूँ।"
तीरथनाथ को लगा कि यह उसकी पराजय है। सारे ज़मींदार-महाजन-बड़े किसान इस समय अँगूठा-निशानी लेकर बेगार क़ायम कर रहे हैं। उदास चेहरे से वह बोला, "पिछली साल का मक्का उनको दे दो। उसमें घुन लग गये हैं, बिकेगा नहीं।"
गुमाश्ता बोला, "अढ़ाई सेर देकर दस सेर लिख लूंगा। सोच क्या रहे हैं?"
इस समय छगन दुसाध की लिखाई-पढ़ाई काम आयी। उसने बड़े जोश के साथ कहा, "बेगार नहीं दी, खुराक लेंगे, यह बात हो गयी? मैं लिखे लेता हूँ। नहीं तो गुमाश्ता हरामीपन करेगा। वह साला बाघ शरीर का कीड़ा—किलनी—है।"
तीरथनाथ ने सारी घटना दारोगा को बतायी। दारोगा तीन मही
बाद छुट्टी से रामगढ़ जाकर बात कर आया। ख़बर रामगढ़ से राँची गय
वह विवरण राँची पहुँचा तो इस तरह—चोट्टि मुंडा तथा और लोग
धनुक लिये मुंडा और बलोया लिये अंत्यजों का एक विशाल दल बना

स्थानीय जमींदार को डर दिखाकर चाभी छीन ली और उसका गोदाम लूट लिया।

चूंकि कोई खबर पुलिस के जरिये नहीं आयी, इसलिए खबर को पहले प्राप्त करने वाले ने इस पर बिलकुल ध्यान न दिया। संध्या को क्लब गया। वहाँ बातचीत में क्रम से सूखे की बात उठी और एक आदमी हँसते हुए बोले, "रांची-पलामू-चाईबासा बेल्ट बहुत अच्छा है। भूखी जनता भी मेती नहीं लूटती। ऐसा कुछ नहीं..."

उसकी बात पूरी न हो पायी। रिटायर होनेवाला सेना विभाग का डॉक्टर बोला, "शान्तिपूर्ण? तुम क्या जानो, बाइस बरस पहले इस क्लब-घर में हम बैठे हैं, अंग्रेज लोग, और बीरसा मुंडा के डर से काँप रहे हैं। बाद में उसको जरूर हराया गया। लेकिन उसे पीसफुल मत कहो। टुइला बजाता है, अखाड़े में नाचता है, उसके बाद ही जाकर तीर छोड़ता है। बहुत गड़बड़ जात है।"

छोटे लाट का सेक्रेटरी मूखी हँसी हँसकर अधिकार के स्वर में बोला, "भूल जाना ठीक न होगा। उस दिन साउथ इंडिया के ट्राइबल आंदोलन के नेता अल्लूरी राजू को मार दिया गया। आदिवासी बेल्ट में कोई अशांति होने से उसे बहुत गंभीरता से लेना उचित है।"

"यह राजू कौन है?"

"विशाखापत्तनम् की एजेंसी के पहाड़ी आदिवासियों का नेता।"

"मारा गया माने?"

"मार डाला गया। फाँसी नहीं हुई।"

"अहिंसक संग्राम में, या हिंसात्मक लड़ाई में...?"

चोट्टि की खबर पानेवाले को मन-ही-मन बहुत अजीब-सा लगा। दूसरे दिन अनुमति लेकर छोटे लाट के सेक्रेटरी से घर पर मुलाकात की। मिलने पर माथे का पसीना पोंछ घटना के बारे में जो मालूम था, कह गये। सुनकर सेक्रेटरी का भाई बोला, "इस तरह की एक खबर है, उसकी कोई रिपोर्ट नहीं है?"

"नहीं, सर।"

"तुमको कहाँ से पता चला?"

"रामगढ़ होते हुए।"

"फिर मुंडा विद्रोह है क्या? न-न, कह रहे हो कि और गाँववाले भी थे। बहुत गोलमाल लग रहा है।"

"मैं कुछ कर नहीं पा रहा हूँ, सर।"

जिसने कहा वह छोकरा साहब था। 'मैं कुछ कर सकता हूँ' कहने

उसे समझा दो कि उसके द्वारा ज़मींदार की स्वार्थ-सिद्धि में मदद पहुँचाने पर, आदिवासियों और निम्नवर्ग के लोगों में असंतोष होने से उसे बाक़ी जीवन जेल काटनी होगी। बेवकूफ़ बदज़ात कहीं का!"

नये दारोगा ने तोहरी जाकर रिपोर्ट दी। सब शांतिपूर्ण है। कोई गड़बड़ नहीं है। तीरथनाथ की तरफ़ से भी कोई शिकायत नहीं है।

अब ह्यू अपने बड़े भाई से कहता है, "अरे मैंने ही तो कहा था कि कैम्पिंग अफ़सर से अपनी शिकायत सीधे-सीधे बताओ।"

सेक्रेटरी ने अब भाई को विलायत वापस बुला भेजा। उनके ही भाई ने मुंडा लोगों से यह बात कही थी, यह बात खोंचा-खाँची करने से निकल पड़ेगी ही। मुंडा लोग खून करने पर भी गर्व के साथ स्वीकार करते हैं। एक अँग्रेज़ ने यह बात कही थी। अँग्रेज़ माने गवर्नमेंट, इस बात को वे ज़ोरों के साथ कहेंगे। वे छोटे लाट के समीप ह्यू की किस तरह व्याख्या करेंगे? धानी मुंडा, चोट्टि मुंडा—उनका भाई प्रत्येक गड़बड़ आदमी की तसवीर बनाकर बैठा है! भाई से बोले, "विलायत जाकर तुम्हारा अभागा भाई किताब छपायेगा। उनमें उन दोनों तसवीरों को मत देना।"

जवाब में ह्यू हँसता और क़ायदे के मुताबिक़ 'द फ़्लूट ऐंड द ऐरो' प्रकाशित होने के बाद उसमें दोनों तसवीरें दिखायी पड़ीं। इसको लेकर और कोई शोर-शराबा करने का मौक़ा नहीं मिला, क्योंकि उगांडा के आदिवासी लोगों की तसवीर बनाते हुए क्रुद्ध ग्रामवासी लोगों के बरछे से बिंध कर ह्यू ने ईश्वर की इच्छा पूर्ण की और भाई को चैन पहुँचाया।

सारे सवालों का फ़ैसला होने के बाद भी सेक्रेटरी के दिमाग़ में यह ख़याल चक्कर काटता रहा कि शिकार के लिए चोट्टि अच्छी जगह है। चोट्टि मुंडा तीरंदाज़ों में भी बहुत प्रसिद्ध तीरंदाज़ है। हर मेले में वह तीर की प्रतियोगिता में जीतता है। इसी कारण उसके नाम पर तमाम क़िस्से गढ़े हुए हैं। इस तरह के आदमी ज़रा भी भड़कने की बात पर विद्रोही हो सकते हैं। ग़ैर-मुंडा लोगों पर भी उसका प्रभाव है। उसका कार्य-कारण जो भी हो, ऐसे लोगों का जेल में रहना ही ठीक है। लेकिन मुंडा बहुत ही बिगड़ैल जात है। उठाईगीरी भी नहीं करते।

हर मेले में यह तीर चलाने की प्रतियोगिता ही क्यों होती है? इ
सवाल के जवाब में वे गज़ेटियर खोलकर देखते। इस प्रतियोगिता
इतिहास बहुत प्राचीन है। यह आदिवासियों के उत्सव का अंग है। राज
ज़मींदारों की मदद रहती है। वे ग़ैर-सरकारी ढंग पर सरकारी इच
बता देते हैं, अब से दुर्भिक्ष की खबर प्रसार के मार्ग से ही ग्राह्य हो
इससे ज़मींदार-महाजनों को दुख न होगा। उपयुक्त अधिकारियों को

बात भी बता दी गयी। अकाल होने पर इसके बाद जमींदार-महाजन को आदमियों के प्रति दयावान होना होगा। सब-कुछ होने पर भी उन्हें अब हजारों तरह का परिरक्षण प्राप्त होता है। बदले में दो-तीन बरस बाद एक इंसान के आचरण की अपेक्षा करना क्या बहुत अनुचित है? थोड़ी-सी हृदय-परिवर्तन की कामना क्या बहुत ज्यादा चाहना है? हृदय-परिवर्तन होने और दान-ध्यान करने पर वह सरकार की नजर से छिपा नहीं रहता है। दान-ध्यान से खिताब मिलता है।

छानने की प्रणाली में यह खबर एक बार चू-चू कर गलत पहुँची। तब अचानक एक बहुत अजीब अर्जी सदर आ पहुँची।

"गरीबों की माँ-बाप सदाशय जगज्जननी गौरमेंन लाट साहेब सभी से निवेदन किया जा रहा है। इस अधम तीरथनाथ लाला—मौजा के—तह-सील चोट्टि के आदि बाशिन्दा। गत 1924 साल के जून मास में जब अकाल हुआ 117 ग्रामवासी लोगों को तीरथनाथ ने रोज खाना देकर बचाया, इसके बाद मिशन की मेम लोग आयी। तीरथनाथ न रहता तो गाँव वाले मर जाते। अधम की बात को कोई कहने वाला न था, इसलिए यह सेवा-कार्य अनदेखा और उपेक्षित रह गया। अब उपयुक्त खिताब देकर अधम को धन्य करने से वही काफी पुरस्कार होगा। यह भी निवेदन है, छोटे लाट बहादुर के दुर्भिक्ष त्राण भंडार में अधम ने एक सौ एक रुपये दिये हुए" इत्यादि इत्यादि...।

अर्जी को सरकार ने सस्नेह देखा। हृदय-परिवर्तन का ज्वलन्त केस था। 'रायसाहब' खिताब दिया गया।

इसके बाद [illegible]
चाह से सेक्रेटरी [illegible]
लगाने के समय, [illegible]
तीर का खेल देखने गये। दुबला-पतला, सीधे तना और तेजस्वी एक मुंडा तीरन्दाज पहचाना हुआ-सा लगा। सब उसकी तरफ कैसे आदर के साथ देख रहे थे। युवक ने अविश्वसनीय दक्षता से लक्ष्यवेध किया, यह देखकर वे चौंक गये। काफी ऊँचे पर काठ की खूँटी मिट्टी में गडी थी। खूँटी पर आँख बनी हुई थी। खूँटे के सिरे पर एक लकड़ी की थाली रखी थी। थाली के किनारे में छेद था। छेद में से रंगीन डोरी की झालर लटक रही थी। डोरी के किनारे कागज की बनी चिड़िया थी। नीचे से घरारी खींचकर थाली घुमायी जाती थी। डोरी में बँधी चिड़िया भन्न-भन्न घूम रही थी। उसके बीच से लकड़ी पर आँख वेधी गयी।

"वह कौन है?" जमींदार ने हाथ मलते हुए बताया, "चोट्टि गाँव का

ाट्टि मुंडा, हुज़ूर ! उसे तीर का मंत्र आता है। आज कई बरस से
रहा है। आपने तो खुद देखा, और लोग न कर सके।"

चोट्टि ने पुरस्कार सेक्रेटरी के हाथों से ही लिया।

"वे लोग कौन हैं ? खुशी से चिल्ला रहे हैं। बाजे बजा रहे हैं ?"

"उसके गाँव के लोग हैं।"

"सब मुंडा हैं ?"

"न, न, दूसरे छोटी जात के भी हैं।"

इसके बाद सेक्रेटरी ने चोट्टि नदी के किनारे एक दिन का कैम्प किया। साहब की देखभाल का सारा इंतज़ाम तीरथनाथ ने ही किया था। सेक्रेटरी के तलब करने पर चोट्टि डरता हुआ आया। सेक्रेटरी बोले, "देखें, चाँदनी रात में उड़ती बत्तख मार सकते हो या नहीं ?"

"मार सकता हूँ, मालिक !"

ज्योत्स्ना जिस प्रकार चाँद से झरती है, बत्तख के पंख उसमें मिल जाते हैं। ये बतखें यायावर थीं, इस समय बालू पर उतर पड़तीं। शीत बीत जाने पर न जाने कहाँ चली जातीं। चोट्टि ने धनुष उठाकर स्थिर लक्ष्य पर बत्तख मारी। सेक्रेटरी ने बन्दूक से बत्तख मारी। दूसरे दिन जाने के समय पहान से कह गये, "तीर खेलो, चिड़िया मारो, लेकिन तुम्हारे आदमी गड़बड़ न करें।"

पहान और चोट्टि आदि सिर झुकाये रहे।

"सचमुच तुम्हारा तीर का हाथ अच्छा है।"

चोट्टि के लिए यह कहकर सेक्रेटरी स्पेशल सैलून कार में बैठ गये। उनके लिए विशेष ट्रेन आयी थी।

इसके बाद तीरथनाथ का खिताब आया। तीरथनाथ चोट्टि के बारे में बड़े आदर के साथ बोला, "माँ ! उस समय अगर चोट्टि न आता, तो मैं खैरात न बाँटता। खैरात दी, इसीलिए खिताब आया।"

"कहती थी कि उसे मंतर आता है।"

चोट्टि के जीवन में यह एक और किंवदन्ती जुड़ गयी। इसके बाद गाँव के तीन मुंडा युवक उसके पास आये थे। लगभग छः बरस बाद।

पाँच

इन छः बरसों में चोट्टि के जीवन में कोई उल्लेखनीय घटना नहीं

हुई। मुंडा लोगों के जीवन में होती भी नहीं। बीच में मुंडारी गाँव में दुख-दारिद्र्य के रहते 'करम' या 'सोहराइ' या 'हो' के जातीय अर्द्ध-हिन्दू उत्सव या हरमदेव की पूजा के उपलक्ष में कुछ विभिन्नता जरूर आयी। पँचमेल गाँवों की मुंडा टोली में वह उत्सव उस तरह की चहल-पहल नहीं लाते। इससे ज्यादा शिकार के उत्सव के दिन उनका उत्साह दिखायी पड़ता। पहले शिकार-उत्सव आदिवासियों का हुआ करता था; अब दूसरी जातिवाले भी इसमें भाग लेते थे। शिकार-उत्सव, आंचलिक मेला—इनमें बड़ा आनंद रहता।

मुंडारी जीवन में और कुछ न होता। चोट्टि की तरह के मुंडा लोगों के जीवन में। तीरथनाथ के खेत जोतना। अपनी जमीन जोतना, भाई को लेकर यह सब काम करना। तमाम मुंडा औरतों की तरह उसकी और कोयेल की बहू भी बहुत मेहनत करती। चोट्टि की पत्नी पति-परायणा थी। कोयेल की पत्नी अगर शान्त औरत न होती तो मुश्किल होती। इस घर की बड़ी बहू गाय और बकरी चराती। बकरियाँ स्टेशन पर या जंगल के ठेकेदार को बेचकर जो कुछ मिलता, उसे टीन के डिब्बे में रखकर चूल्हे के पास गाड़ दिया जाता। चूल्हे के आस-पास रुपये रखने से वे चोरी न जाते। फसल होने पर वह हाट से चावल या गेहूँ या मक्का खरीदकर लाती। छोटी बहू खाना बनाती या घर के और काम-काज करती।

सब-कुछ पुराने ढंग से चल रहा था। बाहर से देखने पर यह नहीं लगता था कि कहीं कोई अशान्ति है। लेकिन स्टेशन पर रहने से कभी-कभी बाहर की खबरें मिलतीं। हमेशा ट्रेन रुकती नहीं थी। लेकिन जो ट्रेन चली जाती थीं, वे भी देखने में कैसी अच्छी लगतीं! ट्रेन माने आधुनिकता की शक्ति, यंत्र। प्लेटफार्म पर खड़े गरीब लोगों का इससे कोई मतलब नहीं। फिर भी खड़े-खड़े देखने में अच्छा लगता। देखते-देखते अँधेरा होने पर घर लौटना होता।

1930 के वर्ष में यह नया दृश्य देखा गया। गाड़ी के किसी-किसी डिब्बे में पुलिस रहती। यात्रियों के सिर पर सफ़ेद टोपियाँ रहतीं। वे चिल्ला-चिल्ला कर क्या कहते थे, यह समझ में न आता।

सना मुंडा खबर पाकर बोला, "दिकू लोग गांधी राजा के चेले हो गये।"

चोट्टि बोला, "गांधी राजा! वह कौन है?"

"मुझे मालूम नहीं है। सब लोग कहते हैं कि बहुत बड़ा राजा है।"

"ये लोग चेले हैं?"

"हाँ रे ! साहब लोगों को भगायेंगे, इसलिए वलोया उठा रहे हैं। इसीलिए चारों ओर उनको जेहल में लिये जा रहे हैं।"

"ऐसा ! तो इतने दिकू ? दिकू लोगों का अन्त नहीं ?"

चोट्टि की नासमझी पर सना हँसा। बोला, "दिकू अनगिनती हैं।"

"मैं तो चारों ओर जाता हूँ। एक भी दिकू दिखायी नहीं देता।"

"दिकू लोग शहर में रहते हैं। वहाँ तमाम मकान हैं, सड़कें हैं। वे लोग इस जंगली देश में आयेंगे कि तू देखेगा ?"

ठंडी साँस लेकर चोट्टि चला आया। सना बोला, "इस बार तीन मेलों में नहीं गया। क्यों रे चोट्टि, क्या हुआ ?"

"समय कहाँ है ?"

इसके बाद ही उसके पास तीन मुंडा युवक आये—दुखाई, बिखना और सुखा। चोट्टि के पैरों के नीचे एक जोड़ी काली मुर्गी रखकर उन्होंने धरती पर प्रणाम किया।

"यह क्या ? तुम लोग कौन हो ?"

"हम कुरमी गाँव के मुंडा हैं।"

"यह क्यों लाये ?"

"एक बात है।"

"क्या बात ?"

"अलग कहेंगे।"

वे नदी के किनारे चले गये। सुखा बोला, "इस बार तुम सब मेला में नहीं गये। इसलिए भी खबर लेने आये हैं। एक बात और है।"

"क्या बात ?"

उन लोगों ने एक-दूसरे की ओर देखा। सुखा बोला, "तुम हम लोगों को सिखा दो। हम जनम से हाथों में धनुक लिये हैं। किन्तु तुम्हारी तरह निशाना नहीं लगाते। मंतर दो ?"

"तुम मेरा मंतर चाहते हो ?"

"हाँ।"

"मंतर, मंतर, सब मेरा मंतर देखते हैं। इन हाथों को देखो। चिल्ला खींच-खींच कर कड़े पड़ गये हैं। आज भी अभ्यास करता हूँ। तुम करोगे ?"

"करेंगे।"

"दुपहर से सिवा समय नहीं है।"

"हमको भी।"

"गर्मी बढ़ने पर सूरज उठने से पहले।"

"तभी आयेंगे।"

"क्यों सीखना चाहते हो?"

सुखा पापरहित शुभ्र हँसी हँसा। बोला, "तुम हम लोगों की नजर में राजा हो। किन्तु हमारी साध है कि मेले में निशाना वेधें।"

"वह हुआ।"

सुखा इस समय तरुण है। चोट्टि की उम्र तीस हो गयी है। फिर भी याद है कि पहला निशाना वेधने के बाद दर्शकों के जयोल्लास से कलेजे में कैसा आनद उठा था। रक्त में गर्जन था, आनद से कलेजा मानो फट गया हो। एक साथ चोट्टि से तोहरी तक, दिगन्त तक जैसे लाल पलास खिल उठे हों, कलेजे में। हाँ, इनको भी वह अधिकार है। निशाना वेधने के बाद भी मेले के राजा को अँधेरे घर में ही लौटना पड़ा।

"और तुम जब नहीं रहोगे तो हम बता सकेंगे कि तुममें सीखा था।"

"तुम लोग गुस्सेवर हो। नाकाटा के राजा का गुमाश्ता हाट में तौलाई लेता है, इस बात को लेकर उसके साथ झगड़ा है। मैं तो उसे छुड़ाने में दम निकाल दूँगा। तब?"

"तुम ठोकर भी क्यों न मारो। जहाँ तुम्हारे पाँव हैं, हम वहाँ की धूल चाटेंगे। तुम देखना, हम धूल खायेंगे।"

चोट्टि के कलेजे के नीचे मानो कुछ फट पड़ा हो। जेजुड़ की हाट। धानी मुंडा कह रहा है, "धूल फाँकता हूँ देश की। घर की माटी फाँकता हूँ।" गोली छूट कर आयी थी।

आँखों में गहरी पीड़ा थी। असीम प्रेम से चोट्टि बोला, "तुम लोग आओ। मैं सिखाऊँगा। मेरे सिखाने से तुम निशाना लगाना।"

सुखा आदि प्रणाम कर चले गये।

पहले ही दिन चोट्टि ने मन-ही-मन धानी से क्षमा माँग ली—आज पन्द्रह-सोलह साल से तुम नहीं हो, फिर भी तुम्हारे लिए मेरा मन दुखी है। बाबा के मरने पर दुनिया ऐसी सूनी नहीं लगी। जब गान गाता हूँ तब मन में उठता है कि तुम मेघ पर बैठकर सैलराकार[1] में मिल गये हो। आकाश में तो बहुत मेघ हैं। तुम कौन-सा मेघ हो, समझ में नहीं आता। तुमसे मुझे शिक्षा मिली थी, अब मैं जवान नहीं रहा। आज मेरे पास भी सीखने के लिए लड़के आते हैं। उनको क्या सिखाऊँगा? वही न जो तुमने सिखाया था। तुम आशीर्वाद दो।'

उसके बाद वह तीनों लड़कों को लेकर नदी के पश्चिम की ओर

---

1 सैलराकार—पहाड़ जहाँ बीरसा मुंडा अँग्रेजों के विरुद्ध लड़ा था। देखें—लेखिका की पुस्तक 'जंगल के दावेदार'।

चलता रहा, जहाँ कि पहाड़ बहुत पास दिखायी पड़ते हैं, लेकिन पास नहीं आते। वन के अंचल में आँवले के पेड़ हैं। फलों के भार से पेड़ मानो झुके पड़ रहे हों।

"ठहरो!" चोट्टि उनसे फुसफुसा कर बोला। वे लोग रुक गये। चारों चुपचाप खड़े रहे। थोड़ी दूर पर घास हिल उठी। कुछ देर बाद साँस छोड़ कर चोट्टि ने माथे का पसीना पोंछा।

"बाघ लेटा था। उठ गया।"

"हमने तो देखा नहीं।"

"तो यहीं से शिक्षा शुरू। जंगल में चलना जानना पड़ेगा। तुम लोगों ने बाघ को नहीं देखा। उसने हम लोगों को ठीक देख लिया। उसके रोम-रोम में आँखें होती हैं। उससे अधिक सावधान कोई नहीं है।"

जंगल और पहाड़ के बीचोंबीच की भूमि में कई पलाश के पेड़ थे। उनके नीचे पत्थर थे। चोट्टि ने उन लोगों से रुकने को कहा। खुद दूर चला गया। पत्थर पर कड़े चूने से निशाना बनाया। लौटकर बोला, "धनुक उठाओ। और कुछ नहीं। सिर्फ़ यही निशाना है। निशाना वेधने का मंतर यही है। आँखों को ठीक करो।"

सिखाना चलता रहा। सुखा और बिधना हँसमुख थे। अपने गाँव के अखाड़े में नाच-गाने के बड़े उत्साही सदस्य थे। दुखिया चोट्टि को बहुत दुर्बोध्य लगता। एकाग्रता और दक्षता उसी में अधिक थी, लेकिन बोलता बिलकुल न था। हमेशा गुमसुम-सा बना रहता था।

"तू इस तरह चुप्प क्यों है, दुखिया?"

"उमसे उसने हल्दी ली, करमी ने चूड़ी ली, लेकिन सगाई की कनू से।"

दुखिया बोला, "थू, करमी के नाम पर थू!"

"क्यों?"

"दुखिया नाकाटा के राजा के गुमाश्ते की बेगार करता है। हम भी करते हैं। लेकिन उसका कुछ नहीं है। जमीन-जायदाद सब-कुछ टीप-छाप में बंधक हैं।"

"चुकता कब होगा?"

दुखिया सूखे गले से बोला, "बेगार उसके खाते में चुकता नहीं होता। मेरे बाप के बाप ने कर्ज लेकर वंश को बाँध दिया है।"

"क्या लिया था?"

"दस पाई धान।"

"दस पाई धान?"

"हाँ।"

"हाँ, देता है। तुम्हें गाली क्यों नहीं देता है? क्योंकि तुम लोगों के पीछे बाप-भाई हैं। मेरा कोई नहीं है। इसलिए गाली देता है।"

"अब तूने हम लोगों को गाली दी।"

"कैसे?"

"तेरा कोई नहीं है! हम नहीं हैं? हम लोगों के घर में एक आदमी के पीछे मुंडा-उराँव सब रहते हैं। देखता नहीं है?"

"कसूर हो गया।"

"तीर के खेल में निशाना लगाने पर...," चोट्टि बोला, "तीर के खेल में निशाना लगाने पर मन अच्छा हो जायेगा। दो-चार रुपये मिलें, सगाई कर लो। उल्टी बात मत सोच, दुखिया! जो सब लोग करें, वही करने में सुख है।"

चोट्टि ने सोचा था कि दुखिया आत्महत्या की बात सोच रहा है। 'किसी दिन कुछ कर बैठें' यह मानो हत्या की बात ही हो। दुखिया की बात सोचने पर आजकल उसे धानी मुंडा की बात याद आती है। क्यों याद आती है? लगता कि जेजुड़ जाने पर पुलिस की गोली से मरना ही होगा, धानी को यह मालूम था। वह फिर भी गया। क्यों गया? दुखिया की बात सोचते ही धानी के बारे में यह एक बात क्यों याद आ गयी?

उसने दुखिया से कहा, "एक तीर-खेला में तुम अगर अकेले जीत सके तो मन में जो खुशी होगी, उसके जोर से तेरे सिर का भूत उतरेगा।"

"तब गुमाश्ता मुझे गाली न देगा?"

"शायद इतनी गालियां न दे।"

"देखूं। तुम झूठ तो कहोगे नहीं।"

'कुछ करके रहूँगा'—कहने से दुखिया क्या कर सकता था? यह बात चोट्टि नहीं समझा। देउ ग्राम का मेला हुआ। तीर के खेल में दुखिया अव्वल भी आया और उसे दो रुपये नक़द भी मिले। सचमुच इससे उसे बहुत खुशी हुई और उसने चोट्टि से यह बात कह भी दी। बोला, "बाप रे! ऐसी खुशी! चोट्टि में बाढ़ आने पर जिस तरह पत्थर तैरने लगता है, इस खुशी ने मेरा सारा दुख बहा दिया। कलेजा हलका-हलका लग रहा है। कितने दिनों से छाती में क्रोध और दुख लिये फिरता था। लेकिन अब ठीक हूँ।" यह बात कहकर दुखिया पैर के अँगूठे से जमीन कुरेदने लगा। गुमाश्ते को देखकर भी उसे होश न हुआ।

चोट्टि बहुत ही खुश हुआ।

उसके बाद सब-कुछ शांत-शांत रहा। अहिंसा के सेनानियों को ट्रेन

से ले जाते थे। वह तो बाहरी संसार की घटना थी। अगहन में धान पक रहे थे। चिड़ियों के झुंड झुक पड़ते हैं, खेतों से हिरनों को भगाना पड़ता है। फिर यायावर पक्षियों का चोट्टि की बालू में उतरना, चांदनी में उड़ती हुए बत्तखों के मिलने का मौसम आ रहा है। चोट्टि ने हाट से एक टाट मोल लिया। टाट में पुआल भर लेंगे, उसमें घुसकर उसके लड़के जाड़ों में सोयेंगे। इसी बीच सहसा बहुत-से लोगों का एक भयंकर जुलूस चोट्टि के जीवन को, जीवन के विश्वास को कँपाकर और उसे बदलकर चला गया। जुलूस के आगे दुखिया मुंडा था।

उस समय तीन का वक्त होगा। चोट्टि ग्राम के सब लोगों ने देखा था कि कुरमी पहाड़ से आकाश की पृष्ठभूमि से लगा एक जुलूस आ रहा है—कतार-दर-कतार आदमी। जुलूस के आगे कोई बल्लम की नोक पर कुछ लिये आ रहा है। कतार-के-कतार आदमी। जुलूस जैसे एकाग्र होकर चोट्टि में घुस आया और आगे वाला आदमी बोल उठा, "चोट्टि, मैं दुखिया हूं।"

अब सभी ने देखा। चोट्टि ने भी देखा कि दुखिया के हाथ में बल्लम है और बल्लम की नोक पर किसी का कटा सिर है। उसे लगा कि गुमाश्ते के सिर और छाती में मानो तीर लगे हों। वह चीखकर बोला, "दुखिया, यह क्या किया?"

दुखिया मानो नशे में हो, नशे में। मानो उसे अपने अन्तर की सहस्रों यंत्रणाओं की बेगार से मुक्ति मिली हो। उसके दो पैर थोड़ा हिल रहे थे। संसार-भर के आश्चर्य से पापरहित आँखों से वह बोला, "तुमने कहा था कि वह गाली न देगा। पर हाट में बाजारी वसूल करने आया। मैं मिर्चें लेकर बैठा था—बाजारी लेने के लिए उसने जूते की ठोकर से मेरा हाथ क्यों हटाया? जिस तरह कबूतर अपने बच्चे को ढँके रहता है, उसी तरह मैं मिर्चों की टोकरी को ढँके हुए था। मेरे हाथ पर सिपाही ने जूते की ठोकर मारी—सिपाही के हाथ में बल्लम था। सिपाही से बोला, 'उठा ले उसकी टोकरी। तीर खेलने से उसका दिमाग खराब हो गया है। साला, कामचोर, निमकहराम, मेरी बेगारी में बेकार करता है और अपने खेत में मन लगा कर मिर्चें पैदा करता है।' थोड़ा पानी देना।"

दुखिया ने ढकर-ढकर कर पानी पिया। बोला, "तुमने कहा था, वह बात मत सोचना। मैं सोचना नहीं चाहता, लेकिन उसने मुझसे यह काम कराया। उसके बाद माँ की गाली देने जा रहा था, मैंने पूरी न होने दी। बलोया से सिर झुकाकर सिपाही के बल्लम से छेद दिया।"

"कहाँ, दुखिया कहाँ?"

"हाँ, देता है। तुम्हें गाली क्यों नहीं देता है? क्योंकि तुम लोगों के पीछे बाप-भाई हैं। मेरा कोई नहीं है। इसलिए गाली देता है।"

"अब तूने हम लोगों को गाली दी।"

"कैसे?"

"तेरा कोई नहीं है! हम नहीं हैं? हम लोगों के घर में एक आदमी के पीछे मुंडा-उराँव सब रहते हैं। देखता नहीं है?"

"कसूर हो गया।"

"तीर के खेल में निशाना लगाने पर...," चोट्टि बोला, "तीर के खेल में निशाना लगाने पर मन अच्छा हो जायेगा। दो-चार रुपये मिलें, सगाई कर लो। उल्टी बात मत सोच, दुखिया! जो सब लोग करें, वही करने में सुख है।"

चोट्टि ने सोचा था कि दुखिया आत्महत्या की बात सोच रहा है। 'किसी दिन कुछ कर बैठे' यह मानो हत्या की बात ही हो। दुखिया की बात सोचने पर आजकल उसे धानी मुंडा की बात याद आती है। क्यों याद आती है? लगता कि जेजुड़ जाने पर पुलिस की गोली से मरना ही होगा, धानी को यह मालूम था। वह फिर भी गया। क्यों गया? दुखिया की बात सोचते ही धानी के बारे में यह एक बात क्यों याद आ गयी?

उसने दुखिया से कहा, "एक तीर-खेला में तुम अगर अकेले जीत सके तो मन में जो खुशी होगी, उसके जोर से तेरे सिर का भूत उतरेगा।"

"तब गुमाश्ता मुझे गाली न देगा?"

"शायद इतनी गालियाँ न दे।"

"देखूँ। तुम झूठ तो कहोगे नहीं।"

'कुछ करके रहूँगा'—कहने से दुखिया क्या कर सकता था? यह बात चोट्टि नहीं समझा। देउ ग्राम का मेला हुआ। तीर के खेल में दुखिया अव्वल भी आया और उसे दो रुपये नक़द भी मिले। सचमुच इससे उसे बहुत ख़ुशी हुई और उसने चोट्टि से यह बात कह भी दी। बोला, "बाप रे! ऐसी ख़ुशी! चोट्टि में बाढ़ आने पर जिस तरह पत्थर तैरने लगता है, इस ख़ुशी ने मेरा सारा दुख बहा दिया। कलेजा हलका-हलका लग रहा है। कितने दिनों से छाती में क्रोध और दुख लिये फिरता था। लेकिन अब ठीक हूँ।" यह बात कहकर दुखिया पैर के अँगूठे से ज़मीन कुरेदने लगा। गुमाश्ते को देखकर भी उसे होश न हुआ।

चोट्टि बहुत ही खुश हुआ।

इसके बाद सब-कुछ शांत-शांत रहा। अहिंसा के सेनानियों को ट्रेन

में ले जाते थे। वह तो बाहरी संसार की घटना थी। अगहन में धान पक रहे थे। चिड़ियों के झुंड झुक पड़ते हैं, खेतों से हिरनों को भगाना पड़ता है। फिर यायावर पक्षियों का चोट्टि की बालू में उतरना, चाँदनी में उड़ती हुए बत्तखों के मिलने का मौसम आ रहा है। चोट्टि ने हाट में एक टाट मोल लिया। टाट में पुआल भर लेंगे, उनमें घुसकर उसके लड़के जाड़ों में सोयेंगे। इसी बीच सहसा बहुत-से लोगों का एक भयंकर जुलूस चोट्टि के जीवन को, जीवन के विश्वास को कँपाकर और उसे बदलकर चला गया। जुलूस के आगे दुखिया मुंडा था।

उस समय तीन का वक्त होगा। चोट्टि ग्राम के सब लोगों ने देखा था कि कुरसी पहाड़ से आकाश की पृष्ठभूमि में लगा एक जुलूस आ रहा है—कतार-दर-कतार आदमी। जुलूस के आगे कोई बल्लम की नोंक पर कुछ लिये आ रहा है। कतार-के-कतार आदमी। जुलूस जैसे एकाग्र होकर चोट्टि में घुस आया और आगे वाला आदमी बोल उठा, "चोट्टि, मैं दुखिया हूँ।"

अब सभी ने देखा। चोट्टि ने भी देखा कि दुखिया के हाथ में बल्लम है और बल्लम की नोंक पर किसी का कटा सिर है। उसे लगा कि गुमाश्ते के सिर और छाती में मानो तीर लगे हों। वह चीखकर बोला, "दुखिया, यह क्या किया ?"

दुखिया मानो नशे में हो, नशे में। मानो उसे अपने अन्तर की सहस्रों यन्त्रणाओं की बेगार से मुक्ति मिली हो। उसके दो पैर थोड़ा हिल रहे थे। संसार-भर के आश्चर्य से पलकरहित आँखों से वह बोला, "तुमने कहा था कि वह गाली न देगा। पर हाट में बाजारी वसूल करने आया। मैं मिर्चें लेकर बैठा था—बाजारी लेने के लिए उसने जूते की ठोकर से मेरा हाथ क्यों हटाया? जिस तरह कबूतर अपने बच्चे को ढँके रहता है, उसी तरह मैं मिर्चों की टोकरी को ढँके हुए था। मेरे हाथ पर सिपाही ने जूते की ठोकर मारी—सिपाही के हाथ में बल्लम था। सिपाही से बोला, 'उठा ले उसकी टोकरी। तीर खेलने में उसका दिमाग खराब हो गया है। साला, कामचोर, निमकहराम, मेरी बेगारी में बेकार करता है और अपने खेत में मन लगा कर मिर्चें पैदा करता है।' थोड़ा पानी देना।"

दुखिया ने ढकर-ढकर कर पानी पिया। बोला, "तुमने कहा था, वह बात मत सोचना। मैं सोचना नहीं चाहता, लेकिन उसने मुझसे यह काम कराया। उसके बाद माँ की गाली देने जा रहा था, मैंने पूरी न होने दी। बलोया से सिर झुकाकर सिपाही के बल्लम से छेद दिया।"

"कहाँ, दुखिया कहाँ ?"

विस्मित होकर दुखिया बोला, "क्यों? तोहरी में।"

"जेहल होगी, फाँसी होगी, दुखिया!"

"तब?"

"तू भाग जा।"

दुखिया मानो गहरे ज्ञान से, गहरी ममता से बोला, "कहाँ? मेरे भागने की कोई जगह नहीं है। तुमसे कहा था न? जगह होती तो बेगार देता? मुंडा भी जिंदा रहना चाहते हैं। बताओ।"

"दुखिया, मेरा कलेजा फटा जा रहा है।"

"मैं नहीं चाहता।"

दुखिया ने बड़े चाव से चोट्टि को, नदी, ग्राम, प्रान्तर की ओर ताका। उसके बाद बोला, "चलो, पुलिस कुछ और न समझ ले। मेरे खुद न जाने पर पुलिस तुम पर जुलुम करेगी।"

परिणामस्वरूप फाँसी होगी, यह जानकर भी दुखिया ने गुमाश्ते को काट डाला था। दुखिया का मुक़दमा हुआ और उसे फाँसी हुई। तब चोट्टि की समझ में आया कि धानी जेजुड़ क्यों गया था—उसका नतीजा मौत होगा, यह जानकर भी तथा अपने प्रति सच्चा रहने के लिए। हरमदेउ के उत्पन्न किये हुए मनुष्यों को बीसवीं शती में पहुँचकर कभी-कभी कोई काम करना होता है। वही धानी और दुखिया ने किया था।

पहले जेल में, उसके बाद फाँसी। तोहरी के दारोगा ने सदर जेल में सारी
ख़बर पाकर कहा था, "मुंडा भी एक ही जात है। सरकार ने वकील
दिया। वकील ने बहुत समझाया कि ऐसे कहो। बुद्धू ने सच्ची बात ही
कही। और, दुभाषिये ने वकील को उसकी बात बतायी। वकील की बाते
दुभाषिये ने उससे कहीं। तीनों में कोई किसी की बात ठीक से नहीं
समझा। अन्त में कहा गया, क्यों? 'नहीं मारा' यह क्यों कहूँ? मार
सैकड़ों लोगों के सामने मारा। मैं मिर्चें लेकर गया था। उसने जूते क
ठोकर से मिर्चों की टोकरी क्यों फेंक दी? शहर में, सदर में दूसरी जा
वाले ख़ून कर भाग जाते हैं। एक भी मुंडा-उराँव-हो को भागते नहीं देखा

मुँह फेरे हुए यह बातें सुनकर चोट्टि वेदना से व्याकुल मुसकरा र
था। जो जात 'भागना' नहीं जानती, उस जात का लड़का क्यों भा
कोई ग़लत काम किया कि भागे? अगर भागेगा तो गौरमेन घेरकर
खोज नहीं निकालेगी? राजा-ज़मींदार तो भागने वाले को पकड़ने के
जंगल में कुत्ते छोड़ देते हैं। जंगल को छानकर कुत्ते भागने वाले को प
लेते हैं।

कोई भी भाग नहीं सकता, दुखिया के लिए तो भागना और भी मुश्किल था। जन्म से ही वह जानता था कि वह बेगार में बँधा है। इस बात को वह मान ले सकता था, लेकिन गुमाश्ता दुष्ट था। औरत ने भी उसे धोखा दिया। तरह-तरह की [illegible] जा रहा था। 'किसी दिन क्या [illegible] से बिसरा ने आत्महत्या कर [illegible] दोनों ही सच्चे थे। चोट्टि ने सोचा कि न्यायकर्त्ता के आगे, गोरमेन के आगे चवन्नी की मिर्चों की बात दुखिया ने कितनी गहरी अभिलाषा से समझानी चाही थी। लगता है कि दुखिया के मन में यह बात घर कर गयी थी कि उसे जेहल हो गयी है, अब फाँसी होगी। उसे तो सब-कुछ मालूम था और उसने सब मान भी लिया था। फिर भी मिर्चों का मामला कितना भड़काने वाला था! क्या उसे न्यायकर्त्ता समझेंगे? न्यायकर्त्ताओं को जरूर लगा था कि यह सनकी जाति एक टोकरी मिर्चों के लिए फाँसी तक चढ़ सकती है। चोट्टि मन-ही-मन जानता था कि फाँसी चढ़ने तक दुखिया की आँखों के आगे दुनिया-भर का विस्मय था। ऐसा क्यों हुआ? क्यों एक आवश्यक हत्या के बाद उसे फाँसी हो रही है?

सब-कुछ दुर्बोध्य है। दुर्बोध्य रह गया दुखिया, मुंडाओं के जीवन में। मुखा और बिधना ने मुंडा लोगों के श्मशान में एक पत्थर रख दिया। उन्होंने गाँव के पहान से पूछा, "वहाँ तो फाँसी के बाद लहास को जला देते हैं। तो एक पत्थर लगा दें?"

"लगा दो।" पहान को मानो चैन मिला। दुखिया के मामले में कुरमी गाँव की छाती पर आज भी वह पत्थर रखा हुआ है। क्या से क्या हो गया? एक चिकना पत्थर रखकर भी मानो उस अभागे के लिए कुछ हो गया हो। पहान ने उस अवसर के उपयुक्त मंत्र पढ़ा और दुखिया की परलोकवासी आत्मा के लिए चावल और चार आने पैसे दिये। मुखा आहिस्ता से बोला, "बस, एक चवन्नी-भर की मिर्चें ही टोकरी में थीं।"

उसके बाद वाला गुमाश्ता बहुत होशियार था। वह गाँव बिलकुल न आता और उसके पियादे ने ढोल पीटकर बताया, "बेगार हो या न हो, हर हाट के पहले सामान का चौथाई भाग कचहरी में देकर जाना होगा। उसके बाद सामान बेचा जायेगा।"

गुमाश्ता होने पर थाने से मेल-जोल रखना ही पड़ेगा। दारोगा ने नये गुमाश्ते को सरकार की इच्छा बतायी, शहर में और गैर-आदिवासी गाँवों में अहिंसक संग्राम का जो शोर है सरकार उसमें ही उलझी हुई है, जेलें उफनी पड़ रही हैं। इस समय किसी भी कारण से, प्रजा को दबाने के जोश

में, हिंसा का कोई काम नहीं करना। अंत में जिम्मेदारी तो थाने की ही होगी। उस जंगली गाँव में कौन जायेगा ? वे-सोचे-समझे काम करने के फल से ही तो सियाराम गुमाश्ते ने जान दी। छोटे लोगों को ठीक करने के काम में थाना भी होशियार है, और गुमाश्ता जी भी इस वात को समझ लें। आजकल कोई ऐसा काम करना ठीक न होगा जिसमें जंगली लोग विगड़ जायें। यह लोग परोक्ष शोषण को नहीं समझते। इसलिए नीति से ही काम लेना अच्छा है।

नया गुमाश्ता परम वैष्णव था। पालकी उठाने पर यह मुंडा लोगों को जलपान देता। 'वच्चा' के सिवा कभी कुछ और न कहता। समय पर आसानी से खेती के लिए कर्ज़ देता और इसकी कुशल नीति के परिणाम-स्वरूप एक वार सवेरे के वक़्त कुरमी का पहान सिर पर दोनों हाथ रख कर वोला, "इसी को दिकू वुद्धि कहते हैं, आँ ? कल कचहरी से पता चला कि गाँव के सव लोग, और तो और, मैं तक उनका वेगार करने वाला हूँ।"

"कौन-सी तरकीव की उसने ?"

इस वेगार के मामले में गौरमेन की जनगणना को उसने परोक्ष में नहीं, प्रत्यक्ष में खत्म कर दिया, लेकिन वह वाद में। इसे ख़त्म करने के मामले में छोटा गाँव कुरमी वड़े गाँव चोट्टि का पथ-प्रदर्शक वन गया। कई वरस वाद। दुखिया की फाँसी, उसका पत्थर लगना इत्यादि हो जाने के वाद एक दिन हरमू चोट्टि से वोला, "आवा, मुझे एक धनुक वना दोगे ?"

"क्या करेगा ?"

"मैं तो गाय चराता हूँ।"

"तो गाय को पकड़ने पर वाघ को मारेगा ?"

पिता की नासमझी पर हरमू भोलेपन से हँसा। वोला, "आवा, तुम कुछ नहीं समझते। मैं क्या दूर चला जाता हूँ कि वाघ गाय को पकड़ लेगा ?"

"तो करेगा क्या ?"

हरमू नज़र झुकाकर वोला, "सोमाई, रूपा—इन लोगों के हाथों में धनुक आया। पहान के पास जाकर उन्होंने धनुक लिया। उसके वाद वे लोग तीर से पटापट कच्चे आम तोड़ते हैं।"

"यह वात है।"

"तुम्हारी तरह तो कोई नहीं है। व—हुत सुन्दर धनुक वना दो।"

"अपनी माँ को वुला।"

हरमू की माँ आयी। वोली, "क्या वात है ?"

"लड़के को धनुक चाहिए। धनुक पर मैं खांचा काट दूंगा। तू उस खांचे पर लाल तागा लपेट देना।"

"मेरे पास समय कहाँ है?"

"समय निकाल लेना। लड़का कह रहा है।"

"तुम्हारा बेटा है न। मुझे डर लगता है कि धनुक देने पर यह दिन-रात उसी को लेकर दीवाना बना फिरेगा।"

"दूंगा।"

"धनुक नहीं लेगा तो क्या लेगा?"

"कह तो दिया कि दूंगा। तुमने जो कुछ कहा उस पर कभी 'ना' किया है?"

पत्नी हँसकर चली गयी। चोट्टि बोला, "कभी 'ना' नहीं कहती।"

"मुझे मारती क्यों है?"

"मेरी माँ भी मारती थी।"

हरमू के लिए चोट्टि धनुक बना रहा था। सना आकर बोला, "चोट्टि, दारोगा ने तुमसे एक बार थाना आने को कहा है। कहा है कि जल्दी नहीं है, वक्त मिलने पर आये।"

चोट्टि शाम को ही गया। तोहरी में हाट थी। लाइन के किनारे-किनारे रास्ते पर चार मील दूर तक हाट लगी थी। पत्नी आज हाट में नहीं गयी। चोट्टि ने ही चार भुट्टे, सूखी मिर्चें बेचीं। मिर्चों के पौधे उसकी पत्नी की जान थे और जमीन कोयेल की जान थी। इस जमीन में मक्का लगाना आसान बात न थी। कोयेल ने उससे पाँच रुपये माँगे थे। पास ही राई में बड़ी हाट लगती थी। वहाँ दवाइयों के कारखाने के लिए आँवले और हर्रे खरीदने को आदमी आता। रुपये देकर कोयेल हाट में पक्की जगह लेगा। जमींदार का नायब रुपये लेकर रसीद लिख देगा कि यह जगह हाट के दिन कोयेल की है। जगत में अनगिनत आँवले के पेड़ हैं। हर्रे के पेड़ भी हैं। इनकी चीजें दूर जाकर बेचने की बात चोट्टि ग्राम के मुंडा सोच भी नहीं सके, लेकिन कोयेल सोचता था। उसके भी लड़का हुआ था, घर में खाने वाले बढ़ रहे थे। कोयेल को एक ही फ़िक्र थी—घर को किस तरह बाँध कर रखा जा सकता है। कोयेल और चोट्टि की पत्नियाँ, दोनों की एक ही फिक्र थी। चोट्टि ने कहा था कि तीर के खेल का समय आने पर तुमको रुपये दूंगा। हरमू की माँ मुर्गी पालेगी। मुर्गी खरीदने के लिए रुपये दूंगा। तीर के खेल का समय आये—यही सब सोचते-सोचते चोट्टि ने लाल अन्नू खरीदे, सूअर की एक रान, तेल, सोडा खरीदा। कोयेल की बहू गन्दे कपड़े नहीं देख सकती थी। उसके बाद वह थाने गया। दारोगा का नाम

। नन्दलाल सिंह। बहुत ज़बरदस्त आदमी था। प्रौढ़।

"बैठो, चोट्टि !"

चोट्टि ज़मीन पर बैठा।

"क्या ख़बर है?"

"दिन बीत रहे हैं, हुज़ूर !"

"बेटा कितना बड़ा हुआ है?"

"गायें चराता है।"

"एक बात है।"

"कहिये हुज़ूर !"

"चोट्टि ! दुखिया मुंडा का पहला इज़हार मैंने लिया। उसने कहा था, वह तुम्हारे पास तीर सीखता था। तुमने उसे 'बलोया' उठाने को मना किया था। थाना आने के रास्ते में वह तुमसे ही सब कह आया था। पर यह बात मैंने इज़हार में नहीं रखी। तुम्हारा नाम अलग रखकर इज़हार भेजा था। इसी से तुमको किसी गड़बड़ का सामना नहीं करना पड़ा।"

"हुज़ूर ! दुखिया कहा करता था, 'पता नहीं क्या कर बैठूं।' सो मैं कभी नहीं समझ सका कि वह यह काम कर बैठेगा। बहुत दुखी रहता था। हँसता नहीं था। मैं डरता था कि मेरे बाबा की तरह शायद अपने ही गले में फाँसी लगा ले।"

अपना दोष क़बूल करके सरकारी वकील द्वारा बचाये जाने की कोशिशों पर पानी डालकर दुखिया ने अपने गले में आप ही फाँसी लगा ली। वह बात दारोगा ने चोट्टि से नहीं कही। ग़ैरमुंडा बात किसी मुंडा को नहीं समझायी जा सकती।

"चोट्टि ! मैं इस थाने में तीन बरस रहूँगा। इन तीन बरसों तक तुम किसी मेले में किसी तीर के खेल में नहीं उतरोगे।"

"यह बात न कहें, हुज़ूर ! तीर खेलने में मिले पैसों से भाई हाट मे जगह लेगा। वह मुर्गी खरीदेगी। यह बात न कहें।"

"न चोट्टि ! इसमें मेरी मुसीबत है। तीरथनाथ कहता है, चोट्टि भ दुखिया के पीछे था। दारोगा ने उसे बचा लिया। कहीं कुछ होने प तुम्हारा नाम आता है। तीन बरस अगर तीर न खेलो, तो तुम पर लोगों की नजर हट जायेगी।"

"मैं जा रहा हूँ।"

उम्मीदें टूटने पर मुंह उदास किये चोट्टि घर लौटा। सब सुन पत्नी बोली, "इससे क्या हुआ? कोयेल बिना पक्की जगह के ही अ बेचेगा। मुर्गियाँ बाद में हो जायेंगी।"

चोट्टि कोयेल से बोला, "दादा से छिपकर जनम बिताया। क्यों? तू मेरा भाई है, तू तीर नहीं खेल सकता?"

"कहाँ तुम और कहाँ मैं?"

"क्यों? मेरे तीर खेलने के वक्त सिर्फ नगाड़ा पीट सकता है!"

चोट्टि की कही हर बात में यंत्रणा थी। कोयेल बोला, "ठीक, देखा जायेगा। लेकिन वादा करो कि न जीतने पर मुझे मारोगे नहीं।"

"तुझे मारूँगा? तू बच्चे का बाप हो गया है।"

कोयेल बोला, "अभी भी मार सकते हो।"

"कल से अभ्यास करना। सुखा कर सकता है, दुखिया कर सकता है, तू नहीं कर सकेगा?"

"कहा तो कि देखा जायेगा।"

चोट्टि की पत्नी ने राव का शर्बत बनाकर पति को दिया। बोली, "जरा पी लो, तबीयत ठंडी हो जायेगी। ऐसा उदास चेहरा मत बनाओ। तुम थे कि वैसी बात कहने पर छोड़ दिया। दूसरा मुंडा होता तो मारकर खतम कर देता।"

"बहुत मान दिया था!"

मन की पीड़ा से, अबोध्य वेदना से चोट्टि रात में वर्षा का लाल जल हो गया, पत्नी ने नदी बन छाती खोलकर उसे अपने अन्तर में लिया, मिला लिया। सवेरे के समय चोट्टि बोला, "इस बार तेरी जैसी लड़की होगी।"

"किन्तु उसका नाम दिन के नाम पर रखना।"

"वही होगा। मुझे लगता है कि माँ मेरी बेटी बनकर संसार में फिर आना चाहती है। पता है कि उसकी आशा पूरी नहीं हुई।"

"यह सब दिकू लोगों की बातें हैं।"

"हाँ रे।"

"भोर का तारा नहीं निकला, सो जाओ।"

चोट्टि सो गया।

छ:

कौओं की आवाज पर सवेरे कोयेल ने चोट्टि को पुकारा। कहा, "चलो।"

"कहाँ?"

"पहान के पास चलो ।"

"क्यों ? पहान को क्या हुआ है ? कोई काम मेरे सिवा नहीं कर सकता है । चोट्टि ग्राम में सवका एक ढँग है। इसी से दारोगा मुझसे सव कामों में मिलता है।"

"चल, चल ।"

"तू भी उससे मिला है। सारे मुंडाओं की तरह जव पेट नहीं चलेगा तो अलग रहना । न, दादा मैं हमेशा रहूँगा । सना की भांजी, तेरी वहू मुंगरी हरमू की माँ को पहचानती है, और तू पहचानता है दादा को !"

कोयेल वोला, "मरते समय माँ कह गयी थी न—दोनों भाई एक साथ रहोगे । माँ की वात तो माननी पड़ेगी ।"

चोट्टि वोला, "माँ की वात साँप के विप में चली गयी । फिर भी तू सारी वातों में कहता है, माँ यह वात कह गयी थी ।"

"वह वात कही थी ।"

"तू वड़ा सियार हो गया है, रे कोयेल !"

कोयेल वोला, "अच्छी वात है। वह सियार वहुत तेज हो गया है। साला वछड़े पकड़ने आता है। उसे मार दो ।"

"मैं सियार को भी मारूँगा ।"

"चल, चल । दिन निकल आया ।"

पहान घर के वाहर वैठा हुआ था। चोट्टि को देखकर वोला, "हाँ चोट्टि, कोयेल यह क्या कह रहा है ? तुझे तीर के खेल में नहीं उतरने देगा ?"

"मना किया है । सुनकर चला आया। दारोगा से क्या झगड़ा करूँ ?"

"नहीं-नहीं, हम लोग वन देश के लोग हैं। हमें तो दारोगा ही गोरमेन है ।"

"सवेरे-सवेरे क्यों वुलाया ?"

"एक अच्छी वात कहने के लिए ।"

"अव अच्छी वात है ?"

"तू जव न उतरेगा, तो चोट्टि मेला का नाम डूव जायेगा ।"

"क्या करने को कहते हो ?"

"अकेले कोयेल को ही क्यों ? तू सारे मुंडा लड़कों को सिखा ।"

"सारे मुंडा लड़कों को ?"

"हाँ रे !"

"उसके वाद ?"

"वे हर गाँव में, हर मेले में जीतेंगे।"

"क्या इतना आसान है? उन सब गाँवों में मुंडा नहीं हैं, उरांव नहीं हैं?"

"फिर भी जायेंगे!"

"मैं इनको सिखाऊँगा तो दारोगा को पता चलेगा। उसके बाद कहेगा, चोट्टि मुंडा सबको तीर सिखाकर तैयार कर रहा है। बलोया करेगा। वे लोग सब हमारे कामों में बलोया उठाना देखते हैं। कहीं सारे मुंडा बलोया उठाते, तो ये लोग कहाँ रहते?"

"दारोगा को कैसे पता चलेगा? अभी भी चोट्टि ग्राम में कोई मुंडा ऐसा नहीं है कि मैं 'ना' कर दूँ तो वह किसी को कोई बात बताये। यह तो लड़कों के लिए भी इज्जत की बात है।"

चोट्टि ने कुछ सोचा। उसके बाद बोला, "ठीक। लेकिन सिखाना लड़के में ही अच्छा रहेगा। इससे भी पहले। लेकिन तुम बात कर लेना।"

"अरे तू सिखायेगा तो तमाम गाँव के लड़के आयेंगे।"

"वे लोग तुझे परनामी क्या देंगे, दादा?"

"क्यों? सालों के पास बहुत पैसे हो गये है?"

पहान क्षुब्ध होकर बोला, "सब कामों की रीत होती है।"

"जो चाहे समझो। तुम्हारे कहने पर मैंने कब किसी काम में 'ना' कहा? और सुनो! हरमू के हाथों में धनुक देना होगा।"

"दे दूँगा। चाँद का पखवाड़ा आये।"

चोट्टि ग्राम के लड़के एक-एक जोड़ा मुर्गी-मुर्गे लाये। हरमू की माँ बोली, "इनको मैं खाने न दूँगी। इनको मैं पालूँगी। कोयेल, मेरे लिए एक कोठरी बना देना। मेरी कोठरी की तरह इसकी दीवार मोटी रखना।"

चोट्टि हँसकर बोला, "अभी तो मचान के नीचे रख।"

कोयेल बोला, "इन दोनों को खाने में भला न होता!"

हरमू की माँ ने कोठरी में रोशनी कर कहा, "हिस्, तेरे दादा के मनर से लड़के एक जोड़ा मुर्गी लाये। मेरी साध पूरी हुई।"

चोट्टि बोला, "ओं, तेरे बेटे का बाप मतर जानता है। उनने ही तीरथनाथ की जमीन जोतती हो, लड़के को बड़ा शौक है, लड़के को पीतल से मढ़ी एक कंघी नहीं मोल लेकर दे सकता।"

वह तुनक कर बोली, "बेगार भी नहीं करते, कर्ज भी [illegible] बुरी बात क्यों कहते हो? अच्छी बात कहो। पीतल-मढ़ी [illegible] का बाप पहान है। अपने घर कभी तो पीतल-मढ़ी [illegible] सब सहर की हवा है। टीमन के पास गाँव है, उनने तरह-तरह [illegible]

देखते हैं। अभी कहेगा कि कपड़े पहनेंगे।"

"तू भी पहनेगी? छोटी वहू भी लेगी।"

"हाय माँ! मुझे तो सरग आती है। कुर्ती पहनूंगी?"

"राँची की मुंडानी पहनती हैं।"

"तब उनको सरम नहीं है। मुंडानी क्यों न सजें? सजेंगी। कान में सफेद सोला लगायेंगी, सिर पर फूल लगायेंगी, वालों में तेल लगायेंगी, और सफेद कपड़े पहनेंगी। पोत की माला और पीतल का वाला तो अच्छा है। हमने तो काठ के वाले पहने हैं।"

"ले, अपनी मुर्गी उठा। गीदड़ गुस्सा हो गया है। होश में रहना।"

"एक वत्तख तो मार दो। उससे उनका गुस्सा उतार दें।"

कोयेल की वहू चूल्हा पोतते हुए बोली, "वछड़ा पकड़ने में भागता-फिरता है। जल्दी करने से कैसे दाँत निकालता है। उस समय डर लगता है।"

चोट्टि बोला, "कोयेल, उन्हें मारकर गाय, वैल, सूअर, मुर्गी, वकरी वचा, ये हमारी दुनिया को जिन्दा रखे हैं। इस साल भेड़िये झुंड वनाकर घूम रहे हैं, सियार इधर विगड़े हुए हैं। चारों ओर हाल खराव है। तेरे वच्चे को भी पकड़ सकते हैं। वहू, होशियार रहना। कुरमी में भेड़िये ने माँ के पास से वच्चा उठा लिया।"

वहू बोली, "कोयेल की वहू अपने वच्चे को पीठ से बाँधकर काम करती है। कोयेल ने जो वेड़ा बाँधा है, वह ऐसा ऊँचा है कि टट्टर हटाये विना आदमी का सिर नही दिखायी पड़ता।"

आकाश में भोर का तारा उगा। तभी चोट्टि उठा। गाँव के युवक प्रतीक्षा कर रहे थे। जंगल की ओर चलते-चलते चोट्टि बोला, "एक साथ दस लड़के देखकर तरह-तरह की वातें उठेंगी। सव अलग-अलग आय करो। अगर टीसन के कुली भी देखेंगे तो वात होगी।"

वही जंगल, वही मैदान था। दुखिया, सुखा और विखना आये थे चोट्टि ने ठंडी साँस छोड़ी। पत्थर पर निशान वनाया। लौटकर बोल "उठाओ धनुक! तुम लोग कहते हो मंतर, मैं कहता हूँ अभ्यास। जा लड़ाकर कोशिश करने से, क्यों न होगा?"

कोयेल बोला, "जीतने के वाद, आः! तुम्हारे सिर पर नाचूंगा

"फिर धनुक उठा। निशाना लगा। सवके पहले निगाह ठीक क निशाना है, तुम लोग हो। और कोई नहीं, कुछ नहीं।"

तीर छूट गया।

"जा, तीर उठा ला। फिर लगा। यह निशाना सात दिन चले

एक हफ्ते के बाद अगले हफ्ते निशान दूर हटाया जायेगा।"

तीर छूटा।

"उठा कर ले आ। फिर लगा। मुझे देख।"

लडकों ने चोट्टि की ओर देखा।

सवेरा हो रहा है। दिन बढ रहा है।

इस तरह से अभ्यास चला। दिनोंदिन। चोट्टि ने देखा कि उसके तीरों के खेल में जो था, वह उत्साह और जिद थी। इन लोगों को सिखाने में आश्चर्यजनक आनंद है। एक नया जोश है। यह लोग अगर स्थानीय और आंचलिक मेलों में जीत सकें, तो इनमें ही कोई उसका उत्तराधिकारी निकलेगा। अगर कोई बहुत ही दक्ष हो, बार-बार जीते, तो उसके पास भी शायद उन दिनों के मुंडा युवक आयेंगे। कहेंगे, हमें सिखाओ।

यह लोग जिस दिन जीतेंगे, अगर जीते तो वह खुशी होगी, जो दुखिया को मिली थी। यह सब बातें सोचते-सोचते याद आया कि बहुत दिनों से मुखा और बिधना की खबर नहीं मिली है, न ही यह कि कुरमी गाँव में क्या हो रहा है? कुरमी जाने के रास्ते में घने जंगल और ऊँचे-नीचे पहाड़ हैं। इस गाँव के लोग हाट करने दक्खिन की ओर बिराडगंज जाते हैं। चोट्टि और कुरमी में कोई मेल-जोल न रखा जाये तो वह नहीं रहता। मेलजोल मुखा, बिधना और दुखिया ने बनाया था। लेकिन चोट्टि के जीवन में सब किस्सा-कहानी बन गया। चोट्टि के चारों ओर दुखिया मुंडा की जीवन-कथा भी किस्सा बन गयी।

विजयादशमी के दिन चोट्टि मेला हुआ। मेला सचमुच बहुत बड़ा और बहुत पुराना था। सरकार की जमीन में मेला लगता था। मेले में विक्रेता लोगों को जमीन देकर तहसीलदार अच्छी कमाई कर लेता था। आदिवासी लोग तो आते ही थे, और लोग भी आते थे। सात दिनों तक मेला चलता था। आस-पास के लोग दरवाजे-खिडकियाँ, लकड़ी की थाली और कटोरी-चक्की-ओखली-बर्तन-कण्डे-चादर-गमछा-मसहरी-गुड़-चावल सब्जी—सब तरह की चीजें इस मेले से ही खरीदते थे। बैलगाडी के पहिये भी बिकते थे, हल, कुदाल, खनी—सब-कुछ बिकता था।

मेले के बीचोंबीच आदिवासियों का लोकनृत्य होता था। उसके बाद तीरों का खेल शुरू होता था। आसान प्रतियोगिताओं में चोट्टि बहुत दिनों से नहीं उतरता था। वह गंभीर खेलों में भाग लेता था। इस बार वह मात्र दर्शक था। यह सबको नहीं मालूम था। इसी दिन बिराड में भी मेला होता था, और प्रतियोगिता भी होती थी। नाकाटा के राजा लोगों का निवास बिराड ही था। राजा लोग दुर्गा-पूजा करते थे। इस

उपलक्ष्य में सरायखेला से लाये हुए मुखौटों के नाच का दल आता। मुखौटों का नाच देखने के लिए उस अंचल के गाँव टूट पड़ते। कुरमी के लोग भी।

चोट्टि ने ताज्जुब से देखा कि कुरमी के मुंडा लोग यहाँ प्रतियोगिता देखने आये हैं। फ़ैसला करने वाले और पुरस्कार देने वाले वही लोग थे—तीरथनाथ, दरोगा, तहसीलदार। सभी बैठे थे। तीरथनाथ उसे देख हँस कर बोला, "यह अच्छा ही है रे चोट्टि! तू हर बरस जीतता है। इन लोगों को एक मौका मिलेगा।"

चोट्टि ग्राम का पहान, आदिवासियों के प्रतिनिधि के रूप में फ़ैसला करने वालों में एक था। वह जाकर ज़मीन पर बैठ गया। प्रतियोगिता के समय खड़े होकर देखेगा। चोट्टि ने आश्चर्य से देखा कि कुरमी के लड़के मेले में आये तो हैं, लेकिन प्रतियोगिता में नहीं उतरे। सुखा और बिखना स्वतंत्र रूप से उतर सकते थे। कहीं कुछ गड़बड़ थी।

चोट्टि मुंडा नहीं उतर रहा था। इसलिए इस बार सब आश्चर्य कर रहे थे। प्रतियोगियों में चोट्टि गाँव के मुंडाओं में से बहुतेरे हैं, यह देख कर दारोगा थोड़ा गंभीर हो गये। तीरथनाथ ने चोट्टि के न उतरने का कारण दूसरों से सुना था, दारोगा के मुँह से नहीं। इसीलिए अनजान बनकर बोला, "पहान, चोट्टि को उतरने से किसने मना किया है?"

पहान कुछ न बोला।

तीरथनाथ मानो मन-ही-मन बोला, "उसकी क्या कम सामर्थ्य है? मंतर-पढ़ा बाण भेजकर वह सब कर सकता है। बहुत बार देखा है।"

दारोगा और भी गंभीर हो गये। बोले, "अगर रोज़ 'गीता' या 'रामचरित मानस' पढ़ते हैं और उससे जो पुण्य होगा लालाजी, तो मंत्र-पढ़ा तीर आपका कोई नुक़सान न कर सकेगा।"

"दरोगाजी, हमारा देश जंगली है।"

"यहाँ रामजी का परताप बेकार हो जायेगा?"

"जंगली देश में बहुत कुछ हो जाता है जिसका हिसाब किसी तरह नहीं मिलता। यहाँ ऐसी नजीर है कि हवा में दीपक जलाकर उसने बहुत दूर की कोठी जला दी। नाकाटा के राजा के दो बेटे जन्मान्ध थे। राजा की बड़ी रानी बाँझ थी। गुणी लोगों से उन्होंने ऐसा मंतर कराया कि बाप के घर से छोटी रानी ने दो बार अंधे लड़कों को जन्म दिया। चोट्टि की ऐसी बहुतेरी कहानियाँ हैं। आपको बाद में बताऊँगा।"

"हूं।"

"अरे, साहेब आये थे, साहेब। लाट के सेक्रेटरी के सगे भाई। वह

उसका तीर चलाना देखकर उसके साथ दोस्ती कर गये। जब मेक्रेटरी शिकार पर आये, तो वे भी उसके साथ बहुत-सी बातें कर गये।"

"कब ? मुझे

तीरथनाथ

आपको लिखना

को जंगली जानवर समझते है। इसी से बार-बार बुलाने पर भी नही आते हैं।"

"न, न, मैने इस साल गुरुमंत्र लिया है। एक बरस कहीं भी जलपान करने का निषेध है। मेरे गुरु बहुत ही सख्त है, समझे ?"

"वह देखिये, शुरू हो गया।"

चोट्टि के दिल मे बडी उत्तेजना थी। अपने वक्त मे पहली बार उसके साथ भी इसी तरह हुआ था। सोचने पर भी आँखें भाप से ढँक जाती। कभी चोट्टि उन लोगो की तरह जवान था। तब धनुष उठाने के बाद कलेजे के नीचे बाढ-सी उठी थी।

"तुम कौन हो ?" तहसीलदार ने आवाज लगायी।

"चोट्टि गाँव के चोट्टि मुंडा का भाई कोयल मुंडा।"

कोयल बड़े भाई की ओर नही देख रहा था। उसकी आँखों मे और चेहरे पर, चोट्टि के लडको की आँखों मे और चेहरों पर अजीब उत्तेजना और सकल्प था।

"हाँ, कोयल ने निशान वेध दिया।"

शोर, शोर। चोट्टि की आँखो से आँसू बहने लगे। लडके कम नही हैं। कोई उसकी ओर नहीं देख रहा है। कोयल भी नही। मुखा और बिखना देख कर उछल रहे हैं। उनको ऐसी खुशी क्यों है ?

चोट्टि ने बीडी सुलगायी। वह अपने को बहुत बुजुर्ग महसूस कर रहा था।

तीर चलाने की सहज प्रतियोगिता मे प्रथम और द्वितीय स्थान चोट्टि के लडको ने लिये। बाद की कठिन प्रतियोगिता मे सना का भतीजा रूपा और कोयल ने दोनों मे दूसरा स्थान पाया। सबसे कड़ी प्रतियोगिता मे सभी उतरे। मानो सांठ-गाँठ हो। पांच गांव के सोलह प्रतियोगियो ने इधर-उधर तीर मार दिये। "कोई नही कर सका"—तहसीलदार की इस बात पर सब जीत की खुशी में चिल्ला उठे। तोहरी का गया मुंडा चिल्लाकर बोला, "सब बाप लोगो, वह सिर्फ चोट्टि कर सकता है। नहीं कर सके, इसमें तुमको कोई दुख नहीं होना चाहिए"

दारोगा मन-ही-मन बोल, 'खचड़ापन है। हारने पर सब

हैं, इसलिए दुख नहीं उठाते। निश्चय ही चोट्टि नहीं उतरा, यह देखकर उन्होंने इस तरह शोर मचाया।'

चोट्टि गाँव के ही लड़कों को कुल मिलाकर आठ रुपये मिले। तीरथनाथ बोला, "चलिये, अब हम चलें। अब ये लोग पूरा सूअर लायेंगे, मारेंगे,, मद-मांस खायें-पियेंगे, नाचेंगे, और पता नहीं क्या-क्या करेंगे।"

"हमेशा यही सब होता है।"

"बराबर। यह मेला तो उनका ही है। हम तो बाद में आये हैं। नहीं जानते, उनकी नजरों में हम सभी दिकू हैं?"

अब सब में बड़ा जोश था। दूसरे गाँवों के प्रतियोगी लोगों ने भी चोट्टि को घेर लिया। बोले, "हमें भी सिखाओ। हर मेले में जीतकर तुम्हारा नाम ऊँचा कर आयेंगे।"

"अच्छा, कोमान्डि का भरत मुंडा कहाँ है?"

"यह रहा, चोट्टि!"

"भरत! मुझे तो पता है कि तुम आखिरी निशान को वेध सकते हो। कम-से-कम आँख के पास तो तुम्हारा तीर जायेगा ही। कोशिश ही नहीं की। क्या बात है?"

"जंगली बात है।"

"बात क्या है"

चोट्टि का पहान बोला, "जिसमें तुझे नहीं उतरने देंगे, उस निशाने पर कोई भी मुंडा कोशिश करके नहीं देखेगा।"

"यह क्या बात है?"

"तुझे तो पता नही, जितने लोग मेलों में तीर खेलते हैं, अब मन-ही-मन तेरा नाम लेने के बाद ही धनुक उठाते हैं।"

चोट्टि की आवाज रुँध गयी। वह बोला, "तुम लोग इतना मान देते हो!"

भरत बोला, "हम तीन बरस तक इस तरह चलायेंगे। उसके बाद देखा जायेगा। दारोगा को भी सजा मिलेगी, देखो।"

"न, न, वह सब बातें रहने दो। एक दुखिया से कुरमी गाँव में जो... यह क्या? बहू, तुम घर नहीं जा रही हो?"

"हम औरतें तो जायेंगी ही। तुम लोग अब मस्ती करो। लेकिन एक बार हम लोग नाच लें, उसके बाद जायेंगे।"

आदमी लोग पीछे हट गये। औरतें घेरा बनाकर नाचने लगीं। नाचते-नाचते चोट्टि की बहू बोली, "मरद लोग क्या मर गये? बाजा कहाँ है?"

कोयेल आदि ने बाजा बजाया। औरतों ने नाचते-नाचते गाया :

मेला चलो हे सखियो, मेला चलो।
आहा, कौन बोला रे कौन बोला ?
मैं तेरे रूप का पागल रे।
यह चोट्टि नदी पार कर मेरा हाथ धरे रे ?
मोहे मेला ले चल।

चोट्टि कोयेल से बोला, "हरमू की माँ का ढंग तो देखो। जब जीत-र आता था, तब तो उसके चेहरे पर ऐसी खुशी नहीं देखी !"

कोयेल बोला, "आज हमारे लिए एक मान का—गरब का—दिन है।"

सूअर का मांस और भात, और मद। सहसा चोट्टि ने सुना, लड़के एक गाना गा रहे हैं। कोयेल साथ ही नगाड़े पर चोट दे रहा है।

तुम धनुक उठाओ, निशाना लगाओ
दारोगा को बड़ा भय है
तुम गौरमेन को अर्जी बनाओ
दारोगा को बड़ा डर है !
तुम्हें तीर नहीं चलाने दिया
तुमने तीर सिखाया दुखिया मुंडा को
बेगार वाले दुखिया को है !
दुखिया ने काटा गुमास्ता का सिर
डर है दारोगा को है !
तुम्हें तीर मेलने देगा नहीं।
कौन मुंडा जानता तीर का मतर ?
अकेले तुम जानते हो।
कौन मुंडा होता गौरमेन का मिता ?
अकेले तुम बने हे।
इसमें तुम्हें तीर मेलने न दिया।

गाना रुकने पर सभी हँसे। चोट्टि ने गमछा उठा मुँह पोंछ कर कहा, "अब और नहीं। मुझे बहुत लाज आती है। जाने-बूझे आदमी के लिए ऐसा क्यों करते हो, लाज आती है।"

अब दूसरा गान और नाच चला। चोट्टि जाकर सुखा और बिरसा के पास बैठ गया। बोला, "तुमने तीर नहीं मेला ?"

सुखा बोला, "ख़ुशी के दिन अपने दुख की बात नहीं कहूँगा। बाद में की जायेगी। जब से दुखिया गया, गाँव जैसे जल गया।"

बिखना बोला, "आज नहीं। आज हम लोग, पेट भरकर मांस खायेंगे, खुशी मनायेंगे। ओह! कितने दिनों से हँसे नहीं।"

खुशी की रात छोटी होती है, दुख की रातें बड़ी लम्बी। रात पलक मारते बीत गयी। धूप निकली तभी सबने अपने-अपने घरों की राह पकड़ी। जाते-जाते भरत मुंडा बोला, "यही बात पक्की रही। जो जैसे आयेगा, तुम सिखाओगे।"

"जो आता है, सिखा दूंगा।"

"वह मंतर भी? 'हाँ' कहो, मैं तुम्हारी बेगार बन कर जाता हूँ। तुम लोग सुनो, चोट्टि मुझे मंतर सिखायेगा, मैं उसका बेगार करने वाला बनूंगा।"

चोट्टि ने बड़ी शान्त आवाज में, उसके बदन पर हाथ रख कर कहा, "मंतर नहीं भरत, केवल अभ्यास, और अभ्यास, और अभ्यास।"

"सच कहते हो?"

"सच ही कहता हूँ।"

"तब वही मंतर है।"

"और कुछ नहीं मालूम है।"

"वही मंतर है।"

कई दिन बाद सुखा आया। रात में। बोला, "इस समय मेरे ऊपर बहुत दबाव है। तुम्हारे पास आने का दोष है। उसी से! भालू का क्या डर? सब साले पके बेर की गंध से जंगल में घूमते हैं।"

"बहुत पाजी जानवर होता है। बाघ आदमी को देखता है, खुद नहीं दिखायी पड़ता। भालू साला आकर आदमी को जकड़ लेता है और नाखूनों से नोचता है।"

"लेकिन शहर में भालू को कैसे नचाते हैं?"

"बचपन में पकड़ लेते हैं।"

"चल, घर में बैठें। मुंडानी तो गुस्सा नहीं होगी?"

"न। आ।"

सुखा बोला, "दुखिया ऐसे चला गया, जैसे गाँव जल गया हो। तुमको गौरमेन ने रोक दिया। हम राजा की बस्ती में रहते हैं। नये गुमास्ते ने सबको बेगार में बाँध लिया है। उसके अलावा भी कितना जुलुम है। बात-बात में माल दो। कचहरी में उसके कमरे में किसी के मरने पर बेगार नहीं, पर महसूल दो। उसके घर जनम में, बियाह में, मरने में—और

दिकू लोगों की तो अनगिनती पूजाएँ हैं—महसूल लेते हैं। राजा लोगों को आँखों से नहीं देखा है, पर उनके घर कुछ होने पर महसूल लगता है। वह एक कचहरी से दूसरी कचहरी जाता है। हम पालकी ढोते हैं, ले जायेंगे। और ले आयेंगे। वह पैदल चले तो सिर पर छाता लगाकर हम दौड़ेंगे। जिन्दगी राख हो गयी है!"

"क्या मुसीबत है।"

"कहते हैं, उस चोट्टि मुंडा के सिखाने से दुखिया मुंडा बिगड़ गया। तुम लोग उसके पास नहीं जाओगे। और दुखिया का गाँव कुरमी, वहाँ से कोई मुंडा लड़का तीर के खेल में नहीं उतरेगा। मैं तुम्हारी कमर तोड़ दूंगा।"

"इसका उपाय क्या है?"

"कोई उपाय नहीं है खतम होने का। इसी से...।"

"क्या?"

सुखा ने नाखून से जमीन कुरेदी। उसके बाद बोला, "तोमाड़ में मिशन है। वहाँ मिशन के मुंडे ठीक हैं।"

"वह तो बहुत दूर है।"

"दूर तो है।"

"धरम छोड़ देगा?"

"क्यों? धरम क्यों छोड़ूँगा?"

"क्रिस्तान बनना पड़ेगा।"

"ऐसा होने पर क्या फिर धरम में लौटा जा सकता है?"

"ऐसा बहुतों ने किया है...।"

"अभी तो बचें। वहाँ जाने पर, धरम छोड़ने पर मिशन के गोरमेन जमीन देंगे, बसायेंगे। भाग कर जहाँ भी जायेंगे, राजा के फंदे से छूट न पायेंगे। वे पकड़ लेंगे, और मरवा डालेंगे।"

"तब? मान ले तू भाग गया। घर के लोग?"

"मिशन में जाने पर राजा का अख्तियार नहीं रहता है।"

"घर के सभी लोग? गाँव के सब लोग?"

"एक गया तो सबको जाना पड़ेगा। नहीं तो जो रह जायेगा, उसकी चमड़ी से वह गुमास्ता जूते बनवायेगा।"

"सब जायेंगे?"

"वही तो चक्कर है।"

"तू जा, सुखा! ठहर थोड़ा, कोयल को बुला लें।"

"इस अंधेरे में जाओगे?"

"तू अकेले जायेगा ?"

"डर-वर सब भूल गया है।"

वही होगा। कैसी अँधेरा रास्ता है! आकाश के तारों के प्रकाश से कुछ भी आलोकित नहीं होता, और शुक्लपक्ष था। सुखा डर-वर सब भूल गया था। नहीं तो आया कैसे? चोट्टि की पत्नी ने लालटेन दी। वे लोग लालटेन अबेरे-सबेरे जलाते थे। किरासिन, मिट्टी का तेल, बहुत महँगी चीज़ थी। हमेशा वे लोग रोशनी का काम अभी भी महुआ के तेल के दीये से चला लेते।

रास्ते में चलते-चलते चोट्टि बोला, "बलोया लेकर मैं आगे चलता हूँ। तू पीछे आ। बात मत करना।"

चोट्टि ने थोड़ा भी आगे न बढ़ने दिया। सुखा को गाँव की हद पर पहुँचा दिया। बोला, "इस काम से जल्दी आना। रात को मत आना। जंगल में क्या नहीं है? बाघ, भेड़िया, गुलदार, भालू—सभी हैं।"

"मैं सब भूल गया। धरम छोड़ने की बात सोचने पर कलेजे के नीचे तीर-सा लगता है। खून बहता है। पूजा-परब में कितना आनन्द रहता है!"

"मिशन जाना हो तो जा। लेकिन कुलियों के ठेकेदारों के हाथ मत पड़ना। वे जाने कहाँ ले जाते हैं, कहीं चा-बागान में।"

"न-न। मिशन बिना गति नहीं है। गौरमेन के पास जाने पर ही राजा के हाथ से बचा जा सकता है।"

लौटते वक्त कोयेल बोला, "गाना गाऊँ ?"

"क्यों ?"

"उससे भालू समझेगा कि बहुत-से आदमी जा रहे हैं। डरेगा।"

"कोयेल, तुझे अकल नहीं आयी। पुकारकर मौत बुलायेगा ?"

दोनों जब लौटे तो रात और भी गहरा गयी थी। कोहरे-भरी हवा मे ठंडक थी। नदी के किनारे की बालू से कोहरा उठ रहा था।

कुरमी गाँव के मुंडे आसानी से गाँव नहीं छोड़ते थे। घोर जंग काटकर गाँव बसाने में बहुत कष्ट होता है। उस गाँव को छोड़ने में अ भी कष्ट होता है। "कहाँ है तुम्हारा मिशन? वहाँ क्या ऐसा पहाड़ चारों ओर माँ के आँचल का-सा जंगल है?"

"वह तो नहीं है, पर गुमास्ता भी नहीं है।"

"मिशन का जीवन दूसरी तरह का है। वहाँ क्या त्यौहार बरा और सबके होते रहते हैं?"

"वह तो नहीं है, पर बेगार नहीं है।"

"वहाँ जाकर हरमदेउ की पूजा की जा सकेगी ?"

"सो तो नहीं होगा, लेकिन बेकार का महसूल भी न देना होगा।"

पहान बोला, "तू जा रहा है तो जा। मैं किसी से रुकने को नहीं कह रहा हूँ। यह कुरमी गाँव हमें जंगल में मिला है। पहले मुंडा लोगों ने जंगल काटे, फिर खेती शुरू की। गाँव बसाये। ज्योंही उस जमीन में पैदावार हुई कि दिकू-महाजन घुस पड़े। मुंडा लोगों के गाँव अलग रहे। उस जगह से हमारे पुरखों ने गाँव बसाये। बहुत बाद में यह बस्ती राजा ने अपने अधिकार में कर ली।"

"तुम नहीं चलोगे ?"

"मैं ? मिशन में ?"

पहान पोरने मुँह से आश्चर्यजनक हँसी हँसा। गहरे विश्वास के साथ बोला, "मैं इस वयस में वहाँ जाऊँगा ? हरमदेउ का धरम छोड़कर ? तुम लोगों को जिन्दा रहना है, तुम लोग जाओ। ऐसे जुलुम में मैं किसी को रहने को नहीं कहता। पर...!"

"क्या ?"

"होली के दिन शिकार खेलकर जाओ। मैं आँख भरकर देख लूँ। मेरे गाँव के बच्चे-बूढ़े तीर-बलोया लेकर भागेंगे। गान की गति से लौटेंगे। उसके बाद नाच होगा, गान होगा।"

पहान एक दिन हाट आया। चोट्टि को पास बुलाकर कहा, "दूसरे मुंडा रह नहीं पायेंगे। वे जायेंगे।"

"क्या कहूँ, बताओ ?"

"किसी से कुछ मत कहना।"

"घर-घर छोड़ने को किसी से नहीं कहना। पर बलोया उठाकर एक और गुमास्ता मार देने पर भी छुटकारा नहीं है, यह तो देख लिया।"

" 'बलोया उठाने' को कहने से तुम्हारा मतलब हथियार उठाने से है। लोग अगर हथियार उठा पाते तो कुछ होता। या शायद तब भी कुछ न होता। मुंडा लोगों के लिए तो बीरसा भगवान ने बलोया उठाया था। पर उससे भी काम न हुआ।"

"दिकू लोगों का, गौरमेन का जोर कितना है, उनके पास हथियार कितने हैं।"

"गुमास्ता हमें मारकर भी पालकी चढ़ता है, जूते पहनता है, पान खाकर घूमता है! और दुखिया को, गुमास्ते को मारने पर, फाँसी होती है!"

"गौरमेन का कानून है।"

मामला तो कल की बात है। पुलिस ने गाँव में आकर उनका क्या हाल किया था ? लेकिन वे गाँव छोड़कर तो गये नहीं ?"

"सो मैंने उनको दबाकर रखा था।"

"वही बात है न, गुमाश्ता बाबू ! आपने खुद कबूल किया कि आपने उनको दबाकर रखा था। सो तो रखेंगे ही। लेकिन लोग, माने यहाँ के लोग, कहते हैं कि लड़के को आदमी बनाने के लिए मारना पड़ता है, और गुड़ भी देना होता है। आपने मारा था, फिर गुड़ भी दिया था, यह कचहरी के लोग कहते हैं।"

"कैसे ?"

"यही कि धान उधार दिया और यह भी समझाया कि राजा की गद्दी ज्यादा दिनों नहीं रहेगी। सेक्रेटरी साहब राजा से सन्तुष्ट नहीं हैं, छोटी रानी के दोनों लड़के जब अंधे हैं तो बड़ी रानी ने जिसे गोद लिया, उसे ही स्टेट देंगे। यह सब समझाकर आपने ही उन लोगों से जाने को कहा था, क्योंकि आप चाहते हैं कि यह जमीन नीलाम हो और आप बोली लगाकर ले लें।"

"ऐसी बात है ?"

"हाँ जी।"

"लोगों का कहना है ?"

"जी हाँ।"

"यहाँ लोग कहाँ हैं ? यह तो जंगली जगह है।"

अमीन हँसकर बोला, "आप काम करें और बातें न हों ! मैं तो कहूँगा कि वे चले जायेंगे—यह गुमाश्ताजी को मालूम था या नहीं यह नहीं पता, पर इस बार हाथ खोलकर कर्ज दिया। यह देखकर मुझे ताज्जुब हुआ था।"

"वही पर टीप ली हैं।"

"बेगार की टीप-सही का तो बही में पहाड़ हो गया है। सुखा के बाप सयाँ मुंडा को लें। सयाँ के परदादे ने टीप की, वह अभी भी उसकी बेगार दे रहा है। सयाँ से आपने बही पर निशानी लगवायी, वह भी ठीक है। सुखा आज का लड़का है। परदादा के निशान के लिए शायद बेगार न देना चाहे, तब उससे कहा जायेगा कि तेरे बाप का टीप-पट्टा है। फिर भी सयाँ से टीप क्यों दिलवायी ? एक आदमी को कितनी बार बेगार में घसीटेंगे ? आपके पहले के गुमाश्ते का सिर चला गया, फिर भी आपने इतनी सख्ती की कि हम लोग समझ गये कि आपका कोई मतलब है। ज़मीन ख़रीदेंगे। खरीदिये न ! नाकाटा के किसी टुकड़े में अब गुड़ नहीं है,

सब नमक है।"

"तो यह सब आपकी ही बात है?"

"और लोग कहाँ हैं? जंगली देश है।"

सियार और बाघ की कहानी में, चिड़िया और बिल्ली की कहानी में, अंत में बाघ या बिल्ली जिस तरह खिसिया जाते हैं, वही हालत गुमाश्ते की हुई। अमीन ने आखिरी चुटकी ली, "होली का दिन तो आ गया। राजा ने भी जानना चाहा था, मैं भी पूछ रहा हूँ। आप उनका शिकार खेलना क्यों बन्द करने गये? इस बार हम बाल-बाल बच गये। शिकार खेलना बन्द। वे लोग अगर बलोया शुरू कर देते तो?"

गुमाश्ता समझ रहा था कि सचमुच उसके भाग्य में यहाँ की धरती नमक हो गयी, गुड़ नहीं रही। अब उसे अपना ठिकाना खोजना होगा। इधर कचहरी में होली का मामला था। राजा ने शिकार पर जाने को कहा था। उसका सारा गुस्सा निकला पहान पर। उसे सब मालूम था, फिर भी उसने कुछ नहीं बताया। भयंकर क्रोध में गुमाश्ता प्यादे से बोला, "कुरमी चल।"

वे कुरमी गये। दो दिन बाद होली थी। पहाड़ और जंगल लाल-लाल हो रहे थे। पलाश खिले थे। कुरमी गाँव की शक्ल इस प्रात:काल में भी बहुत ही डरावनी हो रही थी, क्योंकि गाँव जनहीन था। बिना किवाड़ों के घर खाने को दौड़ रहे थे। प्यादा बोला, "लगता है जैसे गाँव भूतों का हो। कैसा सुनसान है!"

"पहान!—पहान हो? पहान!" पुकारते हुए गुमाश्ता रुक गया। कान लगाकर गाने का स्वर सुना। होली की तैयारी का गान। मन में असंभव आशा जागी—कोई-कोई है। खुशी हुई। काम छोड़कर अगर जाना पड़े, तो जो मिले उसे कोड़ा मारकर निकाल ले जायेगा। प्यादे से बोला, "चुप, चुप! आवाज सुनकर वे भाग जायेंगे। गाँव में ही है, नहीं तो गा कौन रहा है?"

"आप आगे बढ़िये।" प्यादे की स्मृति में दुखिया के हाथ में बल्लम में खोंसा ताजा कटा सिर उभर आया। उसने गरदन पर हाथ फेरा। अगर वैसा ही कुछ फिर हुआ तो वह भाग सकता था? गुमाश्ता भाग नहीं सकता था। उसे दौड़ने की आदत नहीं थी।

गुमाश्ता आगे-आगे और प्यादा पीछे-पीछे चला। गुमाश्ता गुस्से से अंधा हो रहा था। उसके मन में एक ही दृश्य एक ही ढंग से झलकता। यह लोग आगे बढ़ते गये और गाने का स्वर साफ होता गया·

पूरब दिस रहा बाघ, आहा मरद बाघ—

चोट्टि मुंडा और उसका तीर

वल्लम में वींध दिया उसको—
शिकार-परव के दिन गया था वन में
तुम थीं घर में—हाँ
डयोढ़ी पकड़े ताक रही थीं, पच्छिम ओर
मैं तो तव था पूरव दिसा
शिकार-परव के दिन गया था वन में।

उन लोगों ने वढ़कर एक पुटुस की झाड़ी पार कर गाने वाले को देखा। घर के आगे साल के पेड़ के नीचे पहान वैठा था। उसके पास कई कुत्ते लेटे हुए थे। हवा में साल के पत्ते झर रहे थे। आँगन में पत्ते उड़ रहे थे। कुत्ते विना खाये मरियल-से हो रहे थे, फिर भी वे पुकारने पर उछल-कर उठ खड़े हुए। पहान वल्लम लेकर, उसे हाथ में हिलाता हुआ चला। पहान गाना गा रहा था। गुमाश्ते को देखकर उसने गाना रोका नहीं, गाता रहा, "शिकार के दिन...।"

"पहान, ए पहान, गाना वन्द करो !"

"पूरव दिस रहा वाघ, आहा मरद वाघ—!"

"पहान !" गुमाश्ते को डर लग रहा था। फिर भी वूढ़ा, दुवला-पतला पहान जिसके वल्लम पर मोर्चा लगा था, वैठा ही रहा। उसका वदन पेड़ से छिला हुआ था।

"वल्लम में वींध दिया उसको—शिकार परव के दिन—"

"पहान !" गुमाश्ते की आवाज़ क्षीण हुई। सूने गाँव में एक वुड्ढे की आवाज़ से शिकार-परव का गाना इस तरह डर क्यों पैदा कर रहा है !

"पहान !"

पहान गाना समाप्त करता है, रुकता है। फिर ऐसे वोला जैसे हवा से कहता हो, 'कुत्तो ! गुलदार के डर से मेरे पास आये हो। कुत्तो !'

उसने फिर गाना शुरू किया और अनजाने डर का चावुक खाकर गुमाश्ता और प्यादा भागने लगे। विना किवाड़ के घरों के अंदर से हवा वहती है, सूखे पत्ते उड़ते हैं। वे भागते रहे।

ओट में खड़े होकर चोट्टि ने सारा दृश्य देखा। वह भी आया था और दम साधकर पहान के पीछे खड़ा था। अव आगे वढ़ा और पहान के आगे उसने मक्का का सत्तू, राव और जल रखा। पहान के पास से वल्लम हटा लिया। गान समाप्त होने पर पहान का दुवला-पतला हाथ सत्तू प[illegible] ले गया। आहिस्ता से वोला, "खाओ।"

"खाऊँ ?"

"हाँ, पहले उनके डर से नहीं आया। वे लोग फिर आ सकते हैं, अ[illegible]

नही रुकूँगा। फिर आऊँगा, फिर दे जाऊँगा।"

पहान जैसे बहुत दूर चला गया था। दूर से तैरते आते क्षीण स्वर में वह बोला, "चोट्टि, चोट्टि मुडा। बिसरा का बेटा, एतोया का नाती, सोमाइया का पोता।"

"जाओ, मैं चला।"

"एतोया के साथ मैंने कभी होली की आग जलायी थी।"

"आज जलाओ, कल होली है।"

"हाँ, याद है। इन कुत्तों को ले जा सकता है?"

"जायेंगे?"

"ना! तुझे पहचानते नही।"

"मैं चलूँ।"

"जा।"

सहसा पहान पास आ गया और बडे चाव से बोला, "सावधान होकर जाना, बाप! तुझे देखने पर गुमास्ता जुलुम ढायेगा। तेरे नाम पर बहुत-सी बातें कहता है।"

'सावधान होकर जाना बाप!' सुनकर चोट्टि के कलेजे के नीचे जैसे कुछ दर्द के मारे फट-सा गया। पहान का ढग ऐसा आन्तरिक था। मारे धार्मिक विश्वासों में आत्मघात के अपराध में महापापी सिद्ध हुए पिता बिसरा मुडा की याद आयी। वह ऐसी ही आवाज में, ऐसी ही बातें करता था। चोट्टि बोला, "सावधान होकर ही जाऊँगा।"

उस दिन शाम को गाँव-गाँव में होली जलाकर बडी खुशी से छोटे लोग जब उस आग को घेरे थे तो कुरमी में आज होली की आग नही जलेगी, यह सोचकर चोट्टि के कलेजे में दुख था। तभी सब चिल्ला उठे और उन्होंने दक्षिण की ओर हाथ उठा कर एक-दूसरे को दिखाया।

पहाड के ऊपर कुरमी गाँव जल रहा है।

सना ने कहा, 'गुमास्ते ने जला दिया गाँव।"

चोट्टि ने कुछ नहीं कहा।

पहान चला गया।

चोट्टि ने कोई बात नही की।

दूसरे दिन शिकार-परब के दिन चोट्टि तडके उठ खडा हुआ। पत्नी से बोला, "कोई पूछे तो कह देना, खेत गया है। मैं गया और आया।"

"कहाँ जा रहे हो?"

"कुरमी। पहान जिन्दा है या नही, यह देख आऊँ।"

चोट्टि की बहू भी दूसरे गाँव के एक पहान की नातिन थी।

वल्लम में वींध दिया उसको—
शिकार-परब के दिन गया था वन में
तुम थीं घर में—हाँ
ड्योढ़ी पकड़े ताक रही थीं, पच्छिम ओर
मैं तो तब था पूरब दिसा
शिकार-परब के दिन गया था वन में ।

उन लोगों ने बढ़कर एक पुटुस की झाड़ी पार कर गाने वाले को देखा । घर के आगे साल के पेड़ के नीचे पहान बैठा था । उसके पास कई कुत्ते लेटे हुए थे । हवा में साल के पत्ते झर रहे थे । आँगन में पत्ते उड़ रहे थे । कुत्ते बिना खाये मरियल-से हो रहे थे, फिर भी वे पुकारने पर उछल-कर उठ खड़े हुए । पहान वल्लम लेकर, उसे हाथ में हिलाता हुआ चला । पहान गाना गा रहा था । गुमाश्ते को देखकर उसने गाना रोका नहीं, गाता रहा, "शिकार के दिन...।"

"पहान, ए पहान, गाना बन्द करो !"

"पूरब दिस रहा बाघ, आहा मरद बाघ—!"

"पहान !" गुमाश्ते को डर लग रहा था । फिर भी बूढ़ा, दुबला-पतला पहान जिसके वल्लम पर मोर्चा लगा था, बैठा ही रहा । उसका बदन पेड़ से छिला हुआ था ।

"वल्लम में वींध दिया उसको—शिकार परब के दिन—"

"पहान !" गुमाश्ते की आवाज़ क्षीण हुई । सूने गाँव में एक बुड्ढे की आवाज़ से शिकार-परब का गाना इस तरह डर क्यों पैदा कर रहा है !

"पहान !"

पहान गाना समाप्त करता है, रुकता है । फिर ऐसे बोला जैसे हवा से कहता हो, 'कुत्तो ! गुलदार के डर से मेरे पास आये हो । कुत्तो !'

उसने फिर गाना शुरू किया और अनजाने डर का चाबुक खाकर गुमाश्ता और प्यादा भागने लगे । बिना किवाड़ के घरों के अंदर से हवा बहती है, सूखे पत्ते उड़ते हैं । वे भागते रहे ।

ओट में खड़े होकर चोट्टि ने सारा दृश्य देखा । वह भी आया था और दम साधकर पहान के पीछे खड़ा था । अब आगे बढ़ा और पहान के आगे उसने मक्का का सत्तू, राब और जल रखा । पहान के पास से वल्लम हटा लिया । गान समाप्त होने पर पहान का दुबला-पतला हाथ सत्तू पर ले गया । आहिस्ता से बोला, "खाओ ।"

"खाऊँ ?"

"हाँ, पहले उनके डर से नहीं आया । वे लोग फिर आ सकते हैं, अब

नहीं रखूंगा। फिर आऊँगा, फिर दे जाऊँगा।"

पहान जैसे बहुत दूर चला गया था। दूर से तैरते आते क्षीण स्वर में वह बोला, "चोट्टि, चोट्टि मुंडा। बिमरा का बेटा, एतोया का नाती, गोमाइया का पोता।"

"खाओ, मैं चला।"

"एतोया के साथ मैंने कभी होली की आग जलायी थी।"

"आज जलाओ, कल होली है।"

"हाँ, याद है। इन कुत्तों को ले जा सकता है?"

"जायेंगे?"

"ना! मुझे पहचानते नहीं।"

"मैं चलूं।"

"जा।"

सहसा पहान पास आ गया और बड़े चाव से बोला, "सावधान होकर जाना, बाप! तुझे देखने पर गुमास्ता जुलुम ढायेगा। तेरे नाम पर बहुत-सी बातें कहता है।"

'सावधान होकर जाना बाप!' सुनकर चोट्टि के कलेजे के नीचे जैसे कुछ दर्द के मारे फट-सा गया। पहान का ढंग ऐसा आन्तरिक था। सारे धार्मिक विश्वासों में आत्मघात के अपराध में महापापी सिद्ध हुए पिता बिमरा मुंडा की याद आयी। वह ऐसी ही आवाज में, ऐसी ही बातें करता था। चोट्टि बोला, "सावधान होकर ही जाऊँगा।"

उस दिन शाम को गाँव-गाँव में होली जलाकर बड़ी खुशी से छोटे लोग जब उस आग को घेरे थे तो कुरमी में आज होली की आग नहीं जलेगी, यह सोचकर चोट्टि के कलेजे में दुख था। तभी सब चिल्ला उठे और उन्होंने दक्षिण की ओर हाथ उठा कर एक-दूसरे को दिखाया।

पहाड़ के ऊपर कुरमी गाँव जल रहा है।

मना ने कहा, 'गुमास्ते ने जला दिया गाँव।"

चोट्टि ने कुछ नहीं कहा।

पहान चला गया।

चोट्टि ने कोई बात नहीं की।

दूसरे दिन शिकार-परब के दिन चोट्टि तड़के उठ खड़ा हुआ। पत्नी से बोला, "कोई पूछे तो कह देना, खेत गया है। मैं गया और आया।"

"कहाँ जा रहे हो?"

"कुरमी। पहान जिन्दा है या नहीं, यह देख आऊँ।"

चोट्टि की बहू भी दूसरे गाँव के एक पहान की नातिन थी। वह बोली,

'पहान कभी आत्महत्या नहीं करता। उसके लिए फिकर क्यों कर रहे हो?"

"तुझे क्या पता, बहू?"

"मेरी पानी की लुटिया गयी—अलमुनिया की लुटिया।"

"तुझे पता है?"

"यह भी मालूम है, यह आग उसने लगायी है। मेरा मन कह रहा है।"

चोट्टि चल पड़ा। सिर और बदन चादर से लपेटकर उसने दौड़ना चाहा। उसका रास्ता खतम ही नहीं हो रहा था। उसके बाद वह कुरमी पहुँचा। सूना, सब सूना था। राख का ढेर। राख उड़ रही थी। घर का ढेर मानो श्मशान के पत्थर-सा बड़ा हो रहा था। पेड़ की डाल तोड़कर उसने राख को उलटा-पलटा। वह राख में पहान की हड्डियाँ खोज रहा था। पहान नहीं था, कुत्ते नहीं थे। तो चले गये? अचानक उसको चौंकाकर दूर पर कुछ कुत्ते भूंके और उसने मुँह उठाकर एक अविश्वसनीय दृश्य देखा। गाँव के बिलकुल सामने पहाड़ की चोटी सपाट थी, और पहाड़ लम्बा था और नीचा भी। पहाड़ की ढाल से दस मील तक बड़ा घना जंगल था। पहाड़ की चोटी पर बल्लम ऊँचा कर पहान जा रहा था, उसके पीछे कई कुत्ते थे। वह पहाड़ की ढाल से जंगल की ओर उतर रहा था। आज शिकार-परब का दिन था। पहान और कुत्ते उतरे। जंगल ने उनको निगल लिया। चोट्टि ने सिर हिलाया। उस जंगल में पैदल चलने का कोई रास्ता नहीं था। भालुओं के डर से उधर कोई जाता न था।

पहान का जंगल में जाना प्रतीकात्मक था। उसी के साथ उषा और रात्रि के सन्धिकाल में कुरमी ग्राम के मुंडा लोगों की कहानी समाप्त हुई। तोमारू मिशन के जोज़फ़ सुखा मुंडा, दाऊद बिखना मुंडा की कहानियाँ अलग हैं। कई किंवदन्तियों ने जन्म लिया। सभी किस्से-कहानियाँ हैं चोट्टि मुंडा के जीवन में। कहानी से गान है :

बड़ा जुलुम उठाया दयालराज गुमास्ता ने
कुरमी के मुंडाओं को बाँधा था बेगार में
बेगार देते-देते-देते-देते—
सुखा मुंडा गया था चोट्टि मुंडा के पास
चोट्टि मुंडा ने भेज दिया तीर तोमारू मिशन की ओर
कह दिया, तीर के पीछे-पीछे जा।
चोट्टि ने भेज दिया अग्नि-मुखा तीर
कुरमी में जली होली की अगिन।
चोट्टि ने भेज दिया तीर पहान के पास

"अब नहीं मारूँगा।"

सोमचर माँ की ओर देखकर बोला, "माँ के पेट में बहिन है न, बाबा?"

चोट्टि और बहू दोनों ने एक-दूसरे की ओर से मुंह फेर लिया। बहू बोली, "जा, मुर्गियों को देख, सोमचर! दिन-भर सियार घूमते हैं।"

"सियार लाठी दिखाने से भाग जा ते हैं?"

"तीर चलाकर सियारों को मार दूंगा।"

चोट्टि डाँटकर बोला, "धनुक ऐसे ही नहीं दिया जाता। समय आने पर धनुक दूंगा। जा भाग। हमारी माँ हमें कुछ कहती थी तो हम भाग-कर काम करते थे।"

"भागें क्यों? माँ के पेट में बहन क्यों होगी? हम तब काकी के पास क्यों लेटेंगे? तब माँ हमें प्यार क्यों न करेगी?"

"बेटियाँ माँ के पास रहती हैं। बेटे बाप के पास रहते हैं। तू तब मेरे पास रहेगा। है न? अब जा! दादा को बुला दे।"

चोट्टि ने बहू से बताया, "महाराज ने चीनाबदाम लगवाकर मेरी जान निकाल ली। नीचे की जमीन खोद, मेहनत कर, जिस तरह दिकू लोगों के घर के बेटे-बेटी करते हैं।"

"फायदा जो दूना होगा?"

"वह तो है। उसे लगाने के पहले किसी को मालूम नहीं था कि ऐसी जमीन में ऐसे चीनाबदाम होंगे। अब सभी लगा रहे हैं।"

"तीरथनाथ कुछ खरीदता नहीं है?"

"नमक और किरासिन। वह भी अगर जमीन में फलता तो लगाता।"

चोट्टि और हरमू निकले। कोयेल राइ गया था। सबेरे की ट्रेन से जाता था, लौटने में रात हो जाती थी। फिर भी उस हाट में दाम अधिक मिल जाते थे। हरमू के साथ धनुक रहता था। धनुक में तरक्की पाने के बाद उसके कंधे से धनुक नहीं उतरता था। हरमू की आँखें और चेहरा बहुत अच्छे थे। सफेद धोती बहुत मैली हो जाती है। इसी से माँ उसकी धोती कुसुमी रँग में रँग देती थी। स्टेशन-मास्टर की माँ उसे देखकर कहती थीं, "बालक जैसे राम हो।" हरोया चलते-चलते बोला, "बाबा! क्या एक दाँत वाला बराह बदाम खाने आता है?"

"हाँ रे।"

"हाथी की तरह बड़ा?"

"बराह क्या हाथी-सा बड़ा होता है?"

"बताओ न।"

"बहुत बड़ा।"

"वराह आदमी को मारता है?"

"मारता नहीं! मेरे बाबा तब जवान थे, मैं दो बरस का बच्चा था। शिकार-परब के दिन एक दाँत वाले वराह ने मेरे काका का पेट फाड़ दिया।"

"उसके बाद?"

"घर लाते-लाते काका मर गये।"

"तब?"

"बाबा बोले, 'उस वराह को मारे बिना पानी नहीं पिऊँगा।' उन्होंने उस वराह को बल्लम से मारा, तब पानी पिया। पर बाबा सूअर काटते हुए उधर देखते नहीं थे। शिकार में हाथ ऐसा था, मगर मुर्गी नहीं काट सकते थे। इस पर माँ हँसती थी।"

"यह वराह तुम नहीं मारोगे?"

"ना रे, दारोगा बाबू मारेगा।"

"तुम तो मार सकते हो?"

"उसका शौक है। शिकार करेगा।"

इस दाँत वाले वराह का शिकार करने जाने में दारोगा को जान का डर लगा रहता। चीनाबदाम के खेत का बाड़ा ऊँची नागफनियों से घिरा हुआ था। काँटों से लहू-लुहान और घायल होकर चोट्टि आदि ने इस एक वर्ग मील खेत में नागफनी का घेरा लगाया था। उस समय तीरथनाथ को आलू का खेत बनाने का शौक था। तभी घेरा लगा था। कुछ बरसों में पेड़ बड़े हो गये थे। बरसात के पानी से धीरे-धीरे नये पत्ते भी निकले थे। टुकड़े का अगला भाग तीरथनाथ के खेत की ओर था। जमीन तीन भाग ऊँची थी, उसके बाद ढलुवाँ थी। फिर एक नाला था। भगवान जिसे देते हैं, छप्पर फाड़कर देते हैं। इसी से तीरथनाथ की 1500 एकड़ जमीन के बीच में एक पतली-सी नदी बहती थी जो इनकी भाषा में नाला थी। नाले में गर्मियों में भी ठंडा पानी रहता जिससे आसपास की जमीन उपजाऊ थी। इस जगह जहाँ कुएँ के सिवा कहीं पानी नहीं मिलता था, वहाँ यह बड़ा सहारा था। ऊँची जमीन और नीची जमीन के बीच नाले के किनारे कई आँवले के पेड़ थे। पेड़ों की ओट से उधर नजर नहीं जाती। ऊँची जमीन पर बाड़ा है। दाँत वाले सूअर ने नागफनी का बड़ा घेरा तोड़ डाला। चीनाबदाम के पौधे नष्ट कर दिये। दारोगा ने उसे मारने को कहा है। कई बार गलत निशाने के तीर खाकर वराह आदमी देखते ही बिगड़ जाता है। उसकी घुरघुराहट सुनते ही चोट्टि के लोग भाग खड़े होते हैं। तीर लगने

पर वह मरा नहीं, यह जानकर दारोगा हँसकर बोले, "तीर का काम नहीं है। बंदूक से मारना होगा। तीर से तो चिड़ियाँ या खरगोश मारे जा सकते हैं।"

इतने दिनों तक वह मारा नहीं गया, दारोगा को वक़्त नहीं मिल रहा था। तीरथनाथ की माँ ने भी 'वे वराह अवतार हैं' कहकर ज़िद की थी। लेकिन वराहावतार के लिए हज़ारों रुपयों के चीनावदाम तो बरबाद नहीं किये जा सकते। अब उनका कहना था, मारे जाने के बाद वे काशी जाकर प्रायश्चितस्वरूप विश्वनाथ के मंदिर में सोने के एक सौ आठ तुलसी-दल चढ़ायेंगे। शिव और विष्णु असल में एक हैं।

इतनी बात के बाद एक दिन दारोगा आये। नीचे के खेत में काम करते-करते ही सना कह रहा था, "कई दिन से दिखायी नहीं पड़ा, वह साला आयेगा। ओह, जिस राह आता है, कंद की खोज में जमीन खोद फेंकता है।"

चोट्टि बोला, "तेरी तलाश में आता है।"

"क्यों?"

"तू उसे तीर मारकर भाग खड़ा हुआ।"

"कितना बड़ा है! सोचा कि मार सकूँ तो सब खूब मांस खायेंगे।"

"इसी से कूल्हे में मारा।"

"अरे! वह घूम गया। तूने भी तो बाद में नहीं मारा।"

"दारोगा मारेगा।"

"वराह मारने के लिए ही दारोगा आये हैं।"

निचली ज़मीन में जहाँ वराह ने बेड़ा तोड़कर जगह कर ली थी, वहीं वे लोग खड़े हो गये। बाड़े से थोड़ी दूर पर एक मचान था। उस पर छाजन थी। इस मचान पर बैठकर खेती पर डाका डालने वाले हिरन और सूअरों को भगाने के लिए पहरा देना पड़ता था। मचान कई खंभों पर था। चो… बोला, "हुज़ूर, उसकी ओट में खड़े हों।"

दारोगा बोले, "सूअर एक ओर देखकर चलता है। इससे पहले … वह हमें देख पाये हम उसे गोली मार देंगे। तुम लोग चले जाओ। बिर… तुम रहो।"

कांस्टेबल बिरजू के हाथ में बल्लम था।

चोट्टि बोला, "हम नीचे रहते हैं, हुज़ूर, शिकार देखेंगे।"

"तुम कितने लोग हो?"

"छः जन, हुज़ूर।"

"साथ में कुछ है?"

"बलोया तो रखते ही है। और खुरपी है। काम कर रहे थे।"

"बिलकुल बोलना मत।"

"नहीं, हुजूर !" चोट्टि भी बड़े जोश मे था। वे लोग नीची जमीन की ओर आकर ढलान का सहारा लेकर खडे हो गये। सभी जोश में थे।

घो-घो की आवाज आयी। सना फुसफुसाकर बोला, "आ रहा है।"

चोट्टि ने उसका मुंह बन्द कर दिया।

दारोगा ने पहले भी शिकार किया था। इन सारी जगहों में अभी भी बहुत शिकार हैं। जाडो मे शाम के बाद राह चलती थी। बीच-बीच में बाघ न दिखायी पड़ा हो, ऐसा नही होता। जंगली वराह भी मारा गया था। लेकिन उन्होंने घायल वराह पहले कभी नही मारा था। हाथों की पकड भी ठीक थी। बंदूक संभालकर खडे हो गये। वे सोच भी नहीं सके कि सूअर ने बाड़े मे घुसने के पहले ही उन्हें देख लिया था।

उनका हिसाब गडबड़ करता सूअर बाड़ में बनायी हुई जगह से न घुसकर उनके पीछे के बाडे से जहाँ पेड छितरे थे, तेजी से घुसा और नागफनी की खरोंच लगने से और भी बिगड़ गया। असल मे बिगडकर ही वह घुसा था। बल्लम फेंककर बिजली की तेजी से कांस्टेबल मचान से उछल पडा और दारोगा के खड़े-खडे घूमकर गोली चलाते-न-चलाते पाँच बार गोली खाकर सूअर उनके ऊपर आ पडा। उनके आर्त चीत्कार से बिजली छू जाने की तरह चोट्टि जुती जमीन पर उछल पड़ा। वह शिकारी था। शिकारी के हथियार होते है—तीर-कमान, या कभी बल्लम। लेकिन शिकार करना उसके खून में था। शिकार करते समय सोचने की तेजी जरूरी होती है। बराह दारोगा का बायाँ हाथ फाड़ रहा था। बिरजू ऊपर मचान पर था। चोट्टि तीर के वेग से भागा, बिरजू का बल्लम लिया। 'हरा-हरा-हरा'—वराह ने भी हुडकम्प गर्जना की। बराह दारोगा को छोड उसकी ओर घूम गया। चोट्टि बल्लम लिये भागा आ रहा था। उसने बराह के कान के नीचे से तिरछे बल्लम मारकर पूरी ताकत से उसे दबा दिया। सूअर पहाड-सा था। चित्त होने पर भी उसने उठने की कोशिश की, कोशिश की और उठा। सना ने पैरों के पास बलोया चला दिया। वे बलोया उठाये आ रहे थे। चोट्टि ने बलोया उठाया। दाँत से उसका पैर घायल हो गया था। वह बहुत गुस्से में था। अधाधुंध वह बलोया चलाता रहा और उसके साथी भी मारते रहे। साहसी पशु भी बडी बहादुरी से लड रहा था। लेकिन अन्त में मर गया।

दारोगा को उठाकर स्टेशन ले जाया गया। मालगाडी रोककर उसे डाल्टनगंज अस्पताल ले गये। तोहरी थाना से स्टाफ लाने का वक्त न

था। तीरथनाथ, बिरजू और दो कुली साथ गये। गार्ड के डिब्बे में फ़र्श पर ही दारोगा को लिटा दिया गया।

स्टेशन मास्टर बोला, "चोट्टि, तू भी जा।"

"नहीं, ठीक हो जायेगा।"

चोट्टि लँगड़ाते-लँगड़ाते लौटा। पहान लता-वता बटोरकर लौट आया। घाव देखकर बोला, "हड्डी बच गयी, टूटी नहीं।"

चोट्टि के पैर में पट्टी बांध दी गयी। चोट्टि और लोगों से बोला, "साला मरा पड़ा है। काट-कूटकर खाया जायेगा। ले आओ।"

वराह बहुत बड़ा था। बहुत-से मुंडा पसीना-पसीना हो गये। वराह का मांस गंजू-दुसाध-धोबी टोली और कुली लाइन में बाँटा गया। दोनों दाँत चोट्टि ने रख लिये। बोला, "दारोगा बच गया तो उसे दूंगा। बहू, मांस का आचार बना लेना। पके मांस का।"

चोट्टि खून से तर-ब-तर था, पर आचार की बात सोच रहा था।

"अरे, बहुत मांस है, बहुत-सी मद पीने से दरद आप ही चला जायेगा।"

चोट्टि का घाव सूखने में लगभग सात दिन लग गये। दारोगा के घाव अच्छे होने में लगभग डेढ़ महीना लग गया। अस्पताल से निकलकर उसने चोट्टि को बुलवा भेजा। दोनों दाँत पाकर वह बहुत खुश हुआ। चोट्टि को धन्यवाद देने में उसे बहुत संकोच हो रहा था। बोला, "तुम्हारे ही कारण उस दिन बच गया। मैंने नहीं सोचा था कि सूअर उधर से आ जायेगा।"

"घायल होने पर यह ज्यादा बदमाश हो जाते हैं।"

"मैं तो मर ही गया था।"

चोट्टि हँसने लगा। बोला, "बहुत बड़ा वराह था।"

"चोट्टि ! तुम्हें...," दारोगा ने जेब में हाथ डाला।

"ना हुजूर ! नहीं लूंगा।"

"नही लोगे ?"

"अगर मैं उसकी चपेट में आ जाता और आप मुझे बचाते तो क्या मैं आपको कुछ भी दे सकता था ?"

दारोगा हँसकर बोला, "लेकिन देते तो मैं तो ले लेता।"

चोट्टि बोला, "यही बहुत है। आप बच गये, यही बहुत है।"

अब दारोगा ने कह दिया, "तुम तीर के खेल में फिर उतरो। रोक उठा ली। ज़रा और ठहरो। मेरी पत्नी ने तुम्हारे बेटे के लिए—माने मैं लौट आया, इसलिए पूजा हुई थी न—मिठाई दी है।"

"इतनी मिठाई, हुजूर ?"

"इतनी बया ?"

सभी को बाँटकर चोट्टि ने भी मिठाई खायी।

इसके बाद उसके लड़की हुई। बुधवार को हुई थी, उसका नाम रखा गया बुधनी।

दारोगा ने उसके तीर खेलने पर लगी रोक उठा ली। इस बात की जानकारी होने से सभी बहुत खुश हुए। यह घटना भी धीरे-धीरे उसका एक और कृतित्व और अलौकिकता बन गयी। हर चीज इस चोट्टि मुंडा के जीवन में कहानी बन जाती—किस्सा और गान। गान के किस्से में वराह बन गया चलता-फिरता पहाड़, और कथा बहुत ही काल्पनिक। गान में चोट्टि को एक नया हथियार मिला :

तुमने घास उठा ली
घास बन गयी बल्लम
वराह को मार दिया
वराह मर गया तभी
और दरोगा ?
वह बोला, तुम हो महावीर
जाओ, मारो मेलों में उतरो।

चोट्टि अपनी पत्नी से बोला, "घास उठाने से बल्लम बन जाता है, लेकिन तीरथ लाला का खेत जोते बिना पेट-भर भात भी नहीं जुटता।"

"हमारा जीवन ऐसे ही चलेगा। दादी-परदादी से कहानी सुनी थी, मुंडा लोगों के पास इतना था, उतना था। पर घर था—शिकार से भरा वन। किसी भी दिन उन्होंने बातचीत में यह नहीं कहा कि मुंडा की कोठा-बाड़ी थी। हम लोगों ने तो वह सब देखा नहीं। देखते आये महाजन के पास कोठा है, मुंडा लोग रहते हैं पत्तों के घरों में। महाजन के खेत जोतते हैं।" बहू ने लड़की को दूध पिलाते-पिलाते दूसरी बात शुरू कर दी। बोली, "कुरमी की धरती में कुछ है क्या ?"

"क्यों ?"

"कोयल ने देखकर कहा है कि वहाँ इतनी बड़ी-बड़ी मिर्चें, इतना बड़ा कुम्हड़ा फलता है।"

"घर जलकर राख हो गये थे। उसमें पत्ते सड़कर खाद हो गये हैं।"

"तुम जरा बुधनी को देखो। बुधनी बकरी ले जायेगा, उसे खाने को दे दूँ। रस्सी नहीं है, पता है ? रस्सी लानी होगी।"

"ले आऊँगा।"

चोट्टि के बनाये पालने में सुखनी झूल रही थी। लड़की को झोंटे देते-देते चोट्टि धीरे-से बोला, "बाप के नाम का गान कान में सुनेगी ? आँखों से देखेगी कि बाप महीने में तीन रुपया मजूरी और दाना-पानी पर लाला का खेत जोतने पर लगा है।"

लड़की सो रही थी। चोट्टि को कुरमी की याद आयी। 'कुरमी' कहते ही दुखिया का चेहरा याद आता। वही तसवीर आगे आ जाती। पहाड़ की चोटी पर आकाश में अंकित चलती हुई तसवीर की तरह पहान कई कुत्तों को लेकर चला जा रहा है। उसका रास्ता तोमारू न था। उस तरह के दुर्गम स्थान में कोई रास्ता ही न था। जंगल में उतर गया। जिस वन के चारों ओर केवल पहाड़ हैं, वहाँ से निकलने की राह नहीं है, पहान उस वन में क्यों गया ? अपने समीप सच्चा रहने के लिए धानी जेजुड़ चला गया, दुखिया गुमाश्ते का सिर लेकर थाने गया। पहान को उस वन में जाना पड़ा ! चोट्टि का निश्चित विश्वास था कि किसी दिन उस वन को चीर-चीरकर खोजने से पहान और कुत्तों के कंकाल मिलेंगे।

इसी बरस, चोट्टि के किसी मेले में तीर खेलने जाने से पहले चार मुंडा लड़के उसके पास आये। एक टोकरा उतारकर रखा। उसमें थे लाल आलू, एक कुम्हड़ा, राब और बहुत-सा सत्तू। ज़मीन तक प्रणाम कर बोले, "भरत मुंडा ने हमको भेजा है।"

"इतने दिनों बाद ?"

"जमींदार की बजारी से हम लोग बहुत परेशान हैं।"

"मिट गयी ?"

"वह तो उनका जीवन और हमारा जीवन रहते मिटने वाली नहीं है। जब हम पत्थर के नीचे और वह खड़िया के नीचे जायें तभी शायद मिटे।"

"भरत का क्या हाल है ?"

"उस गाँव को छोड़ने का उपाय नहीं है।"

"क्यों ?"

"बजारी के लिए हर हाट के दिन शोर होता है।"

"तुम सीखोगे ?"

"हाँ।"

"कब आओगे ?"

"जब कहो।"

"भरत ने भेजा है। मैं सिखाऊँगा भी। पर कहते हो कि बजारी को लेकर अशान्ति है। तुम लोगों के कुछ कर बैठने पर मुझे दुख होगा।"

"मैं बुधा हूँ। भरत मेरा काका लगता है। एक बात कहूँ?"

"कहो।"

"तुम सिखाने के लिए सिखाओगे। तुमने सिखाया था इसलिए तो दुखिया ने वह काम नहीं किया। गुमास्ते ने जबरदस्ती खींच-खांचकर भड़काया था।"

"सो तो सच है।"

"उसमें भी थाने के लोग तुम्हारा दोष समझते हैं। पुलिस हमेशा मुंडा लोगों का दोष देखती है। मैंने इस गुमाना को मोह भगाने के लिए लाठी दी। उसने मारकर कनू का सिर तोड़ दिया। उसमें मेरा क्या दोष? मेरे भाग्य में माने जमींदार की चोट है। अगर कुछ हो जाये तो उसके दोष में होगा। कौन क्या कहता है, वह बात जमींदार बतायेगा।"

चोट्टि समझा कि जिस तरह दिन जा रहे हैं, उसमें मुंडा लोगों की बातचीत, सोचना-विचारना भी बदलना जा रहा है। बुधा की बातों में समझ है, और इन बातों को अस्वीकार भी नहीं किया जा सकता है।

फिर भी वह बोला, "पुलिस बहुत जुलुम करती है। इसी से कह रहा हूँ।"

"गड़बड़ कौन चाहता है? लेकिन इस तरह की बसूली तो ठीक नहीं। जो कुछ अच्छा हो, वह सब ले लिया जाये तो क्या बेचेंगे, क्या खायेंगे?"

"जमींदार कैसा आदमी है?"

"जैसे जमींदार होते हैं। उसके पैर में फीलपाँव हो रहा है। चल नहीं पाता। जूता खरीदता नहीं। बनवाना पड़ता है। एक पैर में बड़ा जूता और एक पैर में छोटा जूता।"

एक और लड़का था जो शान्त था। वह बोला, "जमींदार ने चौथा ब्याह किया है। तीनों को अलग कर दिया है। जमींदारनी को लेकर वह बगीचे की कोठी में रहता है। उसका साला जमींदारी देखता है। इस बहू का भाई, इसी कारन इतनी अकड़ है।'

बुधा बोला, "जमींदार ही क्या है! अभी भी कोई मुंडा बदन पर कपड़ा नहीं पहनेगा, पैरों में जूता नहीं पहनेगा, सिर पर छाता नहीं लगायेगा, कांसे-पीतल के बर्तनों में भात नहीं खायेगा। एक आदमी का कसूर होने पर पूरा गाँव जरीमाना देगा।"

गया बोला, "और क्या, सब तो जानते हो। बेगार देते-देते कलेजा फट गया है। फिर बात-बात में जरीमाना। साले मुंडारी जानते हैं, लेकिन बात करेंगे हिन्दी में। ऐसी तेजी से बात करते हैं कि समझ में नहीं आती।"

अन्त में बुधा बोला, "डर किसका? कुरमी के लड़के राह दिखा गये हैं। वैसा समझेंगे तो चले जायेंगे मिशन में।"

"वहाँ मिशन कहाँ है?"

"वहाँ नहीं तो ढाइ में तो है! नया मिशन है। मिशन जमीन ले रहा है। लेते ही हमें बसा देगा।"

चोट्टि बोला, "आना, तुमको सिखायेंगे। लेकिन जितने कम लोगों को पता चले, उतना ही अच्छा है। बात से बात फैलती है और दारोगा सोचता है कि मैं दिकू लोगों पर बलोया उठा रहा हूँ।"

बुधा बोला, "सुखा आदि एक खराब काम कर गये हैं। वे जो कर्ज लेकर भागे हैं. उससे ये लोग बातों-बातों में कहते हैं, कर्ज लोगे? खुराकी लेकर तो तुम भाग जाओगे। कुरमी गाँव के मुंडा भाग गये।"

चोट्टि बोला, "काम तो खराब हुआ लेकिन मुंडा जात चोरी-चकारी नहीं जानती, न करती है। खून करने पर भी थाने जाकर कबूल कर लेते हैं। आज अगर चोरी करें, तो वह दिकू लोगों से सीखा होगा।"

"यह बात तो सच है।"

"दस पाई धान लेने पर दस जनम में नहीं चुकेगा।"

बुधा बोला, "हम लोग लिखना-पढ़ना नहीं जानते, इसलिए चोट्टापन करते हैं। मिशन में लिखना-पढ़ना भी सिखाते हैं।"

"सिखाते हैं, पर मिशन में मुंडा लोगों से तो गाँव के मुंडा लोगों की कोई भलाई नहीं होती, बुधा! हम जहाँ हैं, जैसे हैं, वैसे रहते हैं।"

"यह भी सच बात है।"

"हम अकेले ही क्यों? गाँव के दुसाध-गंजू—सबका एक ही हाल है।"

"आज हम चलें।"

बुधा की बातचीत ने चोट्टि को बेचैन कर दिया। वह सोच नहीं पा रहा था कि इस तरह कब तक चलेगा। बुधा की बातें ग़लत तो नहीं हैं। भरत से मिलना चाहिए। पहान ने सब सुन-सुनाकर कहा, "दूसरे गाँव की बात फिर सोचना। अपनी बात सोचो।"

"क्या सोचूँ?"

"मैं अब कितने दिन हूँ? नया पहान कौन बनेगा?"

"तुम जिसे बनाओगे।"

"मेरा तो कोई लड़का है नहीं।"

"तुम्हारे भाई के कोई लड़का नहीं है?"

"न। वह सिर्फ़ बिटिया-बियानी है।"

"तुम अभी जिंदा रहोगे।"

पहान हँसा। बोला, "तेरी उमर कितनी है?"

"मेरे जनम से गोरमेन का बरस शुरू हुआ है।"

"उस दिन ही सुना था कि यह अड़तीस नंबर का साल है। तब तू अड़तीस बरस का हुआ। तेरे जनम-काल में मैं करीब दो-बीसी साल का रहा होऊँगा। नातिनों का भी व्याह हो गया है। वह होने से कितना होना है? सना को बुला।"

सना मुंडा बोला, "और दो बरस में चार बीसी होंगे।"

पहान विजय-गर्व से बोला, "तब? फिर भी जिन्दा रहूँगा?"

"हम लोगों से क्या करने को कहते हो?"

"मुझे एक बार भुरकुंडा ले चलोगे?"

"वहाँ क्या है?"

"मेरे काका के बेटे। उनके गोत में कोई हो सकता है।"

"ले जाऊँगा, बता देता हूँ। मेरा सुखनी छोटा है। उसकी सगाई करा दो। तुमको गुड़-हल्दी-सुपारी देता हूँ। बाद में ले चलूँगा।"

"और कब तक जिन्दा रहना पड़ेगा। क्यों चोट्टि?"

सना बोला, "कम-से-कम एक दसी, एक पाँच बरस।"

पहान ने निश्चिन्त होकर बैंगन के पौधे को घेरकर बाड़ा बनाना शुरू किया। सना बोला, "अब भी हाथ चलते हैं। तुम हमारा श्मशान का पत्थर देखकर मरोगे।"

चोट्टि ने घर जाकर देखा कि भरत आया है। हरमू और सोमरा से बहुत जमकर चोट्टि और गोरमेन की दोस्ती की बात बता रहा था।

"तुम्हारी बात ही सोच रहा था, भरत!"

"मन में समझ गया था।"

"उसी से आ गये?"

"उसी से। तुम्हारे नाम का हमें ऐसा गरब है, सो इस घर में और मेरे घर में, देखता हूँ, कोई फरक नहीं। मुंडा लोगों का हर घर एक-सा ही है।"

"फरक है।"

"कहाँ?"

"वैसे ही गरीब हम हैं, मालिक का खेत जोतते हैं, मिले तो भात खाते हैं, नहीं तो भुट्टा उबालकर खाते। पर तुम, बुद्धू लोग हम पर गान बनाते हो।"

"वह बात छोड़ दो। वह तुम्हारे समझने की नहीं है। हम समझते हैं।"

"अच्छा है।"

"इसी से तो जी रहे हैं, चोट्टि ! फिर भी तुम्हारे लिए गरव कर सकते हैं। अव हमारे लिए तो गरव करने का कुछ और नहीं है।"

"मुंडा लोगों का दुख दूर नहीं होता।"

"यह हाट-वजारी कहाँ से आ गयी, चोट्टि ?"

"दिकू लोगों की आमदनी। दिकू लेते हैं। गौरमेन मदद करती है। दिकू और गौरमेन को वाप-वेटा समझो। मुंडा लोगों के गाँव में मुंडा रहें, उराँव लोगों के गाँव में उराँव रहें, यह हमने नहीं देखा, न हमारे वच्चे देखेंगे।"

"वही देखते हैं।"

"कोई जगह है जहाँ हाट-वजारी नहीं ली जाती, वेगार नहीं है ?"

"साले वेगार देने के लिए हर समय वुलाते हैं। वह दे दी। पर खेत की फसल, आँगन की सब्जी, घर में मुर्गी-वकरियाँ, यह भी अगर वेच न सकें तो घर कैसे चले, वताओ तो ? पेट को तो कुछ चाहिए।"

"इसे वे नहीं समझते।"

"अव लड़के तेज हो गये हैं। कहते हैं, तुम अपना मुंडा जीवन लेकर रहो। कुरमी के मुंडाओं ने राह दिखा दी है। हम जाकर मिशन के मुंडा वन जायेंगे। मिशन के मुंडा लोगों को किसी जमींदार का साला भगा नहीं सकेगा।"

"समझ गया। पर क्या यह कोई राह हुई, भरत ? आज गुमास्ता, कल जमींदार का साला भगायेगा, तो जाकर मिशन में घुसेंगे ?"

"उससे क्या ?" भरत ने वड़े शान्त स्वर में कहा, "तुम सोचकर देखो। मिशन में जाने में कष्ट है, जाने पर सव सुख नहीं है। मुंडा की शकल देखकर उन्हें कोई नहीं लेता। कोई-न-कोई फायदा उठाने के लिए लेता है। राजा, जमींदार, दिकू—सव उसी लिए मुंडा लोगों को सहन करते हैं। मिशन के साहव भी किसी-न-किसी तरह फायदा उठायेंगे। लेकिन ऐसी हाट-वजारी नहीं वसूल करेंगे, वात-वात में गाली देकर मारेंगे नहीं।"

चोट्टि करुण हँसी हँसकर वोला, "क्रिस्तान वनने से ही मिशन को फायदा हो गया।"

"वहाँ पूजा किस तरह की होती है ?"

"गौरमेन के देवताओं की, यीशू की पूजा-भजन। सुना है, ठीक-ठीक पता नहीं है।"

"कौन जानता है, चोट्टि ?"

"कोई कम मुंडा, और कम उराँव तो मिशन गये नहीं हैं।"

"बहुत गये हैं।"

"वे गोरमेन के देवता को पूजते हैं?"

"निश्चय ही।"

"हम तो हरमदेउ को पूजते हैं!"

"हाँ।"

"उसी से मन की चिन्ता उठ गयी।"

"कौन-सी चिन्ता?"

"समझता हूँ कि हमारे हरमदेउ क्या इतनी रेल, हवागाडी, शहर में क्या तसवीर में चलते हैं, बातें करते हैं—यह सब देख-देखकर बूढ़ा हो गया। इसी से सन्तानों को इधर-उधर जाने देते हैं। सोचते हैं, जाओ बाप लोगों चा-बागान में जाओ, मिशन में जाओ, दूसरों का खेत जोतो, जहाँ जाने से जान बचे, वहीं जाओ, नहीं तो ऐसा होने की तो बात नहीं थी।"

"भरत, क्या तुम भी उसी मिशन में जाओगे?"

"सच बताऊँ भाई, अभी भी पता नहीं। कहो तो, गाँव कौन छोड़ना चाहता है? जाना-चीन्हा देश है। बेगार कहो, हाट-बजारी कहो, सब सह कर भी रह जाता, अगर जमींदार का साला न तंग करता। साला कुत्ते लेकर शिकार करता है, मानो गोरमेन हो।"

"तब?"

"हाँ, तब क्या करूँगा, पता नहीं। यही कहने आया था कि लड़कों को तीर चलाना सिखा दो। जब तक रहता हूँ, हर मेले में तीर खेल लें। जो जीतें, मास-मद खा-पीकर पड़ोसी मुंडा लोगों के साथ खुशी मना लें। क्या पता भाई, कल क्या हो!"

"कलेजे में जैसे कुछ दुखता है, भरत! जितने मुंडा चले जाते हैं, कलेजे में उतने तीर बिंध जाते हैं।"

"कुरमी के पहान का कुछ पता चला?"

"नहीं।"

"अब गुमास्ता बहुत समझदार हो गया है। कोई जुलुम नहीं करता।"

"पहले अगर ऐसा करता!"

"अरे, दिकू जब भला काम करता है, तो समझ लो कि वह डरकर वैसा कर रहा है। प्रजा चली गयी, मिशन में सब कहते थे कि बात गोरमेन के कानों में गयी है, इसी से अच्छा गुमास्ता आया है।"

चोट्टि की पत्नी ने भरत को एक लुटिया गुड़ का शरबत दिया। पीकर भरत बोला, "मुंडानी, जान बचा ली। बहुत दूर जाना है, कोई छोटी राह थोड़े ही है! हाँ, चोट्टि, बुधाई की बड़ी समझ है। तुमसे जिस दिन जो

खता है, उसे दूसरे लड़कों को सिखा देता है। अखाड़े जाकर नाच-गाना
व भूल गया है। अब तो बस तीर और धनुक है।"

चोट्टि की पत्नी तेजी से बोली, "वे अगर बहुत-से दुखिया बनकर
कोई काम करें, उससे मेरे मरद का नाम न लगे।"

"नाम तो मुंडा नहीं लगाते हैं, दिकू लगाते हैं।"

भरत चला गया तो चोट्टि बोला, "क्यों? मरद के लिए बड़ा गरब
कहाँ गया? मरद के नाम पर जब गान सुनती है, तो हँसते-हँसते लोट-
पोट हो जाती है।"

"नहीं-नहीं, यह बात अच्छी नहीं है।"

"क्या बात?"

"वह जो कह गया। उसमें बुधा की कोई चाल है।"

"वह मैं भी जानता हूँ। जो हो सो हो।"

"यह क्या बात हुई?"

"वे अगर गड़बड़ करें तो अपनी अकल से करेंगे, मुझसे बात न
करेंगे। अगर नहीं करेंगे, तो वह भी अपनी समझ से। बुधा का हाथ यों
ही अच्छा है।"

"हाथ अच्छा है! क्या काम करता है, वह देखो।"

"मुंडा लोगों का मिजाज बदल रहा है। हमारे लड़के जब बड़े होंगे,
तो पता नहीं क्या कहेंगे, क्या करेंगे!"

"देखो, तुम्हारे डर से हो, या जो हो, लाला लेकिन थोड़ा नरम पड़
गया है। अब उस तरह से तंग नहीं करता।"

"कोई भरोसा नहीं रे, कब बिगड़ जाये!"

तीरथनाथ के बिगड़ने के पहले ही एक के बाद एक कई मेले हुए।
चोट्टि सब में नहीं जा सका। गाँव में बैठे-बैठे ही खबर मिली कि बुधा
आदि ने कई मेलों में ईनाम जीते हैं। भरत दो मेलों में गया था। दोनों ही
जगह प्रथम आया था। इसका नतीजा उसके लिए अच्छा नहीं हुआ।
सना ने खबर दी। सिर हिलाकर बोला, "मालूम नहीं, अपनी आँखों नहीं
देखा। मेरा बाप तब जवान था।"

"कब की बात कह रहा है?"

"बीरसा भगवान की लड़ाई की बात।"

"भरत की बात में वह बात?"

"बुड्ढों की तरह मत बोलो।"

"सना, बहुत दिनों से देख रहा हूँ कि तू एक बात में दूसरी ब
उलझा देता है। फल की बात कहने में जड़ की बात कहने लगता है

"जड़ से ही पेड़ और पेड़ में फल होते हैं।"

"तो जड़ में है या पेड़ पर चढ़ गया है?"

"जड़ में था। पाठ की बात कहता हूं। लड़ाई में मुंडा समझते थे कि भगवान का राज आ गया है। उन लोगों ने खेती-बारी छोड़ दी थी, खेत की फसल खा डाली थी, नये कपड़े पहनकर नये ढंग से चलते-फिरते थे।"

"कह क्या रहा है! भग्न आदि वही करते हैं?"

"फल की बात पर आ गया हूं। भरत सबसे कह रहा है—कल क्या होगा, सोच सकता हूं, बाप। मेला में तीर चलाकर जब रुपये मिलें तो खा-पी लेता हूं। खेती करने में क्या होगा? फसल तो कर्ज चुकाने में चली जाती है। सब्जी लगाकर क्या होगा? हाट-बजारी में निकल जायेगी।"

"दिमाग खराब हो गया है।"

"इसी से जमींदार का साला दो और दो चार कर रहा है।"

"किस तरह?"

"कहता है, इन सालों की कोई चाल है। कुरमी के मुंडा लोग खूब कर्ज लेकर पेट भर खाकर भाग गये। ये साले भी शायद भागेंगे।"

"भागेंगे, यह तो एक तरह से कह गया। लेकिन मुंडा होता है बुद्धू। जो करता है खुल्लमखुल्ला कर डालता है। दिकू को पता चल जाता है।"

"भागेंगे कहां?"

सांस छोड़कर चोट्टि बोला, "कुरमी ग्राम राह दिखा गया है। हो सकता है, मिशन जाने की सोच रहे हों। उन्हें भी क्या दोष दिया जाये? दिकू लोगों के जुलुम से सब जाकर मिशन में घुसते हैं। या चाय-बागान में। या कोलियरी में। बहुतेरे मुंडा बांग्ला मुलुक में कहीं खेतमजूरी के काम में चले गये।"

सना बोला, "जहां जायें दिकू लोगों का जुलुम, गोरमेन का जुलुम तो साथ-साथ गया, यही तो होता है न? देश-घर छोड़कर भी जुलुम जब साथ नहीं छोड़ता तो देश में रहना ही अच्छा है। क्या कह रहा है, चोट्टि?"

"मन तो यही कहता है। फिर यह भी सोचकर देखा है कि इतनी ठोकरें नहीं खायी जाती रे! बीच-बीच में मन में घिन उठती है, तभी तो मुंडा तैश में आकर कुछ कर बैठता है। नहीं तो सियाराम का सिर उसके कंधों पर रहता, सुखा आदि गांव में रहते। तू सोचकर देख, मन में कितनी घिन है। असल में सुखा आदि कर्ज लेकर, टीप देकर तभी भागे। यह काम दिकू कर सकते हैं, मगर क्या मुंडा कर सकते थे?"

"बिगड़ने की बात तो मन में उठती है। लेकिन हम लोगों का गाँव तो मिला-जुला है। हम यहाँ कमजोर हैं, इससे भरोसा नहीं होता। पुलिस का डर लगता है।"

"वह भी सोचना होता है। मैंने गुस्से का काम किया। लेकिन जुलुम? किसे छोड़ता है? मेरे बाप के कारन गाँव पर जरीमाना नहीं किया?"

हर काम में जोश आता है। लाक्षागृह बनाने के बाद भी चकमक रगड़ना पड़ा था। भरत मुंडा आदि को भड़काया था जमींदार के साले ने। नायब पुराना और तेज़ था। वह ब्राह्मण था, इसलिए अब्राह्मण ज़मींदार उनका कुछ आदर करते थे। नायब ने खुद भी प्रचलित शोषण जारी रखा था, लेकिन अति नहीं की थी। अन्ततः उनकी बात मानी गयी और जब तक उनकी सलाह से काम चला, उतने दिनों तक मुंडा लोगों ने दल-बल सहित जाने की की बात नहीं सोची थी। उन्होंने बेगार दी, लेकिन अपनी ज़मीन जोतने का समय मिला था। हाट-बजारी के बारे में उनकी नीति और तरह की थी।

हाट-बजारी के बारे में इस अंचल के पुराने जमींदार और राजाओं के बीच इतने दिन तक यह नियम प्रचलित था—हाट के दिन मालिक का गुमाश्ता हाट में बैठता। आदिवासी कोई भी सामान पहले उसके आगे रखकर ही हाट में बेचने बैठते थे। कोई अगर कहे कि दो मुर्गियाँ बेचने आया हूँ, दे नहीं सकूँगा—वह भी मान लिया जाता था। इसका कारण था कि पुराने ढंग के लोग जानते थे कि आदिवासी लोग, जहाँ तक संभव था, असत् आचरण नहीं करते थे। भरत आदि जिस राजा की प्रजा थे, वहाँ पुराने क़ायदे पर चला जाता था, क्योंकि आदिवासी प्रजा ज़मींदारी में बहुसंख्यक थी और उनका तरह-तरह से शोषण करने से ही ज़मींदारी चलती थी। इस लिए उनके बड़े उत्सवों पर ज़मींदार की कचहरी से भी पहान के पास सीधा भेजा गया था—एक खसी और चावल। यहाँ बजारी भी उसी नियम से चलती थी। उसी तरह से होता आया है। इसीलिए प्रजा भी मान लेती थी। ये नायब ज़मींदार के प्रति आश्रित थे। यहाँ के रहने वालों को जिनको लेकर चलना पड़ता था, उनके साथ, भरत आदि के साथ उसका एक तरह की जान-पहचान का संबंध भी था। भरत आदि को जिस बात से सुविधा थी, वह यह कि नायब दंगा-फ़साद से खुद डरता था। उनकी बात जितने दिन चलती, उतने दिनों ज़मींदार बीच-बीच में बस्ती में भी घूमे थे।

चौथी शादी के बाद नायब की दुर्गति का अन्त न था। बहू के साथ

ज़मींदार अलग घर में रहते थे। उन्होंने सारा अधिकार साले को दे दिया था। तीन शादियों के बाद भी निस्संतान थे। उम्र बहुत हो गयी थी। अब उन्होंने भी मान लिया था कि संतान उनके भाग्य में नहीं है। इसलिए निस्सन्देह उनका उत्तराधिकारी उनका साला होगा। एक तरह से उसके लड़के को गोद लेने का भी ज़मींदार ने निश्चय कर लिया था। पहले की तीनों पत्नियों ने नायब को पकड़ा—सरकार के पास जाकर कहा जाये कि उनके भरण-पोषण का प्रबन्ध होना चाहिए। भरत आदि ने हाट-बज़ारी के मामले में नायब को ही पहले पकड़ा। इस पर ज़मींदार के आगे नायब का अपमान हुआ। उनका साला काम-काज चला सकता था, चलाता था। *नायब समझे कि कुछ गड़बड़ होने वाली है।*

इसी बीच भरत आदि ने हाट के बारे में असहयोग शुरू किया।

नायब बोले, "यह क्या सुन रहा हूँ भरत, तुम क्या अब हाट में नहीं आओगे? खेत की सब्ज़ी खायें ले रहे हो?"

"खाते नहीं तो बेचते!"

"बेचते क्यों नहीं?"

"क्या बेचें? अच्छी चीज़ लाल घोड़े पर चढ़कर साला बाबू ले लेंगे। गुमाश्ते को हिस्सा देकर बैठते थे। वह हिस्सा देंगे, साला बाबू को देंगे, साला बाबू का गुमाश्ता अलग हो गया है, उसे भी देंगे, तो बेचेंगे क्या?"

"हाट बन्द हो जायेगी।"

"क्या तुम लोग हाट रखना चाहते हो? हाट से हमें जो मिलता है, उसमें तुम लोगों का लगान दिया जाता है। सो वही बात कितनी बार बाबू साहब ने तुमसे कही, कितनी ही बार कही। उस पर तुम बोले, 'तुम्हारा कुछ करने का अख्तियार नहीं है। हम किसके पास जायें'?"

नायब ने मन-ही-मन ज़मींदारी का सर्वनाश देखा। हालत क्या हो रही है, उसका उन्हें पता लगा। बोले, "भरत, इन लोगों को बहुत गुस्सा है।"

"*इतने दिनों सब्ज़ी बेची, पता नहीं खेत में क्या होता है।* कितने दुख के मारे हम लोग खेत की चीज़ बेचते हैं, यह तुम नहीं समझते, बाबू!"

"*साला बाबू को गुस्सा बहुत है। ज़ुलुम करेगा। हाट जाओ।*"

"कब ज़ुलुम नहीं किया है?"

नायब समझे कि भरत आदि अब निडर हो रहे हैं तो ज़रूर ही कुछ निश्चय कर लिया है। बोले, "भरत, हमें तुम हमेशा से देखते आये हो, मैं तुम्हें जानता हूँ।"

"हाँ बाबू!"

"सच बताओ बाप, तुम लोग क्या मिशन में भाग जाओगे ?"

"पता नहीं, बाबू। लेकिन यह मालूम है कि हम लोगों ने बार-बार अरज की, कचहरी जाते-जाते पाँव घिस गये, पर गरीब की किसी ने न सुनी।"

भरत के बात करने के ढंग से ही नायब को अपनी बात का जवाब मिल गया। भरत फिर बोला, "रहने का घर, जमीन का टुकड़ा—सभी बेगार में बंधक हैं। दस पुरखों के बाद भी किसी मुंडा का अपना कहने को कुछ नहीं है।"

"कर्ज चुकाने पर सब तुम्हारा हो जायेगा, बाप।"

"बाबू, तुमको कितना मान देते हैं। तुम यह क्या कह रहे हो ?" भरत दुख और निराशा में हाहाकार कर बोला, "तुम्हारी तरह कौन जानता है कि मुंडा का कर्ज अदा नहीं होता ? धान-गेहूँ-मक्का, यह हम पाँच-दस-पन्द्रह पाई नहीं लेते, सोना-सा लेते हैं। नहीं तो कर्ज चुकता क्यों नहीं ? सब मुंडा लोगों ने जितना धान-मक्का लिया है, उसका कितना दाम होता है ?"

भरत चला गया। नायब अब ज़मींदार का नायब बन गया। टट्टू पर चढ़कर ज़मींदार के पास गया, आठ मील दूर। ज़मींदार से बोला, "बहुत बातें हैं, वह बातें आपको सुननी ही पड़ेंगी।"

"क्या बातें हैं ? क्यों, लालमोहन से कहिये !"

"बाघ का काम गीदड़ से नहीं होता। आपके बाप-दादा की ज़मींदारी की मुसीबत है, उसका कुछ नहीं है। मैं क्या यों ही आपको तकलीफ़ दे रहा हूँ।"

"क्या हुआ है ?"

नायब ने सब साफ़-साफ़ बताया। बोले, "उनके चले जाने से हम लोगों का—सबका सत्यानाश हो जायेगा। हमारा ही नुक़सान है। वे त चले ही जायेंगे।"

राजा मज़ाक में हँसे, "प्रजा चली जायेगी तो नयी प्रजा आ जायेगी।

"हुज़ूर, प्रजा अगर बदमाश होती, दंगा करने वाली होती, मैजिस्ट्रेट साहब से कहने को मुँह खोलते। भरत आदि ने तो किसी कोई उपद्रव नहीं किया है। हाकिम पूछेगा तो क्या कहेंगे, हुज़ूर ? हा को तो पता चलेगा।"

"वैसा है !"

"हाकिम ज़मींदार पर खुश नहीं हैं, हुज़ूर।"

"तो मैं क्या करूँ ?"

"लाला बाबू को समझाइये। उनके जुल्मों से अगर हाट बन्द हो जाती है, तो आस-पास आपकी बदनामी होगी। यों ही बहुत बातें होती रहती हैं।"

"क्या बातें ?"

"उन सब बातों को सुनकर क्या होगा, हुजूर ?"

"मुझसे क्या करने को कहते हैं ?"

"एक बार सदर चलें। उनकी बातें सुनकर राय बतायें।"

"जाऊँगा।"

लेकिन नायब के बाद ही आया लाला—लालमोहन चौधरी। उसने जमींदार को समझा दिया। नायब की बातों में कोई सचाई नहीं है। प्रतिष्ठा खोने में ईर्ष्यावश नायब मुंडा लोगों को भड़का रहा है। जमींदार के जाने की कोई जरूरत नहीं है। लालमोहन चौधरी कल खुद जायेगा और सब बदमाशों को ठीक कर देगा।

"वही करो। लेकिन मारपीट मत करो। वैसा होने से हाकिम जमींदारी ले लेगा, दूसरा बंदोबस्त कर देगा।"

"बनगाँव में गीदड़ ही राजा है।" लाला बोला, "इतना डर किस बात का है ? सालों को बन्दूक दिखा डराकर हाट ले जाऊँगा।"

"गोली मत चलाना।"

"न-न।"

लेकिन इंसान हर वक्त बन्दूक नहीं चलाता है। बेवकूफ-बदजात-मन-चला होने से बन्दूक ही उसे उकसाकर मजा लेती है। ऐसे लोगों के हाथों में बन्दूक पड़ने से काम गड़बड़ हो जाता है। उसकी प्रतिक्रिया भी खराब होती है।

भरत आदि आना नहीं चाहते थे। नायब ने उन्हें समझा-बुझाकर राजी किया। हुजूर सरकार के आँखे-मींचे सब जान लेने से कुछ समाधान होगा ही—जमींदार ने कहा है। कचहरी के सामने मुंडा जमा हु। नायब भी थे। इंतजार होता रहा। अचानक लालमोहन चौधरी घोड़े पर आ पहुँचा और उसके सिपाही मुंडा लोगों को लाठी से पीटने लगे। घुड़सवार के अचानक खींचने से कुछ सिपाही गिर पड़े। लालमोहन के घोड़े ने मुंडा लोगों की चीख-पुकार से डरकर उसे गिरा दिया। नायब चिल्लाता रहा, "ठहरो, ठहरो, मारो मत" लेकिन लालमोहन और भी गया और उसने बन्दूक चला दी। गोली नायब के बदन में लगी। सत्यानाश हो गया", "बरामन की हत्या हो गयी" कहकर सिपाही भाग । लालमोहन भी भागा। मुस्टंडे नायब का शरीर तगड़ा था। उसने

रत से कहा, "मुझे थाने ले चलो। बंदूक भी ले चलो। तुम लोगों के लिए ही जान दी।" जो बात कही, उस पर खुद भी विश्वास करता और समझता था कि छोटी जात के हाथों अगर मरना हो तो जहाँ तक हो सके उसको सबक सिखाकर मरना ही ब्राह्मण का कर्तव्य है।

भरत आदि ने 'जो हुक्म' काम किया। थाने जाकर भी नायब को लगता रहा कि वह मर रहा है। मुंडा लोग और सालाबाबू के बीच तोल कर सालाबाबू को ही सजा देने की इच्छा हुई और सालाबाबू को फँसाने वाला बयान दिया। ब्रह्मशाप का डर दिखाकर दारोगा से जो ठीक हो, वही करने को कहा। इसके बाद दारोगा ने खुद ट्रेन पर ले जाकर उसे सदर शहर के अस्पताल पहुँचाया। वहाँ भी नायब ने, और भी बड़ी पुलिस से, एक ही बात कही। वह अपने को बहुत धार्मिक समझ रहा था। बोला, "युधिष्ठिर कुत्ते को छोड़कर स्वर्ग नहीं गये। मैं मुंडा लोगों को फँसाकर चैन नहीं पा सकूंगा। सारी बातें बता दीं। अँग्रेज सरकार का तो धर्म का राज है। अब फ़ैसला हो।"

ब्राह्मण पर इस अत्याचार से पुलिस वाले भी परेशान हुए। श्राद्ध बहुत दूर तक पहुँचा, क्योंकि सालाबाबू गिरफ़्तार हुए। जमींदार ने पुलिस की जाँच के डर से भागने की कोशिश की और फीलपाँव के कारण तुरन्त भाग न सके। मुंडा लोगों से काफ़ी जिरह हुई। जाँच करने वाली पुलिस जमींदार के खर्च पर बढ़िया भोजन करती थी। मौक़ा समझकर तीनों रानियों ने नायब के बेटे के माध्यम से पुलिस अफ़सर से जो कुछ कहा, उससे यह सच ही प्रगट हुआ कि नायब बहुत ही सज्जन था। जमींदार एक राक्षसी के पल्ले पड़े हैं। सालाबाबू के हाथों में जमींदारी जाने के दूसरे दिन से ही रानियों का खाना-पीना भी बन्द होने लगा था। मुंडा लोगों पर सालाबाबू बहुत अत्याचार कर रहे थे। नायब जमींदार का हितैषी था। इसी से लालमोहन की इच्छा उसका खून करने की थी।

क़ानून का पहिया चलता रहा। सालाबाबू को जेल होने-होने को हो रही थी। जमींदार का निकम्मापन प्रमाणित होने जा रहा था कि तभी नायब ने मुक़दमे को मोड़ दिया। ऑपरेशन के बाद वह जी उठा। धीरे-धीरे उसे अपना होश आया। खुद जमींदार उसके पास आकर रो पड़ा और चौथी जमींदारिन ने गिन्नी की माला उतारकर भाई की जान बचाने को कहा। गवाही के वक्त नायब ने अब भरत के सिर दोष थोपकर सालाबाबू को बेक़सूर साबित करने की कोशिश की। सरकारी वकील ने धमकाया, "आपने घूस खायी है।"

नायब ने डर से घबराकर यह मान लिया और अपने को बड़ी

कर दूसरे मुंडा आकर्षित होंगे। अवश्य ही ये गाँव बसाना उतने दिनों ही चलेगा जितने दिनों तक दूसरे मुंडा लोगों को आकर्षित किया जाये। नहीं तो गाँव बसाते चलना मिशन का उद्देश्य नहीं हो सकता। इसके बारे में सरकार की राय है...।"

'करम' उत्सव के मेले में झुझार गाँव के मुंडा पहान ने चोट्टि से कहा, "गाँव छोड़ने वाले भरत मुंडा लोगों ने बाण मारकर, गाँव और कचहरी जलाकर, दिकू लोगों को थोड़ा परेशान कर, चोट्टि के मुंडा समाज के मन में कुछ बल उत्पन्न कर दिया है। झूठ बोलने वाला नायब चला गया, सालाबाबू जेल काट रहा है, यह भी थोड़ा-सा फायदा है।"

चोट्टि मुंडा के जीवन में सब-कुछ क़िस्सा बन जाता था। झुझार के पहान के मुँह से बातें सुनकर चोट्टि ने चौंक कर गिलास में थोड़ी-सी मद ली और हाथ में मिर्च और प्याज उठा लिये। उसके बाद उकड़ूँ बैठकर मद पीते-पीते सोचा, यह मामला क्या है? मुंडा जहाँ भी अच्छा काम करते हैं, वहाँ सब चीज़ों की कारगुजारी उन पर क्यों आ पड़ती है? वह कैसा मुंडा है? मुंडाओं की आशाएँ पूरी करना चाहिए? कैसे? वह तो उनकी तरह साहसी नहीं है। धानी, दुखिया, सुखा आदि, पहान, भरत आदि—सभी ने अपने निकट सच्चे रहने के लिए किसी भी समय कुछ हिम्मत का काम किया। चोट्टि ने कुछ भी नहीं किया। फिर भी यह श्रद्धा किसलिए? उसे लगा, इसके पीछे एक अधिकार है। चोट्टि इस तरह का कुछ करे जिससे सारे मुंडाओं के मृत जीवन में नये रक्त का संचार हो। लेकिन वह काम क्या है? वह काम क्या एक दिन में होता है? फिर मुंडा लोग भी बदलते जा रहे हैं। सुखा आदि मिशन चले गये। भरत भी। लेकिन बुधा के आग लगाने में दुश्मन को पहचनवा देने का मामला साफ़ है।

चोट्टि को पता न था कि कुछ बरसों में ही उसे किसी महत्त्वपूर्ण घटना का नेतृत्व करना होगा।

आठ

चोट्टि नदी के कलेजे से जिस तरह अनायास पानी बहता है, उसी तरह कई बरस कट गये। अगस्त के आन्दोलन ने चोट्टि आदि को स्पर्श तक नहीं किया। स्वाधीनता के लिए मानो वह दिकू लोगों की लड़ाई हो। दिकू लोगों ने कभी आदिवासियों को भारतवासी नहीं माना। लड़ाई

और स्वतंत्रता में चोट्टि के लोगों का जीवन अपरिचित रह गया। चोट्टि वाले दूर खड़े सब देखते रहे। हरमू और सोमचर बड़े हुए। हरमू ने गाँव की लड़की कोयेली से ब्याह किया। पहान मर गया था। मरने के पहले अपनी जाति-बिरादरी के आगे उसे पहान बना गया। नये पहान को विशेष सुविधा हुई कि ईसाई मुंडा लोगों द्वारा गाँव के आस-पास घर बनाने के कारण हिन्दी लिखना-पढ़ना सीख लिया था। एक व्यक्ति ने आढ़तिया के पास काम करते हुए हिसाब रखना भी सीख लिया।

कोयेली इस गाँव के डोनका मुंडा की बेटी थी। डोनका के कुछ नहीं था। वह बोला, "लड़के-लड़की का मन मिल गया। इसी से सगाई कर रहा हूँ। नहीं तो मेरा कौन-सा पुण्य है कि चोट्टि मुंडा का समधी बनूँ? फिर मैं बेगार करने वाला ठहरा। पास में कुछ भी नहीं। जात वालों को भोज कैसे दूँगा?"

चोट्टि बोला, "इंसान भोज कैसे देता है?"

"तुम मदद करो तो कर सकता हूँ।"

"हमें भी भोज देना होगा न?"

हरमू की माँ बोली, "अब दिन वैसे नहीं रह गये। शहर की हवा है। वह लड़की बाल खोले घूमती-फिरती है। उसे बहू नहीं बनाऊँगी।"

"तेरी-मेरी बात नहीं चलेगी, बहू!"

"क्यों?"

"आँगन का लंबा पेड़ देख। मैं जब उस पेड़ की डाल में बँधा झूला झूलता था, तब वह जवान था। अब पेड़ बूढ़ा हो रहा है। पहान कहता है कि मेरी उमर दो बीसी है। तेरे और मेरे बालों में सफेदी आ गयी है। हमारे जीवन के पच्छिम में अब बेटा-बहू है। हरमू की नयी जिन्दगी है।"

"मेलों में दनादन तीर छोड़ता है, दनादन जीतता है, इससे उसमें जोश आता है। तुम बच्चों से कुछ मत कहो।"

"कहने से कोई फायदा भी नहीं।"

"वह लड़की अच्छी नहीं है।"

"हरमू समझेगा।"

"घर भी कहाँ है?"

"लाला से जंगल के किनारे जमीन माँग लूँगा।"

"देगा?"

"बेकार तो है।"

"हरमू को देगा?"

"वे दो भाई हैं, वह और कोयेल का एतोया। उन्हें जमीन से जो

"यह बात कहना मुझे ठीक लगता है? तुम तो छाप नहीं देते हो, यार।"

बात यहीं तक रही। तीन बरस बिना लगान जमीन का मामला जरूर बहुत दूर तक गया। उनके पहले बेगार के मामले में तीर का नाटक बन गया। वह स्वतंत्रता के बाद।

1950 में सूखा पड़ा। सूखा इस अंचल का प्राचीन और जाना-पहचाना अभिशाप है। किसी सूखे में जो नहीं होता, इस बार वही हुआ। चोट्टि का पानी भी अदृश्य होने लगा। पानी के लिए हाहाकार मचा। लोग स्टेशन के किनारे रहे। इंजन का पानी लेते थे। उसे ठंडा कर काम में ले आयेंगे। गाँव के पाँचों कुएँ सूख गये। स्टेशन के कुएँ और तीरथनाथ के कुएँ के पास भीड़ लगी रहती। पानी चाहिए।

अन्त में चोट्टि बोला, "क्या सूखे में मरेंगे? बाप-दादे इसका उपाय सिखा गये हैं।"

"चलो, उपाय करें।"

"क्या उपाय करेंगे?" हरमू बोला।

"चलो, दिखाते हैं।"

मना बोला, "वही तो, यह बात पहले नहीं सूझी।"

चोट्टि नदी के बहाव के किनारे-किनारे चले। जहाँ नदी दोनों ऊँचे किनारों के बीच में बहती है वहाँ किनारे की जंगल-झाड़ियाँ झुकी पड़ी थीं, इसलिए पानी छाया में ढँका था। बड़े-बड़े पत्थर नदी में पड़े थे। पत्थरों में पानी रुका था।

"यहीं साहब के साथ बतखें मारी थीं" चोट्टि बोला।

मना बोला, "यहाँ हमारी बेटियाँ सूखे के दिनों में नहाने आती थीं। जब कहीं पानी न हो, यहाँ रहता है। थोड़ा जल रहता ही है।"

"कैसे रहता है, यह भूले जा रहे हो!"

"क्या भूल रहा हूँ, चोट्टि?"

"मुंडा लोग अपनों को हमेशा भूल जाते हैं।" चोट्टि ने ठंडी साँस ली और बोला, "पहान की बात याद नहीं है? सूखे के दिनों में यहाँ आकर नदी के कलेजे में गहरा गड्ढा खोदने को हमसे कहा था। बालू से गड्ढा भर जायेगा, इसलिए गड्ढे पर हरे साल की शाखें काटकर रोक लगा दी। मेरे जीवन में इस तरह के गड्ढे तीन बार खोदे गये। देखो, उनमें अभी भी पानी जमा है।"

"तब?"

"वैसे ही गड्ढे खोदेंगे।"

मोतिया धोबिन अब थकी-बूढ़ी हो गयी थी। वह तमाशा देखने आयी
। अब मोतिया बोली, "हम कहाँ जायेंगे ?"

"नदी क्या हमारी है ? मोतिया, दुसाध-धोबियों को बुला।"

छगन और पारस भी आये थे। वे बोले, "हम यहाँ हैं।"

"इस तरह का छाया हुआ किनारा आधे मील तक गया है। तुम लोग भी गड्ढा खोदो। एक बात कहूँ। तुम लोग सुनो।"

"कहो, चोट्टि !"

चोट्टि पत्थर का सहारा लेकर खड़ा हो गया। बोला, "बहुत पहले की बात है, याद है ? अकाल को दारोगा अकाल नहीं कह रहा था, गौरमेन के पास मैं गया था ?"

"याद है। तेरे बेटे को, हमारे बेटों को क्या पता कि बाप लोगों ने गाँव की मुसीबत में कितना काम किया !"

"खैरात लेकर गौरमेन नहीं आयी थी।"

"न साहबों और हिन्दुओं के मिशन आये थे।"

"यहाँ कौन देखने आयेगा कि हम लोगों को क्या कष्ट है ? लेकिन हम आदमी हैं। प्यास से तुम लोगों को जो तकलीफ है, वही हमें भी है।"

"हममें-तुममें फरक नहीं है।"

"इसी से कहता हूँ, गाँव बड़ा हो गया है। रेलें भी बहुत चलती हैं। बाजार के लोग भी आते हैं। पंजाबी आते हैं। ईंटों का भट्टा बनाते हैं। कलकत्ता के मारवाड़ी आते हैं। देखेंगे कि कोयला मिलता है या नहीं। इन बातों को कुछ समझते हो ?"

"क्या समझें ?"

"हो सकता है, रोजी के रास्ते खुलें।"

"हो सकता है ?"

"अगर बाहर के मजदूर न लायें तो ?"

"अगर न लायें ?"

"लेकिन हमें याद रखना होगा, अपनों के बिना अपनों का कोई नहीं है। और यह भी याद रखना होगा कि अपना दुख खुद ही देखना होगा।"

"अभी तीरथनाथ पानी दे रहा है।"

"उसे पहचानता हूँ। सूखा बढ़ने पर कहेगा, बाप सकल, कुआँ में गंगा नहीं बँधी हैं। पानी सूखा जा रहा है। सबको न दे सकूँगा। जो बेगार करेंगे वे पानी लेंगे। वह बेगार को पहचानता है।"

"हाँ, यही तो कहता है।"

"इस बरस अब बोलने न दूँगा। नदी के नीचे जल है। गड्ढा खोदकर

हम लेंगे। सब लोगों के खन्ती चलाने में बहुत-से गड्ढे होंगे। फिर पानी की तकलीफ नहीं रहेगी। अभी तो जेठ मास है। बन को घास खींचकर देखा था कि जड़ की मिट्टी गीली है। आषाढ में पानी बरसेगा। जरूर बरसेगा। जब नहीं बरसता, तब घास की जड में धूल रहती है।

"कब आयें ?"

"अभी चाँद का पाख है। ठीक साँझ को बाघ-बराह पानी पीते हैं। माँझ बीतने पर आयेंगे। तब गर्मी का कष्ट नहीं रहता।"

मोतिया बोली, "लड़कियाँ भी आयेंगी। तुम बालू खोदोगे। हम दूर-दूर तक फेंकेंगे। पानी वे भी पियेंगी, पर तुम्हारी मेहनत का क्यों पियेंगी ?"

हरमू बोला, "लेकिन लाला के सात कुएँ हैं। पानी भी रहता है।"

"हम लोगों के कुएँ में, गाँव में पानी क्यों नहीं रहता ?"

"जमीन के नीचे जो नदी बहती है, उसका पानी खिंच रहा है, इसलिए।"

"लाला के कुएँ में तो पानी रहता है ?"

"उसकी जमीन में से होकर नदी जाती है न ! उसमें पानी है।"

मोतिया बोली, "लाला धरम-धरम किया करता है। तो हमको कुआँ खुदवाकर पानी देने से धरम होता है। नहीं होता ? पर देगा नहीं।"

"दे तो समझो कि उसका मतलब कुछ और है।। बाघ आकर कब प्यार करता है ? वह तो बस गरदन तोड़ना चाहता है।"

छगन बोला, "इस बाघ ने तो कभी की गरदन तोड़ दी है।"

"और मिले तो और तोड़ेगा।" चोट्टि ने गहरी साँस ली। बोला, "तू है अपनी पचायत का प्रधान।"

"नाम ही का हूँ। हालत नहीं देखते ? गौरमेन ने पचायत को लँगड़ा कर दिया है। अपने बाप-दादा के अमल में हम घने जगल में रहते थे, क्या करते थे, क्या नहीं करते थे, उसे देखने गौरमेन नहीं आती थी। चोरी होने पर, घर के पड़ोसी से झगड़ा होने पर भी पचायत की राय सब मान लेते थे। घना गाँव था ! थाने से पद्रह मील दूर था। उसमें कुआँ खोदने पर सब मेहनत करते थे, सड़क बनाने में सब मेहनत करते थे। कोई भी कुछ आपत्ति नहीं करता था। धीरे-धीरे गाँव घना नहीं रह गया। धीरे-धीरे गौरमेन ने पचायत की ताकत ले ली। हाँ चोट्टि, पचायत हमारी है, मैं उसका प्रधान भी हूँ। किन्तु !"

"किन्तु क्या ?"

"किन्तु अब हमारी सामर्थ्य वही विवाह-जनम-मरण की बातों को सुलझाने में है। पड़ोसियों के झगड़े मिटाने में है। फिर भी हम यहाँ अ...

हैं। जहाँ अदालत है, वहाँ पड़ोसियों के झगड़ों में भी लोग मुकदमा करते हैं।"

मोतिया पोपली हँसी हँसकर बोली, "अमरूद किसने खाये, इस पर भी मुकदमा होता है। हाँ, मुझे मालूम है।"

चोट्टि बोला, "क्यों न करें? वकील मुकदमा करना चाहते हैं। मुकदमा होने से उनकी रोजी चलती है।"

छगन बोला, "क्या कह रहे थे?"

"हाँ, काम की बात। सो छगन! तुम लोगों का जो हाल है, वही हमारा भी है। पुराने जमाने का मुंडारी गाँव सचमुच नहीं रहा। पहान की भी सारी सामर्थ्य चली गयी है। पहान भी हमारे समाज के रीति-रिवाज में राह दिखाता है, पड़ोसियों का झगड़ा मिटाता है। पर एक फरक है। तुम लोगों में भी जात-पाँत का फरक है। बराँभन और लाला लोगों से तुम छोटी जात के हो। तुम्हारे लिए मोतिया छोटी जात है। हम लोगों में जात का विचार नहीं है। लेकिन यह बात इसलिए कह रहा हूँ कि गाँव अब मिला-जुला है। अकाल में—सूखे में, बेगार में हम-तुम साथ मरते हैं। लाला फरक डालना चाहता है। सो मौका आने पर हम-तुम एक साथ रहेंगे, यह बात कह रहा हूँ।"

"एक साथ ही चलेंगे, चोट्टि!"

"ना छगन, मेरे बाप के कारन ही खेत जोतने मुंडा नहीं जाते हैं। अकाल की दुहाई देने के समय? हाँ, तब सब एक हो जाते हैं।"

"समझ गया, चोट्टि! लेकिन यह भी समझ लो कि हम लोग तुम्हें मान देते हैं। कोई ऐसा तीर का खेल नहीं होता जिसमें तेरे जीतने पर हम खुश न होते हों।"

"अच्छा है। अब यह बता रहा हूँ, कि सूखे से डर लगता है, या जाने किधर से तीरथनाथ झगड़ा खड़ा कर दे!"

हरमू बोला, "आबा!"

"क्या?"

"आज से ही गड्ढा खोदेंगे?"

"हाँ रे!"

गड्ढा खोदने का काम मुंडा और छगन के आदमियों का मानो सामूहिक उत्सव हो। मर्दों ने बालू खोदी, गड्ढों पर एक-दूसरे में फ़ासला न रखकर लकड़ी बैठायी। औरतों ने दूरी पर बालू फेंकी, किनारे पर। एक के बाद एक कर दस गड्ढे बन गये। उनमें पानी निकला। उनको यहीं पानी मिल गया। चोट्टि बोला, "कोई भी यह पानी कपड़े धोकर या नहाकर

मैला नहीं करेगा। बड़ी मेहनत का जल है।"

तीरथनाथ बोला, "क्या हुआ ? तुम लोग पानी नहीं ले रहे हो ?"

किसी ने भी गड्ढे खोदने की बात नहीं बतायी। बोले, "अभी भी नदी मे जल मिल रहा है। इसी से नहीं आते।"

"इतने दिनों तक क्यों आये थे ?"

"क्या पता था कि वहाँ जाने से पानी मिलेगा ?"

"सो तो अच्छा ही है। जो लोग बेगार करते हैं वे भी जाते हैं ?"

"हाँ महाराज !"

तीरथनाथ को भी सब मालूमात रखना पड़ती थी। वह हँसकर बोला, "महाराज तो चोट्टि है। उसके कहने पर तुम लोगों ने नदी को छानी फोड़ी।"

राना बोला, "आप चाहे जो भी कहें।"

"अच्छा ही करते हो। देख बाप, नदी का जल सूखने पर मेरे कुँओं पर आकर हमला न बोलना।"

मोतिया शरारती हँसी हँसकर बोली, "जरूर आयेंगे। पानी चुरायेंगे। तुम्हारा बाबा क्या कहता था ? जल चुराने में दोष नहीं होता है।"

"अरे, अरे मोतिया ! कुआँ छूकर जल का नाश मत करना। जल दे दूँगा। मेरे आदमी पानी भरकर दे देंगे।"

तीरथनाथ के कुएँ से पानी लेने पर हो सकता है कि झगड़ा होता। चोट्टि और छगन आदि जब पानी लेते थे तो उन लोगों पर तीरथनाथ का एक अधिकार बनता था। जगनों के अंचल में बहुत दिनों तक एकाधिपत्य रखने से स्वभाव में तरह-तरह की बातें आ जाती हैं। पानी के लिए उनको धूप में खड़ा करके कुएँ के किनारे नौकर लोग जानवरों को नहलाते रहते। तीरथनाथ को यह देखना अच्छा लगता था। चोट्टि आदि ने उसे उस सुख से वंचित कर दिया। मन में जैसे खोंचा लग रहा था। आषाढ़ में बादल आये। तेज वर्षा हुई। सात दिनों में कुओं में जल हो गया, नदी-नाले उफन पड़े, लाल धरती में हरी घास, पेड़-पौधों का स्वरूप लौट आया।

अब किसान और मजूर खेतों में उतर पड़े। धान के बीज बोने में थोड़ी देर हो गयी, तो हो। धान लगाने का काम बड़ा दिलचस्प होता है। चोट्टि और छगन आदि को यह काम मनवाला बनाये रहता। 'यह धान महाजन के कोठे में जायेगा'—यह जानकारी मानो सबके मन से हट गयी, रोपाई में जैसे शरारती बच्चों के साथ पानी में छप-छप करनी भाग गयी।

चोट्टि और छगन तीरथनाथ के पास गये। तीरथनाथ ने उन लोगों के गड्ढों की खुदाई को अच्छी नजरों से नहीं देखा था। बहुत दिनों से यह झगड़ा न था। उस अकाल के वक़्त ही उन लोगों ने एकता की थी। यह बहुत ही अस्वाभाविक काम था। उसके बाद बहुत-से बरस उपद्रव के बिना बीत गये। चोट्टि और छगन आदि के एकजुट होकर काम करने पर वह उपद्रव क्या फिर होता! पर तीरथनाथ को तो वह उपद्रव ही लगा। उनमें फूट डालने की ज़रूरत थी। मौक़ा मिल गया, क्योंकि चोट्टि और छगन ने खुराकी कर्ज़ माँगा। चोट्टि जिस तरह बेगारी न देता, उसी तरह एक सेर मक्का लेने पर उनके हक़ में से उधार वसूलते समय दो सेर काटा जाता। यह क़ायदा बहुत दिनों से चला आ रहा था। छगन के अधिकांश धान और मक्का का मूल्य कर्ज़ के हिसाब में चला जाता अर्थात मिलता धान या ज्वार या मक्का, खाते में खाद्य और खेती का मूल्य लिखा जाता। उन रुपयों का मूल्य नियमपूर्वक बढ़ता रहता। बेगार देने वाले जिस तरह बेगार देते, उसी तरह उन्हें खान-पान के लिए और पैसे बीच-बीच में मिलते रहते। वह भी बहुत गड़बड़ करने पर। हर एक का हिसाब बहुत ही उलझा हुआ था। पर तीरथनाथ कहता रहता, अपार दया के कारण वह उन लोगों को घर-द्वार और खेती के लिए ली हुई सामान्य ज़मीन नहीं लेता। चाहते ही ले सकता है। क़ानून के मुताबिक़। ले लेने पर कोई कुछ कर नहीं सकता था।

खुराकी के संबंध में तीरथनाथ बोला, "वह तो मिलेगी ही। कल सवेरे आना। तब दूँगा।"

दूसरे दिन चोट्टि एक काम में फँस गया। उसकी गाय ने झाड़ी के किनारे बच्चा दिया था। वह गाय और बछड़े को उठाने गया। हरमू को मुंडा लोगों के साथ खुराकी और कर्ज़ लेने भेज दिया।

लगभग एक घंटे के बाद सोमचर और एतोया आये।

"तुम चलो।"

"क्यों?"

"गड़बड़ हो गयी है।"

"कैसी?"

"चलो, चलते-चलते बताता हूँ।"

राह में सोमचर बोला, "दादा और दूसरे मुंडा लोग गुट बाँधकर कचहरी में बैठे हैं।"

"क्या हुआ, बता तो?"

"उस कुरमी गाँव के मुंडा खुराकी और कर्ज लेकर भागे थे। उस

"महाराज, इतने दिनों के बाद वे सारी बातें लौट आयी हैं! कुरमी के मुंडा लोग जो काम कर गये हैं, उससे हम शरम के मारे मर रहे हैं। पर कितने दुख से मुंडा लोगों ने यह काम किया है, यह सोचकर तुमने देखा है?"

"क्या तुम लोगों को देना नहीं चाहता?"

सब आगे आ गये। बहुत,बहुत दिनों बाद चोट्टि फिर सामने आ गया। ज़ोर से बातें कर रहा था।

चोट्टि पीछे हटे बग़ैर बोला, "सब सुन लो। उसी दिन समझ गया था महाराज, तुम हम लोगों के साथ छगन आदि की फूट डालोगे। अब देखता हूँ कि मुंडा मुंडा में फूट डालते हो।"

"क्या फूट डाली?"

चोट्टि पीड़ा से भरी हँसी हँसकर बोला, "मैं चोट्टि मुंडा हूँ, महाराज! कभी गलत काम नहीं किया। आज मुसीबत के दिनों में मैं करज लूंगा, और ये मुंडा भूखों मरेंगे? न।"

"तू मुझे डर दिखा रहा है?"

"नहीं महाराज! इतनी जमीन, इतने रुपये तुम्हारे पास हैं, दारोगा तुमको इतना मानता है, मैं तुमको डर दिखाऊँगा?"

"क्या कह रहा है?"

चोट्टि बड़े गुस्से से बोला, "वह 'खचड़ापन' वाली बात वापस लेनी होगी। कोई खचड़ापन किये बिना यह बदनामी का करज नहीं लूंगा। छगन!"

"कहो, चोट्टि!"

"तुम चाहते हो तो करज ले लो।"

"चोट्टि, यह कैसे हो सकता है?"

"इसे अगर बनोया उठाना कहो, तो बनोया उठाऊँगा। जाओ, फूट डालो। छगन आदि ले लेंगे करज, मैं नहीं लूंगा।"

"यह तेरी बात है?"

"यही बात है। बुना पुनुम। लड़ाई किसे कहते हैं, यह तब दिखाऊँगा। पुनुम आने के पहले सब-कुछ अगनमुखा तीर से जला दूंगा।"

चोट्टि चुप हो गया। छगन बोला, "हम तेरे साथ हैं, चोट्टि! महाराज! यह आपने क्या कहा? आदिवासी लोग एक बार निश्चय करते हैं, हुजूर! भूखे रहेंगे, काम करेंगे, लेकिन बुरी बात नहीं सुनेंगे।"

तीरथनाथ समझ गया कि सब-कुछ बहुत मुश्किल होता जा रहा है। बोला, "कल जवाब दूंगा। आज और कोई बात नहीं।"

चोट्टि हँसा। बोला, "यह बात लौटाओगे या नहीं, अभी बताओ महाराज! मैं घर नहीं जाऊँगा। लड़का धनुक ला देगा। अभी मैं तुम्हारा खेत रोक दूंगा। मेरे लड़के हैं, सना आदि हैं। मुंडा लोगों को मार डालो। उसके बाद सच्चे आदमियों को लेकर कामकाज करो।"

चोट्टि की बात में भीषण प्रतिज्ञा थी, अटल जिद। तीरथनाथ धीरे-धीरे अटक-अटककर बोला, "मुँह से बात निकल गयी। वह बात मैंने कहनी नहीं चाही थी। कल कर्ज दूंगा। लेकिन हिसाब देखकर दूंगा।"

चोट्टि समझा, सर्वनाश होते-होते बच गया। अब उसकी जीत हुई। वह क्षीण, दुर्बोध्य हँसी हँसकर बोला, "हिसाब हमारी ओर से पहान देखेगा। छगन भी देखेगा। हिसाब अच्छी चीज है। हमारे और छगन के लिए भी यह जान लेना अच्छा है कि किसने कितना लिया है।"

"जानोगे।"

तीरथनाथ जोर से कुर्सी ठेलकर उठ खड़ा हुआ। "कह दिया कि मैं फिर भी कर्ज दूंगा। और कोई न देता।"

"तुम ही तो दोगे। हम और किसके लिए मेहनत करते हैं?"

दूसरे दिन कर्ज मिला। पहान और छगन हिसाब समझने गये तो कुछ समझ में न आया। मौका मिलते ही तीरथनाथ पहले दारोगा के पास गया।

सब सुन-सुनाकर दारोगा बोले, "आदिवासियों के बारे में सावधान होकर चलियेगा। अब उनके लिए मंत्री बन गये हैं, दफ्तर बन गया है। चोट्टि मुंडा ने बताया नहीं? कोई अपराध करेगा तो सूचना दे देगा।"

तीरथनाथ के मन में पुराना डर दिखायी पड़ा। वह उदास चेहरे से बोला, "न-न, चोट्टि कोई अपराध करने वाला आदमी नहीं है।"

"दूसरे कर्जदारों को तो आप काबू में रख सकते हैं।"

"सब मिलकर एक हो गये हैं।"

"यह क्या कह रहे हैं?"

"जाने दीजिये। भूल जाइये कि क्या कहा था।"

"डर रहे हैं क्या?"

तीरथनाथ गहरी साँस लेकर बोला, "दारोगाजी, आज़ादी के बाद भी यह जगह जंगली है। यहाँ बहुत कुछ होता है, जिसको दूर करना किसी थाने के बस में नहीं है। मान लीजिये आप खाने बैठे हैं। जितनी बार खाने को हाथ लगाते हैं, दिखायी पड़ता है कि खाना खून बना जा रहा है। ऐसा होने पर आप किसे अपराधी ठहरायेंगे?"

"कह क्या रहे हैं?"

"बताया तो।"

"चोट्टि यह सब कर सकता है?"

"किसे पता? मेरे पिता ने उसके पिता से झगड़ा किया। उसके बाबा ने फाँसी लगा ली। उसके बाद मालूम है, क्या हुआ? हमने देखा कि चोट्टि यहाँ है। लेकिन उसके तीर से काशीधाम में मेरे बाबा नाव से गंगाजी में गिर गये। अपघात मृत्यु हो गयी। सब समझ गया, पर कुछ कर न सका।"

दारोगा बोले, "ऐसा नहीं होता।"

"कुछ दिन देखिये, खुद ही कहेंगे कि ऐसा होता है।"

"तो आपकी ही बात रही। फ़िकर मत कीजिये। अभी कुछ नहीं किया, लेकिन मैंने आँखें खोल रखी हैं। मौक़ा आने पर देख लूंगा।"

"आप जो भी समझें। लेकिन कुछ अद्भुत हो जाने पर सोचेंगे कि तीरथनाथ यह बात कह गया था।"

"मेरे बहुत पहले अँग्रेज़ों के ज़माने में एक दारोगा की जान उसी चोट्टि मुंडा ने बचायी, यही न।"

"हाँ, इस तरह के बहुत-से काम उसने किये थे।"

चोट्टि मुंडा की जिन्दगी में सारी बातें किस्सा बन जाती हैं। उनके जीवन में निरंतर दुख और वंचना है। इसीलिए चोट्टि के गाने गाकर वे क्षण-भर के लिए सब भूल जाते हैं। उन्होंने गाया :

तीरथनाथ बोला, सारे मुंडा खचड़ा।
चोट्टि बोला, बात लौटाओ हे
नहीं तो बाण मार जला दूंगा खेत तुम्हारा
तुम्हारे कोठे में जलाऊँगा होली की अगिन।
लाला बोला, लौटा ली बात

ले लो करज, ले लो धान
करज में लो मक्का
मेरे मुंह से नहीं निकलेगी फिर ऐसी बात
सबने सुना तब चोट्टि ने लौटाये अपने तीर
बाप नाच उठे थे, छूट गये थे प्राण ।

चोट्टि गाना सुनकर बोला, "अच्छा, किन्तु मैंने कह दिया हरमू, किसी दिन लाला इस अपमान का बदला लेगा।"

हरमू बोला, "ले लेना। थाने गया था।"

नौ

चोट्टि देख रहा था कि मुंडाओं का सब-कुछ जैसे बदला जा रहा है। जीवन बदला जा रहा है। चोट्टि स्टेशन और अधिक बड़ा हुआ। वहां अब रात में दिन की-सी चमकीली रोशनी होती थी। चोट्टि आदि जानते थे कि यहां की जमीन पर उन्हें नये काम करने को कुछ नहीं है। चोट्टि की जमीन उन्हें हाडतोड़ मेहनत के बाद सिर्फ फसल ही देगी। उन्हें तो रथनाथ के हिसाब से फ़सल का चौथा या आठवां हिस्सा मिलेगा। अपने खेतों में जो फ़सल है, वह धरती देगी। लेकिन धरती ने कभी चोट्टि या छगन आदि को धनी नहीं बनाया।

"सब दिकू लोगों के लिए बचाकर रखती थी।" चोट्टि पहान से बोला।

हरमदेउ के थान और पहान के घर के चारों ओर वे लोग घेरा बना रहे हैं—नागफनी का घेरा। इस काम में जिससे जितना हो सके वैसी मेहनत दें।

"क्या बचाकर रखती थी?" पहान ने पूछा।

"सब-कुछ।"

"कौन?"

"वह धरती।"

"क्या कह रहे हो?"

"आंखें नहीं हैं? देखते नहीं?"

"तुम-सी आंखें कहां पाऊंगा?"

"तुम भी उस पहान की तरह बात करते हो।"

"देखो, सुन्दर घेरा बन गया।"

"अब पहानी से कहो, घर पोतें, चित्र बनायें।"

"कब करेगी ? वह बकरी लेकर लगी रहती है। मैं ही करूँगा।"

"तुम ?"

"देखना। क्या कह रहा था ?"

"चलो बैठें।"

बैठकर चोट्टि ने बीड़ी सुलगायी और बोला, "इस धरती को देखो। इसकी सेवा में हम जनम का जनम बिता देते हैं। किन्तु कभी किसी मुंडा को धनी होते नहीं देखा। बहुत जमीन जोती, बहुत लोगों ने खेतों पर मेहनत की।"

पहान हँसकर बोला, "लगता है देवताओं ने मुंडा लोगों को फकीर बनाकर भेजा है। तू क्या देखेगा ? किसी ने नहीं देखा।"

"लेकिन किसी दिन ऐसा आदिम ग्राम था।"

"आदिम ग्राम—खूटकाट्टि ग्राम—के बारे में तुझसे किसने बताया ?"

"सुना है।"

पहान कुछ कहने जा रहा था, पर बोला नहीं। उसने कहा, "बता, क्या कह रहा था ?"

"अब देखो, उस धरती को दिकू छीने ले रहे हैं। परताप चड्ढा आ रहा है। ईंटों का भट्टा बनाया है। कहाँ कलकत्ता, वहाँ से आकर चिरजीराम मारवाड़ी यहाँ कोयला खोदेगा। और फलों का बगीचा एक नया रोजगार है। अशरफ शेख यहाँ छः बीघा जमीन मोल ले रहा है। बगीचा बनायेगा। सो इतनी ईंटें, इतना कोयला ! धरती सब बचाकर रखे थी, इन दिकू लोगों के लिए !"

"लाला भी बगीचा बनायेगा। जमीन में क्या फल होता है ? बहुत-से पपीता, सरीफा, अमरूद, आम ! देख न, हम जंगल से महुआ के फल तोड़ते हैं। वह भी बता तो कितना होता है ?"

"हमें कुछ नहीं देती।"

"न।"

"बताओ तो, क्यों नहीं देती ?"

"हमारे भाग्य में नहीं है।"

"न।" चोट्टि गंभीर हो गया। बोला, "जो लेना जानता है उसे देती है। हम लिखे-पढ़े नहीं हैं। बाप-दादों ने भी नये काम नहीं किये। हमें कुछ नहीं आता।"

"सुना है, इस बार गौरमेन हम लोगों का इसकूल खोल देगी।"

"कहाँ ?"
"पता नहीं।"
"ऐसा नहीं सिखायेंगे कि हम अपना हक समझ सकें। फिर सीखने में लाभ ही क्या ? अपना कहने को मुंडा लोगों के पास कुछ भी तो नहीं है।"
"तू फिर भी तीर खेलकर पैसे पाता है।"
"रुपये भी।"
"सबको देता है।"
"देना होता है।"
"वापस मिलता है ? छगन आदि से ?"
"दे देते हैं।"
कुछ सोचते-सोचते चोट्टि बोला, "एक बात है।"
"क्या ?"
"तुम भी चलो, छगन भी चले।"
"हाँ, चलेंगे ?"
"चलो, उस परताप के पास चलें। कहेंगे, हमें मिट्टी खोदने के काम में लगा लो। उसमें हमारी भी जान बचेगी और परजा न होने पर भी तीरथनाथ जो हमें परजा बनाये हुए है सो उसके हाथ से थोड़ा बचेंगे।"
"अच्छी बात कह रहा है।"
"एक बात और है।"
"क्या ?"
"कोयला तो यहाँ जमीन के ऊपर है। कोयला खोदने के काम में भी चलना होगा। देखो, पहले नहीं सोचा था कि ऐसी बात कहूँगा।"
"तूने यह क्या कहा ? यह तो समय ने तुमसे कहलाया।"
चड्ढा ने उन लोगों की बातें ध्यान से सुनी। बोला, "तुम कितने लोग हो ? मुझे तो बहुतेरे लोगों की जरूरत होगी।"
"पचासों मुंडा हैं। औरतें और लड़कियाँ भी हैं। छगन आदि तो सौ के करीब होंगे।"
"ठीक। तो जिम्मेदार कौन होगा ?"
"हमारा पहान। यह छगन।"
"दिन का बारह आना दूँगा। पन-पियाई नहीं दूँगा।"
"पन-पियाई की छुट्टी देंगे ?"
"एक घंटा। बरसात में काम न होगा।"
"हम खबर ले जायेंगे।"
"अच्छा।"

"कब से काम होगा ?"
"बता दूंगा। लेकिन एक बात।"
"कहिये, महाराज !"
"तीरथनाथ के पास जो काम कर रहे हो, उसमें रुकावट न पड़े। यहाँ हम दो लोग हैं। आपस में झगड़ा नहीं चाहते।"
"झगड़ा नहीं होगा, महाराज !"
बाहर निकलकर छगन बोला, "चोट्टि !"
"कहो।"
"काम तो सुनने में अच्छा है। पैसा भी मिलेगा।"
"पता है, तुम लोग बेगार करते हो, लाला क्या करेगा ?"
"यही सोच रहा हूँ। हमारा कैसा भाग्य है कि लाला के यहाँ मेहनत करेंगे, यहाँ मेहनत करेंगे, मन में भरोसा नहीं होता। तुमने जो हम लोगों की बात सोची, इससे हमें गरब हो रहा है।"
चोट्टि फीकी हँसी हँसकर बोला, "देख क्यों न लें ? बैठकर मजा देखो। जो सब जगह हो रहा है, वही यहाँ भी होगा।"
"क्या होगा ?"
"कोई आयेगा जंगल साफ़ कर पत्थर तोड़ने वाला ठेकेदार बनकर, कोई आयेगा जंगलों के पेड़ों को काटने का ठेकेदार बनकर। ये लोग भी कुली लेकर आयेंगे, हम भी जायेंगे। सब जगह ऐसा हो रहा है, कितनी ट्रेन चल रही हैं, देख नहीं रहा है ? नया टीसन बन रहा है। यहाँ भी आदमी बढ़ेंगे, बस्ती बढ़ेगी। मुंडा लोग भी आयेंगे। तुम लोगों का समाज बड़ा होगा।"
"ओह, सोचकर कैसा बुरा लगता है। तब झगड़े-झंझट-मुकदमे, बहुत हंगामा हो जायेगा।"
"लेकिन वह दिन आ रहा है।"
घर लौटकर चोट्टि के मन के बादल छँटे नहीं। वह दिन आ रहा है। मुंडा लोग अपनापन लेकर नहीं रह सकेंगे। छगन की तरह जो लोग अलग-थलग देश की उन्नति में लगे हैं, उनके साथ मिलकर खेत की मजूरी, ठेकेदार और दूसरे रोजगार वालों के साथ कुली का काम करना होगा। तब बदन पर होगा कुर्ता, हो सकता है पैरों में जूता भी आ जाये। तब 'मुंडा'-परिचय केवल उत्सवों में, सामाजिक व्यवहार में ही रहेगा।
उस तरह के दिन आ रहे हैं। अभी अपना कहने को जो कुछ है, उसे पकड़कर रखना पड़ेगा, जैसे मेले में तीर चलाना। मुंडा युवक कहाँ आ रहे हैं ? कहाँ कह रहे हैं, तीर चलाना सिखाओ ?

चोट्टि जो कहता है वही होना है। अब नरसिंगगढ़ के राजा नहीं है। 'राजा' नाम पोंछकर अब वे जंगलों के राजा बन गये हैं। चीता, बाघ इत्यादि की खालों के निर्यात के रोजगार में लग गये हैं। जंगल का क़ानून उन पर लागू नहीं होता। वे किसी भी कानून के अन्तर्गत नहीं आते। कन्नौज के राजपूत हवलदार का यह राजवंश है। 'राजा' खिताब मिलने का कारण ग़लत ढंग से ब्रिटिश राज की भक्ति है। कई पीढ़ी पहले तत्कालीन राजा ने गोली चलाकर तीन प्रजाजनों को मार डाला और घोषणा की थी कि हम सूर्यवंशी हैं। हम किसी कानून के अन्तर्गत नहीं आते।

सचमुच उनको कोई सजा न हुई। तभी से जो गद्दी पर बैठते हैं, उनके मन में यह रहता है कि वे सूर्यवंशी हैं। यह राजा भी यही समझता है। इस जानकारी के बल पर ये पानी के कुंड को ज़हरीला बनाकर बाघ मारने लगे हैं। दूसरे जीव-जन्तु भी मरते रहते हैं। राजा ऐसे ही कामों में व्यस्त रहते हैं। उनकी ग्राम जागीर में हैं मुंडा-उरांव-कुरमी-दुसाध इत्यादि प्रजागण। राजा के पास समय नहीं है। इसलिए नायब तहसीलदारसिंह स्वभावतः प्रजा पर शासन करता है। हथियार एक ही है—कर्ज-चक्रवृद्धि ब्याज-बेगार। आजकल तहसीलदार किसी प्रजा पर खफ़ा हो जाये तो हाथी से उसका घर उजड़वा देता है। इसका परिणाम है कि नरसिंगगढ़ की हवा में क्षोभ फैला हुआ है। दारोगा या थाना सूर्यवंशियों के बहुत ही आज्ञाकारी हैं। और तो और, ट्रेन तक, शेर का शव लादने के दिन, न रुकने वाले स्टेशन पर भी रुक जाती है। अभी, इसी समय, नरसिंगगढ़ से पुराण मुंडा आया। पुराण की उम्र बहुत कम नहीं है, छियालीस बरस है। चोट्टि के पैरों के पास उसने अपना धनुष रख दिया। बोला, "मुझे सिखाओ।"

"तुमको? हर बरस जीतते आ रहे हो।"

"तुम चलो।"

"तुम तो लड़कों के साथ आते थे।"

"तुम चलो न।"

यथास्थान आकर पुराण बोला, "हाथ ठीक नहीं है। सोचा, तुम्हारे पास अभ्यास करने से अगर हाथ लौट आये।"

सचमुच पुराण का हाथ काँपता था।

"यह क्या, पुराण?"

पुराण विरक्त आवाज में बोला, "मेरा घर हाथी से रौंदवाकर तोड़ डाला है। मां मुंडा में कितनी अकल होती है? झपट पड़ा। लड़के ने घसीट लिया, इसने हाथी के नीचे नहीं पड़ा। लेकिन हाथ किवाड़ों के

नीचे दब गया। तब से हाथ बस में नहीं है।"

चोट्टि हाथों में धनुष लिये ऐसे खड़ा रहा मानो पत्थर हो गया हो। जैसे वह हजारों बरस पुराना देवी-देवता बन गया हो, जिसके पास बहुत दिनों से आकर मुंडा कहते जाते हों—

घर पर हाथी चढ़ा-दिया
बेगारी करने ले गया
उसके घर में था परब, सो लगान लिया
करज लिया था, उसमें सारी फसल ले गया।

मुंडा लोग कहे जा रहे थे, कहे ही जा रहे थे। कोई प्रतिकार नहीं हो सकेगा—यह जानकर आदमियों से नहीं, अशक्त देवी-देवताओं से कह रहे थे। दूर पर पहाड़ था, सूखा सपाट मैदान, वन के आँचल में आँवलों का वन हवा से काँपता था, पत्थरों के बीच घास के गुच्छे थे। कहीं जानवरों के गले में घंटी बज रही थी, तीतर बोल रहे थे।

चोट्टि पत्थर का देवी-देवता नहीं था। हाड़-मांस का आदमी था। वह बोला, "सो बाद में तीर चलाने में जीतना चाहते हो, इसलिए मेरे पास आये हो ?"

"आया हूँ।"

"क्यों आये पुराण, क्यों ?"

"मैं अकेला हूँ। मेरे पास कोई नहीं है"

"लड़का ? मुंडानी ?"

"सबको भाई के पास भेज दिया, लातेहार में।"

"तू कहाँ रहता है ?"

"तहसीलदार को पता है कि मैं भी लातेहार में हूँ।"

"है कहाँ ?"

"लाइन के पार एक पुराना रेल का कमरा है। उसके चारों ओर जंगल हो गया है। लोहे की कोठरी है। यह घर शायद हाथी भी नहीं तोड़ सकता।"

"वहीं है ?"

"हाँ रे, सिखा।"

चोट्टि बोला, "तो देख। नजदीक आ।"

कुछ क्षण बीते। चोट्टि बोला, "तहसीलदार को पता है कि तू लातेहार गया है ? सच बता, पुराण। चालाकी मत करना।"

पुराण थोड़ी विस्मित और पूरी तौर पर निर्लिप्त आवाज में बोला, "हाँ रे! वह कहा था न, बेरा ग्राम से। उसके बाद जाकर दासू मुंडा के

घर रहा। बहुत डर गया था। दूसरे दिन लातेहार चला गया। कई दिन बीत गये। उसके बाद बहू ने कहा, शायद उनका गुस्सा ठंडा हो गया हो। जाकर देख आओ न? सो आकर जो देखा तो ताज्जुब की बात थी।"

"क्या देखा?"

"घर, गोठ, मचान—कुछ नहीं रहा। जैसे कि जुती हुई जमीन हो। कहीं लौट न आऊँ, इसलिए घर-आँगन सब हाथी से रौंदवा डाला। दूसरे मुंडाओं को कोड़े मारकर कहा, उस जमीन में काँटे लगा दो।"

"उन्होंने लगा दिये?"

"लगा दिये।"

पुरान अपनी कहानी के उपसंहार में बोला, "बहुत मोटा कोड़ा। चमड़ा मढ़ा हुआ। एक बार मुझे मारा था। पैर टूट गया था, धोंट्टि! हाड़-तोड़ लता लगायी, तभी पैर ठीक हुआ। सो हमारे मुंडा तो खराब नहीं है, फिर भी क्यों उन लोगों ने मेरी जमीन में काँटे बोये, यह सोच रहा हूँ। उस पर दानू बोला, पुरान! तुझे जहाँ रहने न देंगे उस पर और किसी को क्यों बसायें? इसी से काँटे लगाकर जमीन बेकार कर दी। लेकिन वे यह नहीं समझे कि वह जमीन मेरी है। राजा का दिया पट्टा भी है। एक बार जब गौरमेंन के साथ मुकदमा हुआ, तब दिया था। सो मुंडा लोग यह नहीं समझ पाये कि जमीन मेरी है। लड़कों को पपीते अच्छे लगते हैं। इस बार पेड़ लगाना।"

"तो जाना मत।"

"न जाऊँ?"

"न।"

"अगर जमीन वापस मिले तो?"

"मिलेगी भी, पता नहीं। फिर भी कहता हूँ। पता लगाकर मैं तुझे बताऊँगा। देख, मैंने सुना नहीं है, लेकिन दानू उराँव ने सुना है। सदर में समझा जाता है कि हमारे, आदिवासियों के, भले-बुरे को देखने के लिए गौरमेंन बैठ रही है। वहाँ बताना होगा।"

"कौन बतायेगा? तू? सदर तो बहुत दूर है।"

"मुंडा लोगों के लिए सदर दूर ही रहता है, पुरान! पास नहीं रहता। अपनी जरूरत पर कोशिश करके देखना पड़ता है, कुछ पास आ सकते हैं या नहीं। चाहने से सब होता है, जैसे तू मेरे पास आया।"

"तू जो भी कह, धोंट्टि। हमारे लिए तू बहुत अपना आदमी है। तेरे पास आने में लगता है कि रास्ता छन-भर में कट जाता है।"

"तेरे हाथ में ताकत नहीं है।"

"हाथ काँपता है।"

"बाघ की चर्बी की मालिश कर।"

"घर में थी। पता है, चोट्टि...?"

"चल, मैं दूंगा।"

लेकिन पुराण किसी मेले में तीर चलाने नहीं आया। नरसिंगगढ़ के मुंडाओं ने कहा, "वह लातेहार चला गया।"

चोट्टि की बड़ी इच्छा थी कि उस परित्यक्त रेल के वैगन को देख आये। फिर याद आया कि पुराण ने तो छिपे ठिकाने का पता देना नहीं चाहा था। वह बात कहना ठीक न होगा। वह अगर देखने जाता है तो उससे भी जानकारी हो जायेगी।

गाँव लौटकर चोट्टि परताप चड्डा के हिसाब रखने वाले ऊधमसिंह के पास गया। छोकरा-सा वह आदमी भला था। शिकार के कारण चोट्टि के साथ एक तरह से उसकी दोस्ती हो गयी थी। सदर में उसका हमेशा आना-जाना रहता था। चोट्टि ने उससे एक दिन सारी बातें खोलकर बतायीं। बोला, "महाराज, जब तुम सदर जाओगे तो एक बात का पता लगा आना।" चोट्टि ने उससे सारी बातें बतायीं, सिर्फ़ पुराण का नाम और नरसिंगगढ़ का नाम नहीं बताया।

लेकिन पचास का दशक पुराण मुंडा का दशक था।

उन दिनों पचास का दशक साठ के दशक की ओर बढ़ रहा था। एक बार दोपहर में पता चला कि राजा को शिकार खेलने में मदद देकर तहसीलदारसिंह लौट रहा था। वह घोड़े पर सवार था। उसी समय उसकी पीठ में एक तीर लगा। तीर की नोक में विष था। तहसीलदार गिर पड़ा। घोड़ा उसे फेंककर आराम से घास चर रहा था। सारी घटना का पता लगने में शाम हो गयी। इसी बीच तहसीलदार के मुँह से झाग निकलता रहा। रात में ही वह मर गया। इस घटना में सारी प्रजा को लपेटने में सूर्यवंशी खुश होते। पर बड़े दुख की बात थी कि घटना-स्थल के आस-पास आदमी न थे। दोपहर में सब अपने-अपने काम में लगे थे। किसी पर संदेह नहीं किया जा सकता था। सतयुग तो था नहीं कि घोड़ा बात बनाकर साक्षी देता। तहसीलदार की मौत का रहस्य बना रहा। तहसीलदार का भतीजा चाचा की रखैल को लेकर नौ-दो ग्यारह हुआ। रखैल कचहरी के दरबान की विधवा और गोड़ी और मेली खायी थी। चाचा-भतीजा दोनों ही उसे लेकर एक-दूसरे से दुश्मनी रखते थे। इसका नतीजा हुआ कि यह मामला पारिवारिक किस्से के उपसंहार के रूप में लिया गया। किसी भी तरह पुराण मुंडा पर सन्देह नहीं गया। चोट्टि के

मन में बड़ी घबराहट दिखायी देती थी और एक चाँदनी रात में, जब स्टेशन सो रहा था, तब वह उस वैगन के पास गया। वैगन सूना था। उसमें कोई न था। चैन की सांस लेकर वह लौट आया। सदर से ऊधमसिंह जो खबर लाया वह काम की नहीं थी। आदिवासी कल्याण और उन्नति के अधिकारी उखड़े हुए मुंडाओं को कुटीर उद्योग में मदद दे सकते हैं, छीनी हुई जमीन फिर नहीं दिला सकते। छिना राज्य, राजाओं की खास जमीन का मामला बहुत गड़बड़ का होता है। उनके दफ्तर का अधिकार नहीं कि पुराण की जमीन दिला दें। उसके सिवा, चार-चार कर मुंडा-उरांव-दुसाध-कुरमी-गजू-धोबी के मिलकर रहने से वह इलाका उनके अख्तियार में नहीं आता था। असली आदिवासी अंचल होने से वे उनको कुटीर-उद्योग की उपयोगिता समझा सकते हैं।

दो महीने बीत गये। उसके बाद एक दिन अचानक एक चौंकाने वाला समाचार सुनायी पड़ा। मुंडा जाति के विलुप्त अस्तित्व वाले लोग ही इस तरह खबर दे सकते हैं।

पुराण पकड़ा गया है। पकड़वा दिया है।

बहुत ही प्रतीकात्मक रूप से वह तीन पपीतों के तीन पौधे लेकर अपने गाँव में अपने ठिकाने गया था। पौधों को रोपने जाने पर उसने अपने ठिकाने पर नया घर देखा। उस घर में एक और मुंडा परिवार था।

उस परिवार के लोगों ने समझा कि पुराण उनके साथ झगड़ा कर अपनी जमीन पर कब्जा करने आया है। पुराण उनसे बोला, "मेरा पट्टा था।"

"अब उस पट्टे का अधिकार नहीं रहा।"

"अधिकार नहीं रहा?"

"कचहरी ने बताया है।"

"तो ये पौधे?"

"बुरा न मानो तो यहीं लगा दो। और मेरे घर पर रहो, खाओ। हमने कोई बुराई नहीं की। फिर भी बुरे बन गये। पर बड़े दुख में आये थे।"

पुराण ने पौधे लगाये। इसके बाद बोला, "दामू! उपा! तुम लोग मेरे साथ थाने चलो।"

"क्यों?"

"जब पट्टे का ही जोर नहीं रहा, तो मैंने तहसीलदार को मारा क्यों? यह तो ठीक नहीं किया।"

"तूने मारा था?"

"हाँ, जाकर दारोगा से बता दूँ।"

"क्या बतायेगा ?"

"क्या करूँ ?"

"तू भाग जा।"

"क्यों ?"

"उसे मारा। तुझे फाँसी होगी।"

"घर और ज़मीन मिलेगी नहीं, छाती फटी जा रही है, तो जिन्दगी का क्या करूँगा ? किसलिए नहीं कहूँ ? फिर आदमी बहुत ही बुरा था। उसे मारने पर फाँसी क्यों होगी ?"

मुंडाओं का सारा मामला धीरे-धीरे उलझा हुआ लगने लगा। इसके बाद वे थाने ही गये। पुराण ने सब साफ़-साफ़ बता दिया।

दारोगा ने उसे थाने पर रोक लिया। बहुत देर तक उसे समझाया कि केस ख़तम हो गया है, उसे लेकर झंझट करने से कोई फ़ायदा नहीं। फिर यह सीधा झंझट है ? फिर फ़ाइल खोलो, केस बनाओ, सबूत-गवाह जमा करो। लेकिन पुराण को कुछ भी न समझा सके।

अन्त में पुराण बोला, "तो क्या होगा ?"

दारोगा का धैर्य चुक गया। बोला, "केस बन्द हो गया है। अब तुम कह रहे हो, तुमने ख़ून किया है। इस आधार पर भी केस हो सकता है। लेकिन क़ानून का रास्ता अलग ढँग से चलता है। तुमने ख़ून किया है वह देने से ही ख़ून नहीं हो जायेगा। साक्षी-सबूत चाहिए। प्रमाण चाहिए। कारण चाहिए।"

"मेरा घर तोड़ दिया।"

"कब ? वह तो घटना के पाँच महीने पहले की बात है। तहसीलदार का ख़ून होने के दो महीना पहले से तुम्हारी जमीन पर दूसरे लोग रहने लगे थे। तुम्हारी बात मुझे मालूम है। तहसीलदार पर किसका गुस्सा हो सकता है, यह जाँच करने में तुम्हारी भी तलाश की थी।" अब दारोगा 'तू' पर उतर आया। गुस्से से बोला, "गधा ! उजबक ! तुझे तो मैं बचाने की कोशिश कर रहा हूँ। तुझे ख़ूनी साबित करने में मुझे बड़ी मेहनत करना पड़ेगी। अभी मुझे बहुत काम हैं।"

काम थे सूर्यवंशी के एजेंट के साथ। बाघ की सात खालों के दाम आये थे इक्कीस हज़ार रुपये। दारोगा को कम-से-कम हज़ार रुपये मिलेंगे। इस समय इस रद्दी केस में फँसने की उसकी इच्छा नहीं थी। सदर में और गृह कार्यालय में दारोगा के काफ़ी खूँटे थे। खूँटों के बल पर ही वे यह बात कह सकते थे।

"कौन गवाही देगा ? घोड़ा था। और हाथी ?"

"हाथी कहाँ मिला ?"

"हाथी उसके साथ फिरता था। मेरा घर तोड़ दिया।"

"समझा। तुम्हारा दिमाग खराब है।"

"बाबू ! मैं तुम्हारी दिकू बात नहीं समझता।"

"किसने समझने को कहा ?"

"बाबू ! चोट्टि ग्राम का चोट्टि मुंडा सब जानता है।"

"चोट्टि मुंडा ! वह तुम्हारे साथ था ?"

"हाँ हुजूर ! उसने मुझे सहारा दिया था।"

अब केस मजेदार बना और सिनेमा में देखे फूलों की तरह सैंकड़ों आयामों में विकसित हो गया। थाने में पुराण को बैठाकर दारोगा, राजा के एजेंट के साथ जरूरी काम निपटाने के लिए गया। दूसरे दिन कान्स्टेबल से चोट्टि को बुलाने को कहा। पुराण की बात सुन-सुनाकर कान्स्टेबल आदर के साथ बोला, "हजूर ! यह कैसे हुआ ? जिस दिन तहसीलदार का खून हुआ, उस दिन चोट्टि को मैंने हाट में देखा था। हाट में था और हमने बातें भी की। उनके थाने का सिपाही भी था।"

दारोगा ने पुराण ने पूछा, "अच्छा ! चोट्टि तेरे साथ था ?"

"नहीं, नहीं, हाट गया हुआ था, जाकर भी वह मेरी छाती में बैठा रहता है।"

दारोगा ने उसे बहुत डाँटा। बोले, "हाथी था, चोट्टि मुंडा था। जा, घर जा। नहीं तो मैं तुझे मारकर खतम कर दूंगा।"

बहुत ही परेशान दिमाग से पुराण बोला, "तब क्या घर के लिए फिकर करते-करते मेरा दिमाग बिगड़ गया है ?"

"निकल जाओ यहाँ से।"

"हाथी भी देखा, चोट्टि भी साथ था।"

चोट्टि आदि ने सोचा था कि पुराण का इतनी देर में चालान हो गया होगा। लेकिन पुराण को आते देखकर वे लोग चौंक गये। पुराण ने उनसे सारी बातें कहीं। उसका दिमाग खराब हो गया है, इसलिए दारोगा ने उसे छोड़ दिया है, यह जानकर चोट्टि बोला, "आ, बैठ। सारी बात बता। पहले कुछ खा ले।"

मक्का का सत्तू पानी में घोल नमक-मिर्च के साथ खाकर पुराण बोला, "दारोगा को विश्वास नहीं हुआ कि मैंने तहसीलदार को मारा है।"

"वह कैसे हुआ ?"

"समझ में नहीं आता।"

पुराण पूरी बात बता गया। हाथी देखा, तू मेरे कलेजे में रहता था। स—च झूठ ?

"पुराण, तू आज जैसे जी रहा है वैसे कोई मुंडा किसी दिन जिन्दा नहीं रहता। तू अभी समझ नहीं पा रहा है कि कैसे जिन्दा है।"

पहान बोला, "उसे घर में रखो। उसके बाद उसके कौन कहाँ है, ले जाकर उनसे जिम्मे कर दो।"

चोट्टि ने उसे अपने घर रखा। दूसरे दिन पुराण को लेकर वह और पहान ट्रेन से लातेहार गये। ट्रेन पर बैठकर चोट्टि बोला, "तूने हम लोगों को रेल पर भी बैठा दिया। कभी सोचा भी नहीं था रि रेल पर बैठेंगे।"

"रेल अच्छी है। मैं तो उसके कमरे में रहता था।"

"अब चुप हो जा। वह बात भूल जा।"

"हाँ चोट्टि, कलेजा भी खाली है, हाथी भी नहीं दिखायी देता। तब रेल के कमरे में सोता था, सदा हाथी देखा करता था।"

"हाथी बत्तख बनकर उड़ गया, जा।"

तीनों ही खूब हँसे। हँसते-हँसते उनके दिल का बोझ हलका हो गया। तीनों मुंडा हँसते हुए लातेहार उतरे। कुलियों से अपने-आप बोले, "पहले-पहल रेल पर चढ़े हैं जी, इसी से हँसी आ रही है।"

पुराण बोला, "चलो चोट्टि, मद खरीद लें।"

"पहले घर चल।"

घर जाकर पहान और चोट्टि ने पुराण के लड़कों को सारी घटना का महत्व समझाया। बोला, "कही जाने मत देना।"

"यहाँ कितने दिन रहूँगा ?"

"कहाँ जायेगा ?"

"ठेकेदार ने पेड़ काटने के काम को बुलाया है।"

"कहाँ ?"

"कहाँ ? पता है, गौरमेन के जंगल में।"

"तो जा। लेकिन उसे छोड़ना मत।"

पुराण बोला, "मद नहीं पियोगे ?"

"बाद में आकर पी जाऊँगा।"

वे लोग पैदल लौटे। देर रात को लौटे। पहान बोला, "चोट्टि, वह क्या है ? हाथी ? मैं क्या पुराण हो गया ?"

"न-न। वह मादा हाथी है। टाहाड़ के ठाकुर के मन्दिर का हाथी है। महावत उसे लेकर घूम रहा है।"

"ऐसा कहो। पुराण के दिमाग को क्या हो गया है, पता है। अभी भी समझ नहीं पा रहा है, किस परेशानी ने बचा।"

"मेरी तो अभी भी समझ में नहीं आ रहा है।"

"ऐसा क्यों हुआ?"

"दारोगा को ही पता होगा।"

सारे किस्से-कहानी चोट्टि के जीवन में थे। सभी ने कहा, "तूने उसे हिम्मत दी।"

"पुराण का दिमाग ठीक नहीं।"

पुराण आदि परिवार सहित ठेकेदार के साथ चले गये। घूमते-घूमते वे रामगढ़ के राजा की कोलियरी में पहुँचे। वहाँ वे एक दूसरी जिन्दगी में मिल गये। उस जीवन में सुख नहीं था। पर तहसीलदार और 'हाथी' भी नहीं थे। चोट्टि गाँव की मोतिया धोबिन का लड़का बस के रास्ते पर छोले-भाजा बेचा करता था। उससे मिलकर पुराण ने चोट्टि को कहलवा भेजा, यहाँ उसके लिए सब अजनबी है। अच्छा नहीं लगता। लेकिन यूनियन होने से सबको काम मिल गया है। ठेकेदार ने उन लोगों को पेशगी दिये हैं, तमाम लोगों ने वह रुपये ले लिये हैं।

चोट्टि बोला, "लें। जिन्दगी रहे।"

पुराण का मामला दूर हो गया। पुराण को जेल नहीं जाना पड़ा। पर अपने बेटे हरमू के मौके पर चोट्टि उसे जेल जाने से न बचा सका।

दस

समय आगे बढ़ गया था। किसी भी साल चोट्टि ने चोट्टि गाँव के मेले में तीर के मुकाबले में जाना न छोड़ा और किसी को विजेता न होने दिया। उससे जिन्होंने सीखा था, वे ही सब लड़के हर मेले में जीतते थे। परताप चड्ढा एक और ईंटों का भट्ठा खोलने बोकारो की ओर चला गया था। यहाँ हरबंस चड्ढा ईंटों के भट्ठे की देखभाल करता था। वह मोटी ईंटें बनवाता था। बहुत सस्ती मजदूरी पर गाँव के लोगों को ही लगाना वह पसन्द करता था। तीरथनाथ का काम छोड़कर चोट्टि और छगन आदि वहीं काम करते थे। स्टेशन के कामकाज में लोगों को कुली का काम नहीं मिलता। ठेकेदार कुली लाता था। दूसरी ओर गैरकानूनी तरीके से पेड़ों को गिरा पहाड़ों को वृक्षरहित करने, पत्थर तोड़ने वाले बजरी

बनाने का काम लोगों को मिलता। परताप की कही हुई बारह आना प्रतिदिन की मजूरी सब देते रहे। छगन बोला, "अब हम बारह आना के सिपाही हैं। जहाँ जो काम हो उसी में लड़ने जाते हैं। काम कैसा भी हो, बारह आने से रुपया न होगा। हाँ चोट्टि, एक बार जाकर सबके कहने से न होगा?"

"क्या कहोगे?"

"एक रुपया दो।"

"नहीं देगा।"

"क्यों नहीं देगा?"

"तू पढ़ा-लिखा आदमी है, समझता नहीं?"

"तू बता। तेरा दिमाग अच्छा है।"

"क्यों दे, यही बता।"

"तू बता न।"

चोट्टि धीरे से हँसकर बोला, "काम के लिए तमाम आदमी हैं। काम कम है। हम न करेंगे तो आसपास के लोग आ जायेंगे। सूखे और अकाल का देश है। हमसे तो सब काम हल नहीं होता। इसलिए हरवंश अब अकाल के जमाने में चार आना और गौरमेन के रिलीफ के माइलो अनाज से काम करा रहा है।"

"यह कहो। इसी से बाहर के मजदूरों के साथ हमारी बात नहीं होने देता। इसी से वे भी हमारे साथ मिलते-जुलते नहीं।"

"हाँ। देखो जगह बड़ी हो रही है, तरह-तरह के लोग हैं। बहुत तरह के काम भी हो रहे हैं। लेकिन हम जहाँ थे, वहीं हैं, पर एक अच्छी बात है। पहले तीरथनाथ के करज न देने से खाने को नहीं मिलता था। अब पत्थर तोड़ें या मिट्टी खोदें, करज कम होता है। फिर देखो, हाल बदल रहे हैं। हरमू के बदन पर भी कपड़ा है। मुंडा लड़कियाँ भी जामा पहनती हैं। हम लोगों की चाल-ढाल अब नहीं रही।"

"न। अब टिकेगी? अब तो हर हाट में सस्ते जूते-चप्पल, हर तरह के कपड़े-फीते-चूड़ी-बिन्दी—बहुत कुछ हैं। खून-पानी करके कमाये पैसे उसमें चले जाते हैं।"

"तुम्हारे लड़के इस्कूल क्यों नहीं जाते?"

"इस्कूल? पहले तो रिवाज नहीं है, भेजने में बहुत मारना पड़ता है। उस पर मास्टर कहता है, तू पढ़कर क्या करेगा! जा, जानवर चरा।"

"मुंडाओं के लड़कों को तो देखते ही भगा देते हैं।"

"पढ़ाई-लिखाई हम लोगों के लिए नहीं है।"

"कानून में तो सबके लिए है, लेकिन अमल में नहीं।"

"पढ़ेंगे ब्राह्मण, लाला और कायस्थों के बेटे।"

चोट्टि हँसकर बोला, "मुझे दुख नहीं है। सना की बहन का लड़का देख आया है, रांची में मुंडा-उरांव लड़कियों को मिशन में पढ़ाई करके भी कोई काम नहीं मिलता। छोटा-मोटा काम करती है, कोयला खोदने जाती हैं।"

"उसमें भी पैसे मिलते हैं।"

"वहाँ पैसे हैं। यहाँ नहीं।"

चोट्टि पहान के पास गया। हरमू की मौसी की लड़की सोमचर की बहू बनेगी। सोमचर की पहली पत्नी मर गयी थी। सगाई के दिन देखना होता है।

पहान बोला, "तूने ठीक कहा था।"

"कौन-सी बात? तुम लोग तो मेरी सारी बातों को 'ठीक' मानते हो।"

"वही जो मेले में कह गया था। भोज के समय।"

"क्या कहा था?"

"कहा था, मुंडा लोगों का अपना मत अब न रहेगा। जिन्दा रहे तो छगन आदि के साथ एक होकर छोटा-मोटा काम करना पड़ेगा। तीर-धनुक का खेल भी खतम हुआ। शिकार के खेल में जंगल छानने पर साही तक नहीं मिलती। अब तीज-त्योहार पर ही मुंडा मुंडा होंगे, ब्याह-शादी करम समाज के काम में। तीर-धनुक तो मेले में जीतने का खेल रह गया। जो कभी हथियार था, वह अब खिलौना है।"

चोट्टि गहरी साँस लेकर बोला, "खिलौना ही सही। भाग्य में पुरानी चीज तो बच गयी। नहीं तो उन्होंने नरसिंगगढ़ में सारे आदिवासियों के घर हाथी से ढहा दिये। देखो, जहाँ कहीं मुंडाओं पर जुलुम होता है, मुंडा लोग देस-घर छोड़कर चले जाते हैं।"

"अब मिशन में नहीं जाते।"

"मिशन! मुंडाओं के साथ-साथ मिशन का सुख खतम हो गया। मिशन अब मुंडा-उरांव में जमीन पर खेती-बारी नहीं कराता। गज टाउन जाओ, वहाँ देखोगे कि मिशन के मुंडा भी हमारी तरह पेट के धंधे में अपने-अपने काम की खोज में फिर रहे हैं। पहले गोरमेन-मिशन ससुर-दामाद थे। अब आजाद गोरमेन मिशन को अच्छी नजरों से नहीं देखती है।"

"फिर मुंडा अपने धरम में लौट क्यों नहीं आते?"

"पेट की फिकर में सब भूले हुए हैं।"

"फिर भी धरम नाम की बात है।"

"हम धरम में हैं, वहीं रहेंगे। लेकिन पेट की भूख, वेगार की परेशानी, करज का कोड़ा—इनसे तो छुट्टी नहीं मिलती?"

"तेरी तो फिर भी अपनी जमीन है।"

"वह हरमू, सोमचर, एतोया की है। मेरी और कोयेल की कहने-भर को वाप के जमाने की ऊँची जमीन-भर है।"

"हरमू की जमीन अच्छी है।"

"मैंने तो कहा है कि उस जमीन की फसल वेचकर और जमीन मोल ले लो। नहीं तो सबकी गृहस्थी वढ़ रही है, खाओगे क्या?"

हरमू की उसी जमीन को लेकर इतने समय वाद अप्रत्याशित गड़वड़ हुई। यह 1961 में हुआ था। इसी वरस एक और उल्लेख्य घटना हुई। चोट्टि-मेला में चोट्टि के समधी डोनका मुंडा का आचरण। मेले के अन्त में तीर के मुक़ावले में वह कह वैठा, "चोट्टि का तीर चलाना अव ठीक नहीं है। उसका तीर मंतर-पढ़ा होता है। इसी से तीर निशाने पर लगता है। यह ठीक नहीं है।"

चोट्टि वोला, "तू नहीं कर सकता। इसी से गुस्सा होकर कह रहा है। तू तो मुझसे छोटा है। मेरी उमर तीन वीसी और एक हुई। ठीक है। मैं तीर नहीं खेलता। अपना तीर दे। सवके तीर दे।"

सारे क़िस्से-कहानी चोट्टि के जीवन में थे। सवके तीरों से उसने निशाना लगाया। निशाने की आँख तीरों से छिद गयी। उसके वाद चोट्टि वोला, "दो वीसी पाँच वरस तक जीतता रहा, वहुत हो गया, अव नहीं खेलूंगा।"

दारोगा वोला, "तुम्हारे खेलने से मेले में जोश रहता है।"

पहान वोला, "तो मैं एक वात कहता हूँ। तू जव कहता है, तो जानता हूँ कि वात वापस नहीं लेगा।" फिर भी दारोगा, तीरथनाथ और हरवंस से पहान ने कहा, "तो यह निर्णायक क्यों न वने? मैं पहान होने से निर्णायक वनता हूँ। लेकिन धनुक उसके वस में है। वह निर्णायक वने।"

"हमें क्या आपत्ति है? लेकिन चोट्टि मेला में चोट्टि ग्राम के पहान ही निर्णायक होते हैं, वही नियम वन गया है।"

चोट्टि ग्राम के पहान ने अपने-आप जगह छोड़ दी। फिर चोट्टि के मुंडा लोगों को भी हुकुम दिया।

चोट्टि हँसा। वोला, "जो कहो।"

सना वोला, "यह डोनका ने क्या किया?"

चोट्टि वोला, "ठीक किया। वूढ़ा हो गया, फिर भी तुम लोगों को

देखना पड़ा कि मोट्टि का मतर हाथ में है, तीर में नहीं। हाँ, एक तीर है। उसे बहुत दिनों से कलेजे में लगाये रखा है। मेले में मैं आता हूँ, ले आता हूँ। वह तीर निशाना जिताने वाला तीर नहीं है। पास रखने वाला है। हाँ, बूढ़ा हो गया। तीर का खेल मेरी मर्ज़ी नहीं कि पकड़े रहूँ। जवान लोग देखें। तुम लोगों को भी मेलने देना होगा, है न? मुझे कोई दुख नहीं है।"

"कौन कर सकेगा, बताओ?"

मोट्टि हँस कर बोला, "अभ्यास करने पर मेरा सोमचर। मेरे भाई का पूत जिता। वह लोग कर सकेंगे। लेकिन पहले उनके हाथ बहुत थिर थे। जब छोटे थे तो हरे पत्तों की ओट लेकर तमाम हरे हारियल मारते थे। अब जमीन उनकी जान बन गयी है। उनकी माँ कहती है, लड़का होकर यह जमीन को चाहता है। जमीन जान बन गयी।"

"जमीन मेरी जान है।" अगहन में फसल भरे खेत को देखकर कई दिन बाप हरमू ने कहा था, "यह मेरी जान है।"

तीरथनाथ के गुमाश्ते ने शान्त भाव से सब सुनकर कहा, "लाला की जमीन है। तुम लोगों ने बहुत दिनों तक जोती। बहुत फसल ली।"

"बहुत फसल ली। लाला को आधी देते नहीं है?"

"छी छी, छी! ऐसी बात तो उसने कही नहीं।"

"फसल काटते वक्त उसके लोग तैनात रहते हैं। उनके सामने तौल होती है। पुआल कहाँ, भूसा कहाँ, सब आधा देते हैं।"

"जरूर देता है।"

"फिर उस जमीन को क्यों चाहता है?"

"उसकी जमीन, वह ले सकता है।"

"बाबा के साथ उसकी बात हो चुकी है।"

"यह देखो।"

"क्या देखूं? बात क्या हमेशा की नहीं है?"

"तू जाकर उससे कह। मैं कौन हूँ? हुकुम का चाकर। हुकुम हुआ रह गया। अब जो करना हो, कर। फसल तो लेकर जायगा। तब उससे साथ बात कर लेना। मैं जा रहा हूँ।"

हरमू ने बाप को टोपी दहगया। "क्यों लाला के साथ लिखा-पढ़ी नहीं की, आबा? अब जमीन चली जा रही है?"

"यह क्या बात है?"

"तुम जाकर बात कर लो।" हरमू की आवाज में ... ... दी
... लाला जमीन क्यों चाहता है? यह तुम समझते हो

"तू क्या समझता है ?"

"एक टुकड़ा बेकार जमीन पड़ी हुई थी। हम तीन भाइयों की मेहनत से अब वह उपजाऊ जमीन हो गयी है। फसल के वक्त मानो वह उपज से हँसने लगती है। धान-गाछ जब जवान होते हैं, तो मुझसे बातें करते हैं। वे फसल देते हैं, ऐसे बड़े-बड़े भुट्टा के दाने, ऐसे मोटे-मोटे धान। उन्हें देख कर उसे जलन होती है।"

बहुत परेशान होकर चोट्टि भागा-भागा गया। साथ में हरमू और दूसरे मुंडा थे। लाला बोला, "मारोगे क्या ?"

"पहले यह बताओ महाराज, तुम जमीन वापस चाहते हो ?"

"हाँ, चोट्टि!"

"जमीन तो मेरी है।"

"अगर तेरी है तो तू आधी फसल क्यों देता है मुझे ? यह तो बता। मैं जिस ज़मीन पर मिल्कियत रखता हूँ, उसकी उपज किसी को देता हूँ ? जब फसल देते हो तो यह सबूत है कि तुम लोग आधा हिस्सा देते हो।"

"जमीन का लगान नहीं लेते हो ?"

"लेता हूँ।"

"किसके नाम पर जमा करते हो ?"

"अपने नाम। जिसकी मिल्कियत है, वह लगान देगा।"

"किन्तु महाराज ! मनीराम खत्री की बात लो। वह तुम्हारी जमीन जोतता है, आधी फसल देता है। अपनी जमीन का लगान तुम्हें देता है, तुम अपने ही नाम जमा करते हो। लेकिन उसकी जमीन तो नहीं लेते। आधी उपज, आधा हक तो उसकी बारी मान लेते हो ?"

"वह हिन्दू है, अपने धर्म का आदमी है।"

"तो लिखा-पढ़ी क्यों नहीं करने दी ? क्यों झूठ बात कही ? कहा था, मुंह की बात ही सब-कुछ है।"

"जब कहा था...।"

हरमू बोला, "तब नहीं सोचा था कि वह ऊसर जमीन उपजाऊ होगी। वही सोचा था, महाराज !"

"तेरे साथ मेरी बात नहीं हो रही है, हरमू।"

चोट्टि बोला, "मेरे साथ करो।"

"और क्या कहूँ ? कहा तो।"

"सिर्फ हिन्दू क्यों ? आदिवासियों को नहीं देते ? भिकन उराँव आदि को देते हो, बूढ़ा मुंडा को दी थी। किसके नाम जमीन रिकाड है ? और महाराज, आधी उपज इतने दिनों तक लेते रहे। उससे तो यह बात

साथ-साथ प्रमाणित हो जाती है कि यह बन्दोबस्त तुमने मान लिया है। नहीं तो जमीन लेते, या कोई बन्दोबस्त करते। मेहनत करने वाले का भी हक है।"

"चोट्टि, बात बढ़ाने से क्या फायदा? जमीन लगान पर नहीं उठी है। पसन्द न होने पर भी अधिकार किये ले रहा हूँ।"

"तुमने तब बन्दोबस्ती लिखकर क्यों नहीं दी थी?"

"चोट्टि, सच बताऊँ, पहले नहीं पता था कि जमीन उपजाऊ है।"

"जमीन उपजाऊ नहीं थी। तीनों भाईयों ने कांवर लेकर जंगल के सड़े पत्ते ढोये, बड़ी मेहनत से जमीन का गुस्सा ठंडा कर जमीन को हँसाया। तब जमीन उपजाऊ बनी। फिर यह बात कहते हो, यह तुम्हारे मन में था, नहीं? बताओ तो।"

"तू समझा नहीं, चोट्टि!"

चोट्टि उम्मीद टूटने पर, अपमान से, दुख से, और कलेजा टूटने के आवेग से बोला, "तुमसे महाराज, कभी न सुना कि समझ गया। तब महाराज, समझा दो। एक बार देखूँ तो कि मुंडा दिकू की बात समझता है। बताओ, मुझे बताओ। लिखा-पढ़ी रहती नहीं, लगान देना चलता है, फिर भी आदिवासी लोगों को कहो, छगन आदि को कहो, आधा हक उपजाऊ जमीन पर मिलता है। कितनी ही बार वह लिखा रहता है, कितनी ही बार नहीं भी रहता। बहुत-से कामों में मुँह की बात पर हर काम होता है। तुम कहते हो इतना करज लिया था, वह जबानी बात है। समझा दो कि जो मुंडा पढ़ना नहीं जानता वह कैसे समझे कि यह जुबानी बात सच्ची नहीं रहेगी?"

तीरथनाथ समझ रहा था कि वह ठीक काम नहीं कर रहा। यह बात सच है कि वह या उसकी तरह के मालिक कभी अच्छी जमीन इन लोगों को नहीं देते थे। पथरीली जमीन, सूखी जमीन, बहुत दूर पड़ी अलग-अलग जमीन, जंगलों के किनारे की जमीन—यही बटाई पर देते। आधी फसल के आधे पर देते थे, क्योंकि मुंडा-उरांव लोग उस तरह की जमीन को ही सोना उपजाने वाली जमीन समझकर कलेजे के खून से प्यार करते। उस जमीन में उगता आया था गोरफोटा और चीनाघास। उसी जमीन में वे फसल पैदा करते। निचले स्तर की फसल। मालिक को वह भी फायदा मिलता। वे भी समझते कि इसके मतलब यही नहीं। इस आधार पर पक्के ढंग पर हिस्से की जमीन पर आधी फसल के आधे हक का कोई पुराना हिसाब बन जायेगा। जो जमीन लेता, उसके मर जाने पर वह अधिकार चला नहीं जाता था। तब मालिक की मर्जी रहती। लेकिन पुरानी बात होने र

कारण मालिक भी उपजाऊ जमीन के खेत में अधिकार मान लेता।

उपजाऊ जमीन इस तरह कभी उपजाऊ न होती। ऐसा कोई उदाहरण नहीं था। नहीं होने से ही तीरथनाथ उदाहरण क़ायम करते चले थे। यह मालिकों के हक़ में फ़ायदे की चीज थी। इसलिए इस नजीर से ही रिवाज बन जायेगा। नरियल अपुष्ट मकका और धान देखकर तीरथनाथ इस तरह की जमीन न लेना चाहता। तीरथनाथ ने यह भी समझा कि प्रचलित परिपाटी की उपेक्षा कर संभवतः निरस्त्र और भले चोट्टि के प्रति वह अन्याय कर रहा है। लेकिन चोट्टि के प्रति अन्याय हो रहा है या नहीं, यह देखे तो तीरथनाथ का काम कैसे चल सकता है?

"सुनो, चोट्टि!"

"कहो, कहो।"

"झगड़ा करने से क्या फ़ायदा? यह जमीन मैं ले रहा हूँ। तुझे मैं कुरुमी की ओर जमीन दूँगा। उपजाऊ जमीन है।"

"हाँ महाराज, उसे जमीन को लोगे। और जब उसे कलेजे के खून से सींचकर उपजाऊ बनाऊँगा, तब उसे ले लोगे। उसके बाद चोट्टि को कहाँ जमीन दोगे, महाराज? धरती पर जितनी उपजाऊ जमीन है, क्या तुम सब खरीद ले रहे हो?"

तीरथनाथ समझ रहा था कि वह चोट्टि मुंडा से बातें कर रहा है। चोट्टि को उस अंचल के मुंडा देवता समझते थे। चोट्टि से, चोट्टि की तरह के आदिवासियों से उसे बहुत मिलता था। चोट्टि का तीर मंत्र-पढ़ा है। उस तीर की बड़ी सामर्थ्य है। फिर भी तीरथनाथ अपने इरादे को वापस नहीं कर पा रहा था। वह मालिक-महाजन था। जो बात कह दी वह न करने के अपराध से, ग़लत उदाहरण क़ायम करने के अपराध से, वह अभिशप्त होगा। अब भारत स्वतंत्र है। राजा-जमींदार का फ़ालतू झंझट छंट गया था। वह मझोला जमींदार नहीं था। लेकिन उसकी तरह के जमींदार और उससे बड़े और उससे छोटे जमींदार-मालिक-महाजन लोग इस गोरमेंट के बहुत बड़े बल और भरोसा थे। पिछली बार चुनाव में तो उसने प्रति व्यक्ति दो रुपये के हिसाब से पैसे दिये थे। तभी उसके कहने से यह लोग वोट दे आये। बहुत अफ़सोस है कि तीरथनाथ जंगली इलाके का मालिक-महाजन है जो शिक्षित और संगठित भी नहीं था। इस बार अगले बरस चुनाव है। धनी होने के कारण तीरथनाथ का ट्रक चुनाव में व्यस्त होता है। चोट्टि और छगन आदि को नक़द रुपये मिलते। उसके बाद तीरथनाथ के अपने आदमी ट्रक पर चढ़कर वोट दे आते। किन्तु चोट्टि के साथ उसका यह बर्ताव क्या ठीक था? चोट्टि के कारण ही कितनी कम उम्र

में तीरथनाथ को अंग्रेज गोरमेन से 'रायसाहब' का खिताब मिला था। वह और चोट्टि करीब-करीब एक ही उम्र के थे। चोट्टि के साथ उनका ऐसा करना जरा भी उचित न था। लेकिन एक बार कुछ कह कर पलटना ठीक भी न था। इसमें भी क्या है? गोरमेन के दल का ऑफिस तो तीन स्टेशनों के बाद ही है। वहाँ जाने से ही मदद मिलेगी। तीरथनाथ बोला, "वही बात।"

"बस महाराज! हो गया?" चोट्टि की आवाज में गूंगा हाहाकार था। क्या हो गया? कोई बड़ी भारी घटना हो गयी? तीरथनाथ को बेचैनी क्यों होने लगी? इसने क्या किया है? कमरे में इतने आदमी क्यों हैं? चोट्टि आदि मुंडा थे, मगर ये लोग कब आये, छगन आदि? सब रहस्य-भरी नजरों से चुपचाप उसकी ओर क्यों देख रहे हैं? तीरथनाथ ने क्या किया है? कभी किसी मुंडा से कहा था कि आधी उपज और आधे अधिकार पर उसकी जमीन मुझे दो, लिखा-पढ़ी की जरूरत नहीं। आज कह रहा है वह जमीन ले लो। इसमें गलत क्या है? तीरथनाथ का अपना मन ही कह रहा है कि गलती हो गयी। समझा कि उसे लेकर गाँव के लोग जो असली महाजन कहते हैं—वह सच है। जीवन-भर के परिचय के माथे पे ठोकर मारने के लिए बहुत मजबूत कलेजे की जरूरत है। तीरथनाथ उस तरह का मजबूत और हिम्मत वाला नहीं है। डरपोक जब गलत काम करता है, तो बर्बर बन जाता है। उस तरह की बर्बरता से तीरथनाथ बोला, "वही बात।"

"यही बात!"

'हाँ। और सुनो—इस बार फसल नहीं देनी होगी।

"इस बार क्या हमें पूरी फसल लेने की छूट है?' ना महाराज मुंडा तुम्हारा नियम नहीं समझते। फसल दूँगा।'

तीरथनाथ चीख पड़ा, "मेरी सारी बातों में तू अन्याय देखता है। मैं बुरा हूँ। पता है, बुरा आदमी किसे कहते हैं? पता लगाने पर देखेगा कि और कोई भी मालिक-महाजन मुंडा-उरांव लोगों को कोंछा लगाकर धोती नहीं पहनने देते, कांसे की थाली में खाने नहीं देते, जूता नहीं पहनने देते।"

अभी तक हरमू टकटकी लगाये तीरथनाथ को देख रहा था। अब वह बोला, "तुम न कहने पर भी वही हो।"

"किस तरह? अरे हरमू, किस तरह?"

"धोती खरीदने को पैसा नहीं। मोटी धोती में कोंछा लगाकर लँगोटी बनाकर पहनते हैं, पैसे नहीं है कि वे कांसे की थाली में खायें, पाँव में जूते

ूमें । इन सबसे तुम नहीं समझते, ह
ओ, तुम लोग जाओ ।"
लौटकर चोट्टि बोला, "कल उसकी उपज दे देंगे ।"
उसके बाद ?"
हरमू ! अपने पास सचाई रहने से अकसर बहुत-से काम करने होते
हैं हमेशा बताने की जरूरत नहीं ।"
"क्या कह रहे हो, आबा ?"
"बता रहा हूँ ।"
"क्या, बताओ ?"
"मेरे साथ बात हुई थी, लेकिन जमीन तेरी है ।"
"जमीन तो मेरी जान है ।"
"लाला को जो कहना था वह उसने कह दिया है । हम लोगों को जो करना है वह करेंगे । उनके साथ हमारा झगड़ा होगा । यह पता है कि वह पहले से थाने में बताये रहता है, उसका थोड़ा जोर है । कल जाऊँगा ।"
"क्या कहोगे ?"
"तुझसे बताकर क्या होगा ? ओह, कलेजा जला जा रहा है । कितने दुख से मुंडा घर छोड़ता है बाप, कितने दुख से दूसरे देश जाता है !"
हरमू बोला, "उठो, हाथ-मुँह धोलो, खाओ कुछ ।"
"आज नहीं, कल खाऊँगा ।"
"खा लो ।"
"लाला एक काम अच्छा कर रहा है ।"
"क्या ? हँस क्यों रहे हो, आबा ! हँसते क्यों हो ?"
"लाला बहुत अच्छा कर रहा है । समझता नहीं ? सारे मुंडाओं की-सी हमारी भी हालत है । वह जमीन थी, इसलिए कुछ खा रहे हैं । यह भूले जा रहे थे कि मुंडा होकर हमें किसी सुख का अधिकार नहीं है । जमीन जा रही है, उससे फिर सबके साथ मिल जायेंगे । यह अच्छा हो रहा है ।"
"जमीन जा रही है, क्यों कह रहे हो ?"
"हरमू ! तू उन दिनों छोटा था । तू भी बाप बनेगा । किन्तु मेरी आँखें तुझे कहाँ मिलेंगी ?"
उँगली उठा अंधकार दिखाकर चोट्टि बोला, "जमीन ऐसे ही नहीं दे दूँगा । ऐसा अपमान ! यों ही नहीं दूँगा । जान चली जाये तो जाये किन्तु हरमू ! उसके बाद थाना-पुलुस-कानून-अदालत है । सब चक्क लगाकर मैं मुंडा रहूँगा, फिर मरूँगा । मुंडाओं को क्या सिर्फ मालि

महाजन मारते हैं? कानून मारता है, अदालत मारती है। सभी मारते हैं। जमीन चली गयी हरमू, मैं आँखों से देखता रहा। आदिवासी को देखने से छूत लगती है, वह भी कहते हैं, घर में बैठकर चटाई बुन, टोकरी बुन, मदद देंगे। जमीन-जायदाद की बात करने से कुछ न कर सकेंगे। कानून-अदालत करो। कानून-अदालत! किसी दिन फिसला नहीं होता। वकील कहाँ से मिलेगा? वकील रुपया लेगा। वह जो कुछ कहेगा, मुंडा समझेंगे नहीं। मुंडा क्या कहता है, वे नहीं समझेंगे। मुंडा के बोल कहने से वकील को व्योग—माने मेंढक—समझ में आता है और हाकिम की समझ में भी उल्टी बात ही आती है। हाकिम उल्टा फैसला करता है। लेकिन...।"

"लेकिन क्या, आबा?"

"लेकिन जमीन के लिए हंगामा होने पर—जैसे भैंसागाड़ी का भागता पहिया लुढ़ककर गड्ढे में जा गिरता है—उसी तरह हंगामा होने पर हम अदालत के गड्ढे में गिरेंगे। तब क्या जमीन रह जायेगी? कचहरी किसी दिन मुंडा को नहीं देख सकती, देखेगी भी नहीं।"

"देखेगी भी नहीं!"

"नहीं हरमू! सब गोरमेन का है। गोरमेन मुंडाओं का हक—उनका अधिकार—देखती तो क्या सारे मुंडा इस तरह कंगाल हो जाते? दिकू लोगों के लिए देश छोड़ देते? देखेगा नहीं हरमू! हरमू! मेरे बाप! यह बैठी है! जा, कुछ खाकर सो जा। मैं जरा बैठ लूँ। अँधेरा बहुत हो रहा है रे। अँधेरा माँ जैसा है, इससे कोई लाज नहीं लगती।"

"आबा! हर समय तो तुम छलन से बात करते हो?"

"इस बात में छलन से क्या कहूँ? यह तो एक मुंडा से एक लाला का हिसाब है। इसमें वे क्यों आयें?"

"नहीं आयेंगे?"

"ना! उन लोगों के साथ, दूसरे आदिवासियों के साथ तो लाला ने कोई हंगामा नहीं खड़ा किया है। पुलुस-थाना-अदालत में उनको बुलाना भी ठीक नहीं है, हरमू!"

"उन पर भी तो चोट हो सकती है।"

"खूब हो सकती है। लेकिन हरमू, मालिक के साथ हंगामा उठेगा। उसे हम पहले से जानते थे। हम जानते थे कि दूसरा रास्ता नहीं है। इस तरह चलने से कानून-अदालत होगी, वहाँ भी ठोकर खायेंगे, यह जानकर भी बढ़ रहे हैं। जब सब लहू की गर्मी समझेंगे, जब आगे बढ़ेंगे तब एक हो सकते हैं। कह सकते हैं कि तुम लोग चलो। वैसा होने पर कौन

घूमें। इन सबसे तुम नहीं समझते, हम कैसे जीते हैं!"
जाओ, तुम लोग जाओ।"
र लौटकर चोट्टि बोला, "कल उसकी उपज दे देंगे।"
"उसके बाद ?"
"हरमू ! अपने पास सचाई रहने से अकसर बहुत-से काम करने होते
उन्हें हमेशा बताने की जरूरत नहीं।"
"क्या कह रहे हो, बाबा ?"
"बता रहा हूँ।"
"क्या, बताओ ?"
"मेरे साथ बात हुई थी, लेकिन जमीन तेरी है।"
"जमीन तो मेरी जान है।"
"लाला को जो कहना था वह उसने कह दिया है। हम लोगों को जो करना है वह करेंगे। उनके साथ हमारा झगड़ा होगा। यह पता है कि वह पहले से थाने में बताये रहता है, उसका थोड़ा जोर है। कल जाऊँगा।"
"क्या कहोगे ?"
"तुझसे बताकर क्या होगा ? ओह, कलेजा जला जा रहा है। कितने दुख से मुंडा घर छोड़ता है बाप, कितने दुख से दूसरे देश जाता है !"
हरमू बोला, "उठो, हाथ-मुंह धोलो, खाओ कुछ।"
"आज नहीं, कल खाऊँगा।"
"खा लो।"
"लाला एक काम अच्छा कर रहा है।"
"क्या ? हँस क्यों रहे हो, बाबा ! हँसते क्यों हो ?"
"लाला बहुत अच्छा कर रहा है। समझता नहीं ? सारे मुंडाओं की-सी हमारी भी हालत है। वह जमीन थी, इसलिए कुछ खा रहे हैं। यह भूले जा रहे थे कि मुंडा होकर हमें किसी सुख का अधिकार नहीं है। जमीन जा रही है, उससे फिर सबके साथ मिल जायेंगे। यह अच्छा हो रहा है।"
"जमीन जा रही है, क्यों कह रहे हो ?"
"हरमू ! तू उन दिनों छोटा था। तू भी बाप बनेगा। किन्तु मेरी आँखें तुझे कहाँ मिलेंगी ?"
उँगली उठा अंधकार दिखाकर चोट्टि बोला, "जमीन ऐसे ही न दे दूंगा। ऐसा अपमान ! यों ही नहीं दूंगा। जान चली जाये तो जा किन्तु हरमू ! उसके बाद थाना-पुलुस-कानून-अदालत है। सब चव लगाकर मैं मुंडा रहूँगा, फिर मरूँगा। मुंडाओं को क्या सिर्फ मालि

महाजन मारते हैं? कानून मारता है, अदालत मारती है। सभी मारते हैं। जमीन चली गयी हरमू, मैं आँखों से देखता रहा। आदिवासी को देखने से छूत लगती है, यह भी कहते हैं, घर में बैठकर चटाई बुन, टोकरी बुन, मदद देंगे। जमीन-जायदाद की बात करने से कुछ न कर सकेंगे। कानून-अदालत करो। कानून-अदालत! किसी दिन विश्वास नहीं होता। वकील कहाँ से मिलेगा? वकील रुपया लेगा। वह जो कुछ कहेगा, मुंडा समझेंगे नहीं। मुंडा क्या कहता है, वे नहीं समझेंगे। मुंडा के बात कहने से वकील की ज़ुबान—माने मेंढक—समझ में आता है और हाकिम की समझ में भी उल्टी बात ही आती है। हाकिम उल्टा फैसला करता है। लेकिन...।"

"लेकिन क्या, आबा?"

"लेकिन जमीन के लिए हंगामा होने पर—जैसे भैंसागाड़ी का भागता पहिया छिटककर गड्ढे में जा गिरता है—उसी तरह हंगामा होने पर हम अदालत के गड्ढे में गिरेंगे। तब क्या जमीन रह जायेगी? कचहरी किसी दिन मुंडा को नहीं देख सकती, देखेगी भी नहीं।"

"देखेगी भी नहीं!"

"नहीं हरमू! सब गोरमेन का है। गोरमेन मुंडाओं का हक—उनका अधिकार—देखती तो क्या सारे मुंडा इस तरह कंगाल हो जाते? दिकू लोगों के लिए देश छोड़ देते? देखेगा नहीं हरमू! हरमू! मेरे बाप! बहू बैठी है! जा, कुछ खाकर सो जा। मैं जरा बैठ लूं। अँधेरा बहुत हो रहा है रे। अँधेरा माँ जैसा है, इसमें कोई लाज नहीं लगती।"

"आबा! हर समय तो तुम छलन से बात करते हो?"

"इस बात में छलन से क्या कहूँ? यह तो एक मुंडा से एक दादा का हिसाब है। इसमें वे क्यों आवें?"

"नहीं आयेंगे?"

"ना! उन लोगों के साथ, दूसरे आदिवासियों के साथ तो दादा ने कोई हंगामा नहीं खड़ा किया है। पुलिस-थाना-अदालत में उनको बुलाना भी ठीक नहीं है, हरमू!"

"उन पर भी तो चोट हो सकती है।"

"खूब हो सकती है। लेकिन हरमू, मालिक के साथ हंगामा उठेगा। उसे हम पहले से जानते थे। हम जानते थे कि दूसरा रास्ता नहीं है। इस तरह चलने से कानून-अदालत होगी, वहाँ भी ठोकर खायेंगे, यह जान-कर भी चल रहे हैं। जब सब लहू की गर्मी समझेंगे, तब आगे बढ़ेंगे तब एक हो सकते हैं। कह सकते हैं कि तुम लोग चलो। वैसा होने पर कौन

गे आयेगा ?"

"वे लोग डरपोक हैं !"

"नहीं बाप ! भूखे बीमार लोग हैं, ठोकर खाये लोगों को कभी दोस
मत दो ! पीठ पर कोई नहीं है, अकल देने को कोई नहीं है, किसी के पास
रुपये नहीं हैं, किसे-किसे दोस दें ! जाओ, जाओ।"

"तुम ?"

"कहा न, अँधेरे में बैठा हूँ।"

हरमू चला गया। चोट्टि की पत्नी आकर चोट्टि के पास बैठी। बोली, "खिड़की खोल दूँ, लेटे-लेटे अँधेरा देखो। अभी खाओ, सोओ। कल थाने जाना।"

"तू सब सुनती थी ?"

"सुन रही थी। चलो।"

चोट्टि उठा, घर में गया। हरमू की माँ ने उसके आगे थाली बढ़ा दी। दाल और फेना भात। आजकल जंगल में शिकार नहीं मिलते। वही दाल और फेना भात, इमली की पत्तियों का झोल, बीच-बीच में बाजार से ख़रीदा सूअर का मांस। यही सब खाते थे। मिशन के लोग सूखे-अकाल मे खैरात बाँटने आते हैं, इसलिए इतने कम पौष्टिक आहार में जिन्दा रहने का अभ्यास है। इसी कारण आदिवासी कम मरते हैं।

खाने के बाद चोट्टि बोला, "घूम आऊँ।"

"कहाँ जाओगे ?"

"बलोया तो दे।"

"किसे काटने जा रहे हो ?"

"किसी को नहीं, ऐसे ही ले रहा हूँ। आदमी का डर तो नहीं है, और वे सुख के दिन अब नहीं हैं कि बाघ आकर झपटे।"

चोट्टि हाथ में बलोया लेकर निकला। टीले को पार कर मैदान में पहुँचा। अपनी ज़मीन के कोने-कोने पर गया। अब पके धानों की गंध से हिरन नहीं आते थे न। जिसकी तबीयत होती, जैसी तबीयत होती, शिकार कर-करके सब समाप्त कर डाले थे। अगर कुछ जानवर थे, तो वे आदमी के डर से घने जंगल में चले गये थे। जमीन के आगे पहुँच कर चोट्टि थोड़ी देर तक खड़ा रहा। नागफनी से घिरा खेत था। धान देखकर चिड़िय छायी जा रही थीं। कोयेल का बेटा एतोया और सोमचर दिन-भर चिड़िय उड़ाते रहते थे।

धान के पौधे झुके पड़ रहे थे। जमीन का छोटा-सा टुकड़ा था। क ही धान कटेंगे। लाला की कचहरी ले जाये जायेंगे। माप कर आ

देना होगा।

"कौन ?" चोट्टि ने पैरों की आवाज सुनी।

"दादा, मैं हूँ।"

"कोयेल ? तू आ गया ?"

"बाद में लौटकर सब सुना।"

"मैं यहाँ हूँ, यह कैसे पता चला ?"

"अपने मन से समझ गया था।"

"कल घर पर रहना। मैं थाने जाऊँगा।"

"जाकर क्या होगा, दादा ?"

"पता नहीं। पर देखता हूँ कि कुछ होने पर दिकू लोग पहले जाकर थाने पर बता आते हैं। बाद में कुछ होने पर वह काम आता है।"

"तुम्हारी बात सुनेंगे ?"

"पता नहीं। यों तो दारोगा अच्छी बातें करता है। उस दिन भी कह गया था कि मना को कुछ हो जाये तो तुम थाने पर बताना। गुड़ दगा मत करना। मना बोला, हमारे कहने से तुम सुनोगे ? दारोगा बोला, जरूर। गौरमेन की नजरों में सब प्रजा समान है।"

"चल, घर चल।"

"चल।"

दूसरे दिन चोट्टि थाने गया। पहान, कोयेल, मना—सबको धान का हिस्सा देने के समय हरमू के साथ जाने को कहा। हरमू से कह गया, "कोई गड़बड़ मत करना।"

"तुम कुछ चिन्ता मत करो, आबा !"

चोट्टि के जीवन में सब बातें किस्सा बन जातीं। दारोगा के साथ एक आदमी और बातें कर रहे थे। चोट्टि को देख उसने बोला— "यह देखिये ! जिसकी बात कह रहा था, वह आ गया। यह मेरे ससुर की जान-पहचान के आदमी हैं। आदिवासियों की भलाई करने वाले अफसर हैं। सदर में रहते हैं। हमारे यहाँ घूमने आये हैं और आदिवासियों का हाल भी ले रहे हैं। मैंने ही कहा, यहाँ एक आदिवासी है, हम लोगों का गर्व, तीर का जादूगर, आस-पास के मुंडा समाज की सारी बातें जानता है, वह है चोट्टि मुंडा। यह बात बताकर अभी चाय पी ही थी कि तुम आ गये।"

आदिवासी अफसर बोले, "तुम्हारी ही बात हो रही थी।"

"महाराज ! मुझे आपकी जरूरत थी, आपने भी मुझे याद किया, तभी से मुलाकात हो गयी।"

या बात है, बताओ ?"

ादिवासी अफ़सर ने देखा कि आदमी की उम्र का अंदाज नहीं हो
। दुबला-पतला शरीर, दमकती हुई खाल। दोनों आँखें बहुत ही बूढ़ी
बोझिल थीं। उसके बात करने का ढंग, थोड़ा अकड़ कर बैठना, इन
में अभिजात्य था। देखते ही समझ में आता था कि वह सम्मान का
यस्त था। कुतूहल उत्पन्न होता था।

चोट्टि ने धीरे-धीरे, रुक-रुक कर सारी बातें बतायीं।

दारोगा बोला, "लेकिन चोट्टि, जमीन तो लाला की है।"

"महाराज, उपजाऊ जमीन पर तो आदिवासियों का आधी फसल और आधे हक का रिवाज है।"

"है।" आदिवासी अफ़सर भी बोले। फिर बोले, "समान्यतः इस रिवाज को जमीन का मालिक तोड़ता नहीं, क्योंकि वैसी ही जमीन वे लोग देते हैं जिसमें बीघे पर दो मन से ज्यादा धान न हों। वह भी मोटा धान।"

"मैंने तो कभी नहीं सुना।"

"आपने नहीं सुना लालाजी, क्योंकि आदिवासी और दूसरी जात वाले मिले-जुले गाँव में रहते हैं।"

"यह रीति क्या सिर्फ़ आदिवासियों के लिए है?"

"न-न, कभी-कभी दूसरी नीची जातियों के लिए भी होती है। पर साधारणतः वे लोग बिलकुल बंजर जमीन को लेने की हिम्मत नहीं करते।"

"चोट्टि, तुम क्या कहना चाहते हो?"

"मैं तो समझता हूँ महाराज, कि यह एक हक का मामला है। यह यह बात सच है कि ऐसी जमीन अधिक आदिवासियों की नहीं है। शायद आदिवासी और दूसरी जात वाले मिलाकर दसेक लोग आपके थाने में होंगे। लेकिन इसके बाद किसका क्या भरोसा रहेगा, महाराज? कहा कि लिख दो। उस पर लाला बोला, जवानी बात होगी।"

"जमीन क्या बहुत उपजाऊ है?"

"महाराज! जमीन थी पथरीली। मिट्टी खोदने पर पत्थर निकल
थे। बंजर जमीन थी। कभी किसी ने हल नहीं चलाया था। उन्हीं पत्थ
को दो भाइयों और तीन लड़कों ने मिलकर हटाया। धान से भूसा अ
करने का काँड़ा नहीं था, महाराज। पहान का काँड़ा माँगकर काम क
थे। किसी बरस डेढ़ मन धान होता। आधा मन पक्का, इससे अ
नहीं मिला। जमीन खिलती नहीं थी। तब लड़के बहँगी पर ला

जगल से सड़ी पत्तियाँ लाये और कुंडी से जल। लगातार हमने कड़ी मेहनत की, तब कहीं जमीन हुई। तीन बरस से पाँच मन धान होते हैं। लाला जो लेगा महाराज, तो वह भी क्या इतनी मेहनत करेगा? इस बार जमीन बजर हो जायेगी।"

दारोगा बोला, "मैं कल ही जाऊँगा। कुछ काम भी है। मैं बात करूँगा। समझाकर कहूँगा। कुछ समझौता कर लेना होगा, चोट्टि। तुम कह रहे हो, इसलिए इतना कर रहा हूँ। मैं भूला नहीं हूँ कि सिपाहियों के साथ कुंजड़े लोगों की मारपीट में तुम न बचाते तो सिपाहियों के सिर फूट जाते।"

अफ़सर बोले, "कुंजड़े कौन हैं?"

"फलों के खुदरा बेचने वाले। अमरूद, शरीफा खरीदने आते हैं और सब फल पानी के दामों खरीदते हैं। हाट में किसी को घर का फल बेचते देखकर मारेंगे। आते हैं राँची और गोमो से। सब दूसरे जिलों के लोग हैं। औरतों पर हाथ छोड़ते हैं। हम तो बहुत बदनाम हैं, क्योंकि ग़रीबों का भला चाहते हैं। इसलिए हमें इस रद्दी थाने पर भेज दिया।"

"आप जायेंगे, महाराज?"

"हाँ चोट्टि, और देखो, सबके हकों की फ़िकर तुमको नहीं करनी है। वैसी बातें करने में लगता है कि बलोया करने वाले हो। तोरवनाथ और तुम्हारे सम्बन्ध पुराने हैं।"

"महाराज, जान लगाकर उसके लिए धान-गेहूँ-मक्का उपजाते हैं। हम न होते तो उसकी कचहरी में भी डाका पड़ता। आप जानते हैं कितने लोगों की कचहरी में डाके पड़े?"

"मैं जाऊँगा।"

"महाराज, आपका भला हो। मारपीट कौन चाहता है, महाराज? मैंने कभी नहीं की।"

चोट्टि चला गया। आदिवासी-अफसर बोले, "सरकार तो आदिवासियों की भलाई ही चाहती है, नहीं तो दफ्तर नहीं खोलती। लेकिन मालिक-महाजन में अधिकतर अशिक्षित हैं। पुरानी आदत नहीं छोड़ेंगे। महाजन के पास जिसके हाथ-पैर बँधे हैं, उनकी भलाई करने के लिए हमें उनकी क्षमता बढ़ानी होगी। कुटीर उद्योग कब करेंगे? बेगार देंगे, महाजन के खेत में मेहनत-मजूरी करेंगे। खेती किसानी करने वाली जाति को तुरत हाथ का काम सिखाना क्या सभव है?"

"अरे मुझे क्या मालूम नहीं है? लेकिन...।"

"क्या?"

"कल ही जाना है। तीरथनाथ जैसे महाजन हमारे अभिशाप है। यह देखिये न ! उसकी कितनी जमीन है ! जमीन की सीलिंग की यह लोग कोई परवाह नहीं करते। तीरथनाथ के घर पर वहुत-से देवता हैं, सबके नाम पर जमीनों का देवार्पण है। वेकार जमीन उपजाऊ हो गयी—यह देखकर वह जो विगड़ उठा है, इसका नतीजा क्या होगा ? आदिवासी लोग विगड़ जायेंगे। विगड़ने पर वे यह नहीं सोचेंगे कि इस तरह की जमीन चली जाने से कितने लोगों की जानें जायेंगी। 'हक' की वात कही न चोट्टि ने ? तीरथनाथ को क्या पता नहीं है कि चोट्टि मुंडा लोगों में ही क्या, छोटे हिन्दू लोगों में भी सम्मान पाता है ? गड़वड़ होने पर पुलिस जायेगी ही। तव वह अदालती अपराध—कॉग्निजेवल आफ़ेंस—होगा। वह काम करने पर सरकार दवाव डालेगी कि आदिवासियों को तंग क्यों करते हो। आदिवासी वोटों का महत्व है, 1962 से उनके वोट हैं। कार्रवाई न करने से हमारा डिपार्ट कहेगा कि सव जगह हम वलोया उठाने वाले लोगों को मदद देते हैं। वैसा होने पर हमारा ही सस्पेंशन होगा।"

"क्या करेंगे ?"

"तीरथनाथ को समझायेंगे। कहूंगे, चोट्टि की जमीन मत लो। मैं सरकार से कह दूंगा, आप वड़े अच्छे आदमी हैं। वहुत अच्छे काम करते हैं। अँगरेजों के राज्य में 'रायसाहव' वने हैं। इस राज में देखूंगा 'पद्मश्री' मिलती है या नही।"

"कहने से मान जायेगा ?"

"मानना पड़ेगा। चोट्टि न होकर अगर कोई और होता तो 'दंगा कर रहा है' कहकर पकड़ लेता। उसकी वातों पर मुंडा समाज उठता-वैठता है। वैसा करने पर मेरी डवल मुसीवत है। 'आदिवासी समाचार' अखवार का आनन्द महतो वहुत खचड़ा आदमी है, और उसका काफ़ी खूंटों का जोर है। एक वार ख़वर होने से नमक के वोरे में गुड़ घुस जायेगा।"

"तीरथनाथ मानेगा ?"

"मानना पड़ेगा। उसकी एक टुकड़ा जमीन के लिए क्या मैं मुसीब में पड़ूंगा ? क्या कहूंगा ! मेरी नौकरी पर असर पड़ेगा। चोट्टि से भी कह हूँ कि जमीन का मालिक जमीन लेगा, सो क्यों नहीं देगा ?"

"यह वात कैसे मानूं, लालाजी ? आदिवासी कितने ग़रीव होते आपको पता नहीं। यह उनका हक़ है।"

"देखूं, क्या कर सकता हूं।"

दारोगा की तवीयत थी कि दूसरे दिन जाये, लेकिन कुल्ला कर

मौक़े पर चहबच्चा फट जाने में खफा बिच्छू की बात उसे नहीं मालूम थी। ठंडक पड़ने पर बिच्छू निकलता नहीं, बुझा हुआ भी रहता है। इसलिए नियम के अनुसार वह दो दिन बिच्छू के जहर में तड़फड़ाया नहीं। एक दिन बहुत तकलीफ़ हुई।

भड़कने के लिए एक दिन ही काफ़ी था। दारोगा जिस दिन से बिच्छू के काटने पर पड़ा है, चोट्टि ग्राम में चोट्टि मुंडा तब से एक दूसरी ही जलन में जल रहा था। दारोगा ने उसकी बात नहीं मानी। आया नहीं। हरमू दिन-भर घर में लेटा रहा। पिता भी उसे दुश्मन का आदमी लगा। जमीन उसकी जान थी। तीरथनाथ इसी दिन की प्रतीक्षा में था।

दूसरे दिन चोट्टि फिर थाने गया। उस समय भोर था। वह बैठा रहा। नौ बजे दारोगा आया। रूखा-सा बोला, "चल, मैं चल रहा हूँ।" आदिवासी-अफ़सर से बोला, "आप भी चलिये।"

"कैसे जाऊँगा ?"

"दस बजे ट्रेन जाती है।"

"कितनी दूर है ?"

"चार मील।"

जाने के लिए वे तैयार होने लगे। मना और पहान आ पहुँचे। हाँफते-हाँफते उन्होंने जो कुछ कहा उसका मतलब था कि हरमू सवेरे ही जमीन पर गया था। जमीन पर कब्जा करने गये हुए तीरथनाथ के लोगों और उधर हरमू, सोमचर, एतोया, जिता और बुधना मुंडा में दंगा हो गया। दंगा हो रहा है और तीरथनाथ की कचहरी का दरवान मथुरासिंह बंदूक लेने गया है। महाराज के जाने की खास जरूरत थी।

थाने के सिपाही और कांस्टेबलों को लेकर दारोगा चला। आदिवासी-अफ़सर साथ चले। चोट्टि आदि भी ट्रेन पर बैठे।

ट्रेन पहुँची। मौके पर पहुँचकर दारोगा ने देखा कि बहुत मारपीट चल रही है। दरवान के हाथ में बंदूक थी। सिपाही और कांस्टेबल लोग शान्ति-रक्षा के लिए लाठी लेकर पिल पड़े। चोट्टि चिल्लाया, "हरमू, निकल आ।" लेकिन बंदूक की आवाज हुई। कांस्टेबल के हाथ में गोली लगी। बड़ी चीख-पुकार थी। उसके बाद सब शान्त हो गया। देखा गया कि हरमू ने तीर चलाकर तीरथनाथ के तीन आदमियों को जख्मी कर दिया। दारोगा बिगड़ उठा। पुलिस को जख्मी किया है! तीरथनाथ भी परिस्थिति की गंभीरता समझ-कर भागा-भागा आया। कांस्टेबल के हाथ में तीर नहीं लगा था। लगी थी गोली। बहुत अफ़सोस की बात है। आदिवासी-अफ़सर के गवाह रहने से घटना को दबाना संभव न हुआ। तीरथनाथ, दारोगा और

घायल कांस्टेबल दोनों के साथ दो-तीन का खेल खेलने को तैयार था। लेकिन जेब का रुपया जेब में ही रह गया। हरमू, सोमचर, मथुरासिंह और तीरथनाथ के आदमी—सभी का चालान हुआ। सरकारी अफ़सर की मौजूदगी ही इस उल्टी बात का कारण बनी। आदिवासी-अफ़सर साक्षी था, कौतूहली स्टेशन-मास्टर भी गवाह था। दूसरों के हाथों में ट्रेन पास करने की ज़िम्मेदारी देकर वह तमाशा देखने आया था। कुंजड़ों के मामले में वह दारोगा से चिढ़ा हुआ था। कुँजड़ों से रोज़ाना घूस लेना उसका उचित हक़ था। दारोगा ने कुँजड़ों को ख़फ़ा कर दिया था। वह बड़े चिंतित स्वर में बोला, "सबका चालान कर दीजिये।" तीरथनाथ के रुपयों का दारोगा की जेब में जाने का रास्ता बंद कर उसे बहुत आनन्द आया।

केस सदर अदालत में चला। सबूत के अभाव में सोमचर आदि छूट गये। हरमू को मारपीट के अपराध में दो बरस की क़ैद बामशक्कत मिली। मथुरासिंह को पाँच बरस की। बिना लाइसेंस की बन्दूक ज़ब्त हो गयी और तीरथनाथ की वह बात फिर कभी न उठी। चोट्टि लाचार होकर सदर आता-जाता था। आदिवासी-अफ़सर उसके साथ बहुत ही अच्छा बर्ताव करते थे। घर पर टिकने देते, वकील ठीक करना चाहते थे। चोट्टि से बोले, "कहो तो वकील देखूं। लेकिन वकील की भूख क्या तुम मिटा सकोगे?"

"कितना खर्चा होगा?"

"कम-से-कम हज़ार रुपये।"

"हज़ार रुपये। मेरे पास तो सौ रुपये भी नहीं हैं।"

"तो सरकार वकील देगी। कोशिश करूँगा कि अच्छा वकील मिल जाये।" तक़दीर से अच्छा वकील मिल गया। छोकरा वकील था। अच्छी तरह से केस करने पर उसे खड़े होने में सुविधा होगी। लेकिन आदिवासी को कठघरे में खड़ा करने पर वह सिखायी हुई बातें नहीं कहता, सच बात कहेगा। यह सब मान कर ही उसने हरमू आदि का केस किया। तीरथनाथ ने मथुरा को बचाने के लिए वैसी कोशिश न की। सारा मामला उसके सामने अब दुःस्वप्न होकर खड़ा था। चोट्टि जब समझ गया कि लड़के को जेल होगी तो वह आदिवासी-अफ़सर के घर उसके बाद न रहा। हरमू के मुकदमे में फैसला होने तक अदालत के सामने पेड़ के नीचे टिक गया। सदर शहर की उद्धत उन्नति का स्वरूप उसकी नज़र में नहीं पड़ा, हरमू का चेहरा दिमाग़ में छाया रहता। फैसला मालूम होने पर हरमू ने उसकी ओर देखा। चोट्टि बोला, "दो बरस बीत जायेंगे, बाप।"

हरमू ने सिर हिलाया।

वकील बोले, "सुनने में दो वरस बहुत लगते हैं, पर कट जायेंगे।"

चोट्टि ने सिर हिलाया। उसके बाद जाकर बस पर बैठ गया। बस तीसरे पहर चलती थी, चोट्टि रात को आठ बजे पहुँचा। सफ़र में वह सारा समय बस में चुप रहा। बस हरबम चड्ढा की थी। सप्ताह-भर इसी रूट पर बस चलती है। कंडक्टर चोट्टि को अच्छी तरह पहचानता था और चोट्टि को ताज्जुब में डालकर वह बहुत पहुँचने पर चोट्टि के लिए खाना खरीद लाया। बीड़ी देकर बोला, "तीरथनाथ के भाग्य में बहुत मुसीबतें हैं।" चोट्टि पर उतर कर उसने देखा कि बहुत-से लोग उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। पहान उत्सुक चेहरे से देख रहा था।

"दो वरस की जेल।"

किसी के पूछे बिना ही चोट्टि बोला और सब मानो गूंगे बन गये हों।

छगन बोला, "तब तेरे साथ गया और आया था। अब जाता तो ठीक था।"

"न, कोई कष्ट नहीं हुआ।"

"अकेले आये?"

"वह आदिवासी-अफ़सर भला आदमी है। गवाही भी उसने अच्छी दी। उसी से दारोगा कोई उल्टी बात न कह सका। पहली बार देखा कि दिकू होकर मुंडा की बात को सच्ची बात कही।"

"मथुरासिंह?"

"पाँच वरस। मथुरा ने मुझे बुलाया, जिससे उसे तीर न मारूँ। बोला, 'हुकुम से दगा किया था।' मेरे मन में वैसा कुछ नहीं है, पर वह डरता है।"

"डरेगा ही।"

"किस बात का डर? वकील मुख्तारी जानता है, जो कुछ समझा वह बोला। पुलिस को मारा, इसलिए सजा हुई। हरमू उसकी गोली से मर जाता तो भी सजा न होती। हरमू बच गया नहीं तो...।"

"क्या कहता है, सना! हरमू मेरा मान रख रहा है। वह न उठाता तो मुझे धनुक उठाना पड़ता, और मैं कइयों को गिरा देता।"

"सोमचर उस दिन आया?"

"उन लोगों का तो उस तरह का केस नहीं हुआ। रहने कैसे?"

पहान बोला, "एक बात है।"

न बोला, "देख, लाला क्या कहता है। हमारा ...
..., चोट्टि, क्योंकि लाला बहुत डर गया है।"
उसकी बात रहने दो।"
"तुझे वह जमीन दे देगा।"
"अब जमीन कौन लेगा? हरमू जेल में है।"
पहान बोला, "तू घर चल। बहुत दिनों तक आना और जाना करता
। इस बार तो बहुत दिन सदर में रहा।"

"चल।"

घर की राह चलते-चलते चोट्टि बोला, "सदर में रहा, लेकिन दिखायी कुछ न पड़ा। हरमू की बात सोचता रहता था। सो यह बात सच है कि हरमू था, इसलिए दो बरस की जेल हुई। मैं होता तो फाँसी चढ़ता, क्योंकि कइयों को मारता, मथुरा को मारता।"

छगन ने झूठ नहीं कहा। "लाला बहुत परेशान है। दारोगा कहता है, तुम्हारी वजह से आदिवासी खफा हो गये हैं। मेरे अमल में तुमने फसाद खड़ा किया। मेरे कांस्टेबल का दाहिना हाथ काटा गया। वह बेकार हो गया। चुनाव के पहले तुमने यह बुरा काम किया।"

"लाला ने क्या कहा?"

"तूने सुना? उसके बाद गोरमेन के दल के झंडा बाबू लोग आ गये। लाला ने उनसे बैठने को कहा। वे बैठे नहीं। बोले, तुम्हारी बुरी हरकतों से अगर चुनाव बिगड़ा तो तुम्हारी गरदन तोड़कर वसूल कर लेंगे। अगले साल चुनाव है। तुम हमें पचास हजार रुपये दोगे। लाला ने कहा, तुम मुझे माफ कर दो। तुमसे झगड़ा नहीं कर सकता। वे बोले, हमारे आदमी ढाई-तीन हजार वोटों से जीतते हैं। वोट का दाम बहुत है। तुम्हारी वजह से चार हजार मुंडाओं के वोट बेकार हो जायेंगे। जमीन-उमीन हम नहीं समझते। झगड़ा मिटाओ। नहीं तो इस केस की वजह से दूसरे दल के लोग जीत जायेंगे। पानी में रहकर तुम नाव में छेद करते हो! यही बात हो रही है। उसी से छगन बोला कि लाला तुमको जमीन देगा। तुम्हारे जमीन लेने पर झंडा बाबू लोगों से वह पार पा जायेगा। झंड वाले बाबुओं के साथ झगड़ा करने पर ठिकाना नहीं मिलेगा। नहीं त उसके पचास हजार रुपये चले जायेंगे।"

"तमाशा बन गया है।"

"क्या कहते हो?"

"तमाशा नहीं? आधी उपजाऊ जमीन हमें मिलेगी। उनकी ज उठी हुई है। मेरा हक मान लेने पर कोई हंगामा नहीं होता। अब

जमीन देगा ! क्यों ? जमीन झगड़े की है। मुंडा टोली में होकर उनके आदमी भी उस जमीन पर जाने की हिम्मत नहीं कर सकेंगे। झडा बाबू लोग वोट की बात उठा रहे हैं, रुपये देने को कह रहे हैं। यह भी कारण है। दारोगा भी खफा हो गया है। अब हमारे जमीन लेने पर वह बच जायेगा। झडा बाबू पास बैठायेंगे, दारोगा भी खुश होगा।"

"तू जमीन मत लेना।"

"अभी सोचा नहीं है।"

"ले, घर आ पहुंचे। मेरा मन बहुत दुखी था। पल-भर में वह क्या हो गया।"

"तुम जाओ।"

घर में घुसकर चोट्टि बोला, "बहू, सबको बुला।"

सब आयें।

चोट्टि बोला, "कोई रोना मत। हरमू को जेहल हो गयी। दो बरस जेहल काटेगा। उसके बाद छूटेगा।"

बहू बोली, "रोयें नहीं ?"

"न।"

"क्यों नहीं रोयें ?"

चोट्टि बोला, "अदालत में मुंडा ! उसे दस बरस की जेहल भी हो सकती थी। वकील अच्छा था, आदिवासी-अफसर सच्चा आदमी था। इसी से बच गया। नहीं तो पता नहीं क्या होता।"

"वकील किया था ?"

"गौरमेन ने दिया था। अफसर ने सब किया। मुझे क्या पता, कहां क्या करना होता है, क्या देना होता है।"

"रुपया नहीं लगा ?"

"खाने में कुछ लगा। हरमू को खिलाया था।"

"दो बरस !"

"हरमू ने मेरा मान रखा। मैं धनुक-बान उठाता तो जान से मार देता, फांसी भी होती। कोयेली कहां है ?"

हरमू की बहू रुलाई रोकते-रोकते सामने आयी। चोट्टि बोला, "अब तुम दोनों मेरे बेटा-बेटी हो। तुझे देखकर, उसका दुख भूलूंगा। रोना मत, दो बरस का समय बहुत नहीं होता है।"

"जेहल में मारेंगे ?"

"वकील कह रहा था कि आदिवासी जेहल में जाने पर अच्छा काम करते हैं। उससे पहले भी छूट सकता है। मारेंगे नहीं।"

"पैरों में बेड़ी लगायेंगे ?"

"न, न, सब पता लगा आया हूँ।"

"खाने को नहीं देंगे ?"

"दो बार तो देंगे। घर से अच्छा ही खायेगा।"

कोयेली गरदन हिलाकर बोली, "अच्छा।"

कोयेल बोला, "हरमू बहुत दुख में है।"

"न-न, मरद लड़का है। चलें अब खाना खा लें। आज नींद आ रही है, कई दिन से सोया नहीं।"

चोट्टि के घर के लोग बहुत दिनों से परेशान, खोये-खोये-से थे। चोट्टि पहले कोयेल को लेकर सदर आता-जाता। उसके बाद जिस दिन देखा कि घर पर सभी उनके इंतज़ार में बिना खाये-पिये बैठे रहते हैं उस दिन से उसने गाँव के लोगों को या कोयेल को फिर जाने नहीं दिया। अकेला ही गया। इस बार तो सदर में टिका नहीं। चोट्टि को इतना चुपचाप देखकर सबको घबराहट हुई। कोयेल ने तेज़ नज़र से देखा। कभी-कभी दादा, उसके जितने पहचाने उतने ही अजनबी हो सकते हैं। इस समय दादा का चेहरा बहुत ही अजनबी लग रहा था। लड़के के जेल जाने के बाद जैसे सिर और ऊँचा हो गया हो।

"दादा !"

"क्या ?"

"लाला तो वह जमीन देना चाहता है।"

"सब सुन चुका हूँ, कोयेल !"

"क्या ?"

"बेड़ा झुक गया है, तेरा ओसारे में दिमाग लगा रहता है। घर पर तू था, इतने लोग थे, क्या करता था ? कल ही हाथ लगाना। काम डाल-कर नहीं रखा जाता। फटा कपड़ा न सीने से छेद बड़ा हो जाता है, घर का भी यही हाल है। इस सब में कल ही हाथ लगाना। लड़के कहाँ हैं ?"

सोमचर और एतोया सिर झुकाये आकर खड़े हो गये। चोट्टि बोल "कल मैं बेड़े की मरम्मत देखूंगा, घर का छप्पर ठीक करना है, सब का को देखना है। तुम लोगों ने हल छोड़ दिया ? खिलाने को कोई और आद बैठा है ?"

कोयेल की पत्नी चोट्टि की पत्नी से बोली, "घर अब फिर से लग रहा है। इतने दिन तक कोई हाल नहीं था।"

चोट्टि की पत्नी कोयेली से बोली, "कल तू बालों में तेल डा कपड़े साफ करेगी, इस तरह रहने से हरमू की बदनामी होती है।"

हरमू की गोद की लड़की की उम्र चार बरस की थी। वह दीदी ने बोली, "हरमू क्यों कहती है ? ए ?"

"क्या कहूँ ?"

"आवा कह।"

"न कहूँ तो ?"

"तुझे मारूँगी।"

सब लोग हँसने लगे। घर का वातावरण हलका हुआ। लेटने के बाद बहू बोली, "कहाँ थे ?"

"पहले अफसर के घर। उसके बाद जब समझा कि उसे जेहल होगी ही, तो अदालत के सामने रहता था, पेड़ के नीचे। वहाँ रहने से उन लोगों को अदालत लाते समय देख लेता था। पुलिस 'ना' नहीं करती, उसे थोड़ा खाने को देता। फिर दिन-भर तो अदालत में रहना।"

"हर चीज का दाम बहुत था ?"

"बहुत।"

"बहुत अकेला लगता था ?"

"अरे सदर में चलते-फिरते मुझा मिल जाते थे। वे आकर बातें करते। मैं इतने दुख में भी अच्छा था। उन लोगों को कोई सुख नहीं है।"

"सदर घूमकर नहीं देखा ?"

चोट्टि समझा कि बहू जान-बूझकर लड़के की बात नहीं कर रही है। बड़े लड़के पर बहू का झुकाव बहुत अधिक था।

वह बोला, "पेड़ के नीचे बैठा-बैठा सदर देखा करता था। घूम-फिर कर देखने की बात मन में उठी ही नहीं। उसके बाद चलता।"

"सदर ?"

"हाँ रे ! चलते-चलते, घूमते-फिरते जब थक जाता तो लौटता। तब आँखों में नींद भर जाती। उस तरह घूम-फिर कर ..।"

"क्या ?"

"एक दिन उस पागल को देखा। पुराण मुंडा को। वह मुझसे चिपट गया। रामगढ़ में सदर के पास। वह वहाँ आना-जाना रहता है। उसने मुझे दो दिन घुमाया।"

"क्या देखा ?"

"कुछ नहीं। देखना तो सब-कुछ था, लेकिन आँखों के आगे पुलुस और हरमू थे। और कोई तसवीर मानो अंदर घुसती ही नहीं थी। सागर की तरह एक कुंडी देखी रे, पानी बहुत था। मैं तो मन की ज्वाला से जलता रहता। वह पागल भी दो दिन साथ-साथ चला। उससे एक दिन ..।"

"पैरों में बेड़ी लगायेंगे ?"

"न, न, सब पता लगा आया हूँ।"

"खाने को नहीं देंगे ?"

"दो बार तो देंगे। घर से अच्छा ही खायेगा।"

कोयेली गरदन हिलाकर बोली, "अच्छा।"

कोयेल बोला, "हरमू बहुत दुख में है।"

"न-न, मरद लड़का है। चलें अब खाना खा लें। आज नींद आ रही है, कई दिन से सोया नहीं।"

चोट्टि के घर के लोग बहुत दिनों से परेशान, खोये-खोये-से थे। चोट्टि पहले कोयेल को लेकर सदर आता-जाता। उसके बाद जिस दिन देखा कि घर पर सभी उनके इंतजार में बिना खाये-पिये बैठे रहते हैं उस दिन से उसने गाँव के लोगों को या कोयेल को फिर जाने नहीं दिया। अकेला ही गया। इस बार तो सदर में टिका नहीं। चोट्टि को इतना चुपचाप देखकर सबको घबराहट हुई। कोयेल ने तेज नजर से देखा। कभी-कभी दादा, उसके जितने पहचाने उतने ही अजनबी हो सकते हैं। इस समय दादा का चेहरा बहुत ही अजनबी लग रहा था। लड़के के जेल जाने के बाद जैसे सिर और ऊँचा हो गया हो।

"दादा !"

"क्या ?"

"लाला तो वह जमीन देना चाहता है।"

"सब सुन चुका हूँ, कोयेल !"

"क्या ?"

"बेड़ा झुक गया है, तेरा ओसारे में दिमाग लगा रहता है। घर पर तू था, इतने लोग थे, क्या करता था ? कल ही हाथ लगाना। काम डालकर नहीं रखा जाता। फटा कपड़ा न सीने से छेद बड़ा हो जाता है, घर का भी यही हाल है। इस सब में कल ही हाथ लगाना। लड़के कहाँ हैं ?"

सोमचर और एतोया सिर झुकाये आकर खड़े हो गये। चोट्टि बोला, "कल मैं बेड़े की मरम्मत देखूँगा, घर का छप्पर ठीक करना है, सब कामों को देखना है। तुम लोगों ने हल छोड़ दिया ? खिलाने को कोई और आदमी बैठा है ?"

कोयेल की पत्नी चोट्टि की पत्नी से बोली, "घर अब फिर से घर लग रहा है। इतने दिन तक कोई हाल नहीं था।"

चोट्टि की पत्नी कोयेली से बोली, "कल तू बालों में तेल डालेगी, कपड़े साफ करेगी, इस तरह रहने से हरमू की बदनामी होती है।"

हरमू की गोद की लड़की की उम्र चार वरस की थी। वह दौड़ी से बोली, "हरमू क्या कहती है? एँ?"

"क्या कहूँ?"

"आवा कह।"

"न कहूँ तो?"

"तुझे मारेंगी।"

सब लोग हँसने लगे। घर का वातावरण हलका हुआ। लेटने के वाद वहू बोली, "कहाँ थे?"

"पहले अफसर के घर। उसके वाद जब समझा कि उसे बेहल होगी ही, तो अदालत के सामने रहता था, पेड़ के नीचे। वहाँ रहने से उन लोगों को अदालत लाते समय देख लेता था। पुलिस 'ना' नहीं करती, उसे थोड़ा खाने को देता। फिर दिन-भर तो अदालत मे रहता।"

"हर चीज का दाम बहुत था?"

"बहुत।"

"बहुत अकेला लगता था?"

"अरे सदर में चलते-फिरते मुंडा मिल जाते थे। वे आकर बातें करते। मैं इतने दुख मे भी अच्छा था। उन लोगों को कोई सुख नहीं है।"

"सदर घूमकर नहीं देखा?"

चोट्टि समझा कि वहू जान-बूझकर लड़के की बात नहीं कर रही है। बड़े लड़के पर वहू का झुकाव बहुत अधिक था।

वह बोला, "पेड के नीचे बैठा-बैठा सदर देखा करता था। घूम-फिर कर देखने की बात मन में उठी ही नहीं। उसके बाद चलता।"

"सदर?"

"हाँ रे! चलते-चलते, घूमते-फिरते जब थक जाता तो [illegible]। तब आँखों मे नींद भर जाती। उस तरह घूम-फिर कर...।"

"क्या?"

"एक दिन उस पागल को देखा। पुराने मठ को। वह मुझसे चिपट गया। रामगढ़ से सदर के पास। वह वहाँ आता-जाता रहता है। उसने मुझे दो दिन घुमाया।"

"क्या देखा?"

"कुछ नहीं। देखता तो सब-कुछ था, लेकिन आँखों के आगे [illegible] हरमू थे। और कोई तसवीर मानो अंदर घुसती ही नहीं थी। [illegible] की तरह एक कुंडी देखी रे, पानी बहुत था। मैं [illegible] रहता। वह पागल भी दो दिन साथ-साथ चला। [illegible]

"क्या हुआ ?"

"तब रात हो रही थी। सदर अंधकार नहीं जानता। सब-कुछ जैसे रोशनी में चमकता रहता। सो एक जगह देखा, लगा कि तामे से या लोहे से ढाल कर आदमी बना हो। बहुत ऊँचा था। आदमी के नीचे मैं बैठा था। उसके बाद देखा कि एक भिखारी आकर बोला, 'मैं यहाँ सोता हूँ। तुम जगह छोड़ दो।' मैंने जगह छोड़ दी। पूछा, 'तुम क्या यहाँ के आदमी हो ?' वह बोला, 'हाँ।' मैंने कहा, 'यह आदमी कौन है ? देखने में बड़ा अच्छा लगता है और लगता है कि यह मुंडा है।' उस पर भिखारी बोला, 'वह मुंडा ही था, बीरसा मुंडा। बहुत-से लोग बीरसा भगवान भी कहते हैं।' सुनकर मेरा मन कैसा हो गया, पता है वह ? देख ! वह मुंडा था, किन्तु लोहा से, तामा से ढाल कर सदर में उसकी मूरती बनायी। दिन में सदर दिकू लोगों का रहता है। रात में लगता है, सदर उनका हो जाता है। सदर ने ही उसे जेहल में रखा था। पता है वह, हरमू भी सदर में है...।"

चोट्टि समझा कि वह सो गयी है। बहुत दिनों का उद्वेग, रतजगा, कलेजे में दुख दबाये थी। चोट्टि को लगा कि उसे भी नींद आ रही है। हरमू की माँ के बदन पर हाथ रखे बिना जैसे नींद न आ रही हो। फिर लगा कि हरमू ने उसका मान रख लिया। चोट्टि सो गया।

ग्यारह

हरमू के जेल जाने का मामला अंचल के लिए बहुत तरह के परिणामों का कारण हुआ। सारे मामले में तीरथनाथ का चेहरा तो थोड़ा उतरा, पर चोट्टि को कोई सांसारिक लाभ नहीं हुआ।

चोट्टि के मतलब ही सब किस्से-कहानी थे।

हरवंस चड्ढा परोक्ष में, अनजाने ही, चोट्टि का सहायक हो गया। चोट्टि से बोला, "मेरा मगेरा भाई जंगल का ठेकेदार हुआ है। छह महीनों तक पेड़ों की कटाई होगी। बरसात आने पर बंद हो जायेगी। पेड़ों पर निशान लगाने का काम चल रहा है। तुमको तो वहां जाने का उपाय है नहीं ?"

"क्यों, महाराज ?"

चोट्टि हमेशा सम्मान प्रदर्शित कर बात करता, किन्तु उसमें दीनों की-सी भीरुता नहीं थी। यह हरवंस को बहुत अच्छा लगता था। तीरथ-

नाथ का खेती-सूद का कारबार था। हरबम थोड़ा आधुनिक था। उनका कारबार ईंटों का भट्ठा था। बड़ी-बड़ी ईंटें। बोकारो, चास, पतरातू—इन सब जगहों में तरक्की होगी, ऐसा उसने सुना था, और उस उन्नति में वह घुस पड़ना चाहता था। तीरथनाथ के साथ वह अच्छा संबंध बनाये हुए था। फिर तीरथनाथ और उसका कर्ज देने का काम उसे मध्ययुग का लगता था। वह मोटर नहीं खरीदता था, रेडियो नहीं बजाता था, सदर में सिनेमा और होटल-बार घूमने नहीं जाता था। वह नीची धोती, मैला कुरता और मोची का बनाया चमरौधा जूता पहने घूमता था। उसके लिए मनोरंजन की धारणा 'रामलीला' सुनना था—हरबस की नज़रों में वह गँवार और असभ्य था। सूद का कारबार छोटे लोगों का काम है, यह हरबम की राय थी। बेगार लेना और ग़रीबों से कम मज़दूरी पर काम कराना भी उसके लिए छोटे लोगों का काम है। हरबम को अपने में कोई दोष ढूँढे नहीं मिलता था, यद्यपि चोट्टि को वह बारह आना से अधिक मज़दूरी नहीं देता था और अकाल के मौके पर दुर्भिक्ष-पीड़ित लोगों से चार आना मज़दूरी पर मिट्टी खुदवाता था।

हरबम बोला, "वह ठेकेदार है। रुपया-रुपया मजूरी देगा। लकड़ी जायेगी लोहरी। वहाँ उसके कारखाने में चीरी और काटी जायेगी। मजूरी के सिवा जलपान के लिए चार आने देगा। तुम लोग मिल जाते तो अच्छा ही था। तीस-बत्तीस लोगों की ज़रूरत है। लेकिन तुम लोगों को लालाजी के खेत में बेगार देनी पड़ती है। यह रिवाज भी तो गलत है। मेरे पंजाब में खेती बहुत अच्छी है। लेकिन ऐसा बुरा रिवाज उधर नहीं है।"

"महाराज, एक बात कहूँ?"

"कहो।"

"जो हो गया वह तो आप जानते ही हैं।"

"जानता तो हूँ। बहुत अफ़सोस की बात है। अरे लालाजी की अकल तो मेरी समझ में नहीं आती। उस एक टुकड़ा बेकार ज़मीन के लिए इतना गुस्सा! अरे उसकी पिछले ज़माने की अकल है। इतने झंझट की क्या बात थी? खेती भी मॉडर्न होनी चाहिए। ट्रैक्टर चलाओ, तिगुनी फसल लो।"

ट्रैक्टर चलाने से ग़रीब लोग बेकार हो जायेंगे, यही चोट्टि का ख़याल था। इसलिए वह उस बात पर न बोला। बोला, "हम बेगार नहीं करते। हमारे गाँव में ऐसे और भी लोग हैं जो बेगार नहीं करते। आप तीस-बत्तीस लोगों को ही लगायेंगे? यह क्यों? पचासों आदमियों की बात कीजिये।"

"कोई गड़बड़ तो नहीं होगी ?"

"मुंडा लोगों की ओर से मैं जिम्मा लेता हूँ। छगन भी ज़िम्मा लेगा, मैं जानता हूँ। आपका भला हो, महाराज !"

हरवंस बोला, "परसों तुम्हें बताऊँगा।"

चोट्टि गाँव लौट आया। छगन से बोला, "अपने पहान के पास जरा जा। जरूरी बात है।"

घर आकर बहू से बोला, "जब लगता है कि किसी ओर कोई राह नहीं है तो राह निकल आती है। सिर्फ सोच रहा था, लाला का काम अब नहीं करूँगा। कैसे पेट भरेगा ? सो एक राह निकल सकती है।"

"कौन-सी राह ?"

"देखता हूँ। छगन आदि से आने को कहता हूँ।"

"उन लोगों के साथ एक क्यों हो रहे हो ?"

"आज और कोई राह नहीं है। एक मालिक के पास एक काम करेंगे। और जो काम है वह सब साथ करेंगे। हम लोग कम हैं, वे जादा हैं। हम जात के नाम पर ठोकर नहीं जानते, वे ठोकर खाते हैं। समझती नहीं कि मुंडा कितने कम हो गये हैं ? एक साथ होकर मिट्टी काटने पर ही शायद टिक सकें, नहीं तो सब छोड़कर सड़क पर निकलना पड़ेगा।"

पहान के आगे बैठकर चोट्टि ने सारी बातें खोलकर कहीं। बोला, "मेरे मन में यह आ रहा है, क्योंकि ठेकेदार ने छह महीने का काम दिया है। काम दिखा सकें तो वह जहाँ जायेगा हमको ले जायेगा। यह भी जानता हूँ कि जब ठेकेदारी करता है, तो देखता है कि कितनी कम मजदूरी में आदमी मिलते हैं। उसके लिए सवा रुपया पैरों की धूल है। पेड़ काटना मेहनत का काम है किन्तु हमारे लिए वही अच्छा है।"

छगन बोला, "बेगार कैसे संभालेंगे ?"

"जिनको बेगार करना नहीं होता है, ऐसे आदमी कितने हैं ? तीस-बत्तीस होंगे ? मेरी राय सुनो। तुम्हारे घर में दस आदमी हैं। आठ लोग जाते हैं बेगार देने। चार गये तो चार रहे। हमारे यहाँ भी घर-घर बेगार होती है। इसी तरह बाँट लेंगे। देख, हमारी औरतें भी जायेंगी। अपनी औरतों से भी चलने को कहो। जो बेगार करते हैं, वे करते हैं। नये सिरे से कोई टीप-छाप देकर नहीं जियेंगे। हम लोगों को जिन्दा रहने की राह लगभग नहीं है। जो राह निकलती है, उसी को पकड़कर जियेंगे। बुरी बात कही ?"

"सवा रुपया देगा ?"

"हाँ, रुपया-रुपया मजूरी, चार-चार आना जलपान का।"

"मैं सबसे कहता हूँ। समझो, सब तैयार ही होंगे।"

पहान बोला, "लाला करने देगा?"

"उसका काम हो जाने से करने देगा। हाँ, यह भी देखना होगा कि उसका काम ठीक तरह से हो। उससे वह कोई बात नहीं कह सकेगा।"

"बात तो वह उठायेगा।"

"तब मैं देख लूँगा। मेरे हरम् को जेहल भिजवाया। मेरा गुस्सा उस पर से नहीं जायेगा। पर सब तरफ उसका जोर है, इसी से होशियारी से चलना पड़ेगा। वन में जिस तरह बाघ रहता है, उसी तरह खरगोश और साही भी रहते हैं। क्यों? चालाकी से जिन्दा रहते हैं। उसी तरह जिन्दा रहेंगे। तुम लोगों से चालाकी की बात कह रहा हूँ, मुंडा लोगों से। मुझे अब कुछ अच्छा नहीं लगता।"

"चलूँ, सबसे कहूँ। पता था, तेरे आने से कुछ बल मिलेगा। जब तक तू सदर गया था, तो मैं जैसे मर गया था।"

पहान बोला, "हरम् से मिलने नहीं जायेगा?"

"जाऊँगा। पहले यह काम निपटा लूँ।"

इस तरह चोट्टि ने गाँव के मुंडा और निम्न अनुसूचित जाति के लोगों को स्वतन्त्र भारत के राष्ट्रीय आर्थिक ढाँचे में प्रवेश कराया। इस ढाँचे में सरकार ने उनके लिए कोई जगह नहीं रखी थी। स्वतन्त्र भारत की जन-संख्या का अधिकांश निम्न वर्ण के लोगों का है। उनमें एक महत्त्वपूर्ण अंश आदिवासी है। इसीलिए राष्ट्रीय आर्थिक ढाँचे से ये निष्कासित है। लेकिन जिन्दा तो निष्कासितों को भी रहना होगा। इसी प्रेरणा से चोट्टि और छगन ने किसी दल या संस्था की मदद के बिना लाला की पकड़ को थोड़ा कमजोर करने की कोशिश की और उसमें समर्थ हुए। परिणामस्वरूप और अधिक उलझनें दिखायी पड़ी और वे बढ़ती रहीं।

चोट्टि ठेकेदार के आदेश पर पेड़ काटने गया। तीरथनाथ की रबी की फसल की देखभाल करने जो लोग गये, उनकी ओर देखकर तीरथनाथ बोला, "लगता है, चोट्टि नहीं आया? कोयल या सोमचर को भी नहीं देख रहा हूँ।"

छगन का लड़का परसाद बोला, "कहीं गये हैं।"

तीरथनाथ ने सोचा कि चोट्टि नहीं आयेगा, और चोट्टि को न देख-कर वह निराश भी हुआ। उसने सोचा था कि चोट्टि के साथ ऐसा कुछ करना होगा जिससे सबध न टूटे। चोट्टि को उसने फिर जमीन देनी चाही, पर चोट्टि तो नहीं आया। तो क्या वह चोट्टि के पास जाये? कांग्रेसी लड़कों की बातों में बड़ी धमकी थी। चोट्टि अगर जमीन ले ले,

तो आदिवासियों के मन पर उसका प्रभाव पड़ेगा। चुनाव का काम आने वाला है। आदिवासियों के वोट कम हो जायेंगे, वँट जायेंगे। लड़के उसका कारण तीरथनाथ को वतायेंगे। पचास हज़ार रुपये भी ढीले होंगे। जंगली जगह अगर जंगली ही रह जाती, तव तीरथनाथ छगन का घर जलाता, चोट्टि को उखाड़ फेंकता। यह जगह अव उस तरह 'दूर' नहीं है। 'आदिवासी समाचार' अख़वार के आनन्द महतो हरमू की ज़मीन की लड़ाई का मामला लिख वैठे हैं। उसमें तीरथनाथ को आधारहीन 'आदिवासियों का शत्रु', 'ख़ून चूसने वाला महाजन', 'आदिवासियों को उखाड़ने का कारण' इत्यादि वताया गया था। इस समय चोट्टि में मिली-जुली वस्ती थी। दौलतवालों में हरवंस चड्डा तीरथ को गँवार समझता था। तीरथ अनवर को 'गोभक्षक मलेच्छ' समझता। हालत जव ऐसी थी, तो तीरथ को ही मान खोकर चोट्टि के पास जाना पड़ेगा। उसके खेत के काम के लिए ही कम आदमी क्यों आये?

मोतिया धोविन गुस्से से काँपती हुई वोली, "तुम्हारा दिमाग ठीक नहीं है। पचास-पचपन से ज़्यादा आदमी एक साथ कभी तुम्हारे खेत में काम करते थे? ठीक पचास आदमी आये है, वे काम कर रहे हैं।"

"सो तो है। लेकिन और लोग कहाँ हैं?"

"कहीं गये होंगे।"

"वेगार के काम में औरतों को देख रहा हूँ?"

"उनसे काम नही चलता?"

"चलता तो है, पर...।"

"हमारा मुँह देखना ऐसा अच्छा लगता है तो किसी दिन भोज दे दो।" मोतिया हँसकर वोली। इस प्रस्ताव में ताना था। तीरथनाथ ने वहुत दिनों चुपचाप रहकर कुछ दिनों पहले अपनी रखैल धोविन के गर्भ से एक पुत्र को जन्म दिया था। सारी घटना को लेकर होली पर वे लोग गीत गायेंगे।

तीरथनाथ ताने को पी गया। इस समय उसकी अपनी ग़रज़ थी। पूछा "पता है, चोट्टि कहाँ है? उससे काम है।"

"कहीं गया है।"

"अरी मोतिया, तू क्या कर रही है?"

"क्या किया?"

"मुंडाओं के साथ रहती है, उनके पहान के पास जाती है।"

"एक गाँव में रहना है, इसी से साथ जाती हूँ। पहान का आँगन साफ़-सुथरा रहता है। वैठकर वातें करना अच्छा लगता है, इसी से जाती हूँ।"

"वे गयी-गुजरी जात के हैं। तू हिन्दू है।"

"मुझसे तो किसी तरह का गया-गुजरापन करते नहीं।"

शाम को टहलते-टहलते तीरथनाथ बनिये की दूकान पर गया। वहीं गद्दी पर बैठ गया। शाम को गाँव के लोग सौदा लेते थे। चोट्टिट आया। एक सौ ग्राम तेल लिया, दो सेर चावल खरीदे।

"चोट्टिट, अच्छा है?" तीरथ ने पूछा।

"महाराज, जैसा रख रहे हैं।"

"मैं जैसा रख रहा हूँ!"

चोट्टिट निर्मल हँसी हँसकर बोला, "बुढ़ापे की उमर में महारे की लाठी मेरा हरम् जेहल गया। इसी से कह रहा हूँ कि तुम जैसा रख रहे हो, वैसा ही हूँ।"

"वुसी आग से मानो घर जल गया। नहीं तो इतनी बड़ी घटना! चोट्टिट, एक बात कहूँ।"

"कहो।"

"उधर चल।"

एक अलग-थलग जगह में आकर तीरथनाथ बोला, "वह जमीन तू ले ले। इस बार बात जबानी नहीं, लिखकर दूँगा।"

"ना महाराज!"

"गुस्से से बात मत कर, सोचकर देख ले।"

चोट्टिट उसी तरह निर्मल हँसी हँसकर बोला, "गुस्सा नहीं कर रहा हूँ। सोचकर देखता हूँ। अब जमीन नहीं, लिखा-पढ़ी नहीं, कुछ नहीं महाराज!"

"जमीन से कुछ तकलीफ दूर होगी।"

"जब मुंडा घर में जनम लिया है, तब तकलीफ पर तो मेरा हक है। हक नहीं छोड़ूँगा।"

चोट्टिट चला गया। तीरथनाथ अपनी लाठी लेने के लिए दूकान लौटकर आया। दुकानदार बोला, "चोट्टिट आपके पास नहीं आता?"

"न। आजकल क्या कर रहा है?"

"जंगल में पेड़ काटता है। गाँव के बहुत-से लोग जाते हैं।"

"किसने काम दिया?"

"चड्ढा का भाई ठेकेदार है। चड्ढा ने दिया।"

दूसरे दिन तीरथनाथ रूमाल में बाँधकर कुछ काजू-पिस्ता-मुनक्का लेकर हरबस के पास गया। ईंटों के भट्टे की बड़ी तारीफ की और उसके बाद बोला, "यह क्या ठीक बात है, हरबसजी, कि तुम हमारे गाँव के

दिवासियों के मन पर उसका प्रभाव पड़ेगा। चुनाव का काम आने
ा है। आदिवासियों के वोट कम हो जायेंगे, बँट जायेंगे। लड़के उसका
ण तीरथनाथ को बतायेंगे। पचास हज़ार रुपये भी ढीले होंगे। जंगली
ह अगर जंगली ही रह जाती, तब तीरथनाथ छगन का घर जलाता,
ट्टि को उखाड़ फेंकता। यह जगह अब उस तरह 'दूर' नहीं है। 'आदिवासी
माचार' अख़बार के आनन्द महतो हरमू की ज़मीन की लड़ाई का
ामला लिख बैठे हैं। उसमें तीरथनाथ को आधारहीन 'आदिवासियों का
शत्रु', 'ख़ून चूसने वाला महाजन', 'आदिवासियों को उखाड़ने का कारण'
इत्यादि बताया गया था। इस समय चोट्टि में मिली-जुली बस्ती थी।
दौलतवालों में हरबंस चड्डा तीरथ को गँवार समझता था। तीरथ अनवर
को 'गोभक्षक मलेच्छ' समझता। हालत जब ऐसी थी, तो तीरथ को ही
मान खोकर चोट्टि के पास जाना पड़ेगा। उसके खेत के काम के लिए ही
कम आदमी क्यों आये?

मोतिया धोबिन गुस्से से काँपती हुई बोली, "तुम्हारा दिमाग ठीक नहीं है। पचास-पचपन से ज़्यादा आदमी एक साथ कभी तुम्हारे खेत में काम करते थे? ठीक पचास आदमी आये हैं, वे काम कर रहे हैं।"

"सो तो है। लेकिन और लोग कहाँ हैं?"

"कहीं गये होंगे।"

"बेगार के काम में औरतों को देख रहा हूँ?"

"उनमें काम नहीं चलता?"

"चलता तो है, पर...।"

"हमारा मुँह देखना ऐसा अच्छा लगता है तो किसी दिन भोज दे दो।" मोतिया हँसकर बोली। इस प्रस्ताव में ताना था। तीरथनाथ ने बहुत दिनों चुपचाप रहकर कुछ दिनों पहले अपनी रखैल धोबिन के गर्भ से एक पुत्र को जन्म दिया था। सारी घटना को लेकर होली पर वे लोग गीत गायेंगे।

तीरथनाथ ताने को पी गया। इस समय उसकी अपनी ग़रज़ थी। पूछा "पता है, चोट्टि कहाँ है? उससे काम है।"

"कहीं गया है।"

"अरी मोतिया, तू क्या कर रही है?"

"क्या किया?"

"मुंडाओं के साथ रहती है, उनके पहान के पास जाती है।"

"एक गाँव में रहना है, इसी से साथ जाती हूँ। पहान का आँगन स
सुथरा रहता है। बैठकर बातें करना अच्छा लगता है, इसी से जाती हूँ

"वे गयी-गुजरी जात के हैं। तू हिन्दू है।"

"मुझमें तो किसी तरह का गया-गुजरापन करते नहीं।"

शाम को टहलते-टहलते तीरथनाथ बनिये की दूकान पर गया। वहीं गद्दी पर बैठ गया। शाम को गाँव के लोग सौदा लेते थे। चोट्टि आया। एक सौ ग्राम तेल लिया, दो सेर चावल ख़रीदे।

"चोट्टि, अच्छा है?" तीरथ ने पूछा।

"महाराज, जैसा रख रहे हैं।"

"मैं जैसा रख रहा हूँ!"

चोट्टि निर्मल हँसी हँसकर बोला, "बुढ़ापे की उमर में म्हारे की लाठी मेरा हरम् जेहल गया। इसी से कह रहा हूँ कि तुम जैसा रख रहे हो, वैसा ही हूँ।"

"बुझी आग से मानो घर जल गया। नहीं तो इतनी बड़ी घटना! चोट्टि, एक बात कहूँ।"

"कहो।"

"उधर चल।"

एक अलग-थलग जगह में आकर तीरथनाथ बोला, "वह जमीन तू ले ले। इस बार बात जबानी नहीं, लिखकर दूँगा।"

"ना महाराज!"

"गुस्से से बात मत कर, सोचकर देख ले।"

चोट्टि उसी तरह निर्मल हँसी हँसकर बोला, "गुस्सा नहीं कर रहा हूँ। सोचकर देखता हूँ। अब जमीन नहीं, लिखा-पढ़ी नहीं, कुछ नहीं महाराज!"

"जमीन से कुछ तकलीफ दूर होगी।"

"जब मुंडा घर में जनम लिया है, तब तकलीफ पर तो मेरा हक़ है। हक़ नहीं छोड़ूँगा।"

चोट्टि चला गया। तीरथनाथ अपनी लाठी लेने के लिए दूकान लौटकर आया। दुकानदार बोला, "चोट्टि आपके पास नहीं जाता?"

"न। आजकल क्या कर रहा है?"

"जंगल में पेड़ काटता है। गाँव के बहुत-से लोग जाते हैं।"

"किसने काम दिया?"

"चड्ढा का भाई ठेकेदार है। चड्ढा ने दिया।"

दूसरे दिन तीरथनाथ रुमाल में बाँधकर कुछ काजू पिस्ता-मुनक्का लेकर हरबस के पास गया। ईंटों के भट्टे की बड़ी तारीफ़ की और उसके बाद बोला, "यह क्या ठीक बात है, हरबसजी, कि तुम हमारे गाँव के

मजूरों को तोड़ रहे हो ?"

"कैसे ?"

"तुम्हारे ममेरे भाई के पास वे लोग काम कर रहे हैं और उन्हें सवा रुपया मिल रहा है। भैया, इस जंगली देश में हम-तुम एक-दूसरे का भला करेंगे। बारह आना देने से ही ठीक रहता, आठ आना मजूरी और चार आना पनपियाई। उसी पर काम करते। रेट बढ़ाना अच्छा नहीं। इसका नतीजा आखिर हम-तुम ही भोगेंगे।"

"इससे रेट बढ़ेगा क्यों ? वह जो दे रहा है दे, मैं तो बारह आने के ऊपर नहीं जाऊँगा। इसे वे जानते हैं। उसे लेकर कोई गड़बड़ न होगी, क्योंकि उन्हें मालूम है कि यहां मजदूर अनगिनत हैं, काम नहीं है। वे लोग गड़बड़ क्यों करेंगे ?"

"भैया, उनको क्यों तोड़ा ?"

हरवंस बिगड़ उठा। बोला, "यह क्या बात है ? आपकी खेती में पचपन आदमी काम करते थे, वही कर रहे हैं। सबको अन्न कौन देगा ? मैं या आप ?"

"भैया, तुम नहीं समझोगे।"

"समझना चाहता भी नहीं।"

"लेकिन समझना पड़ेगा।" तीरथनाथ ने लाठी ठोंकते हुए तेज आवाज में कहा, "सभी काम नहीं करते। जो नहीं करते वे खड़े-खड़े देखते हैं। वे जानते हैं कि मेरे सिवा उनके लिए और सहारा नहीं है। उससे दूर रहते हैं। उनको काबू में रखे बिना मैं यहां टिकूंगा कैसे ?"

हरवंस की आंखें लाल हो आयीं, लेकिन वह छोटा उद्योगपति था। उसकी मानसिकता आधुनिक थी, तीरथ की-सी नहीं थी। आगामी पंचवर्षीय योजना में वह इस अंचल का मझोले दर्जे का उद्योगपति बनना चाहता था। तीरथनाथ की जमीन को केंद्र में रखकर बनायी मानसिकता उसके निकट बहुत घृणित थी। उसकी बड़ी इच्छा थी कि वह तीरथनाथ से अधिक क्षमता वाला हो जाये। गर्म होकर बोला, "राजाओं का जमाना चला गया, लालाजी ! आप उनके कोतवाल बनकर रहना चाहते हैं, लेकिन वह मुमकिन नहीं।"

"तुम्हारे मदद देने से वह संभव होगा, हरवंस !"

"अरे, आप क्या सपना देख रहे हैं ? आप काम देंगे नहीं, वे भी काम करेंगे नहीं ? आप इस बात पर अगर बहुत अड़ेंगे तो लाचार होकर मैं कांग्रेसियों को बता दूंगा कि आप जबरदस्ती आदिवासी लोगों और अछूतों के साथ झगड़ा खड़ा करते हैं। इससे चुनाव में कांग्रेस को मुश्किल होगी।

चोट्टि के साथ आपने गलत झगड़ा किया। दस-दस मील, बीस-बीस मील दूर पर गाँव हैं, यहाँ दूसरे लोगों को लाकर वोट दिलाना मुश्किल है। इनसे बैलों की जोड़ी को किस तरह वोट दिलायेंगे? वोट में गड़बड़ होने से कांग्रेस आपको छोड़ देगी?"

तीरथनाथ निराश होकर उठ खड़ा हुआ। बोला, "रबी उठाने के वक़्त सिर्फ़ बेगार और बाहरी मजूरों को लूँगा। उन लोगों को दिखा दूँगा।"

"जो मन में आये करें। आप अपना अन्त खुद नहीं समझते।"

"कांग्रेस क्या चाहती है कि मैं उनके पैरों के नीचे रहूँ?"

"बिलकुल नहीं। कांग्रेस के क़ानून जो भी हों, काम के वक़्त देंगा। आप सीलिंग में धोखा देते हैं, बेगार करवाते हैं। कर्ज़ से उन्हें पीसे डाल रहे हैं—मदद मिलेगी। एक बात है, वोट ठीक रखना पड़ेगा। रुपये देकर वोट दिलायेंगे। सो इस बार कांग्रेस के खिलाफ़ अनुसूचित उम्मीदवार है। उसको मदद दे रहे हैं आनन्द महतो, शुद्धानन्दजी—यह सब लोग। अनुसूचित वोट बँट जायेंगे। रह गये आदिवासी। आनन्द अनुसूचित और आदिवासी वोट एक कर वोटों का प्रचार करेंगा। अब हमारी और आपकी ज़िद्दा-ज़िद्दी के लिए वोट बेकार होने पर कांग्रेसी क़ब्ज़ा निकल जायेगा। तब क्या आपको अनुसूचित प्रार्थी की मदद मिलेगी?"

तीरथनाथ ठंडी साँस लेकर बोला, "यह बहुत गड़बड़ लग रहा है।"

"राज्य में कांग्रेस के जीतने पर भी अंचल में ग़ैरकांग्रेसी के जीतने पर अंचल को मदद नहीं मिलेगी। तब कुछ फ़ायदा होगा? आप चाहते हैं बैलगाड़ी, मैं चाहता हूँ हवाई जहाज़। यहाँ राह वह चाहिए जो जोड़े। हफ़्ते में सात दिन बस चलाना चाहता हूँ। चारों ओर औद्योगिक नगर बसने लगा है, यही तो मौका है।"

'लेकिन मैं नहीं चाहता। ज़मीन और बेगार और क़र्ज़—यह मेरा चलता रहेगा। उद्योग तो आज की बात है। ज़मीन हमेशा की है।"

"तो ट्रैक्टर से खेती क्यों नहीं करते?"

"क्यों करूँ? उससे उनका लेबर सस्ता है।"

"हम-आप एक-दूसरे को नहीं समझ सकेंगे।"

ज़माना तीरथनाथ के पक्ष में नहीं रहा। वोटों के अभियान में आनन्द [illegible]

[illegible]

[illegible]

अछूतों की भलाई देखेगा। सभा खूब जमी और इसमें चोट्टि ने दल के सहित

साथ दिया। चुनाव और रबी की कटाई साथ-साथ पड़े। अनुसूचित उम्मीदवार अच्छे अन्तर से जीता। कांग्रेस को पचास हजार रुपये देने पर भी चुनाव के मामले में तीरथनाथ को झाड़ पड़ी। बदला लेने के लिए वह बाहरी मजदूर ठीक करने गया। लेकिन जिसके माध्यम से ठीक करने गया, उस गोविन्द करण से चोट्टि ने कहा, "चाहो तो तुम मजूरों को ले जाओ, लेकिन तुम्हारी जान नहीं बचेगी। मैं तुमको जरूर खतम कर दूंगा।"

"मुझे मारेगा ?"

चोट्टि को मज़ा आया और वह बोला, "थाने में बैठा रहूँगा। हाथ में कुछ न रहेगा। लेकिन मेरा तीर तुमको ढूंढकर छेद देगा। मजूर तुम लाओगे नहीं, और लाला को इस बात का पता चलेगा तो मुझे पता लग ही जायेगा। फिर देखो। लाला का बाप काशी भागकर भी जिन्दा नहीं रहा। अग्नि-मुख तीर से कुरमी ग्राम जल गया था।"

गोविन्द, तीरथ से बिना कुछ बताये लेबर लाने के खर्च में एक सौ रुपये उधार लेकर खिसक गया। तीरथनाथ ने उसे रुपये दिये। उसके बाद चोट्टि के बारे में किस्सा गढ़कर चले आये डाकू। इस जमाने में डकैतियों का मौसम भी था। तीरथ की गद्दी पर दुस्साहसी डकैती पड़ी। डाकू सिनेमा के डकैतों की तरह मालगाड़ी रोककर उस पर बैठ उत्तर की ओर चले गये।

तीरथ ने समझा कि चोट्टि से बिगाड़ करके उसकी यह बुरी हालत हुई। दारोगा कोई सहायता नहीं कर सके। रबी की कटाई का वक़्त होने पर पहचान की शक्लें चली आयीं। तीरथनाथ ने उनकी मदद से ही रबी उठायी और पहली बार गंज टाऊन में खाता खोला, हरबंस ताना मारते हुए बोला, "बैंक में अकाउंट ?"

"समय का तकाजा यही है।"

"तो रास्ते पर आ गये ?"

"जो भी कहो।"

मुंडा लोगों को चोट्टि की यह व्यक्तिगत सफलता लगी और घटनाओं ने गान के माध्यम से चोट्टि के माहात्म्य की घोषणा की। बहुत समय बाद आदिवासी और छगन आदि के सोहराइ उत्सव में गाना सुनायी दिया। गाना सुनते-सुनते चोट्टि ने कोयल से कहा, "सुन रही है, गान क्या कह रहा है ?"

"उहूँ, सुनने दें तभी न।"

आधी फसल आधे हक को जमीन छीन ली

हरमू, आहा सोने का लड़का, उसे पठा दिया जेहले
घर जाकर तीर की बात कहता है कौन ?
चोट्टि मुंडा कहता है—-
तीर बतास में मिलकर चला जाये।
अब सब जैसे गुस्से से बावले हो गये है
नही तो बिदुर महतो क्यो जीते चुनाव मे ?
गोबिन्द करण क्यों भाग गया ?
क्यों डाका पड़ा तुम्हारी गद्दी पर ?
आ' आ: आ. तुम्हारा क्या हुआ !

चोट्टि ने यह सुनकर कहा, "ओ. ! वे एक चोट्टि मुंडा को पहचानते है। उसमे ऐसी ताकत है कि लड़के को जेहल भेजकर घर में सोता है।"

"आ. सुनने देंगे न ?"

"इसी तरह किस्से-कहानी फिर बन जायेंगे। गान, सारे किस्से-कहानी इस चोट्टि मुंडा के जीवन मे हो रहे है।"

चोट्टि ने ठंडी सांस लेकर कहा, "यह लोग बहुत जरूरत पड़ने पर ही गान बनाते हैं। सब लोग ही पानी की तरह हाथों को अलग-अलग कर भाग रहे थे। गान बांधकर यह लोग सहारा ढूंढते है।"

"कल हरमू से मिलने कौन जायेगा ?"

"कोई नही। सवा रुपया कमाई करने मे बदन टूट जाता है, फिर भी हर दिन का काम करना ही है। हरमू से सारी बातें कह दूंगा।"

"वह अफसर क्या कहता है ?"

"कहता है, आने की क्या जरूरत है ? खरच बहुत पड़ता है।"

"कमाई तो कर रहे है।"

"एक पैसा भी बेकार नही करना, कोयेल। वह जमीन ले लेंगे। लिखत-पढ़त करेंगे। हरमू के आने पर उसे जमीन मिलेगी। जमीन का दुख छाती पर लादे वह जेहल गया है। आकर देखेगा कि जमीन है।"

"बनिये की जमीन है दादा, उपजाऊ। पास मे जंगल भी नही है। मुंडा को उपजाऊ जमीन कौन देगा ?"

'पैसा सब देगा।"

"हाँ, क्या करोगे ?"

जमीन सूखी और पथरीली है। बनिये को मन्ने मे मिली थी। पांच बीघा जमीन। अपनी छोटी-सी दूकान चलाकर उसे उपजाऊ बनाने लायक पैसा नही मिलता था। निकल सकता है, अब निकलेगा, यही सोचते-सोचते

ग्यारह बरस बीत गये। तीरथनाथ ने अपने दो संबंधियों को पिछले साल दो दुकानें खुलवा दी थीं। अब बनिये का चोट्टि से फ़ैसला करने का वक़्त आ गया है। मुंडा और अछूतों के सिवा उसका कोई ग्राहक नहीं है। स्टेशन के पीछे नये बाज़ार में क़तार-की-क़तार कोठरियाँ बनाकर तीरथनाथ ने दो दुकानें और आटा पीसने की चक्की लगा ली है। तीरथ से मुक़ाबला करना असंभव है। मुंडा और अछूतों की ख़रीदने की शक्ति सामान्य है। तेल-नोन-मिर्च-गुड़-सोडा-साबुन और दियासलाई है। वह भी बहुत कम ख़रीदते हैं। इन लोगों के सहारे दुकान चलाना संभव नहीं है। बनिया दोहरी जायेगा। वहाँ भाग्य की परीक्षा करेगा। उसकी जमीन बहुत ही रूखी और सूखी है। वह किसी को जमीन के लिए राजी न कर सका। पांच बीघा जमीन पांच सौ रुपये में भी कोई ख़रीदना नहीं चाहता। चोट्टि नदी से बहुत दूर पथरीली जगह में है। अब चोट्टि से पैसा लेने पर भी वह फ़ायदे में रहेगा। उसने चोट्टि से कहा था, "तुम सब ले लो।"

"नहीं, नहीं ले सकूँगा।"

"तब तुम ही किसी और को देखो।"

बनिया निरीह और डरपोक है। उसने कहा, "मैं तुम्हारी बात पर जमीन दिये देता हूँ। आदिवासी कभी धोखेबाजी नहीं करते।"

"देखता हूँ अगर कोई ले।"

छगन बोला, "मैं कहाँ से लूंगा? लाला का उधार चुकाने में सारी कमाई निकल जाती है। नहीं तो क्या जमीन न लेता?"

चोट्टि को बड़े ताज्जुब में डालते हुए सना उसके घर आया। बोला, "मैं लूंगा। तुम मुझे जमीन दिला दो।"

"तू लेगा?"

"अपने नाम से नहीं लूंगा। मैं बेगार करने वाला हूँ न! मेरे भाई के बेटे जिता के नाम करा दे।"

"रुपये लगेंगे उसमें।"

"सुन लिया। साल में एक बीघे पर पंद्रह रुपये। सो आधा तुम ले लेना आधा मैं, उसमें हो नहीं जायेगा?"

"तेरे पास रुपये हैं?"

"चोट्टि, मैं आटा मोल लेता हूँ, गरम जल में सानकर खाता हूँ। उससे पेड़ काटने की मजूरी जमा हुई है। तू देख!"

बांस के चोंगे से सना ने पैसे निकाले। बोला, "बाइस रुपये जमा किये हैं। इतने में नहीं होगा? तू बता?"

चोट्टि बोला, "देखूं।"

बनिया चोट्टि की बात पर राजी हो गया। चोट्टि हरवस का हिमाव रखने वाले ऊधमसिंह के पास गया। तोहरी से एक रुपये का अदालती कागज खरीदा गया। उस कागज पर ऊधमसिंह ने लिखा, "मैं, श्री पूरणचद बनिया,—मौजा,—तहसील,—न० की जमीन चोट्टि मुडा और जिता मुडा को लिख दे रहा हूँ। जमीन का मालिकाना हक मेरा रहेगा। चोट्टि और जिता मुडा मुझे सालाना सैंतीस रुपये देने के हकदार रहेंगे। रुपया न दे पाने पर मैं जमीन का नया बदोबस्त करने का हकदार हूँ।"

ऐसे दस्तावेज की बात किसी ने नहीं सुनी थी। फिर भी चोट्टि आदि को लगा कि यह एक काम की बात हुई। तीरथनाथ ने बनिये से कहा, "पानी के भाव छोड़ दी।"

बनिया बोला, "चिरचिटा घास के सिवा उसमें कुछ नही होता, महाराज।"

"मुझे बताते तो मैं ले लेता।"

"बजर जमीन में भी सबसे रूखी-सूखी जमीन है, महाराज।"

हरवस चड्ढा ने बनिये से कहा, "तुमने बडा अच्छा किया। वह जमीन कोई न लेता। चोट्टि जमीन की लालसा में मरा जाता था। नही तो नही लेता।"

चोट्टि से बोला, "कोई ऐसी जमीन लेता है?"

चोट्टि बोला, "क्या करें, महाराज!"

हरवस को वह कैसे समझाता? बजर हो, पथरीली हो, एक टुकड़ा जमीन होने का मतलब धार में बहते अपने अस्तित्व को लगर से बाँधना जैसा है। कानून-कचहरी करने की ताकत चोट्टि में नहीं है। उस कागज के बल पर बनिया हर साल आकर रुपये लेगा और ऊधमसिंह के सामने रसीद लिख देगा।

तीरथनाथ की तरह हरवस को भी यह काम अच्छा न लगा और वह बोला, "इसके बाद बाहर का काम कर सकोगे?"

"जरूर, जमीन तो लडकों की है, महाराज!"

"तुम्हारे दोनों लडकों की?"

"कोयल के लडके की भी।"

"लिखत-पढत कहाँ हुई?"

"हमें पढना-लिखना नही आता, महाराज।"

"चोट्टि, तुम पागल हो।"

"नही महाराज, ठीक कहा।"

"वह क्या है?"

"पपीते के बीज हैं, महाराज। आपने उस दिन बताया था न? सो इस, पपीते में दाना नहीं होता, गूदा बहुत मीठा और फल बहुत मीठे होते हैं। सांप तो हर बरस बहुत मारते हैं। वह इनकी जड़ों में गाड़ देंगे। देखियेगा, उसकी खाद से पेड़ कैसे स्वस्थ होंगे। ऐसी खाद दूसरी नहीं होती।"

तीरथनाथ और हरवंस—दोनों ही चोट्टि के जमीन लेने के मामले में असंतुष्ट रहे। चोट्टि का पथरीली जमीन का मालिक होना भी अच्छा नहीं लगा। इससे उनके दिमाग़ की—एक-से दिमाग़ की—बनावट बदली जा सकती है। वैसा नहीं होना चाहिए। उन लोगों को हमेशा बेसहारा, बेभरोसा प्रेतों की तरह शरणार्थी रखना ठीक है, जमीन-जलवायु सब-कुछ जिन्हें बाहर रखे। वे दोनों एक-दूसरे के अनजाने में अपने-अपने स्वार्थ के कारण चोट्टि की जमीन का मामला देखते रहे। बहुत गहरी उत्सुकता में थे। अपनी लँगोटी के सिवा जिनका कुछ नहीं, वे पथरीली और भुतही जमीन लेकर क्या करते हैं, यही देख रहे थे।

चोट्टि की प्रखर बुद्धि और उसके तिनक उठने का उन्होंने ख़याल नहीं रखा। दिकू लोगों के प्रति गहरे अविश्वास में उसका मन भरा हुआ था। उसने सना से कहा, "चड्ढा कहो, लाला कहो, कोई साला हमारे जमीन लेने को अच्छी नजरों से नहीं देखता। उन लोगों ने धरती खरीदी तो वह धरम है। हम अढ़ाई बीघा पत्थर ले रहे हैं तो वह अधरम है। अभी उनका जो कुछ काम करें, ठीक तरह से करना होगा।"

सना के लिए स्थिति के विषय में कुछ भी सोचना उसके स्वभाव के विपरीत था। उसके और बहुतों के मामले में बात इस तरह थी—सोचे-विचारे चोट्टि। वह बेसहारों का नेता है। वे तो हुकुम मानते चलेंगे।

सना बोला, "वह तो जरूर करेंगे, लेकिन यह हुआ क्या, चोट्टि? हम जमीन के मालिक हो गये?"

"बात सम्हाल कर बोल। तू नहीं, जमीन जिता ले रहा है। वह मालिक भी नहीं हुआ, पट्टा ले रहा है। जिता ले रहा है।"

"तो जो जिता है, वह मैं हूँ।"

कितनों से कहूँगा ? लाला के कान में अगर बात पड़ी तो मुझे पटना दिखा देगा।"

"किसी से नहीं कहूँगा।"

"मत कहना। बूढ़ा हो रहा है, नमदा के चन्न। तुम लोगों को सभाल-कर चलते-चलते मुझे हरखू के लिए रोने का मौका ही नहीं मिलता।"

"रोओगे क्यों ? वह तुम्हारा मान रख रहा है न ?"

"अपनी बात भी कुछ नहीं। वह तो मेरी बात है।"

"लो, बताओ क्या कहना है ?"

चोट्टि ने बीड़ी सुलगायी। उसके बाद पद की उचित गंभीरता से बोला, "पथरीली हो या जैसी हो, जमीन तो हुई।"

"यह देखकर सब मुंडा होश में आयेंगे।"

"हाँ, और सब पत्थर पट्टे पर लेंगे। मुंडा लोगों के लिए कुछ असाध्य नहीं है। मैं ले रहा हूँ, बस, उसी से जान सकते हैं।"

"ले, अब कहो।"

"जमीन ले रहा हूँ, किन्तु बहुत काम है।"

चोट्टि और जिना के जमीन लेने से मानो सारे मुंडा लोगों ने बाजी जीती हो। छगन भी वह गया, "बहुत अच्छा कर रहे हो। कुदाल मारकर पत्थर निकालने पड़ेंगे। चाद का पक्ष आने पर हम भी चुपचाप मेहनत दे देंगे। तेरी जमीन की बात है। इससे हम लोगों को भी सहारा मिला है।"

"क्या सहारा ?"

"हम भी जमीन ले सकते है, यह समझ गये।"

"बाघ एक ही है—तीरथनाथ। वह क्या किसी और को जमीन लेने देगा ? अभी मौके पर नजर रखकर ऊसर जमीन लेना रहेगा। तुम्हारे-हमारे हाथ बंजर जमीन उपजाऊ बन जाती है तो वह नहीं देगा। पता है, कैसे ?"

"कैसे ?"

"वे लोग—तीरथ आदि चाहते हैं कि कम जमीन उपजाऊ हो, और वह उनके कब्जे में रहे। जितनी जमीन ऊसर रहेगी, उतना ही उनके लिए अच्छा है। उससे हम उनकी दया के सहारे रहते हैं, बँधे रहते हैं। अभी समझता है कि हमारे हाथों में पड़ने से पथरीली जमीन पर धन पैदा होता है। इसी से दखल में रखने के लिए जमीन पर कब्जा करेगा।"

"खेती करायेगा ?"

"धत्, उसमें तो बहुत लोगों को रोजी मिलती है।"

"फिर क्या करेगा ?"

"परती रखेगा। धरती जितनी बाँझ रहेगी, हम-तुम उनसे करज लेंगे, बेगार करेंगे, ठोकरें खायेंगे।"

"तुम कितनी बातें समझते हो, हम नहीं समझते।"

"समझकर ही क्या कर सकते हैं?"

"मेरी तो आँख तू है, जबान तू है, हाथ भी तू ही है।"

"धत्तेरे दिकू की।"

"धत्तेरे मुंडा की।"

दोनों ही हँसने लगे और छगन बोला, "मेहनत देंगे।"

मुंडा लोगों के लिए यह घटना विशेष महत्व की हुई। चोट्टि की भविष्यवाणी सच कर तीरथ सारी बंजर ज़मीन लेता रहा। पिछली दुश्मनी के कारण फलवाले अनवर ने अपनी ज़मीन का टुकड़ा रख छोड़ा और चोट्टि से चुपके से कहा, "अपनी तीस बीघा ज़मीन वह बाँट देगा, बाद में।"

पहान ने चोट्टि और जिता की ज़मीन डोरी से नापकर नागफनी का घेरा बना दिया। दोनों की ज़मीन के चारों ओर नागफनी का घेरा लग गया। उसके बाद ज़मीन की पूजा में मुर्गी की बलि देकर उसके खून को छिड़ककर ज़मीन का मंगल किया गया। कई महीनों तक शुक्ल-पक्ष में ज़मीन के कंकड़-पत्थर हटाने का काम चला। वर्षा का पानी पड़ने पर ही धान की बुआई होगी। चोट्टि ने मचान बाँध लिया और चूंकि दोनों ही ज़मीनों के लिए उसका अपनापन था, इसलिए दोनों ही ज़मीनों पर तीखी नज़रों से पहरा देता रहता। साथ में जिता रहता और अब चोट्टि के मन में धानी के साथ जागी हुई रातों की यादें उभरकर आतीं। जिता से उसने धानी के चाव से कहा, "तीर चलाना सीखना चाहता है तो आँखों पर धार दे। देख, हिरन।"

"जा, हिरन तो सब मार डाले।"

"तू देख तो।"

धान की गंध से एक चीतल आ गया था। जिता बोला, "मारूँ? ओह, जमाने से हिरन का मांस नहीं खाया है!"

"धत्, वह मादा है। मारने की मेरी भी तबीयत हो रही है, लेकिन हमारी तरह उनको भी तो दिकू उखाड़ फेंक रहे हैं। उस जंगल में कहीं थोड़े-से रह गये हैं। अब निकल रहे हैं। मादा रहने से वंश बढ़ेगा।"

चोट्टि ने ताली बजायी और पल-भर में जानवर भाग गया। चोट्टि बोला, "तू सो जा। मेरी आँखों में तो नींद नहीं है।"

"सोओगे नहीं?"

"न।"

जिता सो रहा।। यह सूनापन का, ज़मीन का फैलाव और रात
ठड्क चोट्टि को बड़े अच्छे लग रहे थे। उसके बाद वह मचान से उतरा।
खेत को घूम-घूमकर देखा। धान निकल आये थे। वैसे लहलहे नहीं थे,

अगहन के करीब सना का दिमाग़ ख़राब हुआ। "अहा, हा, ध
पक रहे है," कहकर वह मचान पर आकर बैठ गया। वह जो बैठा, तो उ
फिर उतारा नहीं जा सका। चोट्टि से बोला, "अब बेगार देने न
जाऊँगा। यहीं रहूँगा।"

चोट्टि ने उसे डरा-धमकाकर काम पर भेजा। धानों की कटाई हो
पर वे ख़ूबलाल कोयले वाले के पास गये। धान तुलवाये। धर्मकांटा। अढ़
बीघा ज़मीन में अढ़ाई मन धान हुआ था।

चोट्टि वज़न देखकर भौचक्का रह गया। डेढ मन चावल मिलेंगे
और भूसा। उसने ठंडी सांस छोड़कर ख़ूबलाल से एक बोरा ख़रीदा
पुआल भर देने से हरमू के लड़के लेटेंगे। ख़ूबलाल का ज़मीन का कारोबा
था। वह बोला, "रेल कंपाउंड में जो तालाब है, जानता है?"

"बड़ा दह?"

"वही। अबकी स्टेशन-बाबू उसे खुदवायेगा। उसकी कीचड़-मिट्
निकालकर फेंकी जायेगी। यह धान तो रोगहा-रोगी-सा है। ज़मीन
ताकत नहीं है। तू बिल्कुल पागल है, पथरीली ज़मीन ली है।"

"वाह, ख़ूब कहा।"

चोट्टि तभी स्टेशन-मास्टर के पास गया। वे बोले, "उसे तो
खुदवाऊँगा ही। पिछली बार स्टेशन में आग लग गयी थी, तो कुआँ ब
पानी खींच-खींचकर आग बुझायी गयी थी।"

"दह पहले अच्छा था।"

"उसकी कीचड़ लेगा, ले। तुम ही उसे क्यों नहीं खोद देते? व
बारह आना मजूरी दूंगा।"

"सो तो खोद दूंगा। लेकिन समय देखें, महाराज! लालाजी की खे
के काम का नुकसान न हो। यह तो दस मरद और दस औरतों से का
होगा। एक काम करना होगा।"

"क्या?"

"अभी करा सकते हैं। खेतों में रबी डाल दी गयी है। अभी वैसा को
काम नहीं है। पर बारह आने का रुपया नहीं होगा?"

"ना चोट्टि, वह नहीं होगा।"

"तो वैसा ही सही। अच्छा, गांव में आग लगने पर पानी मिलेगा?"

"सो क्यों नहीं मिलेगा? सरकार की संपत्ति है या मेरी? पर आग लगने पर ही। हमेशा काम में नहीं लाने दूंगा।"

यह बात हो गयी। सब-कुछ सुनकर खूबलाल बोला, "टीसन बाबू ने बेनामी खुद ही इस काम का टेंडर दिया था। दस हजार रुपयों का टेंडर है।"

"टेंडर क्या?"

"रेल का काम तो ऐसे नहीं होता। पहले टीसनबाबू ने कम्पनी को सुझाया कि यह तलैया खोदनी होगी। कम्पनी ने टेंडर मांगे। कौन कितने खर्चे में काम कर देगा? टीसन बाबू ने कल में तेल दिया। उसे कम्पनी दस हजार रुपये देने को राजी हो गयी। अगर तुम अब दो महीने में भी काम करो तो उसका हजार रुपयों से अधिक नुक़सान न होगा। नौ हजार रुपयों का फ़ायदा है। उसके बाद पानी में मछली छोड़ेगा, बेचेगा। पानी की बात से याद आया। उस दिन घूमने गया था, देखा तेरे गड्ढों को। बड़ा साफ़ पानी है। यह अच्छा किया। नदी की रेत में हर बरस गड्ढे बना दिया कर। पानी मिलेगा। छगन आदि भी जाते हैं। नहीं तो पानी लेने के लिए अछूतों की धक्का-मुक्की से कुएँ का पानी पीने में घिन होती है।"

"तुम भी क्या ऊँची जात हो?"

"जरूर। मैं कुरमी हूं। दुसाध या गंजू या धोबी नहीं। अच्छा चोट्टि, तुम लोगों में जात क्यों नहीं है?"

"पता नहीं।"

चोट्टि की बात सुनकर सुगन बोला, "तू कर क्या रहा है? यह काम भी ले लिया। किसे पता था कि चोट्टि में इतना काम होगा?"

"काम तो होगा ही। दिन बदल रहे हैं। अब देखना होगा कि तीरथ के काम को संभालकर यहां जो भी काम हो वह सब हम लोगों को मिले।"

"बारह आना से बेसी नहीं देगा? क्यों?"

"समझना होगा।"

"क्या समझोगे?"

चोट्टि थकी हँसी हँसकर बोला, "तुम बताओ, क्यों दे? चड्ढा दे रहा है बारह आना, वह भी वही देगा। नहीं तो रेट उन लोगों के हिसाब में बढ़ जायेंगे।"

"सो तो है।"

"सोचने से कोई फ़ायदा नहीं। सोचने से [illegible] परेशान होता है। दुनिया में कितना रुपया है। चड्ढा ये बड़ी [illegible] [illegible]। रुपया बना

रहा है। तीन-चार कोयला खानें मोल लेगा। यहाँ तो कोयला जमीन के ऊपर ही है। हमें बारह आना दे रहा है। लाला खेती में इतना रुपया कमा रहा है, करज का सूद ले रहा है। डाका पड़ा, कांग्रेस को पचास हजार रुपये दिये, कोई फरक नहीं आया। तुमको पैरों के जूते की धूल झाड़कर देना है। टीमन-मास्टर इस तालाब को खुदाने के ले रहा है दस हजार रुपये। हमें देगा बारह आना। सो देखो, उन पचास हजार में दस हजार में हमारा हक नहीं देंगे। जो मिलता है वही ले लें।"

"जो मिले, ठीक ही कहा।"

"यही लेंगे। फिर भी कुछ खाकर जियेंगे तो।"

"यह तो है।"

"सो तुम मुझे देउता कहते हो, अबकी पूजा लूँगा।"

"क्या लेगा?"

"दह काटने पर कीचड़, जितनी जिसमें हो जमीन तक ले जायेगा। जमीन रोगी है। बच्चों की तरह खाना माँगती रोती रहती है।"

"दो देंगे।"

इस तरह ही सब बातें हो जातीं और चोट्टि और छगन बहुत अधिक लगन के साथ मेहनती चींटियों की तरह राष्ट्रीय अर्थनीति से कण-कण कर लेते रहे। उससे राष्ट्रीय आर्थिक नीति गड़बड़ न होती और यह जैसे-तैसे भोजन जुटाकर जिन्दा रह लेते। चोट्टि के ग्राम-जीवन में एक बात सबने मान ली। मेहनत के कामों में स्थानीय लोग ही काम आते हैं। यह बात भी मान ली गयी कि काम की बात चोट्टि के साथ करना ही अच्छा है। वह बुजुर्ग है, होशियार है, सबकी जान-पहचान का और आदरणीय व्यक्ति है। उसके कह देने पर वहाँ अनुसार काम होगा। छगन आदि भी उस बात का मान रखेंगे।

दह खोदने का काम तय होने पर हरबंस चड्ढा हँसकर बोला, "चोट्टि, अब लेबर लगाने की ठेकेदारी कर ले।"

"कैसे?"

"सबको काम दे रहा है, बट्टा लो।"

"ना महाराज।"

"लेकिन ले सकते हो। सभी लेते हैं।"

"ना महाराज।"

समय से ताल की खुदाई हो गयी और चोट्टि की जमीन पर कीचड़ डाल दी गयी। पहान इस जमाने का आदमी था। उसने मिट्टी देखकर आँखें मींचीं और चोट्टि से बोला, "ढाल पर उतरकर नदी किनारे पर

चढ़ती है, इतना चलकर अगर कीचड़ लायी जाती है, तो इसी तरह चलकर जंगल से सड़ी पत्तियाँ भी लायी जा सकती हैं।"

"यह तो है।"

"तेरी तो बहुत जान-पहचान है। गौरमेन खाद देती है। तोहरी चला जा। बी० डी० बाबू से माँग ले।"

चोट्टि बोला, "क्या वह दे देगा? बड़ी बातें होंगी।"

तभी चोट्टि के जीवन में तीन अत्यन्त आश्चर्यजनक घटनाएँ घटीं। प्रत्येक घटना गान में, क़िस्से-कहानी में रखने लायक महत्व की थी। पहली के पीछे उपलक्ष्य था, चोट्टि की ज़मीन और पहली घटना का जवाब न था।

तीरथनाथ इस जगह का वाशिन्दा था और यह स्थान उसके रक्त में था। विद्वेष, क्रोध, प्रेम के सिवा चोट्टि के बारे में, या सारे मुंडाओं तथा सारे परिगणित व्यक्तियों के बारे में, उसके मन में कहीं एक अधिकारबोध था। वह क़र्ज़दार के प्रति महाजन का अधिकारबोध नहीं था। वह पुराने संबंधों के बंधनों का अधिकारबोध था। तीरथनाथ बेगार तो ज़रूर लेता था, लेकिन वह चाहता था कि वे लोग पहले की ही तरह निस्संकोच कहा करें, 'क्या महाराज, इतना पपीता क्या अकेले खाइयेगा? हमनी के भी दो-एक खिलाइये।' या 'महाराज, तुम्हारे गाय-बैल बिगड़ गये हैं। नथुनी को बुलाइये, गोठ की पूजा कर दें।'

तीरथनाथ और चोट्टि। चोट्टि के बाप को वह 'चाचा' कहा करता था। छगन की माँ ने कोई दवा पीसकर खिलायी जिससे तीरथ की माँ के स्राव की तकलीफ़ दूर हो गयी। अब डॉक्टरी इलाज प्रचलित हुआ है, लेकिन छगन की माँ का-सा चिकित्सक तीरथ ने कभी नहीं देखा। छगन की माँ जिन्दा होती तो चोट्टि गाँव में बच्चों और औरतों की हारी-बीमारी में किसी को कोई फ़िकर न थी।

सब जैसे अजीब-सा आड़ा-तिरछा हो गया। तीरथनाथ ने हरबंस से कहा था, "तुम मेरा लेबर तोड़ रहे हो।" उसकी बात में 'मेरा' पर विशेष ज़ोर था। वह 'मेरे'—तीरथ के—थे। तीरथ उन्हें मारे तो मारेगा, बचाये तो बचायेगा। मारेगा नहीं। तीरथ अगर वैसा मारने वाला होता तो चोट्टि गाँव से मुंडा और अछूत लोग भागते न? तीरथ क्या और सारे महाजनों की तरह है? जापूसिंह तो गौरमेन के पाँचसाला तमाशे के साथ ताल मिलाकर ठीक चुनाव के बाद किसी-न-किसी बहाने से अछूतों के खेत-ओसारे जला देता। कहता, "वैसा न करने पर यह हरामी लोग बराँमन-क्षत्री की तरह होना चाहेंगे।"

तीरथ ने तो कभी छगन वगैरह के घर और ओसारे नहीं जलाये।

क्यों नहीं जलाये ? आदिवासी, अछूत इत्यादि की मिली-जुली बस्ती होने से ? नहीं, नहीं ! नीरथ हरखम की तुलना में पुरातनपंथी हो सकता है, लेकिन जापू के मुकाबले में वह आधुनिक है। जापू का व्यापार बहुत उलझा या आसान है, कौन जाने क्या है ! अछूतों की बस्ती वह जलवा ही देता है। पुलिस के आने में भी रुकावट नहीं डालता और कहता, "हाँ-हाँ, तुम लोग अपनी ड्यूटी करोगे न, भैया ! इसके लिए तो गौरमेन तुम लोगों को पालपोस करती है न ? बताइये न !"

पुलिस को वह घूस न देता और पुलिस के साथ घूमता। अत्याचार-पीड़ित व्यक्ति—जिनके घर नष्ट हो गये—जापू के सामने मुँह न खोलते। जापू को इससे बड़ी खुशी होती और पुलिस से कहता, "यह लोग मुझसे बाप की ही तरह डरते और भक्ति करते हैं।" उसके बाद, बड़े ताज्जुब की बात है कि जापू गौरमेन की मदद पर तुरत लगाकर खुद घर बनाने का खरच देता, खुराकी देता। देता माने दान करता, कर्ज नहीं देता। जापू कहता, "नीरथ लाला तो है लाला। हम जापूसिंह हैं। राजपूत। मेरे पुरखे राजा थे। राजा क्या करता है ? जान लेता है, जान देता है। मेरा दिमाग नीरथ को कहाँ से मिलेगा ?" यह बात भी सच थी। इस तरह के पागलपन से जापूसिंह पर लोगों की एक तरह की भक्ति भी थी। आंचलिक मालिक-महाजन के बीच जापूसिंह अपवाद था। पुराने ज़माने के राजे-ज़मींदारों की तुगलकी परंपरा को चलाने वाले आज के मालिक-महाजन थे। नीरथ ने एक बार कहा था, "एक बात आपने कभी सोचकर देखी है, बूझकर देखी है ?"

"क्या बात ?"

"आदमी की देह। आपकी उमर भी सत्तर हुई। कभी अगर ऐसा हो कि घर जला दिया और खैरात देने के पहले ही मर गये ?"

"हो-हो-हो, यह नहीं हो सकता।"

"अगर कहीं पुलिस आपको पकड़ ले !"

"हो-हो-हो, कैसी मजे की बात है !" हँसकर खाँसते हुए जापूसिंह ने नीरथ के पेट में खोंचा मारते हुए कहा, "योग व्यायाम करता हूँ, लोहे की उँगलियाँ हैं, देखिये न। पेट में मर जाऊँगा और गौरमेन भी नहीं पकड़ेगी।"

...र की तरह
...क्या ग़लत
...उससे क्या
ग़लत बात है ? जो प्रथा चली आ रही है उसमें अन्याय नहीं है

चोट्टि के लोगों के मन में जो आड़ा-तिरछा विचार आ गया है, वह क्या उस बेगार या क़र्ज़ के कारण ? नहीं, नहीं। फिर उस बेगार और क़र्ज़ के कारण हरबंस, नया बड़ा आदमी, उससे घृणा करता है। घृणा करना क्या अच्छा है ?

न, न। चोट्टि के लोगों के आड़े-तिरछे विचारों के पीछे और बात है। पहले केवल वे थे और तीरथ था। अब रोजी के लिए वे हर किसी के पास जाते हैं। तीरथ यह नहीं चाहता। तीरथ तो मारपीट भी नहीं चाहता। सच कहने में क्या है, तीरथ ने उस ज़मीन के दंगे के वक़्त मथुरासिंह से बार-बार कहा था, "गोली मत चलाना। डर दिखाना।" लेकिन वह उजबक था, दनादन गोली चला बैठा। पुलिस पर जो दरोगा, टीसन बाबू और आदिवासी अफ़सर—तीनों गौरमेन के सामने गोली चलाये, उससे बड़ा मूर्ख और कौन हो सकता है ? असल में तीरथ ने बहुत सोचकर देखा है कि चोट्टि से झगड़ा रहने से ही सब गड़बड़ा गया। तीरथ पर क्या भूत आ गया था ? नहीं तो उस ज़मीन को लेने का ऐसा हठ क्यों उठ खड़ा हुआ ? हरमू जेल गया। चोट्टि तो अब उसे तरह-तरह से बाण मार रहा है। नहीं तो गद्दी पर डाका क्यों पड़ता, कांग्रेसी लोग पचास हज़ार रुपये माँग बैठते, चुनाव में परिगणित उम्मीदवार क्यों जीत जाता, और जो बात किसी से नहीं कही जा सकती, प्रेमिका धोबिन उस पर क्यों ख़फ़ा हो जाती ? तीरथ चोट्टि से सुलह करना चाहता था। इसीलिए तो चोट्टि से उसने ज़मीन लेने को कहा था। चोट्टि ने नहीं ली। उस बात को सुनकर तीरथ की पत्नी बोली, "क्यों लेता ? मंतर से तुम्हारा बुरा कर रहा है, तुम्हारी ज़मीन लेकर बाण नहीं चलेगा।" सब बहुत गड़बड़ हो गया। तोहरी जाकर तीरथनाथ ने जिस साधु की शरण ली, तो तीरथ के गाँव लौटते-न-लौटते पुलिस ने उस साधु को दाग़ी आसामी कहकर पकड़ लिया। इसको कहते हैं बुरा वक़्त !

यही सब सोचते-सोचते तीरथनाथ रेल लाइन के किनारे की पतली पट्टी पकड़कर रोज चलता था। रोज ही माँ कहा करती, "उस बुखार के बाद से कान से सुनायी नहीं देता। कान से सुनने का यंत्र भी नहीं ख़रीदता, किसी दिन गाड़ी से धक्का खा जायेगा या उसके नीचे दब जायेगा।"

"अरे, मैं क्या रेल के टाइम पर जाता हूँ ?"

लेकिन स्वतंत्र भारत में ट्रेनें भी धीरे-धीरे स्वतंत्र होती जा रही हैं। एक मालगाड़ी चोट्टि से छूटती है और आगे बढ़ती है। ट्रेन की सीटी तीरथ के कान में नहीं पड़ी। चोट्टि गायें लेकर लौट रहा था। उसने यह हाल देखा और भागा, भागकर किनारे आया और तीरथ का पैर पकड़कर

ज़ोरों से खींचा। तीरथ पत्थर पर गिर पड़ा। "मारना मत, चोट्टि!" वह चीखने लगा और सिर उठाकर देखा कि मालगाड़ी रुक गयी है। चोट्टि ने ड्राइवर को मुंडारी भाषा में धाराप्रवाह मोटी-मोटी गालियाँ दीं और हिन्दी में कहा, "महाराज तो बहेड़ा है, कान से सुनते नहीं। जब देखा कि लाइन से हट नहीं रहे हैं, तो गाड़ी को रोक लेते न?"

गाड़ी चली गयी। चोट्टि बोला, "उठो महाराज, ज़ोर की सीटी नहीं सुनी?"

"वह जो तीन महीना पहले बुखार आया था..."

"उठो।"

तीरथनाथ उठा और भयानक विपत्ति से बचने के इतने बड़े आघात से उसकी आँखों से पानी बहने लगा।

"चलो, घर जाओ।"

"कपड़े खराब हो गये।"

तीरथ का शरीर कट-फट गया था। सिर की टोपी गिर गयी थी। चोट्टि ने देखा कि तीरथ को जैसे आगा-पीछा नहीं सूझ रहा था, वह भौंचक्का हो रहा था। चोट्टि ने ठंडी साँस लेकर कहा, "कपड़े उतारो। नदी में सब धोकर सफ़ा हो जाओ।"

"पहनूँगा क्या?"

"कपड़े झाड़ी पर फैला दो, सूख जायेंगे।"

"तू ज़रा रुक ना।"

"ठहरो, गायों को ले आऊँ।"

चोट्टि गायों को लाया। कठिन काम हुआ। नदी के पानी से कपड़े धो, कपड़ों को झाड़ियों पर फैला तीरथनाथ नंगा खड़ा रहा। वह बड़ी मुसीबत में पड़ गया था। चोट्टि ने एक तरफ़ बैठकर बीड़ी सुलगायी।

"चोट्टि!"

"कहो।"

"तू माफ़ कर दे।"

"क्यों?"

"सोचा था कि तू मुझे मारेगा।"

चोट्टि हमेशा स्वतंत्र स्वभाव का था। तीरथ का काम छोड़कर वह अन्दर से खुद को और भी स्वतंत्र महसूस कर रहा था। वह बोला, "महाराज! तुम्हारा दिमाग जिस तरह की चिन्ताओं में चक्कर काटता रहता है, मेरा दिमाग वैसा नहीं है। तुम होते तो मुझे मारते, है न?"

"मैं?"

"मैंने तुम्हें बचाया।"

"तेरे बाण से मेरी ऐसी दुर्गति हुई है।"

"कैसे ?"

"अभी डाका पड़ा, कांग्रेस ने पचास हजार रुपये लिये, हरमू के जेहल जाने से तुम लोग साथ न रहे, और छगन भी हमें नहीं मानता।"

"महाराज, तुम सोचते हो कि मैं तुम्हें तीर मार रहा हूँ, तो यह बुरी बात अपने दिमाग से हटा न सकूँगा। और अगर तीर मारूँगा तो सीधे तीर मारूँगा और सीधे थाने में कबूल कर फाँसी ले लूँगा। हाँ महाराज ! मेरा नाम चोट्टि है। तुम जो कुछ कह रहे हो वह पागलपन है। और बाकी बातों का जवाब दूँगा।"

"अब छगन भी जूता पहनता है। छाता लगाता है। बता, इससे मेरा मान रहता है या नहीं, बता ?"

"अगर कोई हाट की डेढ़ रुपये की फटफटिया चट्टी पहने, बरसात के दिनों में सिर पर बाँस का छाता लगाये, उसमें तुम्हारे मान का क्या ?"

"यह नहीं है चोट्टि ! यह जो तुमने जमीन ली है...।"

"उससे ?"

"यह धरम नहीं है। जमीन रहती है मालिक-महाजन की। मुंडा-दुसाध जमीन के मालिक हों, यह परमात्मा की इच्छा नहीं है। इच्छा होती तो उनको जमीनें मिलतीं।"

"तुम ही तो परमात्मा बन गये हो। सब जमीन ले रहे हो, बिना खेती की परती छोड़ दोगे, फिर भी हमें नहीं मिलेगी।"

"मैंने तुम लोगों को इतने दिन नहीं जिलाया ? कहाँ थे चड्ढा ? कहाँ था उसका भाई ? कहाँ था टीशनबाबू ?"

"बहुत जिलाया।"

"तेरे रहते मेरी गद्दी पर डाका पड़ता ?"

"यह तो किसी दिन मुझे सूझा नहीं, महाराज !"

"तू अब नहीं आयेगा ?"

"ना। तुम होते तो जाते ?"

"राम-राम।"

"लो, कपड़े सूख गये, पहनो। और क्या कहूँ ? तुम्हारा धरम का हिसाब एक तरह का है, हम लोगों का दूसरी तरह था। जिस तरह रेल के दो लोहे पास-पास रहते हैं, दोनों मिलते नहीं, मिलने से गाड़ी उलट जायेगी। सो यह भी देवी-देवता की इच्छा होगी कि तुम और हम एक-दूसरे को न समझें। समझने पर...," चोट्टि हँसा, उसे आनंद आया,

"समझने पर इतना झगड़ा-फसाद, इतना दुख-दर्द नहीं रहता, लेकिन तुम्हारा भगवान गाड़ी उलटने से डरता है। जाओ, घर जाओ।"

"तो मेरे ऊपर तेरा शाप नहीं है ?"

"शाप भी नहीं, कोई बात भी नहीं। लड़का जेहल गया है, इस दुख को क्या मैं भूल सकता हूँ ? नहीं. झूठ नहीं बोलूंगा, नहीं भूला। लगता है महाराज, तुम होते तो वही करते। जब लाइन पकड़ कर चल रहे थे, तो क्या मैं तुम्हें तीर मार न देता ?"

"आः, तुम्हारे मन में यह आता है ?"

चोट्टि बिगड़ उठा। बोला, "यह कैसा तुम्हारा बचपना है ! मेरी जमीन पर धान होने से तुम्हें लगता है कि जमीन छीन लूं। फिर जमीन लेने पर मन में आता है कि सारी परती जमीन खरीद लूं, नहीं तो नंगे-कंगालों को जमीन का स्वाद मिल जायेगा। सो मेरे बेटे को जेहल भेजने पर मेरे मन में यह नहीं उठेगा कि झुटपुटे में लाला अकेले घूमने जा रहा है, उसे मार दूं ? मन में उठा, लेकिन मारा नहीं। उस तरह के खून में जनम नहीं लिया है।"

"अरे बाप रे !" कहकर तीरथ रो पड़ा। बोला, "मैं जा रहा हूँ। मारना मत चोट्टि ! तेरी दुहाई है।"

तीरथ भागा। चोट्टि ने चिल्लाकर कहा, "मारने की इच्छा होने पर जान बचाता ?" इस बात को तीरथ ने नहीं सुना।

सब-कुछ सुनकर बहुत तेज गुस्से में उसकी पत्नी बोली, "मेरे बेटे को जेहल भेजा, उसकी जान बचा दी ?"

"वह न होता, मयुरा होता तो भी बचाता। वह कौन है, यह नहीं सोचता। एक जान न चली जाये, यह बात मन में उठी।"

"पत्थर से सिर क्यों नहीं तोड़ दिया ?"

"यह बात मत बोल।" चोट्टि गरज उठा, "मन-ही-मन उसका सिर दिन में बहुत बार फोड़ता हूँ, दस बार झुटपुटे में उसके बदन पर तीर मारकर कलेजा बेध डेता हूँ।"

"करते क्यों नहीं ?"

"हरमू वाले मामले के वक्त गोरमेन का अफसर गवाह था, इसी से दारोगा ने हम लोगों को कुत्तों से नहीं नुचवाया। मेरे उसके मारने पर पुलुस आकर मुंडा टोली जला देगी। तब ? मेरे कारन से मुंडा डूब जायेंगे। मैं उसका कारन बनूंगा ? तू बता, यही मेरा धरम है ?"

"समझी। लो, गुड़ और पानी लो। नाती को देखो। उसकी माँ लकड़ी काटने उस जंगल में गयी है।"

"उठाकर कैसे लायेगी ?"

"उसे सब आता है। रस्सी से बाँधकर खींच लायेगी।"

"दे।"

हरमू के बेटे को गोद में लेकर चोट्टि बोला, "ओः, हरमू आकर देखेगा कि उसका बेटा कितनी बातें करता है। जड़ छोड़ गया है।"

"कब आयेगा ?"

"अब आयेगा।"

तीरथनाथ में आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गया। अब वह उस रास्ते घूमने न जाता। गाँव में सब लोगों को वह संभावित रूप से आक्रामक लगा। छगन आदि के साथ वह अब किचकिच न करता और रेल से कटने के संकट से बचने पर घर पर जो नारायण भगवान की पूजा हुई, उसका प्रसाद छगन की टोली में भेजा।

यह पहली आश्चर्यजनक घटना थी। छगन बोला, "महाराज, मरने-वाला नहीं है रे चोट्टि, नहीं तो चंगा कैसे हो गया ?"

"भूत के डर से।"

"किसका भूत ?"

चोट्टि जमीन पर थूककर बोला "उसे हमेशा भूत दिखायी देते हैं। मैं उसे मार रहा हूँ, इसी डर का भूत उसे दीखता रहता है।"

"जो भी हो, लड्डू और सत्तू बहुत-सा दिया है।"

"खा ले।"

दूसरी आश्चर्य की बात पानी को लेकर हुई।

सबको बड़ा ताज्जुब हुआ कि फिर चुनाव आने के पहले परिगणित जाति के विधान-सभा सदस्य चोट्टि में आये और उन्होंने घोषणा की कि चोट्टि की जल्दी-जल्दी बढ़ती जनसंख्या की बात सोचकर यहाँ एक स्वास्थ्य-केंद्र खोला जायेगा। जल्दी ही। सबको उस स्वास्थ्य-केंद्र का लाभ मिलेगा। उसके बाद बताया कि इस जगह पानी की तकलीफ़ है। इसलिए छगन के टोले और चोट्टि के टोले के बीच में एक बड़ा सरकारी कुआँ बनेगा। वे जोरदार भाषा में बोले, "पता है, उच्चवर्ग के लोग इस तरह संकीर्ण विचार वाले हैं, छुआछूत में ऐसा विश्वास रखने वाले हैं कि सरकारी कुएँ से भी आदिवासी और परिगणित जाति वालों को पानी नहीं लेने देंगे।" वह इस बात को भी बता गये कि ये उच्च वर्ग के लोग असीम प्रतिक्रिया-वादी हैं और जवाहरलाल के नेतृत्व में भारतवर्ष की उन्नति के मार्ग में रोड़े हैं। किन्तु आदिवासी और परिगणित लोगों को याद रखना चाहिए कि उसे चुनकर उन्होंने अपनी सुबुद्धि का परिचय दिया है। इसीलिए

स्वास्थ्य केंद्र और कुआं बन रहे हैं। फिर भी चुनाव में जीतने पर वे चोट्टि तक कच्ची सड़क को पक्की करवाकर चोट्टि को गतिमय जीवन से जोड़ देंगे। यह सब कहकर छगन की बहन के नाती को गोद में लेकर और प्यार करके वे ट्रेन पर चढ़ गये।

और भी आश्चर्य की बात हुई कि स्वास्थ्य केंद्र भी बना और कुआं भी खुदा। कुआं देखने से ही पता चलता था कि गर्मियों में पानी सूख जायेगा। फिर भी वह उनका अपना कुआं था। छगन और चोट्टि आदि बहुत ही खुश हुए और छगन आदि नये कुएँ की जगत पर बैठ 'रामा हो रामा हो' जातीय गान गाते और खुशी मनाते रहे।

तीरथ ने हरबंस से कहा, "छोटी जात के लोग छोटी जात की ही भलाई देखेंगे। इसी से कुआं खुदवाया।"

"अरे, वह चुनाव में जीता तो अपने लिए। बंजर जमीन का दखल लेकर कैसा हंगामा किया! अब तो जमीन पर चिरचिटा घास उग रही है। एक टुकड़ा बंजर जमीन के लिए कांग्रेस को नुकसान पहुँचाया।"

"फिर अगली बार भी तो चुनाव आयेगा।"

"तब और कोई गड़बड़ खड़ी करेंगे? बस तब आप प्रतिपक्ष बन जायेंगे। कह सकेंगे, अंचल से कांग्रेस को हटा दिया।" हरबंस खुश हो रहा था और कह रहा था, "फिर आप बन जायेंगे कमनिस। जो कांग्रेसी नहीं है वह कमनिस है। आपको जेहल में ठूंस देंगे।"

"यह सब तुम क्या कह रहे हो? प्रतिपक्ष क्या होता है? यह सारी बातें तो मैंने अपनी जिन्दगी में कभी नहीं सुनीं।"

"यह क्या, आप अखबार नहीं पढ़ते?"

"अखबार? क्यों, अखबार क्यों पढ़ूं?"

"देश-विदेश की खबरें जानेंगे।"

"न-न, वह सब फैशन मैं नहीं करता।"

"तब ट्रांजिस्टर क्यों चलाते हैं?"

"गाने सुनता हूँ।"

"खबरें नहीं सुनते?"

"खबरें क्यों सुनूं? उन सबकी तुमको जरूरत है। मुझे जिस खबर की जरूरत है, वह मुझे घर बैठे मिल जाती है।"

"एम० एल० ए० ठीक ही कह रहा था। आप जैसे लोगों की ही वजह से इंडिया पिछड़ा हुआ है।"

"क्या कहा? मैं समझा नहीं।"

इसके बाद की घटना बड़ी आश्चर्यजनक थी। एक शाम को हरबंस,

"उठाकर कैसे लायेगी ?"

"उसे सब आता है। रस्सी से बाँधकर खींच लायेगी।"

"दे।"

हरमू के बेटे को गोद में लेकर चोट्टि बोला, "ओः, हरमू आकर देखेगा कि उसका बेटा कितनी बातें करता है। जड़ छोड़ गया है।"

"कब आयेगा ?"

"अब आयेगा।"

तीरथनाथ में आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गया। अब वह उस रास्ते घूमने न जाता। गाँव में सब लोगों को वह संभावित रूप से आक्रामक लगा। छगन आदि के साथ वह अब किचकिच न करता और रेल से कटने के संकट से बचने पर घर पर जो नारायण भगवान की पूजा हुई, उसका प्रसाद छगन की टोली में भेजा।

यह पहली आश्चर्यजनक घटना थी। छगन बोला, "महाराज, मरने-वाला नहीं है रे चोट्टि, नहीं तो चंगा कैसे हो गया ?"

"भूत के डर से।"

"किसका भूत ?"

चोट्टि ज़मीन पर थूककर बोला "उसे हमेशा भूत दिखायी देते हैं। मैं उसे मार रहा हूँ, इसी डर का भूत उसे दीखता रहता है।"

"जो भी हो, लड्डू और सत्तू बहुत-सा दिया है।"

"खा ले।"

दूसरी आश्चर्य की बात पानी को लेकर हुई।

सबको बड़ा ताज्जुब हुआ कि फिर चुनाव आने के पहले परिगणित जाति के विधान-सभा सदस्य चोट्टि में आये और उन्होंने घोषणा की कि चोट्टि की जल्दी-जल्दी बढ़ती जनसंख्या की बात सोचकर यहाँ एक स्वास्थ्य-केंद्र खोला जायेगा। जल्दी ही। सबको उस स्वास्थ्य-केंद्र का लाभ मिलेगा। उसके बाद बताया कि इस जगह पानी की तकलीफ़ है। इसलिए छगन के टोले और चोट्टि के टोले के बीच में एक बड़ा सरकारी कुआँ बनेगा। वे जोरदार भाषा में बोले, "पता है, उच्चवर्ग के लोग इस तरह संकीर्ण विचार वाले हैं, छुआछूत में ऐसा विश्वास रखने वाले हैं कि सरकारी कुएँ से भी आदिवासी और परिगणित जाति वालों को पानी नहीं लेने देंगे।" वह इस बात को भी बता गये कि ये उच्च वर्ग के लोग असीम प्रतिक्रिया-वादी हैं और जवाहरलाल के नेतृत्व में भारतवर्ष की उन्नति के मार्ग में रोड़े हैं। किन्तु आदिवासी और परिगणित लोगों को याद रखना चाहिए कि उसे चुनकर उन्होंने अपनी सुबुद्धि का परिचय दिया है। इसीलिए

स्वास्थ्य केंद्र और कुआँ बन रहे हैं। फिर भी चुनाव में जीतने पर वे चोटिट तक कच्ची सड़क को पक्की करवाकर चोटिट को गतिमय जीवन में जोड़ देंगे। यह सब कहकर छमन की बहन के नाती को गोद में लेकर और प्यार करके वे ट्रेन पर चढ़ गये।

और भी आश्चर्य की बात हुई कि स्वास्थ्य केंद्र भी बना और कुआँ भी खुदा। कुआँ देखने से ही पता चलता था कि गर्मियों में पानी सूख जायेगा। फिर भी वह उनका अपना कुआँ था। छमन और चोटिट आदि बहुत ही खुश हुए और छमन आदि नये कुएँ की जगत पर बैठ 'रामा हो रामा हो' जातीय गान गाते और खुशी मनाते रहे।

तीरथ ने हरबस से कहा, "छोटी जात के लोग छोटी जात की ही भलाई देखेंगे। इसी से कुआँ खुदवाया।"

"अरे, वह चुनाव में जीता तो अपने लिए। बंजर जमीन का दखल लेकर कैसा हंगामा किया! अब तो जमीन पर खिरचिटा घास उग रही है। एक टुकड़ा बंजर जमीन के लिए कांग्रेस को नुकसान पहुँचाया।"

"फिर अगली बार भी तो चुनाव आयेगा।"

"तब और कोई गड़बड़ खड़ी करेंगे? बस तब आप प्रतिपक्ष बन जायेंगे। कह सकेंगे, अंचल से कांग्रेस को हटा दिया।" हरबस खुश हो रहा था और कह रहा था, "फिर आप बन जायेंगे कमनिस। जो कांग्रेसी नहीं है वह कमनिस है। आपको जेहल में ठूँस देंगे।"

"यह सब तुम क्या कह रहे हो? प्रतिपक्ष क्या होता है? यह सारी बातें तो मैंने अपनी जिन्दगी में कभी नहीं सुनीं।"

"यह क्या, आप अखबार नहीं पढ़ते?"

"अखबार? क्यों, अखबार क्यों पढ़ूँ?"

"देश-विदेश की खबरें जानेंगे।"

"न-न, वह सब फैशन मैं नहीं करता।"

"तब ट्रांजिस्टर क्यों चलाते हैं?"

"गाने सुनता हूँ।"

"खबरें नहीं सुनते?"

"खबरें क्यों सुनूँ? इन सबकी तुमको जरूरत है। मुझे जिस खबर की जरूरत है, वह मुझे घर बैठे मिल जाती है।"

"एस० एस० ए० ठीक ही कह रहा था। आप जैसे लोगों की ही वजह से इंडिया पिछड़ा हुआ है।"

"क्या कहा? मैं समझा नहीं।"

इसके बाद की घटना बड़ी आश्चर्यजनक थी। एक शाम को हरसू,

चड्ढा की बस से उतरा। चोट्टि ने देखा कि गाँव के सारे औरत-मर्द, लड़के-बच्चे इकट्ठा होकर उसके घर की ओर आ रहे हैं। उसने समझ लिया कि कुछ मुसीबत आयी है। लेकिन भीड़ के घर के पास आते ही एक आदमी भागता हुआ आगे बढ़ रहा है। सामने आते ही चोट्टि चिल्ला उठा, "हरमू !"

बहुत शोरगुल शुरू हो गया। माँ, बहू, पिता—सबकी बात समाप्त होने पर हरमू बोला, "अच्छी तरह रहता था, काम करता था, इससे चार महीने पहले छोड़ दिया। उस अफसर ने काम किया, अर्जी दी, नहीं तो न होता। तमाम लोग, बहुतेरे मुंडा जेहल में हैं, तो पड़े हैं। क्यों हैं, यह भी भूल गये हैं। उनकी ओर से बात करने वाला कोई नहीं है।"

"कैसे आया ? बस का भाड़ा ?"

"जेहल में काम कराते थे। आने के समय मजूरी का पैसा न देते ? उसी से भाड़ा दिया।"

छगन चिल्लाकर बोला, "हम बस से उतरने पर उसे लेकर आ रहे हैं, अब हरमू घर में घुस गया है, हमें पहचानता ही नहीं। बाहर निकल, हम नाचेंगे, गान गायेंगे।"

"चोट्टि कहाँ है ?"

चोट्टि बाहर आकर हँसते हुए बोला, "कल सब होगा। आज वह राह का थका हुआ है। आज तुम छोड़ दो।"

"ना, मद पिये बिना नहीं जायेंगे।"

"धत् पगले, इतना मद कहाँ है ?"

" 'हाँ' कहो, मद आ जायेगी।"

" 'हाँ' कहा।"

"कहा न ?"

"कहा।"

"यह देखो।"

छगन, पारस, सना, डोनका—सभी ने बोतलें निकालीं।

"जिसके घर में जो था, वह लेकर निकला था ?"

"बिलकुल।"

हरमू की माँ मुरमुरे और मिर्चें ले आयी। हरमू की बहू ने पल-भर में सिर में तेल डाल बाल काढ़कर जूड़ा बाँध लिया था। वह प्याज़ ले आयी। कोयेल दुकान चला गया। बोला, "मिर्चों की बुकनी मिलाकर अरबी की तरकारी झूरी बेचता है। ले आऊँ।"

खुशी और शोर-शराबे में चोट्टि का आँगन लोगों से भर गया।

दूसरे दिन काम पर जाते हुए तीरथनाथ ने छगन के लड़के से कहा, "बिठुआ, चोट्टि का लड़का घर आया। उसमें मुंडा लोगों के साथ तुमने भी खुशियाँ मनायीं।"

"बहुत नहीं महाराज, थोड़ा मजा किया।"

"अपना जात-धरम पानी में डाल रहे हो!"

"नहीं महाराज!"

"जैसा समझो! अच्छी बात नहीं मानते, इसी से तुम लोगों का अभाव दूर नहीं होता।"

"रस्सी दीजिये, महाराज! घेरा बांध दूं।"

हरमू को लेकर चोट्टि दूसरे दिन सबेरे ही जमीन दिखाने गया।

"यह जमीन हम लोगों की है।"

"तीनों भाइयों की?"

हरमू पिता के पैर छूकर जमीन पर औंधा होकर लेट गया। थोड़ी देर बाद चोट्टि बोला, "रो क्यों रहा है? तू लड़का है न? पैर छोड़। काम पर चलेंगे।"

"चलो, मैं भी चलूं।"

"अभी जमीन से जो हो सके, कर। अब मुझसे नहीं होता। अब मन थोड़ी शान्ति चाहता है। अब झंझट अच्छा नहीं लगता।"

"अब मैं आ गया। तुम थोड़ा आराम करो न।"

"तेरी कमाई खाऊँगा?"

"कोई खाता नहीं है?"

"अभी मेहनत कर सकता हूँ, मेहनत करूँगा। तीर के खेल का अभी जुलूस उठा। जीत से रुपया मिलने पर और ले सकोगे।"

"जमीन तो बहुत है।"

"नहीं। बहुत जमीन कहाँ है?"

"कहते क्या हो, बंजर जमीन की कमी है?"

"मेरे जमीन लेते ही लाला को डर हुआ। लगा कि हमें जमीन का चस्का लग गया है। उसे लगा कि चोट्टि और भी कोई जमीन ले रहा है। बस तभी से जितनी बंजर जमीन है, लिये ले रहा है। बस उस फल के व्यापारी अनवर को जमीनें नहीं मिलीं।"

"खेती के लिए दे रहा है?"

"कभी देता है?"

"तब जमीन ली क्यों?"

"कम जमीन पर फसल होगी, ज्यादा लोग भूखे रहेंगे। उससे वह

करज दे सकेगा, और जो छुट्टा हैं, उनके रिश्तेदारों को वेगार में लेगा।"

"जेहल में वहुतों से वहुत वातें सुनीं। लिखत-पढ़त होने से क्या नहीं होता? कागज अदालत में जाकर पक्का करना पड़ता है।"

"नहीं तो?"

"नहीं तो वह कागज कच्चा रहता है।"

"अगर अदालत करने जायेंगे तो वकील धोखा देगा।"

"छगन या पहान को साथ लेने पर?"

"देखूं। पर मैं कहता हूं कि कुछ वरस देख लूं। जमीन तो कमजोर वीमार वच्चा देने वाली औरत है, वीमार धान वियाती है। तेरी मेहनत से उसकी ताकत वढ़ने पर, अच्छी फसल होने पर ही इस जमीन का कागज पक्का किया जायेगा। नहीं तो अनवर की जमीन लेने की कोशिश करूँगा और कागज भी पक्का करूंगा।"

"देखें। मैं तो आ गया हूँ।"

"हरमू! मैं वड़ी उमर का हो गया। अव मन शान्ति चाहता है।"

"और मुंडा लोग, छगन आदि भी घर आते-आते कह रहे थे कि उनके मन में भी आशा हो रही है कि अनवर की जमीन लेने की कोशिश करेंगे।"

"विचार तो वहुत अच्छा है। लेकिन होगा भी?"

वाद में सव सुन-सुना कर पहान वोला, "पता नहीं। पर यह देखता हूँ कि तू जो करता है, सव वही करते हैं।"

"क्या देखते हो?"

"मुंडा मद में मरते हैं, और रंगीन चीजें मोल लेते हैं। पहले मुंडा लोग इतनी मद नहीं पीते थे। तीज-त्योहार पर वनाते थे, पीते थे। अव सरकार का ताड़ीखाना है, खरीदकर भी पीते हैं। वीरसा भगवान का नाम मालूम है?"

"मालूम है।"

"वह हरमदेउ पहान नहीं मानता था। किन्तु एक अच्छी वात कही थी, मुंडा लोग मद नहीं पियेंगे।"

"वीरसाइत नहीं पीते!"

"अच्छा करते हैं। व-हो-त अच्छा करते हैं। तू पीता है, मैं पीता हूँ। अल्लम-गल्लम पियेंगे। यह क्या है? शरीर पानी-सा पैसा उड़ा देता है?"

"क्या कह रहा था?"

"यही कि तू जमीन लेने के वाद एक-एक कर आकर मुझे वताना, तव मैं भी ले सकता हूँ। कागज लिखा कर। मैं यह मौका देख रहा हूँ। सो हर एक से कह रहा हूं। हाँ, ले सकता है। फिर भरसक मेहनत करो। सना की

तरह आटा उबाल कर बाँस के खोल, टीन के डिब्बे में रुपये जमा करो। आकर मुझे हिसाब देंगे, किसने कितना जमा किया। मैं लिखूँगा। उससे देखूँगा कि थोड़ी अच्छी अकल आ रही है। तेरा ससुर, वह डोनका तो वज्रमूर्ख है। उसने भी यह बात सुनी।"

"पहान!"

"कहो।"

"एक बात मन में आ गयी है। तुम तो कुछ हिन्दी लिखना-पढ़ना जानते हो, गिनती भी आती है। दिन-भर काम-काज में कटता है। लेकिन शाम को तो मुंडा लड़कों को थोड़ा सिखाया करो!"

"सीखेंगे? सरकारी इसकूल में नहीं जाते?"

"सरकारी इसकूल में ये मुंडा जायेंगे? तब दिकू लड़के नहीं पढ़ेंगे, और छगन आदि के लड़कों के जाने पर भी मास्टर भगा देगा। कहेगा छोटी जात, छोटा काम करो, पढ़कर क्या करोगे? सो मुझे लग रहा है कि दिन बदल रहे हैं। पढ़ाई-लिखाई मुंडा नहीं करेंगे। सदर में मिशन में पढ़ना सीखकर लड़कियाँ मजदूरी का काम करती हैं। अब तो मजदूरी के काम में भी ज्यादा पैसा है।"

"वह सदर में है। यहाँ उनके शिवन-महादेव-कालि बलि देते हैं। बारह आने से ऊपर नहीं जाते।"

"सदर का हिसाब सदर में। किन्तु अकेला मुंडा लड़का थोड़ा सीख-कर हिसाब समझे। लिख भी सकता है?"

"लड़के आयेंगे?"

"यह उनके माँ-बाप देखेंगे।"

"हो सकता है। छगन भी जानता है।"

"वह अपने लड़कों को सिखाये। छगन के पास हमारे लड़के गये, या तुम्हारे पास उनके लड़के आये, चढ़ुवा, लाला—सब बातें करेंगे कि ये लोग और वे लोग एक होकर बलोया आन्दोल शुरू कर रहे हैं।"

"तू देख। तेरे कहने से सुन सकते हैं।"

"एक बात और है।"

"चावल दे रहा है?"

"हरमू के खेत के धान-चावल। कोई खाता नहीं। उसके आने पर धान कूटे गये। पहले तुम्हें दिये।"

पहानी बोली, "अब तो चिड़िया, खरगोश नहीं लाता?"

"मिलते कहाँ हैं? सब मार दिये गये हैं।"

अनवर को जमीन नहीं मिली। अनवर अन्त तक चोट्टि आदि से जमीन

खुदवाता और पपीते के पेड़, अमरूद के पेड़ लगाता। लेकिन मुंडा लोगों में जमा करने की आदत पड़ गयी। पहान की बहुत अधिक मेहनत से हरमू के बड़े लड़के सहित तीन लड़कों ने वर्णमाला पहचान ली। आसान जोड़ना-घटाना सीखकर आँवले के बीज गिनते थे। चोट्टि के लिए यही बड़ी बात थी। छगन भी विद्यादान के प्रति उत्साहित हुआ, लेकिन बहुत अधिक मार-पीट के कारण उसके छात्र भागते रहे। चोट्टि के बारे में नयी-नयी किंवदन्तियाँ फैलीं। अन्त में अकाल के साल श्रमदान के बदले खैरात मिलने की व्यवस्था होने पर खुद तीरथनाथ और हरबंस ने अफ़सर से कहा, "चोट्टि मुंडा को बुलवा लीजिये। वह भार लेकर काम कर लेगा। राह निकल आयेगी। कच्चे रास्ते की मरम्मत वे कर सकेंगे।"

"सिर्फ़ मुंडा ही क्यों?"

"और लोग भी चोट्टि की बात मानेंगे।"

चोट्टि के बारे में यह बात कहने के मानी थे कि वह यहाँ मुंडा और छोटी जाति वाले हिन्दुओं के निकट एक-सा महत्त्वपूर्ण है—यह मान लिया गया है।

अफ़सर ने पूछा, "लीडर है क्या?"

हरबंस ने कहा, "राजनीतिक लीडर नहीं है। लेकिन होशियार आदमी है। लालाजी की बात का तो पता नहीं, मैं तो उसे आगे रखकर काम करना पसन्द करता हूँ। पानी हो, गर्मी हो, ठंडक पड़ रही हो, चोट्टि सबको लेकर काम पूरा कर देगा।"

तीरथनाथ ने लम्बी साँस छोड़कर कहा, "हाँ।"

दिन-पर-दिन चोट्टि की उमर बढ़ती चली गयी। सोमचर की दूसरी शादी हुई, एतोया का ब्याह हुआ। चोट्टि की उमर उस दिन याद आयी जब कोयेल ने कहा, "दादा! मेरा सिर बहुत दरद कर रहा है, बदन मानो जला जा रहा है। अन्दर सब खिंच रहा है, और सब ओर अँधेरा लग रहा है।"

बारह

उस समय संध्या थी। चारों ओर अँधेरा उतर रहा था। वर्षा का समय था। चोट्टि नदी में धार गरज के साथ बह रही थी। 1970 का साल था। चोट्टि ने कोयेल को चारपाई पर लिटाने और सिर धोने को कहा।

कोयेल दोनों ओर सिर हिला रहा था और कह रहा था, "दादा, एतोया के कुछ अकल नहीं है, उसे देखो ।"

"चुप हो जा, कोयेल ! सिर पर पानी डाल रहा हूँ ।"

"सिर दुख क्यों रहा है?"

"बुखार उतरने पर आराम हो जायेगा ।"

"सब जैसे अँधेरा है ।"

"पानी पी ।"

पानी की उल्टी हो गयी और कोयेल सहसा 'दादा रे' कहकर चिल्लाया और बेहोश हो गया। अब चोट्टि को लगा कि वह बहुत असहाय है और उसकी उम्र तीन कोड़ी और दस हो चुकी है।

हरमू बोला, "अस्पताल ले चलें ?"

"वही करना होगा। लेकिन अभी सिर पर पानी डाल ।"

सिर पर पानी डालने से कमरे की जमीन भीगकर कीचड़ हो गयी। कोयेल को होश नहीं आया। चोट्टि ने अब शरीर से अपनी उम्र झाड़ फेंकी। बोला, "मचान काटो। छगन की ठंडी पड़ गयी बुढ़िया माँ अस्पताल से अच्छी हो कर आ गयी।"

"डाक्टर पैसा लेगा, बाबा !"

"मैं जा रहा हूँ। बहुत होगा तो पैसा दूँगा ।"

मुगरी रुलाई रोककर बोली, "बुखार सवेरे हुआ था। जबरदस्ती हाट गया था। बहुत रोका, पर नहीं माना।"

बेहोश कोयेल के पास मुँह ले जाकर चोट्टि बहुत परेशानी में बोला, "कोयेल, तुझे अस्पताल लिये जा रहा हूँ। तुझे अच्छा कराकर ले आऊँगा।"

मचान काटा गया। कोयेल को लिटाकर चोट्टि ने कथरी उढ़ा दी। कहा, "पानी उतर सकता है। उसे एक हाथ से दबाये रखना। अचानक होश आने पर चौंक पड सकता है, गिर जायेगा।"

मचान लेकर वे लोग निकले और सभल-सभल कर चले। चोट्टि के मुँह में बोली नहीं थी। स्वास्थ्य-केन्द्र उनके घर से डेढ़ मील दूर था। हरमू का लड़का हाथ में लालटेन लिये साथ में गया। चोट्टि की पत्नी ने पुकार कर कहा, "मैं चलूँ ?"

चोट्टि बोला, "नहीं, नहीं, घर पर रह ।"

डॉक्टर को उनके घर से बुलाना पड़ा। कोयेल की गरदन अकड़ गयी है, यह देखकर डॉक्टर का चेहरा उतर गया। वे बोले, "चोट्टि, कोयेल को बड़े अस्पताल में ले जाना होगा। मेरे पास कोई दवा, कोई इंजेक्शन नहीं है।"

"उसे क्या हो गया है ?"

"लगता है मेनिन्जाइटिस—गरदन-तोड़ बुखार—है।"

"उसमें आदमी बच जाता है ?"

"बड़े अस्पताल ले जाओ।"

लड़के चोट्टि की ओर देखने लगे। इस समय उनकी मानसिक घबराहट के प्रतीकस्वरूप बरसात होने लगी। चोट्टि ने पल-भर सोचा और कहा, "तोहरी के अस्पताल तो ले जाऊँगा, पर गाड़ी तो सवेरे है।"

"यह तो है।"

चोट्टि को मानो अचानक बिजली छू गयी हो। वह बोला, "तुम लोग उसे लेकर आओ। मैं जा रहा हूँ। देखो, झटका न लगे।"

"कहां जा रहे हो, बड़े आबा ?" एतोया बोला।

"मालगाड़ी रोक रहा हूं। अस्पताल तक जिस तरह जिन्दा रहे वैसी सुई-दवाई नहीं दे सकते, तो डाक्टर कैसे हो ?"

डॉक्टर जवान था और अभी तक लोगों के दुख-दर्द को समझता था। बोला, "दे रहा हूँ। तुम जाओ। मैं भी उसके साथ आ रहा हूँ। अस्पताल के लिए चिट्ठी भी दूंगा।"

चोट्टि स्टेशन की ओर भागा और उसने स्टेशन-मास्टर को पकड़ा। अन्त में असम्भव सम्भव हुआ। कोयेल मुंडा को लेने के लिए मालगाड़ी रुकी। गार्ड के कमरे में कोयेल को लिटाया गया। स्टेशन-मास्टर बोले, "तुम्हारे कहने पर यह काम किया, और कोई होता तो न करता।"

"हां महाराज !"

गाड़ी में बैठकर चोट्टि बोला, "हर घड़ी मालगाड़ी रुककर लाला को पहुंचाती है, अब कह रहा है कि तुम्हारे लिए रोकी है।"

गार्ड बोला, "तुम्हारे लिए भी तो रोकी।"

"जरूर, मैं यह नहीं भूलूंगा।"

"आदमी अच्छा है।"

"हां महाराज !"

तोहरी उतरकर वे अस्पताल गये। डॉक्टर को कागज दिखाकर कोयेल को भरती किया गया। देखते ही डॉक्टर बोले, "एक और महामारी का केस।" उसका चेहरा देखते ही चोट्टि का चेहरा उतर गया।

"बच जायेगा, महाराज ?"

"जाओ-जाओ, हमको काम करने दो।"

चोट्टि आदि बाहर बैठ गये और चोट्टि बोला, "हरमू, सुन।"

"क्या, आबा ?"

"तू और एतोवा चले जाओ।"

"अभी?"

"जाना तो होगा ही बाप! समझते नहीं, अब कोयेल नहीं उठेगा। डाक्टर का चेहरा देखकर मैं समझ गया।"

"देखें, क्या करता है।"

"दादा बिना कुछ सूझ नहीं पड़ता।"

बरसात होने लगी। राह देखते-देखते रात दुस्सह हो गयी। सबेरे चोट्टि को वार्ड के मेहतर से बहुत-सी बातों का पता चला। यह बीमारी बहुत हो रही है। अस्पताल में सात केस आये थे, कोई जिन्दा नहीं लौटा। अब चोट्टि का भाग्य है। बीमार कैसा है? जिन्दा है। बेहोश। डॉक्टर कोशिश कर रहा है।

दोपहर को कोयेल मर गया। दादा के सिवा यह और कुछ नहीं जानता था। माँ कह गयी थी कि दोनों भाई एक साथ रहेंगे। चोट्टि के मेले में जीतने पर यह भी नाचा था। डोनका की खुशामद कर एक कुर्ता हाट में खरीदा था। दादा क्या कहेगा, इसलिए उसे कभी पहना नहीं। पर खलाने में हरमू की माँ का दाहिना हाथ बनकर मेहनत करता था। हरमू के जेल जाने पर दो दिन तक कुछ खाया नहीं। मुसीबत के दिनों में दोनों भाई एक ही कपड़ा फाड़कर पहनते थे। सदा ही मुसीबत के दिन थे। अपने खेत के धान निकलते देखकर बोला था, "दुख के दिन बीत गये हैं न, दादा?" यह दादा के सिवा किसी को नहीं जानता था।

हरमू और सोमचर गाँव चले गये। मुंडा लोगों को लेकर लौटते-लौटते शाम हो गयी। रोते-रोते एतोवा सो गया। चोट्टि जागता रहा। मुगरी में क्या कहेगा? कोयेल के लिए रोने पर अगर कहे, यह तो मर गया। तो उसे अस्पताल क्यों ले गये?—तब क्या कहेगा? चोट्टि को नींद नहीं आ रही थी। याद भी नहीं रहा कि कल तड़के जागे थे, आज अभी तक आँखें एक बार भी नहीं झपकीं। कलेजे में बड़ी बेचैनी थी। चोट्टि को पता था कि कोयेल को समाधि दिये बिना उसकी आँखों में नींद नहीं आयेगी। उसके सामने अब बहुतेरे काम थे। सना आदि आ गये। डोनका बोला, "तू टरेन से चला जा। एतोवा भी जाये। हम ले आयेंगे।"

"ना, पैदल ही जाऊँगा।"

"बहुत समय लगेगा।"

"अब क्या जल्दी है? अब समय बचाकर क्या होगा?"

चोट्टि को बहुत शान्त देखकर सना बोला, "कलेजे पर पत्थर रख दिया गया है।" यह बात सुनकर चोट्टि मुसकराया और चटाई मांग लाकर

घर की छत की तरह किसी तरह छत बनायी। उसे कोयेल के ऊपर छा दिया। बोला, "मेह बरसने पर पानी बहकर निकल जायेगा नहीं तो भीगने से और भी भारी हो जायेगा।"

राह में पानी बरसने लगा। राह अँधेरी, पर जानी हुई थी। जानी हुई राह आज ख़तम ही नहीं हो रही थी। बिजली के प्रकाश में राह देख-देख भोर के लगभग वे गाँव पहुँचे। क्लान्त एकरस रुदन ने उनका स्वागत किया। घर में घुस कोयेल को उतारकर चोट्टि बोला, "बास आ रही है। दवाई की बास के ऊपर बास आ रही है। पहान को बुलाओ।"

नहलाकर और नये कपड़े पहनकर कोयेल मुंडा को नये खटोले पर लिटाकर मुंडा लोगों के श्मशान ले जाया गया। उसकी मृत देह के लिए चावल, पैसे, नया गमछा साथ में रखकर पहान की सहायता से उसे समाधिस्थ किया गया। घर आकर चोट्टि बोला, "तुम जाओ, अब मैं कोयेल के लिए रोऊँगा,। मुंगरी, तू बुरा मत मानना। अब तू मेरी बेटी है। लेकिन मेरी देह से मानो जान निकल रही है। बिना रोये मैं मर जाऊँगा।"

सब रो रहे थे। हरमू की माँ बोली, "मेरी ही उमर का रहा होगा, पर कभी भूल से भी कड़ी बात नहीं कही। किसी दिन घर के बाहर सोया नहीं, मेरे पकाये बिना खाता नहीं था। ऐसी बदरी में तो सियार भी नहीं निकलता, वह कैसे श्मशान में लेटा है?"

रोते-रोते वे सो गये। चोट्टि को नींद आने में अब भी विलम्ब हो रहा था। लगता था कि अब उससे कुछ न हो सकेगा, कोई भी काम नहीं। बहुत उमर हो गयी थी। अब याद आया, बाप ने मरते समय कोयेल से कहा था, अनाथ तो नहीं हुआ? दादा है न? अस्फुट स्वर में बोला. "बड़ा भरोसा किया था। दादा, तुझे बचा न सका।" उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े। बाहर बारिश की आवाज थी। समाज के आगे श्मशान में पत्थर लगायेगा, इस आशय की बात चोट्टि ने अस्फुट स्वर में कही। कोयेल अब उसके बहुत समीप था। वर्षा के समान ही घन और सिक्त, और चराचरव्यापी। "तू सोच मत कर। एतोया, मुंगरी—सबको कलेजे से लगाकर रखूंगा," चोट्टि ने कोयेल से कहा। "जमीन जितनी हरमू और सोमचर की है, उतना ही एतोया का उस पर हक है," चोट्टि ने फिर कहा। अब सहसा सुनायी पड़ा किसी का ऊँ-ऊँ-ऊँ मौन रोना, किसी का ज़ोरों से रोना। समझ में आया, बड़ी आशा के साथ चोट्टि ने दरवाज़ा खोला, कोयेल आया है?—बुड्ढा कुत्ता घर में घुस आया। बरसात में भीग गया था। चोट्टि ने कुत्ते को प्यार किया और सहसा बच्चों की तरह

सो गया। दूसरे दिन सवेरे धरती पर उजली धूप फैली थी। समय पर नींद टूटने पर बाहर खड़े होकर पेड़ों के नहाये पत्ते, उजली धूप देख कर चोट्टि का कलेजा फट गया। घर के छप्पर के बाँस को दोनों हाथों से पकड़ कर वह हो-हो कर सान्त्वनातीत शोक से रोने लगा। कोयेल नहीं है—सारा स्वार्थीपन चोट्टि के परिवार में था, दुनिया-भर में कहीं भी स्वार्थीपन न था। बाकी सब जैसा का तैसा रहा!

बाद में पहान ने कहा था, "सीधे अस्पताल ले गया चोट्टि। लगता है हवा लग गयी। मुझे तो एक बार भी नहीं दिखाया।"

सना को चोट्टि ने बताया कि अस्पताल में बहुत लोग मर गये। उसके बाद बोला, "अब तो अस्पताल में जादू-मंतर दिखायी दिया। चेचक नहीं होती, हैजे में मरा आदमी जी जाता है। पहान ने मत कहना। वह मानता नहीं, इसलिए। तब लगता था कि अब देरी नहीं करना चाहिए।"

जादू की हवा की धारणा बेकार हो गयी, क्योंकि गरदन-तोड़ बुखार की महामारी में तीरथनाथ के गुमाश्ते का लड़का, स्टेशन-मास्टर की लड़की, खूबलाल की पत्नी मर गये। सना समझदार की तरह बोला, "बीमारी अच्छी नहीं है।"

कोयेल की समाधि पर उपयुक्त अनुष्ठान के बाद पत्थर स्थापित हुआ। चोट्टि बोला, "मेरे मरने पर वहीं मेरा समाज हरमू रखेगा। कोयेल के ही पास।"

समाधि की जगह सुन्दर थी। पियाल के पेड़ों से घिरी, छायादार।

अब चोट्टि मुंडा के जीवन की कहानियाँ पारलौकिक होती जा रही थीं। मुंडा स्त्री-पुरुष सारे अंचल के गाँव-गाँव में बच्चों को लोरियाँ सुनाया करती थीं कि एक चोट्टि मुंडा है। तीर मार कर उसने लाला को काबू में कर रखा है, उसके डर से गौरमेन ने कागज बनाकर उसे जमीन दी है। भाई को जब बीमारी हुई, तीर चलाकर चोट्टि ने रेलगाड़ी रोक दी। वह सब कर सकता है।

कोयेल की मृत्यु के बाद बहुत दिनों तक चोट्टि मानो सब से ज्यादा उदासीन रहा। सुगरी ने एक दिन रूखे बालों में तेल लगाया, धोने के कपड़े सोडे में उबाल कर नदी पर धोने गयी। हरमू की माँ आँगन में मिर्च-बैंगन-कुम्हड़ा देखने में लगी थी। हरमू, सोमचर और एतोया जमीन पर बैठे थे। हरमू की लड़की एतोया के लड़के को देख रही थी। एतोया की बहू रसोई बना रही थी। हरमू और सोमचर दोनों की बहुएँ बकरी चराने गयी थीं।

का बेटा गाय-बैल लेकर गया था। चोट्टि के यहां बहु… रंगवा कर बरसात में काम, सिर के लिए छाते बिनने होंगे, लालटेन … होगी, हल के दो मुट्ठे तैयार करना होंगे। वर्षा तो बीत गयी। फिर … पर निकलना होगा। लेकिन सब मानो हमेशा सूना-सूना लगता। यह सब करता।

गृहस्थी का काम बेरोक-टोक चलता। चोट्टि की पत्नी ने रात में कहा, मुंगरी के मन में अब अधिकारबोध हो रहा है। अपनी बात सोचती है।"

"कैसे ?"

"कहती है मैं मुर्गी पालूंगी, अंडे बेचूंगी, पैसे जमा करूंगी। अब से अपनी बात खुद सोचना पड़ेगी। वह नहीं। लड़का तो बुद्धू है।"

"जो चाहे करे।"

"उसे समझा कौन रहा है? एतोया की बहू।"

"क्या समझा रही है?"

"उसके बाप की जमीन है। वह बाप की छोटी बेटी है। भाई नहीं है, दोनों बहनों का हक है। इसलिए वहां जाकर रहना है।"

"तू या मैं उसे जाने को नहीं कहेंगे। खुद जाना चाहे तो जाये।"

"घर टूट जायेगा?"

"टूटे तो टूटे।"

"तुम कुछ न कहोगे?"

"न, कुछ नहीं कहूँगा। इतने दिनों तक सुख-दुख काटने के बाद अगर उसके मन में आये तो उसकी ससुराल है। इससे ज्यादा वह अपनी बात सोचती है।"

"दो महीने नहीं हुए।"

"तेरा मन दुखी होता है?"

"बहुत। मगर का मक्खन नहीं पी सकती, वह अच्छा लगता था।"

"अब सो जा।"

चोट्टि को लगा, कोयल न जाना, वहीं चला जाना तो अच्छा होता … मुंगरी की बातें सुनकर उसे अच्छा नहीं लगा। कहने से मुंगरी रुक जाये … इसका उसे विश्वास था क्योंकि हरमू की मां झूठ बात नहीं कहती, भले … बीच-बीच में जो कहे। मुंगरी के कामों में कोई दूसरा भाव नहीं दि… पड़ता था। मुर्गी पालने का काम बहुत दिनों से अपने ऊपर ही लिया … अंडे बेचकर पैसे पर रखती थी या नहीं, यह चोट्टि ने पूछा भी नहीं … एक दिन उसे ताज्जुब में डालते हुए एतोया ने पैसों से भरा एक …

डिब्बा लाकर दिया। कहा, "माँ ने और जमीन लेने को कहा है। इसमें माँ ने सत्रह रुपये दस आने जमा किये हैं।"

"माँ ने जमीन लेने को कहा है?"

मुगरी आकर खड़ी हो गयी। वह घास की रस्सी बट रही थी। मटके पर उस रस्सी को लपेटकर पानी छिड़कने से मटके का पानी ठंडा रहता। घास का छप्पर बनाने में डोरी लगती, कलसी की गेंडुली भी बनती है। घास बटते-बटते ही शान्त और सहिष्णु, थोड़ी वेदना से भरी आँखें उठाकर चोट्टि की बहू से बोली, "घर में तीन लड़के है। वे कह रहे थे और भी जमीन लेंगे।"

"कोयेल कह रहा था?"

"हाँ।" मुगरी ने लदे पशु की तरह सिर हिलाया और चोट्टि ने अब देखा, मुगरी की सफेद आँखों में आश्चर्यजनक रूप से गहरी वेदना थी। मुगरी बोली, हरमू की माँ की ओर देखकर ही बोली, क्योंकि वह बहुत जरूरत के बिना चोट्टि से सीधे-सीधे बात नहीं करती थी। मुगरी ने कहा, "कहते थे, मैं और दादा जब नहीं रहेंगे, कौन इस तरह प्यार के साथ रहेगा, यह किसे पता? हो सकता है कि अभाव के मारे घर छोड़ जायें। इसीलिए हर एक की जमीन रहने से फिकर नहीं रहेगी।"

"जो जमीन है उसमें भी फिकर नहीं रहेगी।" चोट्टि बोला।

"सोमनि, एतोया की बहू बाप की जमीन की बात कर रही थी।"

"मैं एतोया से बातें करूँगा।"

अब मुगरी ने बहुत साफ-साफ कहा, "एतोया को अकल नहीं है।"

"मैं कहूँगा।"

"उसने दादा को पकड़ रखने को कहा था।"

चोट्टि धीरे-धीरे बोला, "जमीन की तलाश करूँगा। अभी तो जमीन दिखायी नहीं पड़ती। अभी पैसा रहने दे। मुर्गी से पैसे जमा होंगे। जरूरत पड़ने पर ले लूँगा।"

हरमू की माँ ने डिब्बा अपने हाथों में ले लिया और मुगरी का हाथ पकड़कर दूसरी ओर ले गयी। चोट्टि समझता था कि मुगरी के मन में अभी भी बहुत शोक है। जोर से बोला, "मेरे रहते एतोया जो कहे वह न होगा। मैं उसके ससुर से बात करूँगा।"

सब कुछ सुन-सुनाकर पहान बोला, "बात बुरी क्या है? उसके ससुर परमा की चार बीघा जमीन एतोया न लेगा तो उसके भाई के लड़के ले लेंगे। तेरे 'ना' करने से एतोया नहीं लेगा। फिर बाद में उसके मन में दुख उठ सकता है कि जमीन उसकी हो सकती थी, कि मैं गेरनिहर हो सकता

[illegible]

मुंडा लोगों के मनों में [illegible] बहुत कम थी, लेकिन प्रथम विश्व-युद्ध के समय में [illegible] अखबार पढ़ने वाले मास्टर के नाम देने से एक का नाम पड़ा जर्मन मुंडा। उसने जर्मन नाम ही रहने दिया, और [illegible] का नाम [illegible] छोड़ दिया। तब जर्मन मुंडा ने कहा, "क्यों?

"पेड़ काट रहा हूँ?"

"तुम्हारी अक्ल से हम जिन्दा रह गये।"

"कैसे?"

"तुमने राह दिखायी। पहले हिम्मत नहीं होती थी।"

"कौन, बता तो?"

"पहले सोचा भी नहीं था कि मालिक का काम करते हुए दूसरा काम भी कर सकते हैं। तुम्हें आगे रखकर चोट्टि गांव ने राह दिखायी। अब सारे गांवों में सब मुंडा बेगार भी देते हैं, मालिक की खेती भी देखते हैं—स[illegible] देखभाल करते हैं। उसके बाद पेड़ काटने के काम में भी लग गये। त[illegible] रुपया रोज कमाई भी होती है।"

"खाली मुंडा हैं?"

"वे लोग भी कर रहे हैं।"

"अच्छा है।"

"हमारे कुछ लड़के ठेकेदार की लकड़ी चीरने के कारखाने में ग[illegible] वे और अधिक कमाते हैं—दो रुपया रोज। ठेकेदार भी खुश है, [illegible] आदिवासी कामचोरी नहीं जानते। हम भी खुश हैं।"

इससे चोट्टि को बहुत खुशी हुई और कोयल के लिए जो बहुत[illegible] दुख था वह कुछ कम हुआ। जर्मन मुंडा बोला, "तुमने और [illegible]

दिखायी। हमारे भागन मुंडा और नागु मुंडा ने बजर जमीन ली है। कागज भी हो गया। हम भी उसी के सहारे आशा में हैं। जंगल के भीतर जमीन है।"

"देगा?"

"कहता था कि पाँच बरस के लिए दे सकता है।"

"उसके बाद?"

"हमें ही देगा। पर नये सिरे से जमा लेना होगा, और वैसी दरों में भी। जो भी हो जमीन उपजाऊ होगी।"

"ऐसा है?"

"अभी मालिक थोड़ा नरम है।"

"विश्वास नहीं है। फिर भी ले लो।"

"देखा जाये। तुमने हम लोगों के लिए बहुत किया।"

"मैंने क्या किया?"

"तुमने ही किया। तुम्हारे नाम पर भागन ने बहुत गाने बनाये हैं। किसी दिन ले जाऊँगा, सुनवाऊँगा।"

"सुनूँगा।"

कुछ महीने बाद भागन और नागु कुछ मक्का लाकर चोट्टि को दे गये। कहा, "हमारे खेत की फसल है।"

"तुम पागल हो। मुझे क्यों दे रहे हो?"

"तुम्हारे खाने से हमें अच्छा लगेगा।"

इसी तरह चोट्टि की उम्र तीन कोड़ी और बारह हो गयी। एतोया का ससुर मर गया, इसलिए चोट्टि उस गाँव में गया। मुखरी को समझा-बुझाकर अब उसने एतोया को वहीं भेजा। कहा, "अब उसे जाना होगा। उसकी बहू क्यों बाप की जमीन से वंचित हो? जब जैसी हालत हो तब वहाँ वैसा काम करना चाहिए। नहीं तो आदमी बुद्धू बन जाता है।"

एतोया बहुत कातर हो गया और चोट्टि से बोला, "मुझे दूर हटाये दे रहे हो, बड़े आबा? मेरा बेटा तुम्हारी छाँह में बड़ा नहीं होगा?"

चोट्टि प्यार से बोला, "पागल हो गया है, बेटा? तू मेरे कोयेल का बेटा है, तुझे मैं दूर हटा सकता हूँ? तू जहाँ रहेगा, वह मेरा घर होगा। चोट्टि गाँव के सिवा और कहीं भी जाने का ठौर नहीं था, अब जाने को एक जगह और हो गयी। तुम आओगे, मैं जाऊँगा। तेरे ससुर के भैंस भी है। वहाँ जाकर दही खाऊँगा।"

मुखरी किसी तरह जाना नहीं चाहती थी। अन्त में चोट्टि बोला, "तुम दोनों मासें जाओ। जाकर गृहस्थी ठीक कर आओ। घर में बहुएँ हैं, रांध

देंगी, खाने को दे देंगी।"

"रहेंगे नहीं।"

मुंगरी बोली, "रहेंगे नहीं।" लेकिन काम के समय वह और हरमू की माँ तीन रात रह आयीं। चोट्टि मुंडा की पत्नी और भौजाई होने के कारण उनकी खूब खातिर हुई। एतोया की सास बोली, "इस दामाद को लाने के लिए मेरा मन बड़ा दुखी था। इसके आने से इसके ताऊ आयेंगे। मुझे कितना पुण्य होगा। वह अब सबके सहारे हैं। तुम यहाँ परब पर आकर देखोगे कि उनके नाम पर कितने गान होते हैं।"

मुंगरी से उन्होंने रुक जाने को कहा, पर मुंगरी बोली, "घर छोड़कर नहीं रह सकती। वे एतोया की बड़ी माँ के राँधे बिना खा नहीं सकते, एतोया का बाप कह गया है कि घर कभी न छोड़ना। तुम जिसकी बात कहती हो, उसके दिन में एक बार देखने पर भी शरीर में जान रहती है। एतोया के बाप ने मरते वक्त कहा था, 'मुंगरी! तू मेरी बेटी हुई।' सो राँड़ औरत बाप-माँ छोड़कर रहती है?"

"लड़का यहाँ है।"

"रहे। आयेंगे, जायेंगे, देखेंगे।"

माँ और ताई के लौटने के समय एतोया रोने लगा।

शुरू-शुरू में आना-जाना खूब रहा। उसके बाद धीरे-धीरे एतोया के मन में नयी जगह बस गयी। जब खेती का काम नहीं रहता था, तब वह भी जंगल के काम के लिए आता था। लेकिन गाँव में जल्दी-जल्दी आना न होता। मुंगरी बीच-बीच में जाती लेकिन दूसरे ही दिन लौट आती। कहती, "वहाँ ऐसे नदी-पहाड़ में घर नहीं हैं, ऐसी हवा नहीं चलती, मेरी साँस फूलने लगती है, आँखों में नींद नहीं रहती।"

पर हरमू का छोटा लड़का जल्दी-जल्दी जाता। अपने चाचा से अधिक एतोया की ओर उसका खिंचाव हमेशा ज्यादा रहा था। एतोया का लड़का भी उसे बहुत प्यारा था। चोट्टि एक दिन एतोया का घर-द्वार देख आया। आकर घर पर कहा, "मुंडा जिस तरह सुख में रहने की बात सोच सकता है, उस तरह के सुख में एतोया है। जमीन उपजाऊ है, भैंस भी दूध देती है। उसकी सास बड़ी बेटी की जमीन पर है। उनके बीच कोई झगड़ा नहीं है। दही बेचने का पैसा भी एतोया को दे देती है।"

"मुंडा औरत दही बेचती है?" पत्नी ने पूछा।

"ग्वालों से सीख रही है। मुझे अच्छा लगा। जब जो काम करने चले, तब वह काम करना ही होगा।"

"एतोया बहुत कोमल स्वभाव का था। उस पर कोई खफा तो नहीं

होगा ?"

"न-न, मेरे नाम पर बड़ा आदर मिलता है। परब में, पूजा में उसे ही आगे रखकर सब लोग सारे काम करते हैं।"

"बहू यहाँ हमारी छाया में थी।"

"काम तो करती थी। सब करती थी। पीठ पर बच्चे को बाँधकर एतोया को घाटी में जाती थी। हाट जाती थी। दिकू लोगों ने शायद सीखा होगा, मेरे पाँवों पर जल छोड़कर धुला दिया था।

"अच्छा अच्छा ही होता है। पर घर सूना हो गया है। वह बाप की तरह टुइला बजाकर खूब गाता था। हरमू का बेटा भी वैसा नहीं है।"

"हरमू की माँ! मुंडा लड़का अखाड़े में नाचे, टुइला बजाकर गाना गाये, अब क्या वैसे दिन रह गये? मुंडा जीवन में जो रीति-रिवाज थे, अब सब परब-पूजा तक रह गये हैं। तू मेले में कैसी नाचती थी।"

"खूब! बूढ़ा मानुस करे तमाशा।"

"मैं तो तुझे बूढ़ी नहीं समझता।"

"धत्, मेरी कमर का दर्द नहीं जाता।"

"बाघ की चर्बी तो रखी है।"

"थोड़ी-सी है। तुम जिस तरह सबको बुला-बुलाकर दिया करते थे, अपनी जरूरत के वक्त यही होना था।"

"तब क्या पता था कि कहाँ युद्ध होगा। और यह आजादी मिलेगी। जीप पर शिकार करके बाघ निर्वंश कर दिये।"

"हाँ, मास खाने का सुख गया। खरगोश, हिरन नहीं रहे।"

"कुछ नहीं रहा।"

"इसी में दुःख होता है। हमारे नाती ऐसे समय में जवान होंगे, जब उन्हें कुछ नहीं दिखा सकेंगे, यह हम भी देख रहे हैं।

"यह नदी, पहाड़, जंगल देखेंगे।"

"जंगल! तुम लोग पेड़ काट रहे हो न!"

"आजकल लकड़ी की बहुत जरूरत है।

'किसलिए?"

"आजकल गाँवों से टाउन-शहर के बीच तमाम जगह बिजली बत्ती बन रही है। तमाम घर बन रहे हैं। बहुत-से दरवाजे-खिड़कियाँ-खाट और बहुत-सी चीजें बन रही हैं।"

"लोगों के पास पैसे बहुत हैं।'

"जिनके पास पैसे हैं उनके पास है। हम तो मेंगाटी पहनेंगे, घाटो खायेंगे, दूर से देखेंगे, चले आयेंगे। हम लोगों का कुछ नहीं होगा।'

"छोड़, जिन्दा तो हैं।"

"जिन्दा तो रहना होगा। सारे मुंडाओं के मर जाने पर दिकू लोगों को कोई दुख नहीं होगा। वे तो खुश होंगे। हम इतना सब झेलकर भी मरते नहीं, इस बात पर उन्हें ताज्जुब होता है। सोचते हैं कि हम पत्थर के बने हैं। दे, थोड़ा-सा सत्तू सान दे। सना की माँ उस वक्त बच गयी थी, अब लगता है मरेगी। बुखार है, हाथ-पाँव खूब फूल रहे हैं। जरा जाऊँ।"

सना की माँ कुछ दिन बाद मर गयी। उसे समाज देना हुआ। इस समय चोट्टि अंचल में बिजली-सी कौंध गयी। ट्रेन से स्पेशल पुलिस आयी, चोट्टि में उतर पड़ी। किसी की खोज में वे सारे अंचल में फैल गये और स्टेशन-मास्टर को जरूरी निर्देश देकर स्टेशन पर पुलिस के दो आदमियों को नियुक्त कर चले गये। चोट्टि में कोई भी खबर छिपी न रहती। सब कानोंकान बातें करते। स्टेशन-मास्टर ने चोट्टि और छगन को बुलवाया। "दो बाबू लड़के दुर्गापुर से इस ओर भाग आये हैं। पुलिस सोचती है कि वे दोनों या एक भागकर इस ओर आये है। उस तरह का कोई दिखायी पड़ने पर पकड़ा देंगे।"

"उन्होंने क्या किया है, महाराज ?"

"अरे, वे नक्सल लड़के हैं।"

"क्या नाम बताया, महाराज ?"

"नक्सल।"

छगन बोला, "मालूम है, मालूम है। वे मालिक-जमींदारों को मार डालते हैं, बंदूक छीन लेते हैं, पुलिस से लड़ाई करते हैं। उस दिन बैंगन बेचने थाने पर गया था। उन लोगों की बात सुन आया हूँ। किन्तु महाराज, वे तो यहाँ हैं नहीं। वह सब गड़बड़ तो दूसरी जगह हुई थी।"

"न-न, जो छिप सकता है वह पहाड़ों-जंगलों में छिप जाता है। पकड़वाने पर थाने से रुपये भी मिलेंगे। समझे ?"

"उनको पकड़ने के लिए पुलुस खड़ी है। बाप रे, बंदूक ! गोली चलाते ही आदमी मर जाता है।"

"पकड़ें या मारें, उससे तुम्हें क्या ? तुम दोनों अपने समाज के ऊपर हो। इसी से कहा। जंगल में भी तो जाते हो ?"

निकलकर चोट्टि बोला, "वे मालिक-जमींदारों को काटते हैं ? मारा है ? तुझे पता ?"

"थाने के सिपाही ने तो बताया है, बहुतों को मारा है।"

"कहाँ ?"

"मुझे क्या पता है ?"

"पकड़ने पर उन्हें मार डालेंगे ?"

"मुझे क्या पता ?"

चोट्टि बोला, "देश कितना बड़ा है, कुछ पता नहीं। तो सब जगह ही मालिक-महाजन है।"

"उन्होंने आकर हमारे लाला को क्यों नहीं मारा ?" यह अजीब-सी बात कहकर छगन घर चला गया। चोट्टि ने रास्ते में अपने नाती को देखकर कहा, "घर जा, मैं जरा श्मशान में बैठकर आ रहा हूँ।"

वह बीच-बीच में कोयेल की समाधि के पास जाकर बैठता था। आज भी गया। समाधि-क्षेत्र निर्जन छाया से आच्छादित था। वहाँ केवल बड़े-बड़े

के पत्थर पर पैर फैलाये बैठा था। देखने में मूरख-सा, आँखों पर चश्मा लगाये था। खाली पैर, शरीर पर पैंट और कुरता था। देखने पर लगता भी न था कि इसके लिए किसी मालिक-महाजन का सिर काटना संभव भी था। यह ठीक था कि पुराण को देखकर भी कौन कहता कि इसने नायब को मारा होगा। लड़का उसे देख चौंककर उठा और पल-भर में सावधान और मुस्तैद हो गया।

चोट्टि ने कहा, "वहाँ से उतरो।"

"क्यों ?"

"यह हम लोगों के श्मशान का पत्थर है।"

लड़का उतर गया।

"दूसरा कहाँ है ?"

लड़का कुछ नहीं बोला। चोट्टि को देखता रहा।

"कहाँ से आ रहे हो ?"

"कल रात से यहाँ हूँ। यह कौन-सी जगह है ?

"चोट्टि।"

"यहाँ से राँची कितनी दूर है ?"

"बहुत दूर।"

"एक बार पहुँच पाता . ।"

"स्टेशन पर पुलिस है।"

"पुलिस !"

"हाँ। जो देखेगा उसे पकड़ाने पर इनाम।

"समझा। तुम ?"

"मैं चोट्टि हूँ। चोट्टि मुंडा। तुमको पकड़ाऊँगा नहीं। किन्तु क्या करूँ ! यहाँ आये क्यों ?"

"मालगाड़ी से कूद पड़ा।"

"वह दूसरा आदमी कहाँ है ? दो थे ?"

"वह यहाँ नहीं उतरा।"

"यहाँ क्यों आये ? यहाँ कोई भी बाहरी आदमी नजरों में आ जाता है। क्यों आये ?"

"पुलिस मुझे देखते ही गोली मार देगी।"

चोट्टि को केवल यह लगा कि उसकी उमर बड़ी हो गयी है। एक आदमी को पकड़कर गोली खाने के लिए पुलिस के हाथों थमा दे, ऐसा संभव नहीं, उसी तरह उसको निरापद कहीं पहुँचाना भी संभव नहीं था। क्या करे ? चोट्टि मन-ही-मन सोच रहा था, और अन्त में मन में निश्चय करके बोला, "अँधेरा होने दो। तुम बैठो।"

"क्या करोगे ?"

"अपने घर ले जाकर रखूँगा।"

"उसके बाद ?"

"थोड़ा आगे बढ़ा दूँगा।"

"कहाँ ?"

"तोहरी होते हुए सदर के रास्ते पर। छिपाकर रखूँगा। लकड़ी की लारी जाती है, रोककर उस पर चढ़ेंगे।"

"राँची ?"

"हाँ।"

"तुम कहाँ जाओगे ?"

"काम है।"

चोट्टि ने कोयल की समाधि पर हाथ फेरा। मुंडारी में बोला, "फिर किसी दिन पास बैठूंगा, कोयल ! आज काम है।"

"तुम्हारे घर में और भी लोग हैं ?"

"हाँ।"

"वे अगर बता दें तो ?"

"कोई नहीं बतायेगा।"

शाम हुई। अँधेरा हुआ। चोट्टि ने लड़के को लाकर घर के पास बैठा दिया। घर जाकर हरमू को बुला लाया। हरमू बोला, "तुम क्यों जाओगे ? मैं उसे आगे भेज दूंगा।"

लड़के से चोट्टि ने कहा, "नारी पैसा मेनी । है ?"

"थोड़ा है।"

"कितना ?"

"दो-एक रुपया।"

चोट्टि बोला, "तुम मालिक-महाजन को मारते हो, जब भागना था तो उनका रुपया तो कुछ लेते !"

लड़का हँसने लगा। चोट्टि बोला, "हरमू, तेरे जाने पर तेरे बहू-बेटा बात पूछेंगे। तेरी माँ न पूछेगी। कभी नहीं पूछती। पुराण को बचाने के लिए उस दिन मैं रात को न गया ? किसी को पता है ?"

"यह बात तो ठीक है।"

"चल, घर चल।" लड़के से चोट्टि बोला, "सबके सो जाने पर मैं तुमको ले जाऊँगा। वहाँ तुम पत्थर पर सो जाओ।"

"कोई आयेगा तो नहीं ?"

"नहीं।"

"किन्तु ?"

"मैं कह रहा हूँ न ।"

"तुम क्या गाँव के प्रधान हो ?"

हरमू बोला, "इलाके के सारे मुण्डाओं के सरदार।"

चोट्टि बोला, "बहुत समझा, चलो। पुलिस के डर से पागल होकर भागे-भागे घूम रहे हो। उनसे यह सब कहने से फायदा ?"

लड़का बोला, "कोई नुकसान भी नहीं है।"

"तुम हिन्दी बोलते हो ?"

"बोलते-बोलते सीख गया हूँ। थोड़ा पानी पिला सकते हो ?"

"अभी नदी में पियो।"

वे चले आये। कुछ देर में सब सो गये। चोट्टि सोते हुए लड़के को बुला लाया। पत्नी ने बिना कुछ कहे-पूछे उसे बहुत मूल्यवान भात, बैंगन का भुर्ता और अचार दिया। उसने चोट्टि से सब सुन लिया था। बोली, "घर पर माँ नहीं है ?" उसके बाद कपड़े में बँधा बेस्वाद मकई का सत्तू और गुड़ लाकर दिया। बोली, "राह में खाना।"

वे लोग फुसफुसा कर बातें कर रहे थे। लड़के से चोट्टि बोला, "तुम थोड़ा सो लो। उस तारे के बीच आकाश में आने पर बुला लूँगा।"

लड़का सो गया। गले की हड्डियाँ उभरी हुई थीं। चेहरा मैला था। चोट्टि की समझ में नहीं आ रहा था कि यह लड़का सदर कैसे जायेगा ? पुलिस क्या तोहरी में ही है ? उसे पत्नी ने अक्ल दी। बोली, "तुम पार

कर मालगाड़ी बहुत धीमे चलती है। ऊँचे पर चढ़ती है। हरमू आदि ने तो कोयेल की बीमारी के मौके पर सना को उस पर चढ़ा दिया था।"

चोट्टि बोला, "वे तो भागे नहीं थे। अगर पकड़े जायें तो?"

वृश्चिक बीच आकाश में आ गया। चोट्टि ने लड़के को बुलाया। उसके बाद दोनों निकले। लालटेन लेने का काम नहीं था। वे दोनों अँधेरे में ही चले। चोट्टि बोला, "तुम लोग मालिकों का सर क्यों काटते हो? तुम पर जुलुम करते हैं?"

"न, तुम तो आदिवासी हो। आदिवासी और किसानों पर जुलुम करते हैं, यह तो जानते हो?"

"खूब जानते हैं। किन्तु 'तुम' क्यों?"

"यह हमारी लड़ाई है।"

"काहे के लिए?"

"जमींदार और महाजन को खतम करेंगे। जमीन तुम लोगों के पास रहेगी। सब नये सिरे से नया होगा। कोई किसी पर जुलुम नहीं करेगा।"

"बात तो अच्छी है।"

"तुम इसे मानते हो?"

"मानता हूँ। लेकिन जहाँ मालिक को मारते हो वहाँ मुंडा-अछूत जमीन पा रहे हैं? अब वे जमीन के मालिक हैं?"

"नहीं।"

"वहाँ क्या हो रहा है?"

"पुलिस गाँव में घुस रही है।"

"तुम लोग भी बहुत मर रहे हो?"

"बहुत।"

चोट्टि ने कहा, "यही तो बात है। जमीन की लड़ाई में मेरा लड़का हरमू जेहल गया। फिर भी तीर नहीं चलाया, क्योंकि वैसा करने पर पुलुस आकर मुंडा टोली जला देती। लाला के मरने पर दूसरा लाला आ जायेगा। यही सोचकर तीर नहीं उठाया।"

"पुलिस से लड़ना होगा।"

"यह सीधी बात है? तुम्हारे कहने से मैं लड़ूँगा? मैं जब समझूँगा कि यह लड़ाई हमारी भी है, तब लड़ेंगे। तुम तो दिकू हो। अपनी भलाई के लिए हमारा बीरसा भगवान गोरमेन के साथ लड़ा था। और देखो। पुलुस के साथ लड़कर जमीन कितने दिनों रख सकेंगे? गोरमेन के पुलुस रहती है, कचहरी रहती है, जेहल है, हमें जमीन नहीं मिलती।"

"सीधे-सीधे कोई न देगा।"

"लड़ाई की बात करते हो, सो पुलुस तुमको भी पकड़ रही है। तुम भी भाग रहे हो, यहाँ जो मालिक को मारता है, उसे भी भागते देखता हूँ।"

"हमारी शायद वैसी ताकत नहीं थी।"

"वैसा न होने पर लड़ाई! उससे खाली पुलुस आ जाती है। टोली जला देती है, मारती है, जेहल ले जाती है।"

"सबको लड़ाई में शामिल होना पड़ेगा।"

"वह लड़ाई क्या होगी?"

"सबको समझाना होगा।"

"तुम अगर मर जाओगे, तो कौन समझायेगा?"

"और 'हम' आयेंगे।"

"जाते क्यों हो? रहो, घर में छिपा लेंगे, मुंडा बन जाओ।"

"मैं सांउतालों को पहचानता हूँ।"

"उन्होंने हूल उठाया था।"

"तुमको मालूम है?"

"चोट्टि मुंडा को सब पता है।"

"तुम बहुत अच्छे आदमी हो।"

"सब यही कहते हैं। किन्तु अच्छे होते तो लँगोटी क्यों पहनते, क्यों दोनों बखत भात नहीं मिलता, क्यों इतनी तकलीफ है, बताओ तो?"

"हर जगह ऐसी ही बात है।"

"दिकू लोग हमारा दुख नहीं समझते।"

"हमने समझा है।"

"इसी से भागे-भागे घूम रहे हो?"

"इसी से।"

"जो आदमी हमारा दुख समझता है, उसे पुलुस सताती है। हमने तो जनम-भर यही देखा है।"

लड़का सुन्दर मुसकराहट से बोला, "पुलिस का काम ही यही है।"

"अब और बातें नहीं। यहाँ गाँव है।"

वे चुपचाप चलने लगे। लड़का चोट्टि के पीछे-पीछे था और चोट्टि बताता चल रहा था, यहाँ ऊँचा है, यहाँ गड्ढा है, यहाँ समतल जमीन है—लड़का उसी के अनुसार चल रहा था। नोहरी के बाद धीरे-धीरे वन की राह पर आ गये। चोट्टि ने कहा, "यहाँ छिप जाओ। उधर से लारी आयेगी। हाथ दिखाकर चढ़ जाना।" फिर चोट्टि ने कमर से एक थैली निकाली। बोला, "इसे रख लो, दो रुपयों की रेजगारी है।"

लड़के ने बड़े ताज्जुब के साथ वह ले ली और रुपये निकालकर थैली

चोट्टि को देकर बोला, "यह नहीं लूँगा। अगर पकड़ा गया, पकड़ा तो शायद जाऊँगा ही, तो यह देखकर क्या सोचें, पता नहीं।"

"कौन जाने पुलुस ने सारी लारियों को होशियार कर दिया है या नहीं। पर ऐसे समय लालसिंह, जमादारसिंह लारी चलाते हैं। नशे में घुत रहते हैं। दो-चार रुपये देने पर वे आदमी को चढ़ा लेते हैं, मुझे पता है।"

"जा रहे हो ?"

"हाँ, अब जाना होगा। वह जागती रहेगी।"

लड़का वय के अनुरूप आवेग से बोला, "तुमने मुझे बचाया क्यों ?"

"बचाया या नहीं—यह अभी भी पता नहीं। सदर पहुँचने पर कहना।"

"क्यों ?"

"यों ही, पुलुस कुत्तों की तरह पीछा कर मार देगी। माँ के बच्चे !"

"तुम बहुत अच्छे आदमी हो। मुझे पकड़वाने पर...।"

"ऐसे रुपयों पर थूकता हूँ। उससे मैं लाला बन जाऊँगा ?"

"तुम्हारे बारे में कुछ भी मालूम नहीं हुआ।"

'क्या जानना चाहते हो ?"

"शायद लड़ने वाले हो।"

"तुमने जिस लड़ाई की बात कही, वह अच्छी है लेकिन होने वाली नहीं। पुलुस के बराबर हों तभी तो लड़ेंगे। नहीं तो, अन्त में तो पुलुस ही जीतेगी। मैं तो यही देखता हूँ।"

"जो काम ठीक लगता है, उसके लिए लड़ना ही होता है।"

"हाँ, यह बात भी ठीक है। अपने लिए सच्चा रहने के लिए तो ठीक ही है।"

"सो तुम समझो। समझते हो न ?"

"खूब। उस तरह के लोगों की बात जानता हूँ। धानी मुंडा चाईबासा जाकर मर गया। न जाते तो जिन्दा रहता। दुखिया ने नायब को काट डाला।"

"कुछ पता न चला। फिर आऊँगा।"

"मैं चलूँ।"

चोट्टि चला आया। मन में बड़ी फ़िकर लगी रही। आश्चर्य था। दिकू क्यों आदिवासियों की भलाई के लिए पुलिस की मुसीबतें उठा रहा है ! बस, लड़के का चेहरा याद आता है। बीच-बीच में मुँह उठाकर वह तारे देखता था। जानी हुई राह पर चलता रहा। आज का दिन बहुत

अजीब है। चोट्टि दुखी होकर विस्मय में डूब गया। जब घर पहुँचा तो वृश्चिक और नीचे उतर गया था। पत्नी ने दरवाजा खोल दिया। उसके चेहरे पर और उसकी आँखों में घबराहट थी। बोली, "चला गया? लारी पर चढ़ा दिया?"

"ना, मैं चढ़ाता तो लोगों की नजर में आ जाता।"

"तब?"

"चले जाने को कह दिया।"

"राँची जाये तो बाँचो—तभी बचे।"

"पानी है?"

"उधर है।"

हाथ-पाँव धोकर चोट्टि लेट गया। बोला, "आदिवासियों की भलाई करने आया हुआ दिकू पुलिस के पीछा करने पर भागे, ऐसा नहीं मालूम था।"

"कहाँ का लड़का था?"

"किसी और देस का होगा।"

"वे लोग पकड़ कर क्या करेंगे?"

"शायद मार डालें।"

"सोच नहीं सकते।"

"सो जाओ।"

"तुम्हारा तो कुछ न होगा?"

"ना-ना, अब तू सो जा। किसी को पता तो नहीं है?"

"ना, हरमू मुनस पूछ रहा था। उसे भी बहुत देर हुई।"

अन्त में चोट्टि को नींद आ गयी। बहू भी सो रही। सवेरा हुआ।

दूसरे दिन वे लोहरी छोड़ चाई के जंगल में लकड़ी काटने गये। लकड़ी की कटाई चल रही थी, सहसा उन्होंने एक अपरिचित स्वर सुना, 'हाल्ट!'

जो जहाँ था, खड़ा रहा। इस शब्द से सब परिचित थे। पुलिस किसी घटनास्थल पर आकर एकत्रित लोगों से कहती--हाल्ट।

वे पत्थर-से खड़े रहे। उसके बाद एक अद्भुत और अविश्वसनीय दृश्य दिखायी पड़ा। तीन पुलिस वाले एक लड़के को घसीटकर लिये जा रहे थे। लड़के का चेहरा कुचला हुआ और बदन लड़खड़ा रहा था। कल आँखों पर चश्मा था, आज नहीं था। चोट्टि ने अपना मुँह दबा लिया। लग रहा था कि कोई कलेजे पर हथौड़े चला रहा हो। उसे लिये जा रही थी, पुलिस लिये जा रही थी। सहसा, धक्का देती पुलिस न हो जा रही थी

कि वह चोट्टि की आँखों की ओट हो गया। गोली की आवाज सुनायी पड़ी।

होश आने पर अब सभी दौड़ने लगे। चोट्टि हिल नहीं पा रहा था, आँखें टकटकी लगाये हुए थीं। उसके बाद पुलिस वाले लौटकर आये। लड़के के पैरों में रस्सी बांधकर घसीटे ला रहे थे। घसीटकर ले जा रहे थे। चोट्टि के कलेजे में चोट-सी लगी, चोट लगी, सदा के लिए घाव हो गया। तो वह लड़का भाग न सका।

चोट्टि लौटकर उन्होंने सरकारी विवरण सुना। स्टेशन-मास्टर बोले, "एक आदमी सदर जाने के रास्ते के किनारे झाड़ी में छिपा था। उसके पास बम और पिस्तौल थे। वह लेकर पुलिस को मारने चला। पुलिस ने बाक़ायदा लड़ाई कर उसे मारा था। उसका दूसरा नक्सल कहाँ गया, पता नहीं।"

सना बोला, "ना-ना, उसने तो पुलुस को नहीं मारा था।"

"किसने कहा?"

"हम लोगों ने देखा था।"

"जो देखा था वह भूल जा बापू! यह सब तू जंगली बुद्धि से नहीं बूझेगा। पुलिस जो कहती है, वही कह। अगर भला चाहता है तो।"

ठेकेदार ने चोट्टि आदि को जोरों से डांटा। कहा, "इसकी कोई बात मत करना।"

चोट्टि की पत्नी खबर सुनकर रो पड़ी। चोट्टि ने हरमू से कहा, "बहू या लड़के पूछें तो कह देना कि कोयल का दुख हो रहा है।"

उस दिन चोट्टि खा न सका। लड़के की बात सोचते-सोचते उसका कलेजा फट पड़ना चाहता था, जानकारी हृदयविदारक थी। किसी से बात करने पर जी हलका भी नहीं हो सकता है। हरमू भी बहुत गुमसुम बना रहा। बाप से बोला, "किया कुछ, कहते हैं कुछ और। ऐसी पुलुस को लड़का मारता था तो अच्छा ही करता था। कैसा बम और कैसी बंदूक! कुछ तो नहीं था।"

"चुप हो जा, हरमू! अभी और होगा।"

भागे हुए लड़के की तलाश में पुलिस भागदौड़ करती रही। उसका पता नहीं चला। दारोगा चोट्टि से कह गये कि अजनबी लड़का देखते ही थाने पर खबर दो। एक सौ रुपये बख्शीश मिलेंगे।

तीरथनाथ बोला, "देखना तो पकड़ा देना, बापू! यह लोग 'हाँ' कहने का वक्त नहीं देते। महाजन देखते ही मार डालते हैं। कहाँ छिपा है, पता नहीं।"

"हम उसे कहाँ देखें ?"

"ओह, देखने पर पकड़ा देना। नक्सल लड़का है। विष की पुड़िया।"

मना सहसा भोला बन गया और बोला, "महाराज! यह क्या सुना कि तुम्हें साँप ने काटा था और काट कर मर गया!"

"बिना जहर का साँप था रे! जूते से दबाकर मार दिया।"

"हमने सुना कि गेहुँअन साँप था और तुम्हें काटकर खुद मर गया। यह बड़ा गप्प है। जाने दो, तुम्हें तो कुछ नहीं हुआ?"

"ना, ना, होना क्या?"

बाद में तीरथ को लगा कि मना शायद मजाक बना गया। गुमाश्ता से कहा, "हरबंस ने उन लोगों को सिर चढ़ा लिया है। कहता था, मुझे गेहुँअन साँप ने काटा और खुद मर गया। मेरे खून में क्या जहर है?"

कुछ दिन बाद ही पुलिस ने फिर तलाश शुरू की। और भागने वाले ट्रेन से ग़ायब हो गये। पुलिस बन्दोबस्त की घोषणा का कागज स्टेशन में पेड़ पर चिपका गया और शरारत से बूढ़ी मोतिया ने उस कागज पर पान का पीक थूक कर स्टेशन-मास्टर से डाँट खायी। कोई भी पकड़ा नहीं गया। लेकिन इसका नतीजा यह हुआ कि अंचल में एक दबा हुआ तनाव आ गया। पुलिस की गोली से मारे जाने और आमने-सामने के संघर्ष के सरकारी वक्तव्य को लेकर अब सब लोग बहुत बातें करते थे। बार-बार पुलिस ने देखा कि उनके मन में उस बीती घटना ने अब जैसे और अधिक दिलचस्पी जगा दी है। लेकिन ऊपर से वे निर्लिप्त बने रहते। इसे देख कर स्टेशन-मास्टर भी बोले, "यह लोग बड़े धोखेबाज हैं।"

तेरह

इस समय चोट्टि के तीन बीसी और बारह बरस के जीवन में फिर चुनाव आया। लड़के की हत्या और पुलिस द्वारा जंगल की खोज-बीन ने जिस तरह चोट्टि जैसे स्थान में बाहरी दुनिया की अशान्ति ला दी, उसी तरह बाहर के दूसरे ढंगों ने चोट्टि अंचल पर आक्रमण किया। इस सारी बरबादी में चोट्टि अंचल के मनोजगत के भूस्तर का स्वरूप भी बदलता गया। बाहरी दुनिया के ढंग तरह-तरह तरीके के थे। जैसे कि दूर पर सोन नदी के मार्ग पर बॉक्साइट की प्रस्तावित खान चालू हो गयी और तोहरी से सोलह मील दूर चामा में एक अलमोनियम का कारखाना शुरू हुआ। खान और

की वात से सहसा हरवंस, तीरथनाथ—सभी चेते। स्टेश
दुकान पर उनकी ऊँचे स्तर की कान्फ्रेंस हुई। वात शुरू हुई।
वड़ी चीज़ शुरु होने से लेवर पर खिचाव पड़ेगा। ज़्यादा रुपयों के लिए
टाफट चले जायेंगे। तीरथ वोला, "तुम तो वहुत कहते थे कि वेगार
चीज़ है। अव क्या हुआ? देखो, पुरानी चीज सवसे अच्छी निकली।
ट के आस-पास ही क्यों, चोट्टि मे ही अगर कोई कारखाना वने,
समें दस रुपये मजूरी दें, वे भी हमारे वेगार न ले सकेंगे। नजर डाल
र देखें कि फिर हमें वेगार देंगे। यही जमीन रखने में मजा है।"

"मैं तो उल्टी वात सोच रहा हूँ।"

"क्या?"

हरवंस ने खुमारी भरी आँखों से कहा, "फैक्ट्री होने से एक के वाद एक मकान वनेंगे। खोसी ईंटें अव लाखों लगेंगी।"

"उसमें उल्टी वात क्या है?"

"चारों ओर अगर एक के वाद एक फ़ैक्ट्रियाँ वनती जायें, तो वाहरी हवा यहाँ भी घुस आयेगी और ये सारे लोग भागेंगे। भाग गये तो आप कुछ कर सकेंगे?"

"वह कैसे होगा?"

"क्यों नहीं होगा? मेरे लिए चोट्टि मुंडा है। वह अगर कहे कि यह काम करेंगे महाराज, तो काम ज़रूर होगा। चोट्टि तो उस हरमू केस के वाद से आपका काम नहीं करता।"

"लेवर भाग जाने से तुम्हें मुश्किल न होगी?"

"लालाजी, हरवंस चड्ढा पंजाव का लड़का है। पंजाव का आदमी वक्त के साथ चलना जानता है। मेरे वावा खेती करते थे, इसके लिए वाप ने पलामू आकर खेती की ज़मीन नहीं तलाश की। तलाश कर सकते थे। उन्होंने ईंटों का भट्टा लगाया।"

"उससे क्या हुआ?"

"अरे मैं उनकी मजूरी वढ़ा दूँगा।"

"अरे, अरे, हरवंस! ऐसा काम न करयो, भैया। तोमरा आदत विगा देहों। जो वेगार नहीं हैं, ऐसे लोग भी हैं। वे भी वढ़ती मजूरी माँ ऐसन काम जिन किह्यो।"

"जिन किह्यो। न करने से वे नही भागेंगे। टाइम अव वदल रहा लालाजी! अव कलकत्ता से वहुत-से लोग आ रहे हैं। पंद्रह-वीस ह रुपयों में सरफ़ेस कोलियरी—ऊपरी सतह की कोयला खान खरी हैं। लेवर कम पड़ेगा, समझते हैं?"

"ना, ना, यहाँ आदमी कीड़ों की तरह अनगिनती हैं।"

"आप अपने आनन्द में रहें।"

"भैया, तुम फल के बगीचे क्यों नहीं मोल लेते? बहुत नफ़ा है।"

"अलवर की तरह अमरूद-शरीफा का बगीचा करूँगा और कुजड़ों को फल बेचूँगा? ख़रीदना होगा तो बाद में ख़रीदूँगा। तब सड़क बनेगी तब फल सीधे बोकारो-राँची-धनबाद भेजे जायेंगे। तब कारखाने में फलों को डिब्बाबंद कर सकूँगा। तब फलों के बगीचे में कोई छोटी-मोटी इंडस्ट्री बन सकेगी।"

"तुम्हारे फलों का बगीचा ख़रीदने से मुसलमान को हटाया जाता।"

"लालाजी, मुसलमान से मुझे कोई प्यार नहीं है। लेकिन आपकी तरह छुआछूत मैं पसन्द नहीं करता।"

हरबंस क्या करता है, यह देखने के लिए तीरथनाथ बैठा रहा। हरबंस ने मजूरी बढ़ाकर एक रुपया कर दी। लाचार तीरथनाथ ने भी गैर-बेगार को एक रुपया दिया। बेगारों को ताज्जुब में डाल चौअन्नी-चौअन्नी पनपियाई के देकर उन्हें ताज्जुब में डाल दिया।

यह एक घटना हुई।

दूसरी घटना और भी अद्भुत थी।

एक थे अनाथबंधु पाल, चलता-फिरता सिनेमा लेकर चोट्टि में उतर पड़े। स्टेशन के मैदान में खुली जगह में उन्होंने 'श्री हनुमान की पाताल-विजय' फिल्म दिखायी। बायस्कोप के बारे में चोट्टि और छगन अनभिज्ञ थे। उन्हें देखकर बड़ा आनन्द आया। तीरथनाथ ने फिल्म देखकर बार-बार नमस्कार किया और बोला, "मैं रुपये दूँगा, कल भी तमाशा होगा।"

सिनेमा देखकर सबको फिर बहुत आनन्द आया। अनाथबंधु पाल इसके बाद अपना सिनेमा लेकर ट्रेन पकड़ कर चला गया। उसके बाद पूरे चोट्टि में शोर मच गया। तीरथनाथ के गुमाश्ते का लड़का दो हज़ार रुपये चोरी कर भाग गया। चिट्ठी लिखकर बता गया कि गृहस्थी और साथ ही गुमाश्तागीरी उसके लिए ज़हर की तरह है, इसलिए वह सन्यासी बनने जा रहा है। तीरथनाथ बहुत बिगड़ा और थाने की ओर चला। कोई नतीजा नहीं निकला। दारोगा ने खोज-ख़बर लेकर बताया कि वह राँची जाकर अनाथबंधु का पार्टनर बन गया है।

जमाया और बिगड़ कर सदस्य को धमकाया। चोट्टि में आकर उन्होंने मीटिंग बुलायी और धमकाया कि उसे वोट देने पर गाँव जल जायेगा। उनकी धाँस के पीछे हेंकड़ी थी। उसके बाद बोले, "चोट्टि मुंडा कौन है?"

"मैं।"

"सुना है कि तुम्हारी बात आदिवासी और यहाँ के परिगणित लोग मानते हैं। तुम सबसे कह देना कि हमारे उम्मीदवार को वोट दें।"

चोट्टि का जवाब सुनने के लिए वे नहीं रुके। बाद में चोट्टि और छगन आदि मिले। छगन बोला, "क्या किया जाये?"

"उसने तो हमें कुआँ दिया है। यह अस्पताल दिया है। सड़क भी पक्की कराने में लगा है।"

तीरथनाथ ने उन्हें बता दिया, इस बार नये उम्मीदवार को वोट देना अच्छा है, नहीं तो गड़बड़ होगी।

वे लोग समझ नहीं सके कि क्या गड़बड़ होगी। लेकिन ढाइ में मीटिंग करने में प्रौढ़ सदस्य महोदय अचानक बम की चोट से घायल हुए और मारे गये। आततायी जीप में चढ़कर निकल गये। दारोगा को कहीं से क्या निर्देश मिल गया, इसका किसे पता? वे आततायियों को बिलकुल पकड़ न पाये। चोट्टि की ओर से इस घटना की प्रत्यक्ष संवाददाता थी मोतिया धोबिन। उस समय मोतिया अपनी बहन के घर पर ढाइ में थी। चुनाव की मीटिंग के कार्यकर्ता लोगों के लिए वह कुछ नहीं था। लेकिन मोतिया के जीवन में वह एक रहस्य था। मोतिया ने चोट्टि आकर बढ़ा-बढ़ा कर सबसे घटना का बखान किया। सभी उससे सुनना चाहते थे और उन्हें सुनने को मिल गया। सदस्य लोकप्रिय थे और उन्होंने अच्छा काम भी किया था। उनकी मृत्यु की बात ने बड़ा कुतूहल पैदा कर दिया।

इसके बाद दारोगा चोट्टि आये। ट्रेन से उतर कर वे चरमर करते हुए छगन की टोली में गये और बोले, "अब पता चला है कि सदस्य को उनकी पार्टी वालों ने ही मारा है। छोटा आदमी रुपये लूटने के लिए विधान सभा का सदस्य बना था। इन्होंने रुपये चुराये थे, हिस्सा-बाँट में गड़बड़ होने से दल के लोग बिगड़ गये। हटाओ, सुना है कि मोतिया धोबिन बहुत गप्पें उड़ा रही है। उससे कह दो कि कोई आलतू-फ़ालतू गप्प न उड़ाये। गप्प करने से हंगामा होगा। उस हंगामे को रोक सकने की ताक़त मुझमें नहीं है।"

मोतिया बोली, "पुलुस यह क्या कह गयी?"

छगन बोला, "जमाना बहुत खराब है, मोतिया! जो देखा वह सचाई नहीं है। जो कह गया वही सच है।"

सब सुन-सुनकर चोट्टि अंदर ही अंदर कुम्हला सा गया। बोला, "यह तो नयी बात नहीं है। एक लड़के को मारा और कह दिया, लड़के ने पुलिस को बम मारा। वह आदमी मजदूरी कर रहा था, उसे मार दिया। अब कुछ बात मत करना मोतिया, इसे कहकर कुछ नहीं है।"

"किन्तु चोट्टि, दारोगा तो वहाँ था नहीं।"

"मोतिया, अगर ऐसी किसी बात का विचार करेगा तो कोई-न-कोई दिकू करेगा, तब किसकी बात पर विश्वास किया जायेगा?"

"दारोगा की बात पर।"

"यह समझती है। घर जा।"

इसके बाद रंगमंच पर चुनाव की एक और बैठक हुई। मालिक लोगों की जरूरत पर इस राज में सब-कुछ संभव है, इसलिए उम्मीदवार और उसके समर्थकों को लेकर शाम की ट्रेन आयी और आज यहाँ रही। स्टेशन के प्लेटफार्म पर प्रार्थी ने भाषण दिया और पिछले सदस्य को 'नक्सल', गुंडा इत्यादि विशेषणों से विभूषित कर ट्रेन पर बैठ गया। चोट्टि उस मीटिंग में नहीं गया। लेकिन मोतिया उसके घर ही आ गयी। वह धप् से बैठ गयी और बोली, "हाय राम!"

"क्या हुआ?"

"डर गयी।"

"क्यों?"

"मिटिन में नहीं गया?"

"नहीं।"

"क्या देखा, चोट्टि!"

"क्या देखा?"

"आज जो आदमी आया, वह वोट लेगा?"

"उसका क्या है?"

"उसी ने तो हाथ उठाकर उस दिन दिखा दिया था। एक आदमी साथ में आया था। उसमें से उसी मोटे आदमी ने बम मारा था। इन लोगों ने ही उसे मार दिया। यह क्या देखा, चोट्टि!"

चोट्टि बोला, "बस, अब कुछ मत कहना।"

"लाला क्या कहता फिरता है, पता है?"

"क्या?"

"इस बार रुपया नहीं देगा, चुनाव में जाने नहीं देगा। फिर भी वोट पड़ेंगे, क्योंकि छोटे लोगों के वोट यह लोग नहीं चाहते।"

"समझा। तू घर चल, पहुँचाये देता हूँ।"

तिया को घर पहुँचा कर चोट्टि परमिट का तेल लेने दूकान ग
रथनाथ से भेंट हुई। तीरथनाथ बोला, "चोट्टि, लगता है तू मीटिंग
ां आया?"

ना।"

"तुम लोग वोट किसे दोगे?"

"देखें।"

तीरथनाथ मानो किसी अदृश्य शक्ति की मदद पाकर हँसा और
ला, "एक और तपसीली-परिगणित प्रार्थी है। वह साला डर के मारे
धर आ नहीं रहा है।"

चोट्टि कुछ न बोला। ताकता रहा।

"इस बार देखना, यह जगह अच्छी हो जायेगी।"

चोट्टि ने जवाब नहीं दिया। घूम कर चला गया।

दो दिन के बाद तीरथनाथ फिर उतना नहीं हँसा। उसने हरबंस
से कहा, "फिर पचास हज़ार रुपये ले गये।"

"मैंने भी दस हज़ार दिये।"

"दिये?"

"ज़रूर। फिर फ़ैक्ट्री हाउसिंग में ईंटें देने की बात भी पक्की हो
गयी। बस। यही पार्टी रहेगी और मेरा भला होगा।"

"मेरा क्या होगा?"

"भला होगा। देखना।"

"कैसे?"

"यह साला भी आपकी तरह छुआछूती है न? इसीलिए वह आपकी
भलाई करेगा। ब—होत शानदार आदमी है। किस दल का है, मालूम
है?"

"नहीं।"

"अर्जुन मोदी के।"

"उससे क्या हुआ?"

"आपका भी जवाब नहीं।"

"बताओ न।"

"बताना नहीं पड़ेगा। समझ जायेंगे। पाँच बरस में पचास हज़ा
पाँच लाख बनकर लौटेंगे।"

"आयेंगे?"

"ज़रूर। भारत के भाग में नया सूरज जो उगा है, है न!"

"वह गुंडा छोकरा?"

"विजया मोदी था।"

चौट्टि आदि ने वोट देने के लिए जाकर देखा कि उनके नाम पर पहले ही वोट पड़ गये हैं। वोट देने वालों को रोकने में बूथ पर मारपीट हो गयी। सशस्त्र गुंडे लाठी लेकर वोट देने वालों को रोक रहे थे। नतीजा निकलने पर देखा गया कि बहुमध्यक वोटों में युवलीग का छोकरा जीत गया है। विजेता के निर्देश से तीरथनाथ ने आतिशबाजी जलाकर विजयोत्सव मनाया और युवलीग में गुंडा लोगों ने हरबस के घर पर अपनी दावत की। हरबस को काफी शराब मँगानी पड़ी। बकरा कटाना पड़ा।

खाना-पीना समाप्त कर उठने के समय माननीय सदस्य ने हरबस से कहा, "टेंडर कल नहीं होगा। तमाम अँगरेजी कायदे हैं। अब भारतीय ढंग से काम होगा। केवल पोली ईंटें ही क्यों, सीमेंट का ठेका भी दे दूँगा।"

"आपकी दया है।"

"लेकिन बट्टा देंगे।"

"जरूर।"

"बारह आना, चार आना। बारह आना मेरा। फिकर मत कीजिये। वह दर मिलेगी कि उसमें भी आपको मोटा नफ़ा होगा।"

हरबस मन-ही-मन बोला, 'हरामी' और ऊपर से बोला, "जरूर।"

"यहाँ अछूतों और आदिवासियों का बड़ा जोर है।"

"नहीं-नहीं।"

"पता है, पता है। सब ठीक कर दूँगा।"

"वे लोग कुछ नहीं करते।"

"अरे, छिपाइए मत। अपने इन सब लड़कों को एक-एक इलाका बाँट दिया है। बड़े अच्छे लड़के हैं सब। मेरे लिए जान लड़ाकर काम किया है। उस अछूत को इन लोगों ने ही घायल किया था।"

हरबस चौंक पड़ा और सदस्य ने अपने शागिर्द से इशारा पा हँसकर कहा, "मजाक कर रहा था।"

"यस।"

सदस्य और शागिर्दों का झुंड चला गया। हरबस बहुत घबराया लग रहा था। वह ठेकेदारी चाहता था, रुपये बनाना चाहता था, मुनाफ़ा लूटना चाहता था। उसी के साथ चाहता था छोटा और मझोला उद्योग खड़ा करना। अब बोकारो, चास—सब जगह भीड़भाड़ थी। यही मौका था। लेकिन हरबस कोई गड़बड़ी नहीं चाहता था। उसने या उसके पिता ने अभी तक किसी कुली-मजूर के शरीर पर हाथ नहीं उठाया था। इन लोगों की सुख-दुख, मुसीबत-उमीबत में माँगने पर पिता ने मदद की थी,

हरवंस भी करता था। वहुत दिनों तक इनके बीच में हरवंस का रहना-सहना रहा। चोट्टि आदि में उत्तरदायित्व लेकर भलमनसाहत से काम करने की जो आदत है, मेहनत-मजूरी से हरवंस उस पर विश्वास ही करता था। हरवंस अपना स्वार्थ सोलह आना सुरक्षित रखता था। इनके साथ मोटे तौर पर अच्छा वर्ताव ही करता था। उस वार सदर में पोली ईंटें चालान देकर हरवंस ने वेजा मुनाफ़ा कमाया था और कुली और लेवर को दिये थे मोटे जनता मार्का कंवल। चोट्टि का कंवल औरों की तुलना में थोड़ा अच्छा था। यह लोग हत्या कर राजनीति में घुसे हैं, अव कहते हैं कि आदिवासी और अछूतों को दवायेंगे। क्या करेंगे, इसका पता नहीं। अगर आग भड़क उठे तो? हरवंस के कारण आग भड़कने से ज़हर-वुझे तीर से हरवंस को घायल करके मुंडा लोग अगर अपनी हँडिया-डँडिया उठाकर अनजान जगह चले जायें? ऐसी घटना तो हुई थी। नरसिंगगढ़ का नायव तीर से मारा गया था। कुरमी के दुखिया ने तो नायव का सिर काट लिया था। हरवंस वहुत चिन्ता में पड़ गया और निश्चय किया कि मजदूरी वारह आने से वढ़ाकर एक रुपया कर दी जाये। वाद में सवा रुपया भी कर देगा। सद्भाव वनायेगा। उसका नतीजा होगा कि हरवंस पर किसी का गुस्सा न होगा। इन सव वातों को मन-ही-मन सोचने के वाद हरवंस ने महसूस किया कि उस सदस्य और उसके चेलों के शक्ति प्राप्त करने में छोटा हिटलर देखकर डर गया है। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे!

उसने तीरथनाथ से कुछ न कहा। किन्तु तीरथनाथ ने उसके आचरण को लक्ष्य किया, संभवतः वह भी घवरा रहा था। फ़सल पर उसने भी वेगार मजूरों को सवा रुपया मजूरी और छः आना पनपियाई दिया। कहा, "ऐसन मालिक न मिली, छगन।"

"महाराज की किरपा है।"

छगन ने दुखी और उदास चेहरे से वह वात कही। कहा, "आप लोग जो करें वही अच्छा। आजकल चारों ओर वहुत काम है। कुली-लेवर में ढाई रुपया है। इसी से कुरमी और नरसिंगगढ़ में खेत-मजूरों को भी दो रुपये मिल रहे हैं। वेगारवालों को पनपियाई एक रुपया मिल रहा है। अव सदर से चोट्टि में एन० सी० डी० सी० आयेगा। कोयला खुदवायेगा। वह तो सरकारी रेट देते हैं—आठ-नौ रुपये।

"तो मैं भी खेती का काम उठा दूंगा।"

पहले के सदस्य को हटाया गया, धोखेवाज़ी और डकैती से चुनाव जीता गया। चुनाव के वाद ठेके आदि का हिस्सा-वाँट हुआ—इसी प्रक्रिया

में चोट्टि अंचल का आधुनिक समय में परिचय हुआ। निर्वाचित सदस्य और शक्ति-प्राप्त दल के काम-काज भी पेशेवर और दिखावटी हो गये। अब वे दिन न रहे कि लोग बेगार भी लें और प्यार से फुसलाकर बातें भी करें। इस शासन में प्रत्येक का चरित्र दूर कर अपनी श्रेणी की भूमिका में काम लेना था। चोट्टि ने कहा, "अब जो देखोगे वह अपनी जिन्दगी में नहीं देखा होगा। लगेगा, पहले कितने सुख में थे। देखा नहीं कि खून करके चुनाव जीता?"

"बात दूसरी कहो।"

"हाँ।"

"क्यों कहो?"

"सोचकर देखो, छगन!"

छगन बुड्ढे ने नाक को चिन्ता से सिकोड़, गला साफ कर कहा, "दो बार देखा। उस लड़के को सबके सामने मारा, और बात दूसरी कह दी। इसको मारा सबके सामने और बात कुछ और कह दी।"

"क्या समझे?"

"समय बहुत खराब है।"

"ब-हु-त बुरा।"

"यह हुआ क्या?"

"जो होना चाहिए वह हुआ। मोतिया जानकर कुछ नहीं कहती। जान से मार सकते हैं। उन लोगों के लिए असाध्य कुछ नहीं है।"

"सब लोग पैसा ज्यादा दे रहे हैं। फिर भी अच्छा है।"

इस उम्र में भी चोट्टि की आँखें सजीव और चमकीली-काली थीं। आँखें उठा हल्की मुसकराहट के साथ चोट्टि बोला, "गड्ढा भला बन रहा है, इसलिए लाला भी दे रहा है, किन्तु वैसा नहीं है।"

"पता है। चारों ओर मजदूरों की जायेगा है।"

"इसी से दे रहे हैं।"

"ओह! एन० सी० डी० सी० आयेगा।"

"हमारे ऐसे भाग्य नहीं होंगे। सरकारी काम ढीलम-ढाल चाल से होता है। पहले देखेंगे, कहाँ कोयला है, उसमें बरस बीत जायेगा। इसके बाद यहाँ कोयला का दफ्तर खोला जाये या नहीं, यह ठीक करने में बरस बीत जायेगा। घर बनाने में बरस जायेगा। मुझे तो लगता है कि यह अभी भी तीन-चार बरस का मामला है।"

"सो होगा।"

"गुंडे लोग इधर-उधर बहुत जुलुम कर रहे हैं।"

"हमें क्या, नंगे फकीर को चोरों का डर नहीं रहता।"

छगन की बात झूठ हो गयी। 1972 के चुनाव के बाद शासक दल ने बहुत ज्यादा वोटों से जीतकर देश के गरीब-गुरबों के बारे में जिस नीति का अनुसरण किया वह बहुत मनोरंजक थी। पांच बरस के कार्यकाल में केन्द्रीय शोर-शराबे—घोषणाओं, क़ानून बनाने इत्यादि ने भारत को संसार की सभा में ऊँचा स्थान दिलाने में सहायता की। मुक्ति सूर्य का रूप 'रा'[1] देव के समान ही विलक्षण था। लेकिन 'रा' देवता की तरह ही उसका उद्देश्य था शुद्ध रक्त। उसका परिणाम हुआ—गरीबी हटाओ, बेगार ग़ैर-क़ानूनी है, अब कृषि ऋण ग़ैर-क़ानूनी है, इत्यादि नारे और सुधार कार्यक्रम देश के दूर-दूरान्तर में फैल गये थे। पेड़ों-स्टेशनों-बसों इत्यादि पर पोस्टर बनकर लटक गये थे। किन्तु यथार्थ में चोट्टि और छगन आदि की पिसाई चलती रही। इन्हीं पाँच बरसों के राज्यकाल में धनी को और भी धनी बनाने के काम में, निम्नवर्ग और आदिवासी लोगों को जूतों के नीचे रखने के काम में, सबसे ऊपर, पोर्टफोलियोहीन लल्लू बाबू के खिलौने की तरह भारत का नये सिरे से बनाना, पुलिस की मदद से गुंडे, खून चूसने वाले देवता बनाने के काम में समर्पित हुए। उसका उद्देश्य था खोका बाबू के खिलौना की तरह भारत का पुनर्निर्माण। बाबू को चोट्टि या छगन देख नहीं सकते थे, लेकिन उनका खिलौना बनकर लात खाते रहे। जल्दी ही समझ में आया कि पुरानी कहावत को नये ढंग से लिखने का वक़्त आ गया है। नंगे लोगों को बटमार और डाकुओं का डर बहुत अधिक था।

इस अंचल में चुनाव का प्रचार करने आये सदस्य को अचानक लगा कि यह जगह बहुत गड़बड़ है। उसी के अनुसार वह पार्टी के सेक्रेटरी को सारा कुछ बताता। वह जो बताता उसका सारांश था कि तीरथनाथ और हरबंस दोनों के मालिक रहने पर भी स्थानीय आदिवासी, अछूत उनसे बँधे नहीं हैं, और भी रोजी-रोजगार करने के लिए स्वतंत्र हैं।

सेक्रेटरी ने बताया, "यह हो सकता है, पर उससे क्या?"

सदस्य बोले, "तीरथनाथ और हरबंस से बात करने पर उनकी राय हुई है कि व्यक्तिगत संबंध रहने के कारण वे प्रचलित ढंग को बदलना नहीं चाहते।"

"यह मुझे मालूम है। मेरे पास भी जमीन है, कर्ज़दार हैं, बेगार हैं। व्यक्तिगत संबंध रहने पर मार-पीट होने का मौक़ा कम आता है।"

---

1. RAW (रॉ)—सरकार का एक जासूसी विभाग।

"अरे, आप नहीं समझते, साले किस तरह आज़ाद ढंग से चलते-फिरते हैं, उस तरह उनकी कमर नहीं टूटी है।"

"खूब समझता हूँ। एक बात याद रखना।"

"क्या ?"

"आदिवासी लोग और अछूत लोगों को लेकर ऐसा कुछ मत करना कि जिससे फ़साद हो जाये। मैं पार्टी का सेक्रेटरी भी हूँ। मेरी मदद से तुम जीते हो। भूलना नहीं, तहसील में मेम्बर को मारने के मामले में तुम्हारे नाम से फाइल भी है।"

"क्यों ?"

सेक्रेटरी घाघ राजनीतिज्ञ मगरमच्छ की-सी हँसी हँसा और बोला, "रखनी पड़ती है, ठीक जगह पर रखनी पड़ती है। अगर मैं तुम्हारे काम में अप्रिय बन जाऊँ, अगर मुझे...तो वह काम आयेगी। मैंने तो नहीं सोचा था कि तुम उसे जान से मार डालोगे। सोचा था कि निर्देश तुमने समझ लिया है, बस छोड़कर मीटिंग उखाड़ दोगे।"

"हाँ, ग़लती हो गयी।"

"ताक़त आने से ही नहीं होता है। उसे रखना भी जानना चाहिए।"

"हटाओ, जो हुआ सो हुआ। अब मैंने लड़कों से जो कहा है वैसा ही करूँगा। इलाके बाँट दूँगा। उनको इलाके दूँगा, एक-दो ठेके। बेचारे घर-बार छोड़ कर पार्टी का काम करने आये हैं। थोड़ी-बहुत तो मदद देनी होगी।"

"तो दो न। मैंने क्या 'ना' कहा है ?"

"किन्तु ..!"

"क्या ?"

"वह था परिगणित जाति का नपसीली। उसने नरमीली और आदिवासियों की भलाई भी की थी। उसी से गाँवों में गरमी छा गयी है।"

"अरे, मारपीट किये बिना क्या क़ाबू में नहीं लाया जा सकता है ? अक़्ल चाहिए। क्या करें, यह वे ही समझें। तुम्हारे सामने अभी बहुत काम है। आगामी चुनाव में तुम जीते तो मंत्री भी हो सकते हो। मंत्री बनने पर काम दिखाना पड़ेगा। सिर्फ़ बुराई करने से पब्लिक मदद नहीं देगी। इस बार की तरह हर बार वोट नहीं मिल सकते हैं। तुमको भलाई-बुराई दोनों करनी पड़ेगी। वोटों के सामने से गुंडई वहीं चलेगी, जहाँ पब्लिक भी तुम्हारा समर्थन करती हो।

"करेगी न।"

"तीरथनाथ-हरवंस अल्पसंख्यक हैं, रेलवे के कर्मचारी आने-जाने वाले हैं, इसी से उनकी संख्या कम है। बहुसंख्यक आदिवासी और अछूत हैं। चोट्टि बड़े आनन्द की जगह है। वहाँ तुमको होशियारी से चलना पड़ेगा। नहीं तो...।"

"क्या ?"

सेक्रेटरी की मुसकराहट और भी जहरीली हो गयी। बोले, "बच्चू ! तुम तो कल के बच्चे हो। लेकिन मेरा नाम दक्षिण-पूर्व बिहार में सब जानते हैं। और ईश्वर की कृपा से दिल्ली में भी मेरा मेलजोल है। मेरी बात न मानकर चलने से बहुतों का राजनैतिक जीवन समाप्त हो गया है। यह तुमको भी जान लेना चाहिए। तुम्हारे पिता को 1957 में लाचार होकर ही बैठा दिया था। बेचारे मर भी गये। उनका बेटा होने के कारण ही तुमको ...।"

"हाँ-हाँ। आपकी मदद के बिना मेरा कुछ न होता।"

"आख़िरी बात। चोट्टि और ढाइ और कुरमी और नरसिंगगढ़—इन अंचलों का एक इतिहास भी है। कोई भी छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिए। गाँवों में बहुत छेड़छाड़ करने से खून बह जाता है, नक्सली ढंग की हिंसा होने लगती है। तुम्हारी बेवकूफ़ी से उस अंचल में किसी हिंसा की शुरुआत नहीं होनी चाहिए। नहीं तो तुम गये। वह नक्सली मारा गया है, यह मत भूलना।"

"नहीं भूलूँगा।"

"आदिवासियों के तीज-त्योहार-मेला—किसी में कोई गड़बड़ मत करना। एक काम की बड़ी ज़रूरत है। आदिवासी और अछूत चोट्टि में इकट्ठे हैं। चालाकी से उनमें फूट डालना अच्छा होगा। चोट्टि में चोट्टि मुंडा नाम का एक बुड्ढा है। उस अंचल में उसका बड़ा सम्मान है। उसके लड़के के केस के मौके पर आदिवासी अफ़सर दिलीप तरोये ने बहुत मदद दी। तरोये अच्छा अफ़सर है। अब डिरेक्टर ट्राइबल वेलफ़ेयर हो गया है। चोट्टि को अगर हाथ में रखकर चल सकते हो, तो वह अंचल मोटे तौर पर तुम्हारी मुट्ठी में रहेगा। जितनी बातें बतायीं, उन्हें याद रखकर काम करना। हमारे नेता यहाँ की भूमिका नहीं देखते ? वे अब पूर्व गोलार्ध के लीडर बन गये हैं। भैया ! तुम्हारा काम उनके काम में मदद करना है। अपने पक्ष में उनका माहात्म्य देखा है ?"

"देखा है।"

"दीवार पर तसवीर टँग रही है, देखते हो न ? वह मैं हूँ।"

"वही तो। अच्छा है।"

"क्या ?"

"किसी से पूछ नहीं सकता। कुछ जानने की इच्छा हो रही है।"

"क्या ?"

"छुआछूत मैं मानता हूँ, आप भी मानते हैं।"

"बिलकुल। वर्णाश्रम हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।"

"यह क्या सच बात है कि महात्मा जी छुआछूत नहीं मानते थे ?"

"भैया ! वे थे देवता। देवता की बातें क्या आदमी समझेगा ?"

"ठीक कह रहे हैं।"

सदस्य चले गये। सेक्रेटरी ने अब अपने सेक्रेटरी से कहा, "किस माल को अखाड़े में उतारा है, देखा ?"

"देखा, लेकिन क्यों ?"

" 'लेकिन क्यों' क्या ?"

"देवकीनन्दन कैसा अच्छा लड़का था। आपके हाथों का सिखाया ग्रामसेवक लड़का। वह साला धनबाद में मोटर के टायर में शराब भरता था, सिनेमा के टिकटों का रोजगार करता था, मारवाड़ियों को रंडी सप्लाई करता था। वह खून के मामले में अभियुक्त बना, छूट गया। इसको क्यों लाये ?"

"अब अर्जुन मोदी ऊपर उठ रहा है। हमारे शहर के बाहरी हिस्सों—मुफस्सिल—में लोफर-गुंडों को लेकर उनकी युवलीग बन रही है। इसी से इस लौंडे को लाया हूँ। भैया, मैं हूँ हवामशीन का मुर्गा, सिनेमा में जैसा देखते हो। जिधर की हवा हो उधर घूमना जानता हूँ। नहीं तो जिन्दा रह पाता ? आजकल राजनीति में खून-खराबी देख नहीं रहे हो ?"

"हमारा जमाना चला गया। सब-कुछ सुन्दर चलता था। राजनीति कैसा मुनाफे का व्यापार बन गयी थी। सबका मुनाफा रहता था। कितने रास्ते खुल गये। मैंने अपनी साठ बरस की उमर में बम्बई शहर भी नहीं देखा। मैं युथ डेलीगेशन में सिंगापुर-हाँगकाँग-मनीला-जापान चला गया। तमाम ट्रांजिस्टर और कैमरे लाकर बेचे। क्यों ? खून-खराबा तो नहीं किया ? उससे कुछ नुकसान हुआ ? आजकल क्या है ?"

"भैया ! तुम मेरे मन की बात ही कह रहे हो। पुराने देश-सेवक क्या ऐसा चाहते थे ? उसने उस मेम्बर को मार डाला। उसके लिए मुझे दुख नहीं हो रहा है ? अब 'आदिवासी समाचार' उसके बीवी-बच्चों के लिए रुपये जमा कर रहा है। बताओ तो, कितना सच्चा आदमी था ! दस बरस मेंबर रहा। एक पैसा नहीं बना सका ! ऐसे आदमी को हटाकर

इसे लाया। इसमें मुझे अच्छा लगता है ?"

"पता नहीं, क्यों मारा ?"

सेक्रेटरी जोश में आकर बोले, "मारना बुरा काम है। फिर भी मान लेता हूँ कि तुझे उसके मारने की जरूरत थी। ऐसी पब्लिक जगह में मारा! हज़ारों लोगों को गवाह बनाकर! पार्टी की बात नहीं सोची। हमारी पार्टी क्या हत्यारों की पार्टी है ? लोगों ने क्या सोचा होगा ?"

"सच बात है।"

"कुछ नहीं, कुछ नहीं। वेस्ट बंगाल में 1971 में बरानगर काशीपुर में बिलकुल यही नहीं हुआ। तीन सौ गुंडों ने जाकर दो-ढाई सौ नक्सली लड़कों को मार दिया और पुलिस कुछ नहीं बोली, सिद्धार्थ राय ने भी कुछ नहीं किया। सब दबा दिया। वही जान कर यह लोग जाग उठे हैं।"

"यह क्या ठीक है ?"

"कभी नहीं। तू पुराना गुंडा है। तू क्या सिद्धार्थ राय है ? उस तरह की अँग्रेज़ी आती है ? प्रधानमंत्री के साथ खाना खाता है ?"

"कहाँ की बात करते हो ? प्रधानमंत्री को देखकर पतलून खराब करनी है ? अँग्रेज़ी ! उसे हिन्दी आती है ?"

"देखना चाहिए, क्या करता है।"

सदस्य का पहला काम हुआ, पार्टी सेक्रेटरी के पास से प्रदेश के सेक्रेटरी के पास जाकर सब बताना। प्रदेश सेक्रेटरी बोले, "क्या ? तुमने यह सब कहा है ?"

"कहा तो है।"

"न-न। बुड्ढे को हटाना पड़ेगा। उनकी यह आदिवासी-अछूत की मुहब्बत और चालाकी से चलने की नीति भारत की आज की राजनीति में नहीं चलती। तुम लड़ जाओ। शुरू में ही विधान सभा में किसी बात को लेकर शोर मचा दो, जिससे कुछ प्रभाव पड़े।"

"गो-हत्या लेकर शोर करूँ ? बहुत चालू समस्या है।"

"ना-ना। बहुत सांप्रदायिक हो सकती है।"

"तो ?"

"देखता हूँ। और सुनो! रोमियो का मेम्बर को बम से मारना ठीक नहीं हुआ। वह पैसा जानता है। कल कोई और पैसा दे तो तुमको बम मार देगा। उसे तुम जो हो सके, दो।"

"रोमियो, पहलवान और दिलदार—तीनों लोगों को ठेकेदारी दे रहा हूँ, रुपये दिये हैं और इलाके बाँट दिये हैं।"

"ठीक। तो सोच लो, किस बात पर बोलोगे ?"

"गुरु ! मेरे मुँह से तो अच्छी हिन्दी नहीं निकलती।"
"दिलदार बना देगा।"

उसके बाद सदस्य चेलों को लेकर शराब पीने गया। शराब पीते-पीते बोला, "गुरु, यह साफ कपड़े पहन कर विलायती चीज पीना मुझे ठीक नहीं लगता। मैं तो हूँ जनता का आदमी। चुआई हुई पिऊँगा, लुंगी पहनकर रुमाली बीवी को चिपटाकर धनबाद स्टेशन पर नाचूँगा, तमाशा करने के लिए स्टेट बस का टायर बन्दूक से फोड़ दूँगा। अब सब बन्द। अब तो साबुन रगड़ना पड़ता है, दाँत माँजने पड़ते हैं। रुमाली भी कह रही थी, पुरानी पहलवानी गंध कहाँ गयी?"

दिलदार बोला, "यह सब भूल जाओ, गुरु।"
"कैसे?"
"विधान सभा की बात सोचो।"
"क्यों सोचूँ?"
"किताब-उताब पढ़ो।
"तुम पढ़ कर मुझे बताओ।"
"न-न, तुम भी पढ़ो।"

इस पढ़ने में ही मामला बिगड़ गया। सदस्य ने थोड़े दिनों में कुछ किताबें लेकर शिक्षा शुरू की और इतिहास की किताब पढ़ कर तो बहुत खफ़ा हो गया। दल के साथ सदर जाकर इतिहास की किताब के लेखक मुड़े सिर, काठिया बाबा के भक्त, निपट भलेमानुस गिरिज तिवारी के घर में घुसकर उसे खूब पीटा और बोला "अछूतों से प्यार दिखा रहे हो?"

"कैसे?"

"क्यों लिखा कि गौतम बुद्ध शूद्र के घर सूअर खाकर बीमार पड़ गये और मर गये? अछूतों ने भगवान को मार डाला यह बात लिखने से अछूत सिर पर न चढ़ बैठेंगे?"

"काहे?"

"तो ले!" कह कर सदस्य ने गिरिज तिवारी के कागज-पत्तर फाड़ डाले और बोला "सारी इतिहास की किताबें जला डाल।"

गिरिज तिवारी ने उसी समय अपनी ओर से जमकर शोर मचाया। मामला दूर तक गया। अखबारों में खबर सुर्खियों में छपी। 'आदिवासी समाचार' ने सदस्य के पिछले जीवन की कहानी छापकर अपनी बिक्री बढ़ायी। दिलदार कलकत्ता गया था। भागा-भागा आया। विधान सभा में मामला उठा। सदस्य को दाहिने-बायें खूब डाँट पड़ी। प्रदेश के सेक्रेटरी

तक ने सदस्य को गालियाँ दीं। पार्टी सेक्रेटरी बोले, "बेवकूफ़, गधा, जो दूसरी किताबों में लिखा है, वही तो उसने लिखा। इसी अक़्ल पर तुम मेम्बर बने हो?"

सदस्य चुपचाप सब सुनता रहा और बोला, "चेले तो कहते हैं कि बुद्ध हिन्दू देवता हैं। कृष्ण के एक अवतार हैं। वह आदमी ऐसा बुरा काम कर गया?"

"यही तो देख रहा हूँ।"

"हटाओ, मैं अब विधान सभा में मुँह नहीं खोलूँगा। अपना इलाका दुरुस्त करूँगा।"

सबकी जान में जान आयी और अब शुरू हुआ शेर का खेल। सदस्य ने समझा, इस अंचल में सुविधा हुई। अखबार में फटाफट खबर नहीं निकलेगी। कोई भी आदिवासी या अछूतों के बारे में माथा-पच्ची नहीं करता। दिलदार बोला, "ऐसी फ़ील्ड रहते गुरु, तुम बुद्ध की बात लेकर शोरशराबा करने गये!"

"तुम कलकत्ता क्यों गये, रंडी के बच्चे? तुम रहते तो इस तरह का किस्सा होता?"

"अब तुमको छोड़कर नहीं जाऊँगा।"

चौदह

इसी तरह चोट्टि अंचल के जीवन में गोमिथो, पहलवान और दिलदार घुस पड़े। बुद्ध की कहानी पर सदस्य की जो छीछालेदर हुई, उसमें भी इस प्रदेश में शीघ्रता की। इसी प्रकार करुणाधन शाक्यमुनि चोट्टि आदि के जीवन म अनजाने ही एक तत्व बन गये।

तीरथनाथ, उसके खेत और जमींदारी के साथ चोट्टि का कोई संबंध नहीं रहा। हरबंस को नयी ठेकेदारी मिलने से वह काम में लग गया। उसने चोट्टि को बुलाकर कहा, "चोट्टि! वर्षा बीत गयी है। लालाजी के काम में मैंने पहले नुकसान नहीं पहुँचाया, अब भी नहीं करूँगा। लेकिन अब चागा में फैक्टरी चालू हो रही है। दो सौ क्वार्टर बनेंगे। कितनी ईंटें लगेंगी, इसका ठीक नहीं। लेकिन कुल ईंटें मैं दे रहा हूँ।"

गरीब चोट्टि भावी लखपति हरबंस से हँसकर बोला, "यह बहुत अच्छा हुआ, महाराज! कोई और आदमी भी ठेकेदारी लेकर राजा बन

जाना। तुम राजा बनो महाराज, हम देखेंगे।"

"सब चोट्टि, वह सब बाद की बात है। अभी तो तुमसे काम की बात है।"

"कहो, महाराज!"

"मेरा तो लेबर लगेगा।"

"हम तो हैं।"

अब हरवंस हँसा। बोला, "बहुत, ब—हु—त-से आदमी लगेंगे। चोट्टि, बीड़ी मत सुलगाओ। एक सिगरेट पियो न! पीकर देखो न, कैसी लगती है।"

चोट्टि ने सिगरेट ली। सुलगाकर आँखें सिकोड़ीं और बोला, "किस मजे के लिए पीते हो? घास की तरह है।"

"बुझा क्यों रहे हो?"

"रख लूँ। हरमू पियेगा। कोयल बीच-बीच में हाट से लाता था। उसे अच्छी लगती थी।"

"अब सुनो!"

"कहो, महाराज!"

"लेबर-कुली बहुत चाहिए। गाँव से जो मिलेंगे सो पता है। लेकिन मुझे आदिवासी ज्यादा पसन्द हैं। तुमको सब मानते हैं। तुम कुरमी, और नरसिंगगढ़ से मेरे लिए कुछ आदमी ले आओ। लाओगे?"

"कुरमी के लोग आयेंगे क्योंकि उनके आसपास वैसा कोई काम नहीं है। समझो, नरसिंगगढ़ भी गया, वे भी आ गये। किन्तु...?"

"क्या, कहो।"

"उन्हें भी सवा रुपया मिलेगा?"

सवा देने पर क्या रहेगा, यह हिसाब हरवंस ने मन-ही-मन [illegible] लगाया था। वह जानता था कि इनको पाँच रुपये देने पर भी उसे [illegible] रहेगा क्योंकि उसका ठेका दो लाख रुपयों का है। वह बोला, [illegible] मजूरी दूँगा। पसेरा ढाई सौ मुट्ठी का सत्तू और एक सौ [illegible] गुड़ पानी पीने के लिए। एक बात है, काम मुझे तीन महीने में पूरा कर देना है।

चोट्टि की आँखें सूर्य निकलने के पहले के आकाश की तरह लाल और सुन्दर हो गयीं। वह धीमे से बोला, "महाराज, यह बात कहने से सब बहुत खुश हो जायेंगे। तुम्हारा भला हो।"

"तुमने साफ-साफ बता रखा है इस काम के लिए [illegible]। हमेशा कॉन्ट्रैक्ट तो मिलेगा नहीं। सब [illegible] सकता। वह भी बता देना था।"

"यह भी कह दूँगा।

"तुम्हारे साथ और भी बात है।"

"कहो, महाराज !"

"तुम्हारी उमर हो गयी है। उनके साथ तुम्हें बराबरी का काम नहीं करना होगा। यह सब लेबर ठीक से काम करे, तुम यह सब देखना। तुमको मैं तीन रुपया दूँगा।"

"महाराज, वैसा क्यों करेंगे? मैं ठेकेदार नहीं हूँ। एक रुपया जादा लेने से मेरी गृहस्थी को बहुत फायदा है। किन्तु मैं ठेकेदार तो नहीं हूँ कि जादा रुपया लूँ। इसके सिवा हम अभी तक मिल-जुलकर काम करते रहे हैं। और महाराज, उमर की बात कहने से मन को दुख हुआ। अभी भी पेड़ काटता हूँ, दस मील चल भी लेता हूँ, अपना भात खुद कमा लेता हूँ। अपने बाप की ओर देखो। वह भी काम करता है।"

हरवंस बोला, "सो तुम जानो। अच्छा, अगर तुम रुपये नहीं लेते, फिर भी उनकी तरह काम नहीं करने दूँगा। तुम तो हमारे एक ही चोट्टि हो। तुम्हारे जाने पर दूसरा नहीं मिलेगा।"

"जाना कौन चाहता है?" चोट्टि हँसा। बहुत ही दुर्बोध्य हँसी हँसा। बोला, "बहुत जमाना देखा है महाराज, और भी देख रहा हूँ। यह चोट्टि कैसा था? हम-तुम जहाँ खड़े होकर बातें कर रहे हैं, वहाँ एक बाबू था, मैं तब दस बरस का लड़का था, यहाँ घना जंगल था। गाय लेकर मैं घुसा। गाय बाघ की गंध से भागी। मैं पाकड़ के पेड़ पर चढ़ गया। मेरे सामने आदमी लेकर चला गया। उस समय रेल-लाइन इधर-उधर बन रही थीं। जिस बाघ को मानुस का सवाद मिल जाता, उसके जुलुम से लाइन का काम बन्द हो जाता।"

"चोट्टि, यह पहाड़ क्या ब्लास्ट कर उड़ाया गया है?"

"नही महाराज, हमेशा से एक-सा ही है। बीच में आधे मील तक फाँक है, दो पहाड़ दोनों ओर हैं, हम लोग इन्हें दो सौतें कहते हैं। हमेशा से। बाप-दादे बता गये हैं, धरती बनने के बाद असुरों की पत्नियाँ हरमदेउ के पास झगड़ा करने गयी थीं। हरमदेउ ने उन्हे नीचे पटक दिया। उसी से सारी दुनिया में पहाड़ हो गये। सो यहाँ पहाड़ फाडा नहीं गया है। बीच में से रेल निकाली गयी है। ऐसी अनेक बातें हैं।"

"तो फिर चोट्टि, वही बात रही। छगन से कहना पड़ेगा? उससे तो कहा नहीं है।"

"मैं कह दूँगा।"

हरवंस को अंदर-ही-अंदर कुछ जरूरी काम-सा लगा। क्या बात थी, वह समझ नहीं पा रहा था। वह कंट्रैक्ट के ढंग से ही काम करना चाहता

था, गुंडों को खुश रखना चाहता था। इस अंचल में पोली ईंट बनाने का काम बड़ी अच्छी तरह हो सकता है। हरबंस ईंट बनाने का कारखाना खड़ा करना चाहता था। आदिवासियों और अछूतों के लिए उसके मन में कोई प्यार नहीं है, ऐसा सोचना था। अब लगा कि है। बहुत दिनों की जान-पहचान हो गयी है। इसके सिवा हरबंस गुड ग्रेजुएट है, अखबार पढ़ता है। लेबर को मोटे तौर पर संतुष्ट रखने लायक मजदूरी देकर अपना काम खड़ा करना चाहता है। सदस्य के चेलों का जंगली गुंडापन, जानवरों जैसी उच्छृंखलता उसे अच्छी नहीं लगती। उसको तो बात ही और थी। सदस्य खुद जिस तरह का असभ्य और जानवर था, वैसे में अगर वह सदस्य न होता तो हरबंस उसे घर में न घुसने देता। हरबंस के मन में यही उठता रहता कि पिता के साथ कोई सलाह न कर सारे व्यापार में घुसना उसके लिए उचित न हुआ। अंत में वह पिता के पास गया। परतापसिंह ने अब मोटर सर्विस रिपेयरिंग का कारखाना और दूर-दूर तक माल ले जाने वाली ट्रक-सर्विस खोल दी थी। हरबंस की पत्नी, लड़का-लड़की उनके पास ही रहते थे। लड़का-लड़की बोकारो में पढ़ते थे। हरबंस की मां नहीं थी। विमाता और सौतेले भाई के खेती के काम-काज के उत्तराधिकारी होने से परताप के प्रबल व्यक्तित्व के कारण घर में कोई अशांति न थी। हरबंस की पत्नी, लड़का-लड़की सौतेली मां को विशेष प्रिय भी थे। ईंटों का भट्टा और चहबा बस सर्विस हरबंस को अकेले की थी।

परताप ने लड़के की बातें ध्यान से सुनीं और वे गंभीर हो गये। बोले, "यह तुमने अच्छा नहीं किया। यह मेम्बर कितना मुनाफा लेगा?" रेट सुनकर वे बोले, "मैं तो यही बैठा था। एक बार भी नहीं पूछा। इस तरह जो ताकत में आ गये हैं उनके साथ हमारी तरह के लोगों का कारबार करना बहुत मुश्किल है। वे क्या करते हैं, सब जानता हूं। सरकार से कोयला लेने के बाद क्या हुआ, वह सुनो। ठेकेदार ने लेबर लिया, लेबर की मजूरी से बट्टा लिया। ले-देकर जो बचता है, उसमें से गुंडे लोग लेबर से बट्टा ले रहे हैं। मालिक-मजूर के संबंध में हर जगह यह घुस गये हैं, बट्टा ले रहे हैं। नतीजा होता है कि गड़बड़ होती है। टाउन के सारे साइकिल-रिक्शा वाले हर रोज मालिकों को पैसे देते थे। जो नहीं देता था, उसे मार-पीटकर भगा देते थे। बड़ी जगहों में रिक्शावालों की यूनियन इनसे बातचीत करके कुछ समझौता कर लेती थी। लेकिन छोटी जगहों में गड़बड़ हो सकती थी। तुम्हारा वह मेम्बर तो बहुत ही गंदा है। खून-खराबे की बात मालूम है? खून करके पिछले मेम्बर को हटा दिया।"

हरबंस चुप रहा।

"सब जगह अछूत पिटते हैं।"

हरबंस चुप रहा।

हरबंस का लड़का आकर बाबा के पास सिमटकर खड़ा हो गया और बोला, "अछूत माने अनटचेबल। मालूम है, बाबा? बहन को जब चिकेन पॉक्स हुआ, तब मैं बहन को छूता नहीं था। उस समय बहन अछूत हो गयी थी, यही है न बाबा?"

परताप बोले, "समझा, अब जाओ। हम बातें कर रहे हैं।" लड़के से बोले, "चूल्हे में जायें अछूत। मैं अपने लड़के की बात सोच रहा हूँ।"

"क्या किया जाये?"

"जरा पूछा नहीं? स्टेट बैंक ईंटों का कारखाना बढ़ाने के लिए लोन—कर्ज—देता, सीमेन्ट कम्पनी नया टाउनशिप बना रही है, वे तुमको कंट्रैक्ट देते। मैं बात चला रहा था। इस तरह का कारबार सबसे अच्छा है। गरदन पर चोट न लगती। बैंक के रुपयों से कारखाना चलाने पर, सीमेंट कम्पनी को माल बेचने पर इतना अच्छा नफ़ा रहता है हरबंस, कि गेज रेट के हिसाब से लेबर पेमेंट करने पर भी बहुत मुनाफ़ा रहता है। गुडविल भी बनती है, और नयी-नयी सरकारी अंडरटेकिंग में भी ठेके मिलते हैं।"

"पिताजी, एक बात है।"

"कहो।"

"आप बात चलाइये। मैं भिड़ जाऊँगा। बैंक-लोन से कारखाना चालू करने पर मैं नयी टाउनशिप को माल दे सकूँगा। इनके अलावा कंट्राक्ट करने से बाहर निकल सकूँगा, नुकसान न होगा।"

"ऐसा समझना तो यहाँ चले आना।"

"लेकिन फ़ील्ड में काम करना बड़ा अच्छा है, पिताजी। और पोलीथीन इस समय नफ़े की चीज है। और लेबर भी बहुत सस्ता है। कास्टिंग-मोल्डिंग-पेंटिंग बहुत अच्छा सीख सकते हैं। यह तो कुछ बहुत स्किल का काम नहीं है। हमारा अनस्किल्ड लेबर भी सीख सकता है। मेरी छोटी फ़ैक्टरी है। जान-पहचान के लेबर से काम संभाला जा सकता है।"

"आदिवासी लेबर सबसे अच्छा होता है। सिखाने से सीख जाते हैं, धरना नहीं देते, थोड़ी-बहुत खातिर कर काम करो, बस काम चलेगा।"

"तो यही बात रही।"

"तुम्हारी मुश्किल होगी, लेबर पेमेंट से जब लोग बढ़ा लेंगे। मुझे डर है, सभी लेबर ट्रबल होगी।"

"हमें यही फ़िकर है। चोट्टि के लिए बेईमानी हो जाने पर यहाँ आदि-

वासी लेबर मिलना मुश्किल है। बेगार की अशांति भी अच्छी नहीं लगती।"

"अरे, चोट्टि अभी जिन्दा है?"

"बिलकुल, बहुत योद्धा भी है।"

"तीर चलाता है?"

"उसके चेले चलाते हैं।"

"चोट्टि ने क्या कहा?"

"चोट्टि तो एक तरह से आदिवासियों और अछूतों का लीडर है। बताइये तो कितनी शान्ति है! उसने कह दिया, इतना लेबर ले आओ, इतने दिनों में काम पूरा करो। बस, काम हो गया। मेरा ओवरसियर भी उसे पसन्द करता है। मेरी तरह शान्ति में कोई लेबर काम नहीं करता।"

"देखा जायेगा। बैंक का लोन और टाउनशिप का कन्ट्रैक्ट मैं देखता हूँ।"

हरबंस का मन हलका हो गया। उसने सौतेली माँ का बनाया पालक-पनीर और गोभी-मटर खाया। उसके बाद पत्नी के साथ सिनेमा गया।

चोट्टि ठीक समय पर आदमियों को ले आया। हरबंस से बोला, "छगन के साथ जो लोग आ रहे हैं, उनका जिम्मा छगन का है। मेरे आदमियों का जिम्मा मेरा है। नरसिंगगढ़ के मुण्डाओं का जिम्मेदार भागवत है, उरांव लोगों का जिम्मेदार मंगल उरांव है। कुरमी के मुण्डा लोगों का जिम्मा इस सुगन का है। और महाराज! ये लोग बात मुझसे कहेंगे, तुम्हारी बात मुझसे कहेंगे। इन लोगों में जो बात न मानें उनको मैं निकाल दूँगा। हमें ढुलाई का काम दें।"

"केवल मरद?"

"लड़कियाँ कल से आयेंगी।"

हरबंस ताज्जुब में आ गया। बोला, "कहाँ नरसिंगगढ़, कहाँ कुरमी! इस उमर में तुमने सबको जमा कैसे किया?"

"खुद क्यों जाना? खबर भेज दी। बुला लिया।"

"चले आये?"

"इन लोगों में चालाकी नहीं है, भोले हैं। मुझे मानते हैं।"

"दोपहर को आधे घंटे की टिफिन की छुट्टी होगी।"

हरबंस का ओवरसियर बोला, "काम पर टिफिन भेज देंगे।"

चोट्टि बोला, "वह क्यों? अभी नाम पुकारकर काम पर चले जायेंगे। तभी धनपियाई दे दी जायेगी। उसमें ज्यादा सुविधा है।"

हरबंस बोला, "राइट।"

उसी तरह काम चला। कागज के ठोंगे में बँधा सत्तू और गुड़ लेकर सब काम पर गये। जिस तरह यह लोग काम करते थे, उसे देखकर ओवरसियर भी ताज्जुब में पड़ गया। बोला, "देखने की जरूरत नहीं। चिल्लाना नहीं पड़ता है, और काम निकल जाता है।"

"चोट्टि के रहने से।"

"ताज्जुब की बात है।"

बड़ी ही शान्ति से काम होता रहा, फिर भी हरवंस के माथे पर से चिन्ता की रेखा नहीं मिटी। वह पिता के पास जल्दी-जल्दी जाता रहा। सीमेंट कंपनी के उपग्रह नये छोटे शहर का कंट्रैक्ट चाहिए, चाहिए स्टेट बैंक का लोन। कंट्रैक्ट रुपयों की आशा में उसने, जो कुल जमा-पूंजी थी, ईंटों के कारखाने में झोंक दी है, उसका भी ध्यान न रहा। उसके मन की विक्षिप्त अवस्था का कारण था इकतालीस मील दूर निकम्मे गाँव में रोमियो और उसके भाइयों का देशप्रेमात्मक कामधंधा।

रोमियो ही उक्त घटना का नायक था। 'रोमियो' नाम उसका अपना उपार्जित किया हुआ था। बाप ने दोनों लड़कों के नाम रखे थे सावन कुमार और तुलसीदास। पटना शहर में छात्र-जीवन लंबा कर सावन कुमार का साइकिल चलाते-चलाते लड़कियों की ओढ़नी छीनने और आँचल काटने में कोई सानी न था। बारह से चालीस तक हर उमर की औरतों से असभ्यता करने में उसने कुशलता प्राप्त कर ली थी और अपने को 'रोमियो' नाम दिया। साथ ही वह युवा लीग का तरुण सेनानी बन गया। वन-भोजन में जाकर वह डाँट खाता। दल की एक लडकी को उसने निर्दोष आनन्द और पापरहित मन से शराब पीकर जन्मदिन की पोशाक में नाचने को कहा। लड़की ने उसे चाँटा जड़ दिया। इसका परिणाम हुआ कि उसने लड़की को जंगल में ले जाकर उसके साथ बलात्कार किया और उसकी हत्या कर दी। परिणाम बहुत दूर तक गया। लड़की के पिता को किसी तरह मुक़दमे को अदालत में ले जाने की सुविधा न हुई। इसके बाद लड़की के बड़े भाई—सेना के एक अफ़सर—ने पटना से माँ-बाप को हटा दिया और रोमियो को खूब पीटकर दोनों कानों की लोरें काट लीं। रोमियो इस भाई के ख़िलाफ़ कोई उचित कार्रवाई न कर सका। लोकलज्जा से वह पटना छोड़ मुफ़स्सिल चला गया। दल के युवक नेताओं ने उसे विश्वास दिलाया कि जहाँ भी जाओगे, सहारा मिलेगा। धीरे-धीरे रोमियो को मालूम पड़ा कि लड़की के पीटने से हो या मानसिक कारणों से, पुरुषोचित काम में वह निकम्मा हो गया है। रुपये-पैसे उसकी बात नहीं मानते। तरह-तरह का इलाज हुआ। नरभेड़े को मिट्टी में दबाकर मारने के बाद

उसके अंडकोष को घी में तलकर खाने से पेट फूल गया। वे खुश न हुए। रोमियो को अपनी असफलता स्वीकार करनी पड़ी। अब उसके दिमाग में जमीन चाटना आया। सारे अध्याय के अन्त में अन्तिम प्रयत्न के रूप में वह पटना की एक पुरानी पहचान की वेश्या के पास गया। वह वेश्या पत्थर को भी गरमेच्छुक कर सकती थी, ऐसी उसकी प्रसिद्धि थी। रोमियो ने उसे सोने का हार देने का वादा किया। लेकिन वह वेश्या भी जब असफल रही तो बड़े गुस्से में रोमियो ने उसके शुद्ध मक्खन की तरह कोमल गले को दबा दिया, दबाता गया। यह काम बहुत ही अप्रत्याशित था, और वेश्या जल्दी ही मर गयी। आँखें कोटर से निकल पड़ीं, ओंठ और गले की नसों में शानदार खून भर गया। ओंठ, नाखून और चमड़ी नीली पड़ गये और अंग-अंग सूज गये—सब हो गया। रोमियो तुर्रा और पैंट पहने था। कलेजे में मुक्ति का उल्लास था। उसने समझा कि हत्या कर उसे शान्ति मिल गयी है। हत्या ही उसकी भूमिका है। इसीलिए नियति या सुषमा के भाई ने उसका पौरुष-हरण कर लिया है। अपनी भूमिका में रोमियो वेश्या के घर से निकल आया। उसके बाद तरुण सेनानी की भूमिका में उसने बहुत-से खून किये। बहुत अफसोस के कारण गोली मारी, क्योंकि मारने में उसे बहुत सुख मिलता था। जल्दी ही उसने प्रसिद्धि प्राप्त की। उसको उसके भाई तुलसीदास का साला और कानाटा गाँव के पहले के जमींदार का लड़का दरिद्रनारायण मिसिर हर तरह की मदद देते थे।

इन दरिद्रनारायण मिसिर और अछूत रैदास का एक जमीन का झगड़ा चल रहा था। जमीन रैदास लोग बाँट में जोतते थे। लिखित पट्टा था। उक्त साठ बीघा जमीन कई पीढ़ियों से अठारह रैदासों की अन्नदाता थी। किसी विकल्प का समाधान किये बिना ही दरिद्रनारायण जमीन लेना चाहते थे। मामला बहुत दूर तक गया और आजकल गाँव में पुलिस चौकी बन गयी है। पुलिस पहरा देती रहती है। रैदास धान काटते हैं। रोमियो को लगता है कि दरिद्रनारायण की सहायता करना जरूरी है। गुनालीग के बीस सैनिक लेकर रोमियो जीप के जुलूस में कानाटा में घुसा। झंडा फहराते हुए उसने और उसके चेलों ने अचानक गोली चलाकर पाँच आदमियों का खून कर दिया। उनमें दो स्त्रियाँ और तीन पुरुष थे। रैदास-बस्ती में आग लगा दी, धान जला दिये। उसके बाद दरिद्रनारायण के घर खबर देने गया। पुलिस वाले निष्क्रिय दर्शक रहे। रोमियो ने थाने को धमकाया, "आज कोई रिपोर्ट मत लिखना।" रैदासों से कहा, "मैं फिर आऊँगा और छोटी जात वालों की जगह कहाँ है, उसे फिर पहचनवा दूँगा।" दरिद्रनारायण ने कहा, "आज हम, जो

तबियत थी, वह कर सके। सब मालिक-महाजनों से कह दो, पाँच वरस में हरिजनों को ऐसी शिक्षा दे जाऊँगा कि सिर उठाने में पाँच हजार बरस लगेंगे। हरिजन, आदिवासी—सब को हटाओ। ऊँची जात में जो ग़रीब हैं, वे खेती करें, वे ही खेती-बारी करें। बिहार में अगर यह प्रोग्राम सफल हो तो इंडिया में सब जगह चलेगा।"

दरिद्रनारायण बोले, "भैया, मिनिस्टर लोग क्या बोलेगा ?"

रोमियो बोला, "मिनिस्टर लोग ? स्टेट के मिनिस्टर ? अरे दिल्ली मदद देगी, अभी भी देती है।"

दरिद्रनारायण कृतज्ञता का प्रतिदान देना चाहते थे। बोले, "आसाम से गैंडा मारकर उसका सींग लाया हूँ। खाकर देखेंगे ?"

"न-न।"

"तुम अर्जुन थे। वृहन्नला बन गये।"

"भैया, अब सब नया हुआ जा रहा है। वृहन्नाला भी बना, और अर्जुन की तरह बहादुरी के काम भी किये।"

"यह भी ठीक है।"

"फिर आऊँगा। बीच-बीच में इस तरह ऐक्शन करने से हरिजन डरे रहेंगे। सब लोगों के इस बात को मान लेने से आज देश की शकल ही बदल जाती। देखो न, पुलिस कुछ दिनों चुप रहेगी। उसके बाद पकड़ना होगा तो रैदास को ही पकड़ेगी।"

घटना किसी अखबार में नहीं निकली। फिर भी जानकारी हो गयी। सुनकर हरबंस और अधिक घबराया, रोमियो अगर चोट्टि में आ जाये तो ? रोमियो के पीछे राज्य-सरकार, पार्टी-संगठन, युवलीग, पुलिस, दिल्ली—सब हैं। हरबंस क्या करेगा ? उसकी क्षमता कहाँ तक है ? हरबंस अपनी घबराहट की बात किसी से नहीं कह सकता था। रोमियो ने औरतों और बच्चों को गोली मार दी, यह सोचकर ही उसे डर लगता था।

एक दिन वह काम देखने गया। चोट्टि एक पत्थर पर बैठकर बीड़ी पी रहा था। वह चोट्टि के पास खड़ा हो गया।

चोट्टि बोला, "देखने में कितना सुन्दर है !"

"क्या, चोट्टि ?"

"यह जो सब लोग मिलकर काम करते हैं। काम के लिए बहुत दुख था, महाराज ! अब घर-घर में सब हँसते हैं।"

"यह अच्छा है, बहुत अच्छा है।"

"बहुत शान्ति है।"

"हाँ, चोट्टि !"

"लेकिन ऐसा नहीं रहेगा।"

"क्यों ?" हरबन चौंक पड़ा।

घोट्टि ने काम करते आदमियों की ओर देखते हुए ही कहा, "कालाटा में क्या हुआ, पता है ? जानते तो हो। तुम्हारी शकल देखकर समझ गया।"

"इन लोगों को मालूम है ?"

"सब मालूम है। जमाना खराब हो गया है, महाराज। कानून-अदालत-पुलिस—सब खरीदने-बेचने का हो गया।"

हरबन को सहसा मानो भीतर से बल मिला और तुरत आन्तरिक सद्भाव से बोला, "मेरे रहते कोई चिन्ता मत करो।"

"मैं ? चिन्ता ? चिन्ता मैं किसी दिन नहीं करता। चिन्ता करने में कोई फायदा है ? जब जैसा देखता हूँ, भरसक सामना करता हूँ।"

"तुम मेरे लिए एक सहारा हो।"

"वह कभी बन सकता हूँ !" घोट्टि ने गरदन ऊँची कर जोरों से कहा, "अरे लड़कियो, तुम हँस क्यों रही हो ? काम नहीं है ?"

छगन की ननदी जोरों से बोली, "काम पूरा कर दूँगी।"

"जल्दी करो।"

घोट्टि फिर बोला, "यहाँ जरा काम की शान्ति है। दूसरी, थाने की शान्ति है, यह भी रहने नहीं देंगे महाराज ! जमाना खराब हो गया है। खून और मारधाड़ बहुत बढ़ गयी है। इतना खून नहीं होता था।"

हरबन बोला, "मैं तो हूँ।"

"तुम्हारे लोग हैं, बन्दूक भी है। सावधान होकर रहो। वह लोग दनादन गोली छोड़ते हैं, बम मारते हैं।"

एक दिन फिल्डफील्ड देखने आये हुए दारोगा ने वही बात कही, "मिस्टर चड्ढा, जो कह रहा हूँ वह मेरे-आपके बीच की बात है। कोई पूछेगा तो मैं मानूंगा नहीं। लेकिन बात सुनिए। बन्दूक है ?"

"है।"

"कितनी ?"

"एक।"

"एक और खरीद लीजिये। लाइसेंस बना देता हूँ।"

"क्यों ?"

"साफ बात बता रहा हूँ। थाने के हाथों में अपनी कोई क्षमता नहीं है। सुपरीम जो कहती है, वही करना पड़ता है। आप तो जानते हैं। मैं जनसंघी हूँ और यह बात कभी छिपायी नहीं। और जनसंघी हूँ या कुछ भी हूँ, किसी दिन काम में गलती नहीं की। मालिक-महाजन कहें,

कारबारी कहें, सबको मदद दी। अब जो कुछ देख रहा हूँ उससे लगता है, इस मेम्बर की आदत बहुत खराब है। रोमियो मुझे धमकाता है। मैं युवलीग की धमकियाँ सहूँगा? लेकिन बंदूक लेने को क्यों कह रहा हूँ? कुछ फ़साद होने पर मैं कुछ न कर सकूँगा। जैसा मामला होगा, वैसा मुक़ाबला कीजियेगा, मैं देखने नहीं आऊँगा। मिस्टर चड्ढा, हरिजन लोग खचड़ई करेंगे तो जरूर ठीक करूँगा। कब नहीं किया? लेकिन औरतों और बच्चों पर गोली चलाना? राम-राम!"

हरवंस व्याकुल होकर बोला, "क्या सोचते हो, क्या होगा?"

"क्या पता!"

हरवंस फिर पिता के पास गया। पिता की बातचीत बहुत ही संतोष-जनक थी। पिता को एक लाइन मिल गयी थी। लाहौर में चड्ढा-परिवार प्रसिद्ध था। देश-प्रेमी हरवंस के पिता के कोई चचेरे भाई जलियानवाला बाग़ में मारे गये थे। हरवंस का सौतेला भाई बिहार का हॉकी चैम्पियन था। इन सारी चीज़ों को भुनाकर बड़े चड्ढा ने विधान सभा के सेक्रेटरी को पकड़ा था। सेक्रेटरी ने आश्वासन दिया था। इसलिए हरवंस को बैंक का लोन और कंट्रैक्ट मिलेगा।

हरवंस खुश मन से घर लौटा और देखा कि रोमियो और पहलवान उसके मकान के बरामदे में बैठे ताश खेल रहे हैं। रोमियो बोला, "बैठिये। कुछ बात है। काम कैसा चल रहा है?"

"अच्छा ही चल रहा है।"

"कोई लेबर ट्रबुल?"

"नहीं। मुझे कभी लेबर ट्रबुल नहीं होती।"

"किस तरह?"

"छोटी जगह है। जान-पहचान होने से झंझट नहीं होता।"

"अमरीकन पालिसी है क्या?

"क्या कह रहे हैं?"

"अमरीकन की तो यह पालिसी रहती है। बड़ी कम्पनियाँ लेबर के लोगों को इतना खुश रखती है कि झंझट नहीं होता।"

"वही होगा। चाय-वाय के लिए कह दूँ?"

"कहिए, कहिए।"

आदमी है।"

अब रोमियो चाय और खाने को छुए बिना फटाक से काम की बात पर आ गया। बोला, "सुना है कि आप आदिवासियों और अछूतों को बराबर मजूरी दे रहे हैं?"

"हाँ।"

"क्यों? उनकी यूनिटी तोड़ने के लिए यह एक अच्छा मौक़ा मिला था, सुनता हूँ कि यहाँ उनकी बड़ी यूनिटी है।"

हरबंस ने देखा और समझ लिया कि रोमियो को देखकर उसके अंदर कोई डर नहीं है। आहिस्ता से बोला, "मेरा ईंटों का कारखाना है। थर्मल पावर प्लांट—बिजली का बड़ा कारखाना या ए० सी० सी० की सीमेंट फैक्टरी नहीं है जी। कुल मिलाकर डेढ़ सौ आदमी काम करते हैं। सत्तर लोग मेरे गाँव के और जान-पहचान के हैं।"

"दूसरे?"

"सब मुंडा हैं। आस-पास के।"

"उस प्रॉब्लम का क्या कर रहे हैं?"

"प्रॉब्लम तो है ही नहीं, करें क्या?"

"यह तो बड़ी अजीब बात है। एम्प्लायर है, एम्प्लाई है— मालिक-नौकर है—और कोई प्रॉब्लम नहीं है।"

"नहीं जी। देखिये न, जिस-जिस गाँव के लोग आये हैं, उस-उस गाँव का एक बुज़ुर्ग आदमी उन लोगों के लिए ज़िम्मेदार है। यह बंदोबस्त चोट्टि मुंडा का है, और चोट्टि को गाँव के ही क्यों, इलाके के सब लोग उसे मानते हैं।"

"चोट्टि मुंडा! नाम तो जाना-माना सा लगता है।"

"सब जानते हैं। ब्रिटिश अमल में छोटे लाट के सेक्रेटरी उससे मिले थे। आजकल के ट्राइबल डिरेक्टर भी उसे जानते हैं।"

"क्या, फाइटर मुंडा है?"

"न-न। भला, ज्ञानी, बुड्ढा आदमी है।"

"आपकी बातें सुनकर बहुत ताज्जुब हुआ। लगता है आप भी कोई बड़े आदमी हैं, महात्मा। इन सब सवालों को लेकर अच्छी तरह से काम कर रहे हैं।"

"मैं तो कुछ नहीं हूँ जी। अपने पिता के आशीर्वाद से ज़िन्दगी चली जा रही है। बाबा के दोस्त लोग ज़रूर नामी-गिरामी लोग हैं। रामनगर प्रसाद...।"

"क्या, असेम्बली सेक्रेटरी?"

"हाँ जी। और विलास सहाय...।"

"क्या, राज्य के मंत्री ?"

"हाँ जी। आई० जी० पुलिस भी बाबा के दोस्त हैं।"

"समझा, कह रहे हैं कि गड़बड़ नहीं होगी।"

"गड़बड़ क्यों होगी ? आजकल ऐडमिनिस्ट्रेशन—शासन तो अच्छा चल रहा है।"

"चल रहा है और चलेगा।"

"वही तो कहा न !"

"लेकिन सब जगह एक ही तरीक़ा चलाना चाहता हूँ। उनको जब हफ़्ता दें, तो प्रति आदमी चार आना पहलवान का बट्टा रहेगा—ठेकेदारी। आप वह काट कर हफ़्ता देंगे।"

"लेकिन वे तो ठेकेदार नहीं हैं।"

"वह आपके देखने की बात नहीं है। और उनके राज़ी न होने पर कानाटा बनाकर छोड़ दूंगा। आज आपसे बात हो गयी। कल लाला से बात करने आऊँगा। बता रहे हैं कि यहाँ कोई प्रॉब्लम नहीं है, वह उनके दिमाग़ में डाल दिया है। हफ़्ता से बट्टा काटने की बात कहकर देखिये। प्रॉब्लम देख लेंगे।"

"लेबर ट्रबुल उठाने से काम कैसे होगा ?"

"ट्रबुल उठायेंगे ?"

पहलवान अब बड़े दाँत वाले पशुओं की-सी हँसी हँसा और बोला, "कुछ ट्रबुल नहीं होगा। दो-चार लाशें गिरेंगी, बीस-तीस घर जलेंगे, वे कलेजे के बल काम करेंगे।"

"उन्होंने तो कुछ किया नहीं है।"

रोमियो सुकरात की तरह समझदारों की-सी हँसी हँसकर बोला, "देखिये, 1971 के अगस्त में मिसेज मोदी ने राज्यसभा में नक्सल लोगों के बारे में कहा था, नक्सल लोगों से उन्हें खतम करने तक लड़ाई लड़नी होगी। वही हरी झंडी थी। बस, उसके बाद ही घर से निकाल-निकाल कर नक्सलों को मारना शुरू हुआ। उसी से एक महान् उद्देश्य सिद्ध हुआ। नक्सल लोगों के मन में डर समा गया। ऐक्शन धीरे-धीरे कम कर दिया गया।"

"यह लोग क्या नक्सल हैं ?"

"पता है। नक्सल लोगों के वक़्त गवरमेंट ने क़ायदा-क़ानून अलग रख दिये। क्यों ? नक्सल लोगों को जो कर सके खतम करे—गवरमेंट यही चाहती है। क़ानून बनाती तो कैसे ? क़ानून काम का नहीं

आ। पसन्द नहीं आया? अब बताओ! अदालत में जाने पर अछूत
। आकर मर जाते हैं। तब? गवरमेंट अगर चाहती कि हरिजन लोगों
। सरकार को मदद लेने दो क्या खुद क़ानून बनाते, और बैठे-बैठे
खते कि वह क़ानून बेकार बनाया क्यों जा रहा है? अरे, आपके छोटा
ागपुर में इतने लो ने ने चौतीस हिस्सा कई ने डूबा हुआ है, सतर भाग
गेव के लोग ब्राह्मणों को देखा—पाकशें साहब—के नीचे रहते हैं। यह
क्या गवरमेंट को नहीं पता है?"

"आप कह क्या रहे हैं?"

"मोटी बात है। अछूतों और आदिवासी लोगों को जूते के नीचे रखिये। तभी ये ठीक रहते हैं। इन्हीं को दस्ते में लेकर निपटते हैं। खेती-बाड़ी ठीक से चलती है। और जो सबसे बड़ी बात है, भगवान की महिमा ऊँची रहती है। यह सब बातें आप भी वक्त आने पर समझेंगे। जो हो पहलवान हफ्ते का बट्टा लेने आयेगा।"

हरबंस ने बहुत धीमे से कहा, "नहीं। मैं महीने के महीने दे आया करूँगा।"

"जैसी तबीयत। लेकिन मेरी बात न मानने से पहले कुछ सोचिए, जो भी कहा, याद रखियेगा। गवरमेंट कब क्या चाहती है इसे हम अच्छी तरह जानते हैं।"

हरबंस ने अमरसिंह से सारी बातें बताईं। अमर उसका कर्मचारी भी था, दोस्त भी। सब सुन-सुनाकर अमरसिंह बोला, "आप क्या सोच रहे हैं?"

"तुम बताओ, तुम्हें क्या लग रहा है?"

"कहने में हिचकिचाहट हो रही है। इसमें तो खतरे हैं

"कहो, कहो।"

पहलवान ठेकेदार होता, वट्टा लेता, तो सोचने न जाता। इनके साथ जान-पहचान होने से वैसा नहीं कर सकता हूँ। यह मेरी कमजोरी है। फिर भी नहीं कर सकता। मैं तीरथ लाला नहीं हूँ। पहलवान को लहका दूं, वह लाशें गिरा दे, ऐसा करने पर बाद में लेबर मिलेगा? फिर इतना जुल्म बरदाश्त ही क्यों करूँ? कंट्रैक्ट का रुपया मेम्बर लेगा। इन्हें भी हिस्सा मिलेगा। फिर भी वट्टा दूं!"

"अभी नहीं देंगे?"

"देना पड़ेगा। लेबर के ऊपर सरफ़ेस कोलियरी के चिरंजीलाल ने पहलवान को लहका दिया। आग भड़की, और कोलियरी बन्द।"

"इनको माल दे देने से आपको छुटकारा मिल जायेगा।"

"मैं कोई गड़बड़ नहीं चाहता।"

"रुपये लेकर रोमियो और पहलवान हँसते हैं। कहते हैं, जेब से दिया, फिर भी उनसे न कह सके।"

"मैंने जैसा समझा वैसा काम किया।"

"आपकी तरह के आदमी से कोई फ़ायदा नहीं। इसके बाद में आपको लेबर दूंगा। उन्हें हटा दूंगा। हमें कंट्रैक्ट लेने पर लेबर भी लेना पड़ेगा। नहीं लेंगे तो कंट्रैक्ट ख़तम।"

"रोमियो कहता है कि मैं तो आपके लेबर के पास जाऊँगा। बड़ों को देने पर उसे भी देना होगा। झंझट होने पर देख लूंगा।"

हरवंस के मन में भी जिद बैठ गयी। उसने पिता को दिखा देना चाहा था कि ईंटों का भट्टा चलाकर वह अपनी हिम्मत पर खड़ा होगा। ब्रिकफ़ील्ड उसकी सारी जिन्दगी है। वह मन की आँखों से देख रहा था कि सब उजड़ने को हो रहा है।

लाचार उसने चोट्टि से सब कहा। चोट्टि बहुत ठंडे दिमाग़ से बोला, "एक बार जुलुम सह लेने से जुलुम बढ़ता जाता है। महाराज! तुम्हारा जो धरम हो वह करो। हम वट्टा नहीं देंगे। चाहो तो छुड़ा दो। हम समझ लेंगे कि हमारे भूखे रहने के दिन आ गये हैं। लेकिन लड़कर मरेंगे। यह लोग हमें मारना ही तो चाहते हैं।"

"मैं गड़बड़ नहीं चाहता, चोट्टि! इसी से वट्टा दे रहा हूँ।"

"हम भी भीख नहीं लेंगे। एक घंटा जादा मेहनत करेंगे। उसकी मजूरी नहीं चाहिए। तुम्हारा रुपया है, उसमें से कुछ जायेगा। इससे थाने में बता रखो।"

"थाना इनके नाम पर रिपोर्ट नहीं लेगा।"

"कोई नहीं है, जिससे कह सको?"

"कौन है ?"

"मेरी पहचान का आदिवासी अफसर है। यहाँ हरिजन को मारने-जलाने से पुलिस नहीं देखेगी। लेकिन मुंडा-उराँव को बिगाड़ने से आग लग जाती है, उसे यह लोग नहीं चाहते। आजकल गोरमेंट जादा हरामी है किन्तु आदिवासियों को भड़काना नहीं चाहती।"

"अगर तुमको मारे तो ?"

"अरे महाराज ! तुम्हारा धंधा लाख टके का है। मरने से भी डर लगता है। हम लोगों का धंधा दो रुपयों का है, और हम मरने से भी नहीं डरते। हमें मारे तो अच्छा है। मुंडा लोग आग लगा देंगे। मारेंगे तो जरूर, उसके बाद मरेंगे।"

"मैं ही जाऊँगा।"

हरबंस भागा हुआ पिता के पास गया। वहाँ से सदर गया। वर्तमान आई० जी० पुलिस ने हाल ही में वर्तमान सरकार की जहरीली नजरों में आना शुरू किया था। उसके लिए निकम्मे विभाग बनाने की कोशिश हो रही थी। बहुत बड़े शातिर डाकू का दमन, जिसके परिणामस्वरूप परमवीर-चक्र की प्राप्ति, मरघनि के लिए अपहृत हरिजन बच्चे को बचाना, सूखे के क्षेत्र में प्रधानमंत्री की सफल व्यवस्था, इत्यादि प्रशस्तियाँ उनके नाम के साथ जुड़ी हैं। इसलिए विभिन्न स्थानों पर उनके खूँटे हैं। ऐसे आदमी को जल्दी से फ़ारिग करना आसान नहीं था। राम कहे 'हाँ' और यदु कहे 'ना'। श्याम कहे 'क्यों' ? हरि कहे 'कभी नहीं'। आई० जी० को शायद खिसकना न पड़ता। हटना पड़ेगा दिमागी कीड़े के कारण। सब के ही सिर में कोई-न-कोई कीड़ा रहता है। आई० जी० ठहरे ब्रिटिश जमाने के आदमी। नाश्ते को कहते थे 'छोटा हाजरी'। वे सोचते थे कि पुलिस आई० जी० के पास रेहन रहेगी। पुलिस के कामकाज में वे राजनैतिक दबाव सहन नहीं कर सकते थे। युवलीग की कारगुजारियाँ उन्हें पसन्द नहीं थीं। विशेष रूप से कानाटा के मामले में वे पुलिस पर ही बिगड़े हुए थे। रोमियो और पहलवान पर और भी चिढ़े थे। हरिजन-आदिवासी लोगों के लिए उन्हें कोई खास अपनापन नहीं महसूस होता था। क़ानूनी बात पर कायम रहना उन्हें सही लगता था। लेकिन रोमियो आदि ग़ैरकानूनी काम कर पुलिस की मदद लेते थे, इससे वे बहुत ही क्षुब्ध थे और यथासाध्य उन्हें ठीक करने को तैयार रहते थे।

हरबंस की बातों को उन्होंने ध्यान से सुना और बीच-बीच में 'बाई जोव', 'आइ सी', 'अगर' इत्यादि मन्तव्य से समझा दिया कि रोमियो आदि जिस जहरीली दवा को छिड़क कर नाश करने लायक हैं, उस बारे में वे

हरवंस की-सी ही राय रखते थे।

बोले, "तुम जाओ। मैं देखता हूँ।"

वे गृहमंत्री के पास चले गये। पूरी घटना बतायी। गृहमंत्री बोले, "अर्जुन मोदी के चेले तो आजकल सर्वेसर्वा हो रहे हैं। फिर भी युवलीग के नाम पर यह गुंडई करने देना ठीक नहीं है।"

उन्होंने युवलीग के सेक्रेटरी से बातचीत की। सेक्रेटरी बोले, "वह मेम्बर भी बुड़बक—बेवकूफ़ है। और उसके चेले लोग भी खचड़ा हैं। हम देखते हैं, आप कुछ जिकर न कीजिये।"

इतना घास-फूस फूंकने से यह नतीजा हुआ कि हरवंस के मामले में रोमियो ने फिर कुछ बात नहीं कही, लेकिन वह बड़े गुस्से में भरा रहा। हरवंस कंट्रैक्ट के अनुसार माल देकर बच गया। चोट्टि से बोला, "भगवान करेगा तो फिर ईंटें बनेंगी। फिर ठेका लूंगा, और इनको घुसने न दूंगा।"

"इन्हीं लोगों का राज है, महाराज!"

"देखा जायेगा।"

"लाला के काम में मुसीबत आयेगी।"

"क्या कहना है, बताओ? लाला अपनी राय पर चलता है।"

"लाला तीरथनाथ क्या सोचता है, इसका पता नहीं चलता। लेकिन उसका काम शुरू होता है तो हफ्ते के दिन लाला सवा रुपया देता है।"

"दो रुपये की बात थी।"

"दो ही रुपये मिले। बारह आने पार्टी के लड़कों ने काट लिये।"

"क्यों?"

"मोहर की बहू ?"

"उसका बच्चा अभी एक महीने का है।"

"तो कितने लोग हुए ?"

"समझ लो महाराज, बीस लोग।"

"उनसे काम चलेगा ?"

"मैं क्या बताऊँ ?"

"तू उनका सरदार है।"

"तो मैं उनसे क्या कहूँ, महाराज ? तुम तो दोगे सवा रुपया। जो दो रुपये देगा, उसके पास अगर जायें तो मैं क्या कहूँगा ?"

"यह क्या झूठमूठ का झंझट है ?"

छगन ने खैनी मल कर मुँह में रखी। उसके बाद बोला, "चड्ढा से बट्टा माँगा, सो हमारी मजूरी नहीं काटी, उसने दे दिया।"

"ऐ ! उसने दिया ?"

"जरूर।"

रोमियो धीमी हँसी हँसकर बोला, "लाला जी ! चड्ढा ने जो किया है वह मुझे मालूम है। आप क्या वही करेंगे ?"

"ना-ना, पर बट्टा भी खतम।"

"क्यों ?"

"सिवा बेगार वालों के कोई नहीं आयेगा।"

"नहीं आयेगा।"

"हाँ जी।"

"किधर जायेगा ?"

"कलकत्ता में नक्सली है। वहोत सेठ-वेठ ने इधर कोलियरी खरीदी है। उधर ही जायेगा।"

"मजूरी ?"

"दो रुपये और टिफिन।"

"जाने दीजिये।"

रोमियो सावधान हो गया और चोट्टि गाँव के गैर-बेगारी लोग कोलियरी के काम में लग गये। हफ्ते के दिन मालिक बोला, "पार्टी के आदमी के आने पर हफ्ता दूँगा।"

"क्यों ?"

"वह एक-एक रुपया लेगा।"

चोट्टि के लोग एक-दूसरे की ओर देखने लगे। ठीक वक्त पर रोमियो और पहलवान और दिलदार जा पहुँचे। मेज पर बदूक उतारकर रखी

और पैसे हिसाब करके काट लिये। हँसकर बोला, "अगली बार सवा रुपया काटूँगा।"

यह लोग सब जानते थे कि रोमियो ने अपने हाथों पिछले सदस्य की हत्या की थी। इसी से डर के मारे चुप रहे। बाद में गाँव को लौटते-लौटते बोले, "सात मील आयेंगे-जायेंगे, एक रुपया मिलेगा। उससे तो लाला ही अच्छा है। गाँव में रहकर सवा रुपया। यह भी गौरमेन के आदमी हैं। पहले तो ऐसे रुपये नहीं लेते थे। अब क्या जादा जरूरत पड़ गयी है?"

तीरथनाथ का चेहरा अब काफ़ी उतरा दिखायी पड़ता है। छगन आदि को जूतों के नीचे रखना उसे बहुत ही पसन्द था और मन के मुताबिक़ काम था। लेकिन घटना जिधर जा रही है, वह उसके मन के मुताबिक़ न था। इनका शोषण और इन पर क़ाबू रखना, दबाये रखकर चलना ही वह चाहता था। लेकिन बराबर दबाये रखने पर व्यक्तिगत संबंध का मामला समाप्त हो जाता है, इसे वह नहीं चाहता था। बराबर दबाकर रखने पर कुछ लठैतों और बंदूकधारियों को पालना पड़ता है, इसे वह नहीं चाहता था। मथुरासिंह पुलिस को मार बैठा था। तीरथनाथ चाहता था कि आदमी प्राचीन वर्णानुशासन में विश्वास करें। बिना विरोध कम मजूरी लें, बेगार दें। वैसा होने पर तीरथनाथ की भी तबीयत होती थी कि बीच-बीच में उन्हें पूजा का प्रसाद दे, नयी फ़सल में से थोड़ी दे। आजकल परिस्थिति बहुत उलझी हुई थी।

तीरथनाथ उदास स्वर में बोला, "सारे लोग काम करेंगे? करें। तब यह फड़फड़ाहट क्यों है? आजकल जो राज है, उससे तुम्हारी कमर तोड़ने आते हैं।"

"तुम क्या कमर साबुत रहने दे रहे हो?"

"चालाकी की बात का क्या काम, सना? दादा लोग कहते हैं, अब उन्हें एक-एक रुपया देना होगा। मेरा दोष नहीं है, सना! यह उन लोगों की बात है।"

सना और छगन बोले, "चोट्टि के पास जा रहे हैं।"

"क्यों? उसके पास क्यों? वह क्या मेरा काम करता है?"

"उससे अकल लेंगे।"

"उससे तुम लोग मेरी दुश्मनी न करा देना।"

"उसके पास जा रहे हैं।"

चोट्टि ने सब सुना और बोला, "तुम लोग उससे एक बात कहना। कहना, रुपया मत दो। रुपयों के बदले पिछली फसल का मक्का दे दो।"

तीरथनाथ उस पर ही राजी हो गया। धान के पौधे भरे-पूरे थे।

वालियों में दूध भर आया था। हेमन्त समाप्त हो रहा था। ऐसे वक्त काम में झगड़ा होना ठीक नहीं है। लेवर खोना अक्लमदी की बात नहीं है। चारों ओर तरह-तरह के काम थे। मजदूर मिलना मुश्किल था। यही नहीं कि लेवर का खिचाव हो। जिस गांव में चोट्टि मुंडा था उस गांव में बाहरी आदमी जल्दी आना नहीं चाहते थे। तीरथनाथ बोला, "वही करो, बाप।"

काम करते-करते छमन बोला, "कई दिनों से लगता है, सूरज पच्छिम से निकल रहा है। कई दिनों से लाला ने कई बार 'बाप' कहा है?"

सना बोला, "अब वह कहता है, कभी हम लोगों से 'बाप, बाप' कहलायेगा। उसका कोई विश्वास नहीं।"

तीरथनाथ ने कायदे के मुताबिक सारी बातें हरबंस से कही। हरबंस ने सब कुछ सुन कर कहा, "मन में भी मत सोचियेगा कि पार हो गये। वे बट्टा तो लेंगे ही।"

"मक्का लेंगे?"

"पैसे माँगेंगे।"

"तब?"

"मैंने तो दिये थे।"

"उसमें कितना खर्चा होता है, पता है?"

"पता है। खुश होकर नहीं दिया था। लेकिन गड़बड़ नहीं मचने दी।"

"गड़बड़ नहीं होगी।"

"लालाजी वक्त को पहचानिये। आपको बीच में नहीं चलने दिया जायेगा। या तो इधर, या उधर, एक साथ दो राहों पर नहीं चला जा सकता है।"

"भैया, तुम क्या उन लोगों के खिलाफ़ हो?"

"क्यों? कट्रैक्ट का माल तो दिया है।"

"पैसे मिल गये?"

"मिल जायेंगे। कुछ तो मिल भी गये है।"

"देखें भगवान क्या करते हैं।"

"भगवान बहुत सनकी काम करते हैं।" रोमियो और पहलवान और दिलदार चीखकर बोले, "कुत्तों को मक्का मत दीजिये। रुपये दीजिये, बट्टा काट लीजिये। जो नहीं लेगा उसे देख लेंगे।"

वे लोग चुपचाप वापस चले गये यानी 'कुत्ते' लोग अपने-अपने घर चले गये। तीन जीपों में रोमियो के लोग तरुण सेना लेकर आ गये। दल का झंडा जीप के ऊपर लगा था, जीप पर दल-नेत्री माँ का चेहरा आँखों में,

करुणा की वर्षा कर रहा था। उनको आते देखकर गाँव के लोग जंगल में भाग गये। पहान और पहानी यह देखने को बाहर निकले कि क्या हो रहा है। देखा कि दुसाध-धोबी-गंजू लोगों की बस्ती जल रही है। आग फैल गयी और तीरथनाथ की दूकान भी जल गयी। रोमियों ने और किसी को न पाकर पहान और पहानी को गोली मार दी। उन्होंने छगन आदि की मजूरी के मक्का के गट्ठरों पर पैट्रोल छिड़ककर आग लगा दी। उसके बाद वे महारानी और युवराज के नाम के नारे लगाते हुए चले गये। उन्होंने तीरथनाथ का रोना-धोना भी नहीं सुना और मक्के के ढेर में से आग उड़कर तीरथ की कचहरी पर फैल गयी। जमा किये हुए मिट्टी के तेल के टीनों की सीलें गर्मी से उड़ गयीं। आग लग गयी।

चोट्टि बोला, "पहान-पहानी की लाश रहने दें। सदर जा रहा हूँ। मोतिया की लाश रहने दें। बुढ़िया भाग न सकी।"

हरमू बोला, "पहले थाने पर।"

स्टेशन के कुलियों ने स्टेशन-मास्टर को जाने के लिए विवश किया। रेलवे का स्टाफ़ मरा है, इसलिए हरबंस की बस ली गयी। स्टेशन-मास्टर ने ली। चोट्टि बोला, "चारों लाशें उठेंगी। एक तरह से गरे हैं।"

थाने के दारोगा ने बेहोश होते-होते घटना नोट की। वे भी अपनी चमड़ी बचाने के लिए साथ चले। सदर गये बिना चारा नहीं था। चोट्टि आदिवासी-डिरेक्टर दिलीप तरोये के आगे लम्बा लेट गया। बोला, "पहान और पहानी ने लाला के खेत में कभी काम नहीं किया था। आग देखकर निकले थे। उनको मार दिया, महाराज, उन्हें मार डाला!"

मामला जटिल हो गया। सारी घटना युवक-सेना के अविवेक के कारण घटी थी। वर्तमान शासन में, बाहरी दुनिया में, हरिजनों के बारे में बहुत ढोल पीटे जाते हैं, लेकिन असली आदेश सब जानते हैं। हरिजनों और अछूतों के मर जाने पर भी कुछ आता-जाता नहीं। यही तो 1969 में सिंहभूमि के सुरमही और दूसरे गाँवों में पुलिस ने एक जमींदार का मान रखने के लिए चार सौ आदमियों को गिरफ़्तार किया था और सबके सामने औरतों पर पाशविक अत्याचार किये, कई गाँव जला दिये, आदमियों को मार डाला था।

इस शासन में इन सारे कामों में पुलिस बहुत कुशल है। आई० जी० समझ गये कि उनके विदा होने का समय आ पहुँचा है, और इस समय युवलीग को यथासाध्य ठीक करने के उद्देश्य से बोले, "मिस्टर तरोये तो ठीक ही कह रहे हैं। मान लिया कि अछूत लोग बहुत नासमझ हैं। महाजन के साथ संबंध अच्छा न रख सके। लेकिन बात क्या हुई? एक रेल-वर्कर

मरा। उनकी लेबर यूनियन खफ़ा हो गयी। मरी एक बीमार बुढ़िया। लाशघर में तो देखा कि उनकी हड्डियाँ भी काली हो गयी हैं। मरा मुंडा लोगों का समाज-प्रधान पुरोहित और उसकी पत्नी। यह लोग न तो महाजन की जमीन जोतते थे, न यह सब झगडे में थे। लॉ और ऑर्डर—कानून और व्यवस्था—उल्लू के पट्ठों के हाथों में पड़ने पर इस तरह होगा ही। मुरमही-आपरेशन में पहले के आई० जी० थे। कोई बात उठी थी?"

दिलीप तरोये ने जहाँ तक हो सका, अपने खूंटों को हिलाया-डुलाया

। है। जांच की जरूरत

पहान उस अचल में

प्रशासन ने समझा कि यह अखबारों में बदमाशों की गंदी खबरें नहीं है। एस० डी० ओ० और आई० जी० चोट्टि गये। वहाँ मदद देने का वादा किया और जिनके घर जल गये थे उन्हें पच्चीस-पच्चीस रुपये मिले। पहान की लाश के अधिकारी उसके भतीजे को सौ रुपये मिले। सबने ताज्जुब में पड़कर कहा, "चोट्टि के सदर गये बिना क्या कुछ मिलता। चोट्टि जो करता है वह क़िस्सा बन जाता है।"

रेल के कुली के परिवार को भी कुछ हर्जाना मिला। चोट्टि अचल पर सख्त रोक लगा दी गयी कि इस सबंध में किसी संवाददाता को कोई समाचार न दिया जाये।

हाकिम-हुक्कामों के चले जाने के बाद एक शाम को चादर से कान और सिर ढककर खों-खों खांसते हुए चोट्टि के घर आनन्द महतो पहुँचे। बोले, "तुम्हारा नाम नहीं रहेगा। किसी को कुछ पता नहीं चलेगा। बताओ क्या हुआ था।"

"अपने लिए फिकर नहीं है। पहान का चेहरा और पहानी की नंगी छाती पर घाव देखकर मैं कोयल का दुख भूल गया हूँ। लेकिन नाम निकलने से चोट्टि जल जायेगी।"

"नाम नहीं निकलेगा।"

"अगर निकले तो? फिर घर जलेंगे, लाशें गिरेंगी, तुम देखोगे? तुम्हारा वह मेम्बर मर गया, कुछ कर सके?"

आनन्द महतो उदास हँसी हँसकर बोले, "क्या समझते हो कि मेरी हालत अच्छी है? मेरे दिन भी खतम हो गये हैं।"

"काहे, महाराज?"

"समझ रहा हूँ।"

"मार डालेंगे? यही कहो।"

"यह तो वे ही जानें। देख नहीं रहे हो, रात-बिरात छिपकर आया हूँ !"

"यही बात है।"

चोट्टि समझ गया कि आनन्द महतो भी मुसीबत में हैं और यहाँ आने से वे मारे जा सकते हैं। ताक़तवर जब किसी को मारना चाहता है, तो उसे मरना ही पड़ता है। पिछला सदस्य, मोतिया के काले हाड़, पहान और पहानी की फटी छाती—उसके साथ वह अपने को एक समझ रहा था। बोला, "अभी टेम है। चले जाओ।"

"तुम कुछ बताओगे नहीं ?"

"अभी नहीं। अभी सबकी नजर चोट्टि पर है।"

आनन्द महतो बोले, "तुम्हारे लिए यह जगह छोड़ दी गयी है। सब जगह देखा जाता है कि एक बार जहाँ कुछ हो जाता है, वहाँ वे बार-बार आते हैं।"

चोट्टि भौंहें सिकोड़े चुप लगाये रहा। उसके बाद बोला, "रेल के कुली को मारा, वही गलत काम किया, पहान-पहानी को भी ! यह क्या जमाना चल रहा है, बता सकते हो, महाराज ? ये चाहते क्या हैं ? सुरमही में जो हो गया, धामुड़ा में भी वही हुआ। दुसाध-गंजू-अछूतों को मारने को गौरमेन का कोई आदमी अच्छा नहीं समझता। गौरमेन अगर चाहती है कि अछूत आदिवासी मर जायें, तो मार डालो। लड़कर मरें। लड़कर मरेंगे, समझेंगे कि यह एक काम किया।"

"वह नहीं चाहती। तुम लोगों के बिना उनकी जमीन कौन जोतेगा ?"

"अभी जाओ। कोई देखेगा।"

"तुम बताओगे नहीं ?"

"डाड़ पार कर बरामू में पेड़ काटने जाऊँगा। वहाँ आओ।"

"वहीं आऊँगा।"

"अभी जाओ। होशियार रहना। महाराज, मरने पर कुछ नहीं। जिन्दा रहने में बहुत दुख है।"

"मैं चलूँ।"

"ठहरो, टिशन होकर नहीं।"

"न-न, रेल-लेबर यूनियन के लड़के मुझे लाये हैं।"

"वे कहाँ हैं ?"

"बाहर।"

चोट्टि ने उन्हें बुलाया। बोला, "सब लोग थोड़ा गुड़ खाओ, नमक खाओ। गुड़ खाने से संबंध अच्छा रहेगा। नमक खाने से मुझे फँसाओगे

नहीं।"

आनन्द बोला, "चोट्टि, कब जाओगे?"

"आठ-दस दिन बाद। अभी तो पहान-पहानी के श्मशान के पत्थर लगाना है। पहान के भतीजे को पहान बनाना है। वह पहान लिखा-पढ़ा था। भतीजा अगर वैसा न हुआ तो मुझ पर और भी जिम्मेदारी आ जायेगी।"

आनन्द महतो चले गये। चोट्टि के अनुरोध पर मृत पहान का भतीजा पहान बना। जले घर फिर से नये सिरे से बनाये गये। चोट्टि ने जंगल के ठेकेदार से मुसीबत की बात कहकर दरवाजों और खिड़कियों के लिए थोड़ी लकड़ी ली। तीरथनाथ ने अपेक्षा की थी कि छगन आदि घर छाने के लिए फूस मांगेंगे, खाने का अनाज खरीदने के लिए कर्ज मांगेंगे। लेकिन उसके पास कोई नहीं आया। उसका जडहन पड़ा रहा। खबर भेजने पर भी लोग बेगारी करने नहीं आये। मान कुछ खत्म हो जाने पर छगन आदि के व्यवहार ने तीरथनाथ को चोट पहुँचायी, उसे खफा भी कर दिया।

तीरथनाथ को बड़ा दुख हुआ। कचहरी जल गयी। हिसाब-बही और कागज जल गये। सरकार से लगान के कागज की जरूरत हो सकती है, उससे हिसाब-किताब की एक बही जल जाने से कोई नुकसान न था। वह तो क्षण-भर में बन सकती थी। गुमाश्ता बना सकता था। लेकिन तीरथनाथ की लक्ष्मी वे सारे खाते थे जिन खातों में लेनदारों के रुपये और अनाज के कर्ज का हिसाब लिखा था, जिन खातों के आधार पर तीरथनाथ सूद और बेगार लेता था, वह सब खाते फिर से तैयार करने पड़ेंगे।

वह काम सिर्फ धनबाद का अमीनचन्द कर सकता था। दो-सौ बरस पुराने दस्तावेज-पट्टे-चिट्ठे-व्यापार के पट्टे वह बना सकता था। तीरथनाथ ने निश्चय किया कि उसे लाकर डबल सेट खाता बनवायेगा। अमीनचन्द ने तीरथनाथ के गुमाश्ते से कहा कि वह पाँच हजार रुपये लेगा।

तीरथ को राजी होना पड़ा। और सान्त्वना की आशा से वह अपनी रखैल धोबिन के पास गया। सबसे बड़ा आघात इस प्रेमिका ने दिया। बहुत बरस पहले मोतिया ने तीरथनाथ के लिए कुटनी का काम किया था। तीरथनाथ बहुत ही मुग्ध था। उस समय उस औरत की उम्र थी बाईस बरस। मोतिया की बिचवई से बात चली, औरत को माहवारी पैसा मिलेगा, उसका घर बनेगा। धीरे-धीरे उसके लड़का भी हुआ। छुटपन से लड़का मोतिया के पास ही रहता था। रोमियो वगैरह के हाथ

उस दिन उस औरत का घर भी जल गया था। तीरथनाथ ने अपनी कचहरी का मकान मरम्मत करवाने के लिए गवर्नमेंट से पच्चीस हजार रुपये लिये और काम के लिए मिस्त्री मँगवाया। अब उसे ध्यान आया कि इसके बाद जड़हन की खेती कटाई-मड़ाई, रबी के लिए खेतों को तैयार करना था। उसके लिए मजूरों की जरूरत थी। उसे गुंडों पर गुस्सा आया। यह क्या सुरमही या धामूड़ा है? लंकाकांड मचाकर छोटी जात वालों को सजा देंगे? रेल-लेबर यूनियन में सबको पता चल गया था कि तीरथनाथ एक ही हरामी है। उसी की जमीन के पीछे इतनी गड़बड़ी हुई थी।

मानों उसे लांछित करने के लिए ही अनवर ने इतने दिनों से पड़ी हुई बंजर ज़मीन को फलों के बगीचे में बदलना चाहा। उसने खुल्लम-खुल्ला छगन से और चोट्टि से कहा, "बीच-बीच में फ़ुरसत के वक्त जमीन को ठीक कर दो। दो-ढाई घंटे काम करो। उससे ही काम हो जायेगा। इस काम के लिए सवा रुपये के हिसाब से दूंगा। मैं यह नहीं चाहता कि हर रोज़ काम चले।"

चोट्टि बोला, "उससे नजर पड़ेगी।"

"दस आदमियों से ही चल जायेगा।"

"यही अच्छा है।"

पचास रुपये पेशगी दिये। "पाँच रुपये के हिसाब से यह दस आदमियों के हैं। मजूरी देने के वक्त सवा-सवा रुपये के हिसाब से काट लूंगा।"

"बहुत खूब, महाराज!" चोट्टि बोला, "इन लोगों के घर जलकर राख हो गये। उन्हें जमीन के लिए कुछ दो। उपजाऊ जमीन है। जमीन तो बिना मालिक के रहती नहीं है, महाराज! जमीन के भी आत्मा होती है। वह आत्मा अच्छी है या बुरी, किसे पता? थोड़ा कुछ देने पर उसका गुस्सा ठंडा होगा। उसके बाद जमीन खुश हो जायेगी।"

"सो तुम करो। जो करना हो करो।"

"तुम्हें करना होगा।"

"इन सब बातों में लाग-डाँट तो न होगी?"

चोट्टि ने भौंहें सिकोड़कर जैसे कुछ सोचा। उसके बाद बोला, "लगता तो नहीं। टीशन तो गोरमेन का है। कुली के मरने पर कुली-स्टाफ जोश में है। लाला अभी कुछ न बोलेगा। खेती के काम के लिए उसे भी चिन्ता है। चड्ढा नहीं बोलेगा।"

"तो यह बात रही।"

तीरथनाथ इनसे दुखी हो गया। उसने अपने को हारा हुआ भी पाया।

पत्नी से बोला, "इससे मान नहीं रहता। अपने खेतमजूर, बेगारों को मैं चलाऊँगा। बाहर के लोग क्यों आयें ?"

पत्नी फीके चेहरे से बोली, "आप जानें। ऐसा होने पर घर पर हाय पड़ती है। मैं तो इसीलिए लड़कों को पटने में रख कर पढ़ा रही हूँ। वह जमीन की बातें नहीं समझते। नौकरी बहुत अच्छी चीज होती है।"

"अरे, मेरे मरने पर वे कचहरी में बैठेंगे।"

"परमेश्वर जैसा करे। साँप काटने से इसी जाड़े में दुधारू गाय मर गयी। फलता अमरूद का पेड़ सूख गया।"

"क्या करें ?" कह कर तीरथनाथ अपनी रखैल धोबिन के पास गया।

वह बोली, "कहाँ आये ? घर में क्या है ?"

"घर के लिए सोच है ? घास-फूस—बाँस सब भेज दे रहा हूँ।"

"न, न, सब लोग देखेंगे।"

"तो रुपये ले।"

"बासन-कपड़े-बिस्तर—चौकी सब चला गया।"

"तुझे नहीं दूंगा तो किसे दूंगा ?"

धोबिन बहुत रोती रही। रो-रो कर ही उसने चार सौ रुपये वसूल कर लिये। उसके बाद तीरथनाथ अमीनचन्द से मिलने धनबाद गया। वहाँ एक दिन रहना पड़ा। घर लौटने पर पत्नी बड़ी खुशी से ईर्ष्यायुक्त हँसी हँस कर बोली, "घर की औरत से ज्यादा दूसरों को सर चढ़ाने से यही होता है। धोबिन रुपये लेकर भाग गयी।"

"झूठ बात।"

"पता लगा लीजिये न।"

"मैं उसे पकड़ लाऊँगा। खचड़ी !"

"वह पटना भाग गयी। वहाँ ताड़ी खोलेगी।"

"चली गयी ? मुझे छोड़कर चली गयी ?"

तीरथनाथ ने जिन्दगी में जमीन और सूद के सिवा किसी इंसान को अपना प्यार नहीं दिया था। यह धोबिन ही एकमात्र अपवाद थी। पत्नी ने सोचा था कि तीरथनाथ गुस्से में फट पड़ेगा। लेकिन तीरथनाथ बहुत टूट गया था। उसने अपने लड़कों को धोबिन की तलाश करने को लिखा। बहत्तर बरस के बुड्ढे का अनुरोध उन्होंने नहीं सुना और तीरथनाथ ने रक्तचाप के रोग से बिस्तर पकड़ लिया। बहुत दिनों तक हकीमी इलाज में रहकर वह स्वस्थ हुआ। उससे रोमियों ने कहा, "पता लगा। ठोकर मार

कर ले आऊँगा।"

"न-न।"

तीरथनाथ के मन में शिकायत थी कि रोमियो आदि अगर बहुत अधिक अत्याचार न करते तो धोबिन चली न जाती। उसे यह जानने की तबीयत थी कि धोबिन क्यों गयी? इतना जानने के लिए वह मन-ही-मन मरा जा रहा था। रोमियो कहे जा रहा था, "छोटी जात वालों में कृतज्ञता थोड़े ही होती है!"

हरबंस के ड्राइवर को उसने छिपा कर पटना भेजा। ड्राइवर सब-कुछ जानता था। उसने ख़बर ला दी। बोला, "लाला जी, क्या कहें?"

"क्या कहा?"

"कहा नहीं जाता।"

"कहो, कहो।"

बोली, "आपने उसकी पट्टी जलवा दी। उसके बाद आपके रुपयों से घर बनाकर रहने पर उसे सब लोग पत्थर मारते।"

"कभी नहीं मारते।"

"और उसे मोतिया के लिए दुख था।"

"क्यों?"

"मोतिया उसकी नानी थी, लाला जी!"

"यह कैसे?"

"हम सब जानते थे।"

तीरथनाथ को सब मान लेना पड़ा। यह वियोग का कष्ट भी। उसके बाद वियोग का दुख खेतीबारी ने भुला दिया। थोड़े आदमियों के सिवा बेगारों में कोई शक्ल नहीं दिखाता था। रोमियो को बताने से ही मजूर मिलते। पर तीरथनाथ का मन उसकी गवाही न देता था। फिर किसी चीज से गड़बड़ न हो जाये। तभी उसने बाहरी मजूरों की तलाश की और यह भी जाना कि रोमियो आदि के कारनामों से बाहरी लोग यहाँ आने से डरते थे। धान के पौधों को झुका देख कर उसका कलेजा फटता था। मान अलग रख कर उसने छगन आदि को बुलवाया।

छगन बोला, "चोट्टि से पूछ लूँ।"

"क्यों? उससे क्यों?"

"उसे बताये बिना मुश्किल होगी।"

चोट्टि के पास से लौट कर छगन बोला, "हम काम कर देंगे। लेकिन मजूरी हर रोज देनी होगी।"

"ले लेना।"

"किसी को बट्टा नहीं देंगे।"

"वैसा ही होगा।"

"मेरे वेगार जायेंगे। बाकी सब मुंडा लोग हैं।"

"क्यों ?"

"चोट्टि ने कहा है।"

"वही होगा। थाने में पड़ रहा हूँ, गधे की लातें सहनी पड़ेंगी।"

इस तरह झुक जाने से रोमियो कट गया, लेकिन वीरवनाथ बोला, "आप ज़मीन की बात क्या समझेंगे ? अभी माने बिना फ़सल का क्या होगा ? छोटी जात है, उचड़े हैं, फिर भी काम तो कर देंगे।"

"अरे, आपके पीछे सरकार है, और आप एक फ़सल की ममता छोड़ नहीं सकते ?"

"नहीं जी।"

"आपकी-सी भैंस की अकल के महाजनों की वजह से देश की उन्नति नहीं हो रही है। नाश-हो फसल का। छोटे लोगों को क़ाबू में रखिये। बाहरी मज़ूरों से काम लीजिये। आठ आने मजूरी दीजिए। आपके गांव के लोग भूखे मरेंगे और तब आपके पैर पकड़ेंगे। एक फ़सल गयी, किस बात की परवाह है ? स्टेट बैंक से लोन लीजिये। ट्रैक्टर से खेती कीजिये। खेती के काम में इनकम टैक्स में भी रियायत है।"

"सो तो मैं भी चाहता हूँ।"

"काम में तो नहीं करते। मुंडा लोगों को घुमा दिया, इनमें बहुत

"न-न, चोट्टि कोई मामूली मुंडा नहीं है।"

"तो जाइये। उसके पैरों में तेल मलिये।"

"जी, मैं कोई गड़बड़ नहीं चाहता।"

"देखूँगा, वे बट्टा कैसे नहीं देते ? चड्डा तो फिर कंट्रैक्ट लेगा, है न ? चीनी की मिठास जानकर चींटे छोड़ देंगे ?"

"यह नहीं कह सकता।"

"और देखें, विजया मोदी भी वही चाहते हैं। नहीं तो हरिजन-अत्याचार का कोई समाधान क्यों नहीं होता ?"

"आप अच्छा जानते हैं।"

"देखेंगे, इसके बाद उनके बदमाशी करने पर मदद माँगना न भूलिएगा। हम तो सैनिक हैं। गड़बड़ का सामना करना ही हमारा

काम है।"

"बताऊँगा।"

"चोट्टि मुंडा को भी मत छोड़िएगा।"

तभी युवलीग के सेक्रेटरी सहसा बोल पड़े, "चोट्टि! चोट्टि मुंडा! उसको न तंग करना, रोमियो! उसने मेरे चाचाजी की जान बचायी थी। चाचाजी दारोगा थे, और एक जंगली सूअर ने उन्हें घायल कर दिया था।"

तीरथ बोला, "वह तो मेरी खेती में हुआ था।"

किस्सा फिर से कहा-सुना गया। तीरथ बोला, "बेगार में, कर्ज में, सूद में मैं उन्हें दबाये ही रहता हूँ। सिर नहीं उठाने देता हूँ। यह बड़ी अकल का काम है। गोली चलाने और घर जलाने में बहुत शोरगुल होता है।"

रोमियो बोला, "जिस चीज़ की जरूरत होती है, वह किया जाता है।"

इस तरह तीरथ के निकट छगन और चोट्टि आंशिक रूप से जीते। चोट्टि अंचल में क्षणिक शान्ति रही।

आनन्द महतो और चोट्टि की मुलाक़ात छिपकर हुई। कटे साल के ढेर पर बैठकर आनन्द महतो ने जल्दी-जल्दी सब लिख लिया। चोट्टि बोला, "सब बता दिया। तुम्हारे कारन से हमारे ऊपर हमला हुआ तो तुम भी नहीं बचोगे।"

आनन्द थोड़ा मुसकराकर बोला, "मार डालोगे?"

"जरूर!" चोट्टि भी मुसकराया। "हरमू के कारण हमला होने पर उसे भी मरना पड़ता। अब तो मेरा यह कहना है महाराज, जिसके कारन हम चोट खायेंगे, उसे मारेंगे। तुमसे फिर कहता हूँ, मैं मरने से नहीं डरता।"

"न-न, किसी को पता नहीं चलेगा।"

लेकिन इस वक्त प्रशासन कितना मुस्तैद था, सच्ची खबर का गला घोंटने में कितना निर्मम था, यह आनन्द महतो ने नहीं समझा था। इस संवाद के लिए उसे चेतावनी दी एक मिशनरी फ़ादर ने। आनन्द ने रिपोर्ताज पढ़ा, उसने टेप कर लिया और कैसेट को सुरक्षित झब्बे की जेब में रख लिया। आनन्द की लिखी रिपोर्ट उसे देकर बोले, "इस तरह क्यों रखा?"

"सावधानी से कोई नुक़सान नहीं है।"

उसने लिखित रिपोर्ट फाड़ डाली और कैसेट के साथ दिल्ली उड़ गया। वहाँ प्रशासन के कोपभाजन, भारत छोड़ने वाले एक विदेशी संवाददाता को उसने वह कैसेट दिया। संवाददाता के प्रयत्न से कैसेट से फि

एक कैसेट लेकर बबई मे एक अखबार के पहुँचा दिया गया और पद्रह दिन बाद इटली से प्रकाशित एक अंग्रेजी साप्ताहिक और बबई के एक साप्ताहिक में स्थान और पात्र की जगह ए० बी० सी० रखकर समाचार निकला। प्रशासन को पहले केन्द्र में होश आया। राज्य सभा मे विख्यात शोर मचाने वाले एक विरोधी सदस्य ने न्यायिक जाँच आदि की माँग करते हुए शोरगुल किया। अब राज्य-प्रशासन को होश आया। आई० जी० महमा बदलकर पुलिस को नैतिक शिक्षा देने और हिंसा न करने की शिक्षा देने वाले पद पर भेज दिये गये। दिलीप तरोये को आदिवासी कुटीर शिल्प के बारे मे अधिक ज्ञान देने के लिए दिल्ली बुलाया गया। आनन्द महतो की चलती साइकिल के दोनों ओर से दो ट्रकों ने आकर उसे कुचल दिया। दोनों ट्रकों पर लिखा था, 'बातें कम, काम अधिक' और पीछे लिखा था 'टा-टा'। 'गॉड इज गुड'। 'आदिवासी समाचार' अखबार के दफ्तर और कार्यालय मे आग लग गयी। रोमियो आदि के नेतृत्व मे युवलीग वालों ने विधान सभा मे न्यायिक जाँच की माँग की और 'सदर बद' का आह्वान किया। कमीशन बैठा। इधर केस चला। दोनो ट्रकों के ड्राइवरों को दो ट्रकों का मालिक बना देने के बाद उन्हे असावधानी से ट्रक चलाने और आदमी मारने के लिए और कोई बात न कर जेल भेज दिया गया। इसी तरह 'बातें कम, काम अधिक' निर्देश राष्ट्रीय जीवन मे फलप्रद रहा।

इस तरह घर की मुसीबत तो ठीक कर ली गयी, पर विदेशो की मुसीबत? अब भारतीय प्रेस में कुछ इस तरह लिखा निकलता, "नक्सल लोग जिस तरह इधर भारतीय गणतत्र की जड मे कुल्हाडी मारते है उधर उसी तरह भारत के दुश्मन भी बुराई करते हैं।" उसके बाद कुछ लिखा हुआ प्रकाशित होता जिसके साथ प्रमाणस्वरूप तमाम चित्र रहते, जिसका प्रतिपाद्य विषय रहता कि प्रधानमत्री आदिवासियो की मित्र है। चित्रों मे दिखायी देता कि प्रधानमत्री के चारों ओर काले-काले चेहरे के वयस्क नर-नारी और उनकी गोद मे कमरियों मे टोडा-मारिया-डाइगा-हो-मुंडा इत्यादि बच्चे रहते। इस तरह सब खुश रहते और मामला समाप्त हो जाता।

रोमियों की सारी इच्छाएँ पूरी नहीं हुई, क्योंकि हरबस चड्ढा ने स्टेट बैंक के अनुदान से ब्रिकफील्ड बडी कर ली और उसके उद्घाटन के लिए कम्यूनिटी विकास और शिल्प विभाग के मत्रियों को बुला लाया। सीमेंट नगरी की ईंटों का ठेका उसे मिला और तीरथनाथ की राय के अनुसार उसने चोट्टि में आधुनिक युग ला दिया, क्योंकि अब उसने एक गाडी खरीद ली थी।

काम है।"

"बताऊँगा।"

"चोट्टि मुंडा को भी मत छोड़िएगा।"

तभी युवलीग के सेक्रेटरी सहसा बोल पड़े, "चोट्टि! चोट्टि मुंडा! उसको न तंग करना, रोमियो! उसने मेरे चाचाजी की जान बचायी थी। चाचाजी दारोगा थे, और एक जंगली सूअर ने उन्हें घायल कर दिया था।"

तीरथ बोला, "वह तो मेरी खेती में हुआ था।"

किस्सा फिर से कहा-सुना गया। तीरथ बोला, "बेगार में, कर्ज में, सूद में मैं उन्हें दबाये ही रहता हूँ। सिर नहीं उठाने देता हूँ। यह बड़ी अकल का काम है। गोली चलाने और घर जलाने में बहुत शोरगुल होता है।"

रोमियो बोला, "जिस चीज की जरूरत होती है, वह किया जाता है।"

इस तरह तीरथ के निकट छगन और चोट्टि आंशिक रूप से जीते। चोट्टि अंचल में क्षणिक शान्ति रही।

आनन्द महतो और चोट्टि की मुलाक़ात छिपकर हुई। कटे साल के ढेर पर बैठकर आनन्द महतो ने जल्दी-जल्दी सब लिख लिया। चोट्टि बोला, "सब बता दिया। तुम्हारे कारन से हमारे ऊपर हमला हुआ तो तुम भी नहीं बचोगे।"

आनन्द थोड़ा मुसकराकर बोला, "मार डालोगे?"

"जरूर!" चोट्टि भी मुसकराया। "हरमू के कारण हमला होने पर उसे भी मरना पड़ता। अब तो मेरा यह कहना है महाराज, जिसके कारन हम चोट खायेंगे, उसे मारेंगे। तुमसे फिर कहता हूँ, मैं मरने से नहीं डरता।"

"न-न, किसी को पता नहीं चलेगा।"

लेकिन इस वक्त प्रशासन कितना मुस्तैद था, सच्ची ख़बर का गला घोंटने में कितना निर्मम था, यह आनन्द महतो ने नहीं समझा था। इस संवाद के लिए उसे चेतावनी दी एक मिशनरी फ़ादर ने। आनन्द ने रिपोर्टाज पढ़ा, उसने टेप कर लिया और कैसेट को सुरक्षित झब्बे की जेब में रख लिया। आनन्द की लिखी रिपोर्ट उसे देकर बोले, "इस तरह क्यों रखा?"

"सावधानी से कोई नुक़सान नहीं है।"

उसने लिखित रिपोर्ट फाड़ डाली और कै[illegible]
गया। वहाँ प्रशासन के कोपभ[illegible] [illegible]रत छोड़ने [illegible]
दाता को उसने वह कैसेट [illegible] दाता के [illegible]

एक कमेंट लेकर बंबई में एक अखबार के पहुँचा दिया गया और पन्द्रह दिन बाद इटली से प्रकाशित एक अंग्रेजी साप्ताहिक और बंबई के एक साप्ताहिक में स्थान और पात्र की जगह ए० बी० सी० रखकर समाचार निकला। प्रशासन को पहले केन्द्र में होश आया। राज्य सभा में विख्यात शोर मचाने वाले एक विरोधी सदस्य ने न्यायिक जाँच आदि की माँग करते हुए शोरगुल किया। अब राज्य-प्रशासन को होश आया। आई० जी० महुमा बदलकर पुलिस को नैतिक शिक्षा देने और हिंसा न करने की शिक्षा देने वाले पद पर भेज दिये गये। दिलीप तरोये को आदिवासी कुटीर शिल्प के बारे में अधिक ज्ञान देने के लिए दिल्ली बुलाया गया। आनन्द महुनो की चलती साइकिल के दोनों ओर से दो ट्रकों ने आकर उसे कुचल दिया। दोनों ट्रकों पर लिखा था, 'बातें कम, काम अधिक' और पीछे लिखा था 'टा-टा'। 'गॉड इज गुड'। 'आदिवासी समाचार' अखबार के दफ्तर और कार्यालय में आग लग गयी। रोमियो आदि के नेतृत्व में युवलीग वालों ने विधान सभा में न्यायिक जाँच की माँग की और 'सदर बंद' का आह्वान किया। कमीशन बैठा। इधर केस चला। दोनों ट्रकों के ड्राइवरों को दो ट्रकों का मालिक बना देने के बाद उन्हें असावधानी से ट्रक चलाने और आदमी मारने के लिए और कोई बात न कर जेल भेज दिया गया। इसी तरह 'बातें कम, काम अधिक' निर्देश राष्ट्रीय जीवन में फलप्रद रहा।

इस तरह घर की मुसीबत तो ठीक कर ली गयी, पर विदेशों की मुसीबत? अब भारतीय प्रेस में कुछ इस तरह लिखा निकलना, "नक्सल लोग जिस तरह इधर भारतीय गणतंत्र की जड़ में कुल्हाड़ी मारते हैं उधर उसी तरह भारत के दुश्मन भी बुराई करते हैं।" उसके बाद कुछ लिखा हुआ प्रकाशित होता जिसके साथ प्रमाणस्वरूप तमाम चित्र रहते, जिसका प्रतिपाद्य विषय रहता कि प्रधानमंत्री आदिवासियों की मित्र हैं। चित्रों में दिखायी देता कि प्रधानमंत्री के चारों ओर काले-काले चेहरे के वयस्क नर-नारी और उनकी गोद में कथरियों में टोडा-मारिया-बाइगा-हो-मुंडा इत्यादि बच्चे रहते। इस तरह सब खुश रहते और मामला समाप्त हो जाता।

रोमियो की सारी इच्छाएँ पूरी नहीं हुईं, क्योंकि हरबंस चड्ढा ने स्टेट बैंक के अनुदान से ब्रिकफील्ड बड़ी कर ली और उसके उद्घाटन के लिए कम्यूनिटी विकास और शिल्प विभाग के मंत्रियों को बुला लाया। सीमेंट नगरी की ईंटों का ठेका उसे मिला और तीरथनाथ की राय के अनुसार उसने चोट्टि में आधुनिक युग ला दिया, क्योंकि अब उसने एक गाड़ी खरीद ली थी।

हरवंस का जो चचेरा भाई जंगल का ठेकेदार था, उसे हरवंस ने कुली लाने का ठेकेदार बना दिया। जंगल की ठेकेदारी जवान चचेरे भाई के कंधों पर डाल दी। रोमियो ने सोचा कि अब जिस तरह भी हो चड्ढा को ठीक करने की ज़रूरत है। वह एक दिन पहलवान के साथ आया और बोला, "सुना है कि आप लेबर को धोखा दे रहे हैं। क्या यह ठीक बात है?"

"किस तरह?"

"ग़रीब आदिवासी और अछूत हिसाब नहीं समझते, सरकारी सहायता से ब्रिकफ़ील्ड बढ़ा ली। सरकारी मजूरी दिया करते हैं?"

"लेबर कमिश्नर का तय किया हुआ रेट देता हूँ।"

"इस बात का क्या विश्वास?"

"आपको विश्वास है या नहीं, इससे मुझे क्या?" हरवंस खुश होकर बोला, "सरकारी ऑडिटर ऑडिट करेंगे।"

"जाने दीजिये, ज़रूरत होने पर याद कीजियेगा।"

"ज़रूर।"

"यहाँ किसका मकान बन रहा है?"

"संतरी रखना पड़ेगा न!"

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। तो लेबर मिल रहा है?"

"मिलेगा।"

"तो इस कंट्रैक्ट में कितना बट्टा दे रहे हैं?"

"जी, इसमें तो बट्टा होता ही नहीं। जो होता था पहले हो चुका। और लेबर पेमेंट के लिए भी और आदमी हैं।"

"कौन?"

"बाहर का। सरकारी क़ानून के मुताबिक़।"

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। अब चोट्टि शहर बनेगा!"

"आप लोगों के आशीर्वाद से।"

रोमियो चला गया। उसके मुंह से सब-कुछ सुनकर युवलीग का सेक्रेटरी बोला, "तुम लोगों के कारण काम का नाश हो रहा है। उस समय जाकर वह हालत न करते तो इन पाँच लाख रुपयों के प्रॉजेक्ट से हमारा हिस्सा अलग करने की किसकी ताक़त थी? जाने दो, अब कोई गड़बड़ मत करो। वक्त आने पर घुस पड़ेंगे।"

"क्या वह ज़माना नहीं आयेगा?"

"आयेगा, आयेगा।"

समय बीतता गया, बीतता गया। चोट्टि और छगन को चड्ढा के

ईंटों के भट्टे में अकुशल श्रमिकों की मजूरी मिलती रही। चड्ढा और चोट्टि के बीच जो बन्धन था, वही जान-पहचान में दूरी बन गया। अब काम घंटे के हिसाब से होता था। मजूरी दूसरे लोग देते थे। चोट्टि बोला, "यह अच्छा है। आज जिस तरह तीन रुपये रोज मिल रहे हैं, चीजें महँगी होते-होते उन तीन रुपयों का दाम होता है आठ आने। हां यही। जब की जैसी रीत है। चड्ढा को पकड़े रहने पर कोई भूखा नहीं मरेगा।"

"सवेरे बुलाकर चड्ढा ने क्या कहा था ?"

"बाहरी मुंडा-लेबर को भगा दिया। उनसे कहा, 'जो जरूरत हो चोट्टि से कहना।' मोहर बोला, "तुम हो तो मैं बेफिक्र हूँ। हमारी जो समझ में आता है वही हमारी क्षमता है।' सो बाद में मैं भी उनके बराबर तीन रुपये रोज लेकर घर लौटा। हमारी मजदूरी बढ़ाना भी चाहते हैं।"

"बड़ी मजूरी क्यों नहीं ली ?"

"तू क्या कि दिन बीतने पर मैं चार रुपये लेकर घर जाऊँ, तू तीन रुपये लेकर आये, उससे हममें बुराई नहीं घुस जाती ?"

"ठीक बात है।"

"चड्ढा साला से अच्छा है। लेकिन झगड़ा और फूट रखना कौन नहीं चाहता ? वे आपस में मिलकर देखें। यह मालिकों का ढंग है।"

"मुंडानी हल्दी क्यों पीसती है ?"

चोट्टि मुसकराकर बोला, "नाती की, हरमू के नन्हे की, सगाई है।"

हरमू के बेटे की शादी होगी। नये पहान की लड़की थी। कोयेल की पत्नी मुंगरी जलधर रोग से मर गयी। स्टेशन के छोटे-से पेड़ के नीचे एक चमचमाती चाय की दुकान खुली। सबको चौंकाकर तीरथनाथ के लड़के ने पटना शहर में आर्यसमाजी ढंग से एक मद्रासी नर्स से शादी कर ली। चोट्टि के मेले में फिर तीर का खेल शुरू हुआ। चोट्टि ने हँसकर हरमू से कहा, "अब पूरे बरस मुंडा और दूसरी जात वाले एक होकर रह लेते हैं, एक साथ काम करते हैं। मेले के दिन सारे मुंडा धनुक लेकर एक बार मुंडा बनना चाहते हैं।"

"मेरे बेटे का उधर मन नहीं है।"

"नहीं रहा।"

"वह तुम्हारा नाती है न !"

"अब वह सब सोचने से चलता है, हरमू ? समय बदल रहा है।"

समय बदल रहा है। चोट्टि को समय के बदलने की कोई प्रतीक्षा नहीं थी। वह दर्शक मात्र था और उसकी सक्रिय भूमिका एक-सी ही

हरवंस का जो चचेरा भाई जंगल का ठेकेदार था, उसे हरवंस ने कुली लाने का ठेकेदार बना दिया। जंगल की ठेकेदारी जवान चचेरे भाई के कंधों पर डाल दी। रोमियो ने सोचा कि अब जिस तरह भी हो चड्डा को ठीक करने की ज़रूरत है। वह एक दिन पहलवान के साथ आया और बोला, "सुना है कि आप लेबर को धोखा दे रहे हैं। क्या यह ठीक बात है?"

"किस तरह?"

"ग़रीब आदिवासी और अछूत हिसाब नहीं समझते, सरकारी सहायता से त्रिकफ़ील्ड बढ़ा ली। सरकारी मजूरी दिया करते हैं?"

"लेबर कमिश्नर का तय किया हुआ रेट देता हूँ।"

"इस बात का क्या विश्वास?"

"आपको विश्वास है या नहीं, इससे मुझे क्या?" हरवंस खुश होकर बोला, "सरकारी ऑडिटर ऑडिट करेंगे।"

"जाने दीजिये, ज़रूरत होने पर याद कीजियेगा।"

"ज़रूर।"

"यहाँ किसका मकान बन रहा है?"

"संतरी रखना पड़ेगा न!"

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। तो लेबर मिल रहा है?"

"मिलेगा।"

"तो इस कंट्रैक्ट में कितना बट्टा दे रहे हैं?"

"जी, इसमें तो बट्टा होता ही नहीं। जो होता था पहले हो चुका। और लेबर पेमेंट के लिए भी और आदमी हैं।"

"कौन?"

"बाहर का। सरकारी क़ानून के मुताबिक़।"

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। अब चोट्टि शहर बनेगा!"

"आप लोगों के आशीर्वाद से।"

रोमियो चला गया। उसके मुंह से सब-कुछ सुनकर युवलीग का सेक्रेटरी बोला, "तुम लोगों के कारण काम का नाश हो रहा है। उस समय जाकर वह हालत न करते तो इन पाँच लाख रुपयों के प्रॉजेक्ट से हमारा हिस्सा अलग करने की किसकी ताक़त थी? जाने दो, अब कोई गड़बड़ मत करो। वक्त आने पर घुस पड़ेंगे।"

"क्या वह ज़माना नहीं आयेगा?"

"आयेगा, आयेगा।"

समय बीतता गया, बीतता गया। चोट्टि और छगन को चड्डा के

ईंटों के भट्ठे में अनुपात श्रमिकों की मजूरी मिलती रही। भइया और पोद्दि के बीच जो अन्तर था, वही आन-पहचान में दूरी बन गया। सब काम घंटे के हिसाब से होता था। मजूरी हमारे लोग देते थे। पोद्दि बोला, "यह अच्छा है। आज जिस तरह लोग अपने बोल फिर रहे हैं, कोई महँगी छोटे-छोटे उन तीन रुपयों का दाम होता है सब जानें। तो यही। जब की जैसी रीत है। भइया को पकड़े रहने पर कोई भूखा नहीं मरेगा।"

"सबेरे जुआ कर भइया ने क्या कहा था ?"

"बाबूजी मुंडा-लेबर को भगा दिया। उन्होंने कहा, 'जो अन्तर हो पोद्दि से कहना।' बोहर बोला, "तुम हो तो मैं बेफिकर हूँ। तुम्हारी जो समझ में आता है वही हमारी समझ है।' तो बाद में मैं भी उनके बराबर तीन रुपये रोज लेकर घर लौटा। हमारी मजूरी बढ़ाना भी चाहते हैं।"

"वही मजूरी क्यों नहीं दी ?"

"यूँ था कि किसी को एक ही आठ रुपये लेकर घर जाऊँ, तू तीन रुपये लेकर आये, उनसे हमारा झगड़ा नहीं मुक जाती ?"

"ठीक बात है।"

"भइया ताला में अच्छा है। लेकिन दादा और पूरा गरदन कौन नहीं चाहता ? वे लाभ भी मिलकर देंगे। यह मालिकों का ढंग है।"

"मुंडानी हल्दी क्यों पीसती है ?"

पोद्दि मुस्कराकर बोला, "भाभी को, हरमू के बेटे की, सगाई है।"

हरमू के बेटे की शादी होगी। लड़की पहान की लड़की थी। बोहर की पहली लुगरी जलधर लोग ले गये थी। कलेशान के छोटे-मोटे पेड़ के नीचे एक चमचमाती लाल की दुकान खुली। सब को बोलाकर लोहरदगा के एक ने पहला शहर में आर्यसमाजी ढंग से एक अदालती ढंग से शादी कर ली। पोद्दि के मन में फिर और बात शुरू हुआ। पोद्दि ने हँसकर हरमू से कहा, "अब तुम्हें अपना मुंडा और दूसरी जात वाले एक होकर रह लेते, एक साथ काम करते हैं। मैंने कि किन सारे मुंडा पहुँच लेकर एक बार मुंडा बनाना चाहते हैं।"

"मेरे बेटे का उपर मन नहीं है।"

"नहीं रहा।"

"यह तुम्हारा नाती है न !"

"अब यह सब सोचने से क्या है, हरमू ? समय बदल रहा है।"

समय बदल रहा है। पोद्दि को समय के बदलाव की कोई प्रतीक्षा नहीं थी। यह क्षणिक मात्र था और उसकी सक्रिय भूमिका एकानी ही

नगण्य रही। किन्तु रोमियो, पहलवान और दिलदार प्रतीक्षा करते थे। वे और भी क्षमता, और भी अधिक कमाना चाहते थे। अब जमाना उनका था।

सोचा हुआ समय आ गया—इमर्जेंसी, आपात्काल।

हर गाँव और हर शहर में इमर्जेंसी दो रूपों में आयी। जेल का फाटक-फट्टा खुलता और कैदियों को निगल लेता। अखबारों की आवाज़ बन्द हो गयी। लेकिन चूँकि शहर के लोग लड़ते लाल होते हैं और थोड़े में ही खुश हो जाते हैं, इसलिए वे खुश थे। लोड शेडिंग—बिजली का बन्द होना—कम हो गया, ट्रेनें वक्त से चलने लगीं। सारी गाड़ियाँ 'वर्क मोर-टॉक लेस'—'काम ज़्यादा बातें कम' के अनुसार ठीक से चलतीं, और तो और, सरकारी दफ्तरों में भी बाबू दिखायी देने लगे।

इसका नतीजा हुआ कि गाँवों में अँधेरा छा गया। चूँकि भारतवर्ष गाँवों का देश है, इसलिए इमर्जेंसी का असली चेहरा गाँवों को मालूम पड़ा।

चोट्टि अंचल में पहली चोट खायी हरवंस के चचेरे भाई राजवंस ने। रोमियो उसके लकड़ी की चिराई के कारखाने में एक बार दिखायी पड़ा। जीवन सब कामों में 'क' के कारण 'ख' वाले तर्क को मानकर नहीं चलता। तत्व और तथ्य में अन्तर रहता ही है। डॉक्टर अमलेश खुराना और बासमती उराँव की बिलकुल अलग कहानी के दृष्टांतों से इस बात की व्याख्या हो सकती है। जो भी हो, रोमियो इसलिए वहाँ नहीं गया था कि तोहरी में स्थित लकड़ी की चिराई का कारखाना भूस्वर्ग कश्मीर की तरह सुन्दर था। वह गया था पहलवान के कारण। रोमियो, पहलवान और दिलदार जिस मेंबर के आदमी थे, वह सदस्य आजकल इनकी खोज-खबर नहीं रखता था। उसने साफ़-साफ़ कह दिया था कि वह और लोगों स काम चला लेगा। चोट्टि और उससे लगे अंचल में मँझला-सँझला-अमीर-नया-छोटा इत्यादि नामों से उद्योगों का ारभ हुआ और उन उद्योगों की नाली में देशी-विदेशी धन बाढ़ के पानी ी तरह हरहरा कर भर गया, इसलिए रोमियो वगैरह अंचल को पने क़ब्ज़े में कर अपनी-अपनी तरह बैठ गये। सदस्य, सब जगहों से र-चार 'कट' पाकर खुश रहेगा। और अलमूनियम का कारखाना ने को अब सदस्य की ही बेनामी मिल्कियत में था। इसलिए अब सदस्य लिए और कुछ सोचना संभव न था।

उसने कहा, "तो हाँ, मेरे इलाके में आर्थिक विकास के लिए क्या री है जिसकी समीक्षा के लिए एक डॉक्टर आयेंगे।"

"डॉक्टर?"

"हाँ हाँ।"

यहाँ यह बता देने की जरूरत है कि आंचलिक समस्या और जरूरतों की समीक्षा के लिए डॉक्टर आयेंगे, इससे यह सदस्य समझते थे और एक ही साथ सरल स्वभाव से समझ लिया कि यह चिकित्सक होंगे। उसका परिणाम हुआ कि बाद में बहुत फ़साद हुआ। इन अमलेश खुराना की उम्र थी छत्तीस। बहुत मेधावी होने के कारण और विजया मोदी के एक विश्वस्त पुत्र होने के कारण एम० ए० पास करने के बाद से ही कोई-न-कोई फ़ाउंडेशन इन्हें जरूरत से पकड़कर आर्थिक सहायता दे रहा है। 'जरूरत से पकड़ना' बात ही ठीक है क्योंकि संसार के एक शहर से दूसरे शहर, एक विश्वविद्यालय से दूसरे विश्वविद्यालय, और सेमिनार से सेमिनार में जा-जाकर उनके दिन बीत रहे थे। सिर्फ़ भारतवर्ष से ही उनका परिचय नहीं हुआ। इसी कारण वह भारत-विशेषज्ञ और सामाजिक-आर्थिक विशेषज्ञ के रूप में परिचित थे। उनका विश्वास सांख्यिकी में था, यथार्थ में नहीं। आजकल उन्होंने भारत के लघु कुटीर उद्योग के बारे में काम में बैठकर एक बम छोड़ा था। बम बहुत ही मनोरंजक था।

उन्होंने कहा था, भारत की सारी ग़रीबी की जड़ है खेती और उद्योग पर निर्भरता। भारत में किसी खेती-बारी, बड़े उद्योग की जरूरत नहीं है। मनुष्यों की मानसिकता में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने से मनुष्य बिजली की तेज़ी से फटाफट सब काम करेगा। इसके लिए किसान लोग हाथों से कागज़ बनायें, मछुए चटाई बिनें, कुम्हार कपड़े बनायें, जुलाहे छोटे-छोटे यन्त्र बनायें, बढ़ई जानवर के बालों से ऊन बनायें। इससे अद्भुत गुणों वाली तमाम चीज़ें बनेंगी। खाद्य और उद्योग के क्षेत्र में भारत को जिन चीज़ों की जरूरत है, उन्हें भारत बाहरी दुनिया से ख़रीद सकेगा। अमलेश ने किसान-लोहार-बढ़ई इत्यादि तमाम कामों में लगे कुछ आदमियों को लेकर अनुसंधान करके यह भी सिद्ध कर दिया कि यह लोग अपने-अपने पेशों से थक गये हैं। जिस काम के प्रति उन्हें उत्साह नहीं होता उस काम में वे किस प्रकार निपुणता प्रदर्शित करेंगे?

यह बम सारे विश्व में बहुत ही जोरदार था—विद्वानों की मंडली में दैनीकेन की भविष्यवाणी की तरह ही इसने शोर मचा दिया। भारत सरकार सदा से अवास्तविक अध्ययन और सांख्यिकी पर आधारित उन सारी सामग्रियों को अच्छा समझती थी जिनके आधार पर पूरे तौर पर कोई अवास्तविक परिकल्पना खड़ी की जाये—जिसे साकार करने में

अपात्र को अरबों रुपया दिया जाये—और जो किसी दिन भी साकार न हो, या होने पर भी किसी काम न आये। इसीलिए एक अविश्वसनीय रक़म देकर अमलेश को भारत लाया गया। यहाँ यह बता देना ज़रूरी है कि अमलेश के समान विद्वान के सिद्धान्त-प्रतिपादन और भारत सरकार द्वारा इस प्रकार के सिद्धान्त को सहायता दिये जाने में कोई ख़राब नीयत नहीं थी। दोनों दलों के मन में भारतवर्ष को त्रिमूर्ति भवन के बग़ीचे की तरह सुन्दर बनाने की इच्छा थी।

स्थानीय सदस्य अपनी रंडी या अपने लुच्चेपन के सिवा अपनी 'काट' कुछ न समझते थे। ये छोड़ने लायक़ दोष न थे, क्योंकि इसी के आधार पर विधान सभा के अधिकांश सदस्यों को मनोनीत किया जाता है। आज भी। पिछड़े क्षेत्रों में। स्थानीय सदस्य यह भी नहीं समझते कि अमलेश खुराना के पीछे भारत सरकार और दूसरी कोई विदेशी सरकार है।

उस पर डॉक्टर खुराना के लिए तोहरी में सबसे अच्छा मकान किराये पर लेने का हुक्म आया। तोहरी में कोई दर्शनीय बँगला न था। इसलिए उसने एस० डी० ओ० से कहा, "अस्पताल का एक वार्ड खाली करा दीजिये।"

"क्यों?"

"इस डागदर के लिए।"

इमर्जेंसी में सब चलता था। पर डॉक्टर के ठहरने के लिए अस्पताल से रोगी निकाल देना अभी तक नहीं हुआ था। एस० डी० ओ० क्या करें, यह सोच नहीं पा रहे थे और उनका भाग्य अच्छा था कि तभी मजिस्ट्रेट का आदेश आ गया। एस० डी० ओ० ने खुद निश्चिन्त होकर राजवंस चड्ढा को बुलाया। बोले, "भारत सरकार एक वैज्ञानिक को भेज रही है। उसके साथ कुछ लोग रहेंगे। तोहरी में तो वैसा कोई मकान है नहीं। आपका मकान तो बन्द ही रहता है।"

"हाँ सर, मैं तो हमेशा नहीं रहता। अभी तो लहरा फ़ारेस्ट में तम्बू लगाया है। कितने दिनों के लिए मकान चाहिए?"

"तीन महीने के लिए। किराया मिलेगा।"

घर रिक्वीजीशन कर लेते हैं और पुलिस चौकी बैठा देते हैं। हम बिलकुल जंगली हैं, हम लोगों ने क्या कुसूर हुआ कि इतनी पुलिस यहाँ उतार दी ? सो अगर आप कहें कि सरकार मकान चाहती है तो मेरी क्या ताकत है कि मैं 'न' कहूँ।"

एस० डी० ओ० काम में होशियार छोकरा था, बुरा आदमी नहीं था। जंगल-बेल्ट में हाकिम-हुक्काम-गोरमेन का प्रधान आधार जंगल का ठेकेदार होता है। राजवल चड्ढा एक नम्बर का ठेकेदार नहीं, पर बेकार भी न था। चड्ढा को एस० डी० ओ० पसन्द करते थे, क्योंकि वह अच्छी रुचि का शरीफ था, लेवर में गड़बड़ नहीं करता था। एक नम्बरी ठेकेदार होने से तैमूर लंग होना। वह अभी तक वैसा नहीं बना था। आदिवासियों के साथ राजवल का बर्ताव अच्छा था।

एस० डी० ओ० बोले, "तीन महीने का किराया लीजिए।"

"न-न। लेकिन आप बँगला देख लें। एक ओर अस्पताल है। उधर मेरा लकड़ी चीरने का कारखाना है। थोड़ा शोरगुल रहेगा।"

"देखें।"

मकान देखकर एस० डी० ओ० बोले, "असबाब भी है। किराया लेंगे नहीं। एक काम करूँ। रंग-रोगन करा दूँ, गेट मजबूत करा दूँ, वह गाड़ी रखेंगे। और एक बाथरूम बनवा दूँ।"

"बाथरूम का इन्तज़ाम है। फिटिंग और टंकी बैठाने से हो जायेगा।"

सात दिन में सब हो गया। इसके बाद स्टेशन वैगन में खुराना आ पहुँचे। उनकी पत्नी और सेक्रेटरी एक खसिया युवती थी। टाइपिस्ट केरल का एक युवक था। ड्राइवर मराठा था। खाना पकाने वाला बेयरा एक गोआनी था।

अमलेश पहुँचते ही कायदे से व्यवस्थित हो गया। एस० डी० ओ० ने जब कहा, "आपको कुछ जरूरत हो तो बताइयेगा।" तब बोले, "जरूर। मेरे काम के लिए एकान्त जरूरी है। नहीं तो स्कैंडल में काम नहीं कर सकूँगा।" एस० डी० ओ० ने मन-ही-मन कहा, 'स्टेट्स दिखा रहा है।' ऊपरी तौर पर बोले, "बताइयेगा। अब लंच ?"

"हमारे पास सब है। पानी कहाँ है ?"

"कुएँ में।"

"उबाल लेंगे। और मुझे कुछ मुंडा गाँव, कुछ उराँव गाँव, कुछ मुंडा और उराँव मिले-जुले गाँव, कुछ दुसाधों के गाँव, कुछ धोबी और रजू गाँव, कुछ राजपूत गाँव, कुछ राजपूत और ब्राह्मणों के मिले-जुले गाँव, कुछ कोढ़ रोगी-प्रधान गाँव चाहिए।"

"इसके मतलब ?"

"मतलब क्या साफ़ नहीं है ?"

"इस तरह की बस्तियों के गाँव तो नहीं हैं।"

"तो आप पता नहीं रखते। मुझे मिस्टर शुकुल ने रिपोर्ट बनाकर दी है। मुझे पच्चीस गाँवों की जरूरत है।"

"मैं यहाँ तीन बरस से हूँ। सूखे में प्रायः सारे गाँव मेरे घूमे हुए हैं। इस तरह का कोई गाँव नहीं देखा।"

"तो ?"

"सिर्फ़ मुंडा या सिर्फ़ उराँव हों, ऐसा गाँव मिलना मुश्किल है। मिले भी तो बहुत अंदर मिलेगा। पूरी तरह दुसाध या गंजू या धोबी गाँव ? नहीं हैं। प्योर राजपूत गाँव ? केवल राजपूत गाँव में रहने पर धोबी-नाऊ के काम कौन करेगा ? जिन्होंने रिपोर्ट तैयार की है उन्होंने इस अंचल की जानकारी के आधार पर नहीं की है।"

जीन्स और कुरता पहने अमलेश की खसिया पत्नी शुद्ध हिन्दी में बोली, "उस समस्या का हल आसानी से कर लिया जायेगा। हर गाँव में एक-एक जात के टोले को हम एक-एक गाँव मान लेंगे। बस।"

"लेकिन कुष्ठ रोगियों का गाँव ?"

"वह भी नहीं है ?" दुनिया-भर के विश्वविद्यालय जिसके घर हैं, वही अमलेश खुराना भारत के संबंध में बहुत निराश हो गये।

"न। तब तोमारू मिशन के कुष्ठ ग्राम में जा सकते हैं।"

"उससे तो काम नहीं चलेगा।"

"मुझे तो पता नहीं कि आपका क्या काम है। लेकिन जो सारे गाँव वास्तव में हैं, उन्हें आपको घुमाकर दिखा सकता हूँ।"

अमलेश बोला, "वह कैसे होगा ? मेरा काम है प्राजेक्टेड-इकनॉमिक-नेसेसिटी की सर्वे करना।"

"बुरा न मानिये। उससे क्या होगा ?"

प्रशासनिक अफ़सरों पर अमलेश को बेहद अवज्ञा थी। इसीलिए वह बच्चों को समझाने वाली आवाज़ में बोला, "यह वैज्ञानिक प्रक्रिया—मेथोडोलॉजी—में सर्वेक्षण के काम का है। इसके आधार पर गवर्नमेंट इस अंचल की उन्नति के लिए योजना बनायेगी।"

एस० डी० ओ० बहुत ही खिन्न होकर बोले, "आपकी वास्तविक जानकारी है। किन्तु शुकुल थियोरेटिक एकेडेमेशियन हैं—उनकी रिपोर्ट बहुत अधिक विश्वसनीय है, क्योंकि वह वैज्ञानिक पद्धति से तैयार की हुई है !"

ऐसे अंचल के एस० डी० ओ० होने पर सामान्यतः स्वाभाविक लोगों के साथ ही मिलना होता है जो जमींदार-महाजन-गुंडे दादा लोग-ब्राह्मण-पुरोहित-वैष्णव, साधु-गरीब, आदिवासी-खेतमजूर-हरिजन-लड़ाकू जाल वाले चालाक ठेकेदार होते हैं। वास्तविक सत्य को उड़ाकर सिद्धान्त के आधार पर राष्ट्रीय समस्या के समाधान करने वाले विद्या में उद्धत योजना-विहारी को देखकर एस० डी० ओ० को मजाक सूझा। जोरों से हँसकर वह बोले, "लगे रहिये सर! रिपोर्ट के साथ मेल खाता अगर एक गाँव भी निकाल सकें, तो मुझे बड़ी खुशी होगी। हाँ, जब किसी चीज की जरूरत हो तो बता दीजियेगा।"

"हाँ, हाँ, बताऊँगा। राजनैतिक अशान्ति है या नहीं, यह जानने के लिए आपके ही पास आऊँगा।"

"पर कहीं गाँव देखने जाने पर मुझे खबर कर दीजियेगा।"

"क्यों?"

"आपकी जान की जिम्मेदारी मुझ पर है। साथ में गार्ड दे दूँगा।"

"पुलिस? हिन्दुस्तानी पुलिस से मुझे नफरत है।" पीछे बड़ी मदद होने से बलवती श्रीमती अमलेश बोलीं, "पता है, वे हरिजनों को मारते हैं और महाजन को मदद देते हैं, वे औरतों को, बुड्ढों को, बच्चों को मारते हैं।"

"बहुत ताज्जुब की बात है। लेकिन फिर भी मैं गार्ड दूँगा।"

"अगर न लूँ तो?"

"मेरी नौकरी पर मुसीबत आयेगी।"

मिसेज अमलेश बोलीं, "यह तो अच्छा ही है। ब्रिटिश विरासत के कट्टर नौकरशाह बनकर क्या आप नया भारत बना सकेंगे? नौकरी छोड़कर सीधे खेती कीजिये, हल पकड़िये।"

एस० डी० ओ० इज्जत के साथ विदा हुए। अमलेश को मकान पसन्द आया। सॉ मिल देखकर अमलेश बोले, "वह क्या है?"

"लकड़ी चीरने का कारखाना। सॉ मिल।"

"इधर?"

"अस्पताल।"

"अच्छा।"

एस० डी० ओ० हाकिम के पास पहुँचे। मैजिस्ट्रेट से सब बताया। बोले, "मैं क्या करूँ?"

"साथ में गार्ड दे दीजियेगा।"

"और?"

"जो कहे वही कीजियेगा।"

"कामकाज चूल्हे में गया।"

ये दिल्ली के पालतू बच्चे हैं। प्योर कास्ट विलेज—शुद्ध जातीय ग्राम—चाहिए, कुष्ठ वर्ग के गाँव चाहिए। दिल्ली में बैठे-बैठे एक आदमी ने चोट्टि अंचल पर रिपोर्ट लिखी, फ्रांस से एक और आदमी आया। वह जो कुछ लिखेगा, उसके आधार पर दिल्ली इस अंचल की प्रगति की योजना बनायेगी!

"रुपये ढाले जायेंगे।"

मैजिस्ट्रेट हँसकर बोले, "असली बात नहीं समझे? सरकार ज़रा भी नहीं चाहती कि उन्नति बन्द रहे। किन्तु सरकार निर्भर करती है सैद्धांतिक लोगों पर, और आधुनिक शिक्षा सैद्धांतिकों को आधारहीन बना देती है। फिर यह खुराना कौन है, यह पता नहीं। पर दिल्ली की नज़रों में यह रुख चिड़िया का अंडा है।"

एस० डी० ओ० को लगा कि अंचल की सारी समस्याओं को जैसे-का-तैसा रखकर इस पवित्र भूमि पर रुख पक्षी का अंडा उतारे बिना भी ठीक था। लेकिन उन्होंने यह बात कही नहीं। डालटनगंज के बिशप ने जब बेगार के बारे में रिपोर्ट तैयार की थी तो एस० डी० ओ० ने उनकी सहायता की थी। 1973 में बिशप की रिपोर्ट के परिणामस्वरूप राज्य सभा और विधान सभा में जो शोर मचा था, उसके कारण एक अध्ययन-दल आया और पाँच गाँवों को लेकर उनकी विवेचना की। एस० डी० ओ० ने उसमें भी सहायता की थी। इसका नतीजा हुआ कि वे राज्य प्रशासन में बहुत अप्रिय हो गये। अब खुराना के मामले में बात कर उन्होंने झंझट को आगे नहीं बढ़ाया।

दरअसल खुराना ने यहाँ बिलकुल अनजाने अशांत जल में तूफ़ान उठा दिया और वे चोट्टि मुंडा के फिर से किंवदन्ती बनने में सहायक हुए। इसका कारण बनी बासमती उराँव।

बासमती उराँव चोट्टि ग्राम के धीताल उराँव की लड़की थी और ढाइ ग्राम के बिरजू उराँव की पत्नी थी। बासमती और बिरजू राजवंस की ओर से जंगल में पेड़ काटते थे। बासमती पेड़ के टुकड़े बटोरकर ले आती। तोहरी के लकड़ी चीरने के कारख़ाने में वे दोनों आते-जाते थे। बिरजू वहाँ लकड़ी चीरने का काम सीखता था।

इमर्जेंसी के बाद रोमियो समझा कि चड्ढा हाथों से निकल गया। किन्तु रोमियो ने पहलवान से कहा, "लेबर से बट्टा लेना हमारा हक़ है। उससे राई जमा होकर बेल बन जाता है। एक बात और है। चोट्टि गाँव में

साहब के [illegible] ने पैसों के [illegible] दिया है कि हम उनको [illegible] सके हैं।"

"सुना नहीं, हुजूर।"

"ये तो राजबस साहब के यहाँ भी मजूरी करते हैं।"

"कैसे? ईंटें का मजूर तो नहीं है?"

"नहीं है। छोटा-मोटा काम करता है।"

"तो वहाँ जाऊँ?"

"जाओ।"

पहलवान वहाँ गया और राजबंस से बोला, "अब पैसे दिन के देना नियम है। तबकी मजूरी में से रुपया-रुपया कटा लूँगा। आगे आधा करूँगा। इन सालों के बदन की नस से मुझे घिन आती है...।" उस के मुँह की बात पूरी न हो पायी। डंडे की चोट से वह जमीन पर गिर पड़ा। साथ-ही-साथ किसी औरत की गुस्से भरी आवाज सुनी, "तू कौन है? अंधा है?"

पहलवान उठ खड़ा हुआ और इस बात का जवाब देने जा रहा था कि बोलने वाली को देखकर गूँगा हो गया। देखा तो देखता ही रह गया। वासमती ने सिर पर उठाये लकड़ी के कटे टुकड़े को उतार फेंका और खड़ी हो गयी। पहलवान ने शायद उसे पहली बार देखा था। वासमती ने उसे अच्छी तरह पहचान लिया और कुछ कहने जा रही थी, पर चुप हो गयी। राजबस सूखे गले से बोला, "वासमती, चली जा!"

"ठहर।" पहलवान बोला।

राजबस धीमी आवाज में बोला, "इस तरह मत कीजिये।"

पहलवान बोला, "जबान संभाल, पंजाबी के बच्चे! मेरी जो मर्जी होगी करूँगा। तेरी ताकत है कि तू मुझे रोक ले?"

वासमती झटपट चली गयी। गायब हो गयी। पहलवान बोला, "शाम को आकर तेरी वासमती को उठा ले जाऊँगा।" वह चला गया। पहलवान का इस तरह बिगड़ना बहुत स्वाभाविक था, क्योंकि वासमती के शरीर में अनुपयुक्त और वर्णनातीत यौवन था। जहाँ लकड़ी उठायी जा रही थी, राजबस उसी समय वहाँ गया। वहाँ चोट्टि को देखा। देखकर उसे कुछ ढाढ़स हुआ। बोला, "चोट्टि, तुम?"

"हाँ महाराज, देखिये, चार कोड़ी की उमर होने में चार साल और बाकी है। अब रोज काम नहीं कर पाता। हरमू बिरसू में भूखा मरूँगा, यह बात कहने आया था। सो यह लोग बोले, जरा बैठो।"

"तुम आये, यह अच्छा हुआ।"

"क्यों? क्या हुआ?"

राजवंस ने संक्षेप में वताया। सुनकर चोट्टि वोला, "अभी लड़कियों को छोड़ दो महाराज, वे घर चली जायें।"

वासमती वोली, "उनके डर से?"

"साँप से जो न डरे वह वेवकूफ होता है।"

अव विरजू की तलाश हुई और पता चला कि विरजू दो मील दूर काम करता है। उसके आते-आते शाम हो जायेगी। चोट्टि ने वहुत कम वात की। सोचता रहा, वोला, "आज मुझे अपने कारखाने में रहने दोगे?"

"क्यों नहीं रहने दूँगा, चोट्टि?"

कल तुम्हारे साथ उनके सेक्रेटरी के पास चलूँगा। पता है, वह सेक्रेटरी कौन है? जिस दारोगा का सूअर ने पीछा किया था, जिसे मैंने वचाया, उसके भाई का वेटा है। तुम्हारे भाई तव लड़के थे। तुम वहुत छोटे थे।"

"चलो, चलेंगे। इनकी वजह से कामकाज वन्द होगा।"

"अपने लड़के-लड़कियों को वेइज्जत नहीं करने दूँगा।"

वासमती आदि अपने-अपने घर चले गये। चोट्टि वोला, "वासमती, लकड़ी के गोदाम चली आना। वह रोमियो तुम लोगों की टोली पहचानता है। और विरजू का धनुक ले आना।"

अव वासमती को डर लगा। वह धीमी आवाज में वोली, "तुम्हारे लिए सत्तू-गुड़ ले आऊँगी।"

जागीरसिंह ने राजवंस का काठ-गोदाम देखा। इन लोगों पर उसे वहुत गुस्सा था। वह वोला, "आज रात को तीनों दादा-गुंडों को साफ कर दूँगा।"

"न, वे लोग काठ-गोदाम जलायेंगे।"

तीसरे पहर पहलवान, रोमियो और दिलदार आये। जंगल सुनसान पड़ा था। वे लोग विरजू की टोली में गये। वासमती नहीं मिली। तव रोमियो वासमती की सास को मारने लगा। पीट-पाटकर उससे भला-वुरा कहकर चला गया। उसके वाद काठ-गोदाम जाने के पहले तीनों ने जीप में वैठकर वोतल खोली। इधर विरजू के दोनों भाई और मगध उराँव काठ-गोदाम की ओर भागे।

रात हो गयी। जागीरसिंह ने फुसफुसाकर कहा, कि अव वदमाशों की मरम्मत करने में वह पूरा जोर लगायेगा। पहलवान जव देखो तव आकर उसके कैश में पंजा मारता है और उस दिन रोमियो ने उसे अकेला पाकर डंडा मारा था।

चोट्टि वोला, "यहाँ कुछ नहीं। महाराज मारे जायेंगे।"

"इधर काहे? जंगल में।"

"मेरी बात के मुताबिक काम करना।"

"तुम क्या तीर मारोगे?"

"सो देखा जायेगा।" चोट्टि ने अब फुसफुसाकर आदेश दिया और राह देखने लगा। यथासमय जीप आकर खड़ी हो गयी।

"वासमती, ओ वासमती!"

उन्होंने दरवाजा ठेला। तीनों लड़खड़ाते-लडखडाते अंदर घुसे। दिलदार ने टार्च जलायी। विरजू, जागीरसिंह और दूसरे लोग टार्च की रोशनी के मुंह पर पड़ने पर हँसे। उसके बाद वे झपट पड़े। रोमियो ने गोली छोड़ी। जागीरसिंह ने उसे धक्का मारकर गिरा दिया और तेज़ी में उसके मुंह में कपड़ा ठूंस रस्सी से बाँधने लगा। चोट्टि बोला, "सूअर फंदा बाँधना।"

बाँध-बूँधकर उन्हें कोने में डाल दिया गया। तभी सहसा सुनायी पड़ा, "यहाँ क्या हो रहा है?"

अमलेश खुराना और उनका केरलीय सहायक थे।

"यह क्या? यह कौन है?"

बहुत ही अविश्वसनीय था। फिर भी अमलेश रोमियो आदि को पहचान गया। बोला, "अरे, यह युवलीग के लीडर हैं न?"

एक बुड्ढा, दुबला-पतला, बहुत ही शांत मुंडा बोला, "हाँ, महाराज! तुम कौन हो? यहाँ क्यों आये?"

"मैं सेंट्रल गवर्नमेंट का रिसर्च ऑफ़िसर हूँ। गड़बड़ सुनकर आ गया। इनको बाँधकर क्यों रखा है?"

चोट्टि ने सारी बातें बतायी। अमलेश बोला, "कैसा ताज्जुब है! युवलीग के लीडरों की यह हरकतें?"

"हाँ, महाराज!"

"तुम कौन हो?"

"चोट्टि मुंडा।"

"तुम्हारा नाम तुम्हारा नाम...," डॉक्टर बता रहा था, "तुम तीर चलाते हो, यही न? सुना था।"

"हाँ महाराज।"

"इनका क्या करोगे?"

"हमारी क्या ताकत है? इन्होंने तो बंदूक चलायी थी। लगती तो कोई मर जाता। इसी से बाँध दिया है। इनके सेक्रेटरी को दिखाऊँगा।"

"बहुत गलत है, युवलीग के होकर...।" अमलेश आदि चले गये।

सवेरा हुआ। वासमती और विरजू को राजवंस की जीप में बैठाकर

राजवंस और चोट्टि छह मील दूर गये। युवलीग के सेक्रेटरी और दल के सेक्रेटरी से सब वताया। युवलीग का सेक्रेटरी काठ-गोदाम चला आया। कहीं से ख़वर पाए एस० डी० ओ० और दारोगा आ पहुँचे। चोट्टि ने वताया, "लड़कियों को वेइज्जत करने पर हम मार डालते हैं। मैं तो मरा ही हूँ, मरने से नहीं डरता। तीर था, उससे तुम समझ सकते हो, जिसे मारना चाहता मार सकता था। मारा नहीं कि तुम चड्ढा पर हमला करते।"

तभी अमलेश खुराना ने मंच पर प्रवेश किया और उनका विवरण वताया। एस० डी० ओ० मन-ही-मन खुश हुए। युवलीग वालों का चेहरा उतर गया। खुराना के पीछे कौन था, यह उन्हें मालूम था। चोट्टि ने मौक़ा समझकर खुराना से कहा, "महाराज, यह अव वदला लेंगे। मैंने सुना है कि तुम गौरमेन को जानते हो। सो तुम सच्ची वात क्यों नहीं लिख देते?"

"ज़रूरत होने पर लिख दूँगा।"

एस० डी० ओ० युवलीग के सेक्रेटरी से वोले, "यहाँ का मामला यहीं मिटाने की ज़रूरत है।" उसने अलग ले जाकर एस० डी० ओ० से कहा, "खुराना को पता चल गया है। सव काम विगड़ गया है। वह क्या वतायेगा, उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी, पहलवान वगैरह को वचाने में तो नहीं फँस जाऊँगा?"

एस० डी० ओ० वोले, "उन्हें छोड़ दो।"

चोट्टि वोला, "पहले तुम वता दो महाराज, कि इनकी वजह से कोई दंगा-फसाद न होगा।"

युवलीग के सेक्रेटरी वोले, "नहीं। कोई डर नहीं है।"

अमलेश वोला, "लेकिन मैं नहीं छोड़ूँगा। मैं आया हूँ यह सर्वे करने को कि उनको क्या ज़रूरत है। मैं तो देख रहा हूँ कि युवलीग के लीडरों के हाथों से आदिवासी औरतों की इज्ज़त वचाने की ही सवसे पहले ज़रूरत है। मैं यही रिपोर्ट लिखूँगा।" अमलेश सहसा चल दिया।

एस० डी० ओ० माथा पोंछकर वोले, "खुराना को कौन रोकेगा?" युवलीग वाले भी वहुत दुखी हुए। अव चोट्टि आदि वाहर चले गये। जागीरसिंह मुसकराता हुआ वैठा रहा।

युवलीग वालों ने तीनों को खोल दिया। जागीरसिंह वोला, "ए हे हे, अस्पताल का भंगी भेज दीजियेगा, सर! सव गंदा हो गया है। हग-मूत दिया है।"

तीनों जीप पर वैठे। युवलीग के सेक्रेटरी तीनों को देखते थे और अविश्वास में सिर हिला रहे थे। युवलीग के ऑफ़िस में पहुँचकर उसने मुँह

बोला और कहा, "इस तरह खुराना के सामने सब-कुछ विज्ञापन की तरह रख दिया...खुराना कौन है, यह पता है? उसके रिपोर्ट देने पर क्या होगा, यह मालूम है?"

पहलवान बोला, "सब समझ गया हूँ।"

रोमियो सिर्फ यह बोला, "मैं देख लूँगा।"

"किसे?"

"सबको।"

युवलीग के सेक्रेटरी बोले, "बहुत हो चुका। अब हँसी मत करना।" रोमियो ने उसकी बात को कोई महत्त्व नहीं दिया। बोला, "खुराना कौन है? वह क्या जानता है? और कुछ न कर अगर कुत्तों के नाम पर सदर में कुछ मुकदमे ठोक दूँ तो? वह विलायती पंडित है, अदालत में गवाही देनी होगी तो भाग खड़ा होगा।"

दल के सेक्रेटरी चुप न रहे। वे भी जरूरी भाग-दौड़ करते रहे, जिसका नतीजा हुआ कि सदर में एक सुसज्जित छोटे-से बँगले में रोमियो के तीन दादाओं की बुलाहट हुई। वहाँ तीन केरल के अफसर मेज पर बैठे थे। इंजीनियर पर अमलेश खुराना का केरलीय सेक्रेटरी उठंग हुआ बैठा था। मेज पर बैठे एक युवक अफसर ने पूछा, "क्या यह रिपोर्ट सच है?" उसने रिपोर्ट पढ़ी। प्रतिवाद करने को तैयार रोमियो को रोककर उसने पूछा, "रिपोर्ट सच है?"

"मैं कहता हूँ..." अफसर मुसकराहट दबाये रहा। उसके बाद बोला, "इआड का नाम सुना है? इन्वेस्टिगेट-वेरिफ़ाइड-डिस्पोज़ वाली जाँच करो-समझो-खत्म कर दो! सुना है न? गुड। खुराना के रहते इस अंचल में कोई गड़बड़ नहीं चाहिए। गड़बड़ होने से 'इआड' हो जाएगा।

"सुना है, सर!"

"याद रखना। जा सकते हो।"

अमलेश का केरल का सेक्रेटरी बोला, "इनको सीना [illegible] ठीक होगा, बाहर रखने की क्या जरूरत है?"

अफसर बोला, 'खुराना कई महीने रहेगा। अभी [illegible] किसी वजह से, इसे नोट कर लो।' [illegible] से नक्शा दिखाकर बोला [illegible] अशांति नहीं चाहिए। तुम्हारी तरह के लोग गरदन पर बोझ हैं।

इस झाड़ के बाद औरों ने समझा कि 'इआड' [illegible] नहीं है, पर पहलवान नहीं समझा, और कई दिन बाद खुराना के सेक्रेटरी [illegible] रास्ते के किनारे स्टॉल पर चाय पीते देखकर बोला, 'अरे [illegible] कि आप 'इआड' वाले हैं?' सेक्रेटरी मुसकराकर उठ आया [illegible]

की गरदन में कहीं पर दवाकर उसे दर्द से वेचैन कर जीप पर वैठा लिया। सदर में उक्त बँगले में ले गया। उसके दो दिन वाद सदर अस्पताल में तरह-तरह अंदरूनी चोटों के लिए इलाज कराकर होश में आये पहलवान ने छुटकारा पाया और शरीर को ठीक करने के लिए अलमुनियम फ़ैक्टरी के वँगले में चला गया। अव उसने इस कहावत का असली मतलव समझा कि 'गोखरू साँप की पूँछ से कान खोदना ठीक नहीं।

इन कारणों से अंचल में एक तरह की शांति रहने लगी। किन्तु शांति के भीतर विजली थी। अंदर-ही-अंदर तनाव था। मानों कोई किसी का विश्वास नहीं करता था। हरवंस और राजवंस के पास से अपेक्षाकृत अच्छी मजूरी पर छगन और चोट्टि थे। रोमियो वट्टा लेने नहीं आता था। तीरथनाथ चुपचाप रहता था। छगन आदि के 'सोहराइ' परव पर सत्तू-गुड़-दही खाते-खाते छगन वोला, "सव वड़ा अच्छा हो गया है। अनवर की जमीन पर चारे लग गये हैं। मुझे इस वार जमीन से खूव मक्का मिला। चोट्टि गया हुआ था, इसलिए पार्टी के वावू लोग दवे रहे। इसीलिए वे चुप रहे।"

चोट्टि पेड़ की टेक लगाये वैठा उत्सव देख रहा था। वह वोला, "इतनी चुप अच्छी नहीं है रे!"

"क्यों?"

"देख, फिर क्या करें।"

छगन का युवक भांजा यहाँ नया-नया आया था। वह वोला, "तीन वरस में दो हमले किये। हमारे घर जलाये, चार आदमी मरे। मेरी वासमती को लेकर क्या हुआ!"

"और भी होगा।"

"और भी?"

"हवा से समझ में आ रहा है।"

"वह क्या?"

"अरे वह गौरमेन।"

"वहू ने आज कपड़े वदले हैं। पैंज पहनी हैं।"

अमलेश, उनकी पत्नी और सेक्रेटरी के साथ स्टेशन-मास्टर भी था। अमलेश ने पूछा, "यह क्या हो रहा है?"

छगन वोला, "हम लोगों का परव है।" इनके लिए चौकियाँ विछा दी गयीं, ये वैठ गये। अमलेश वोला, "ताज्जुव है, ताज्जुव है! उधर यूरेनियम और मोनाज़ाइट में रिच जमीन है, ट्रेन चल रही है—और एक साथ ही चल रहा है आदिवासी परव!"

सेक्रेटरी बोला, "यह आदिवासियों का पर्व नहीं है।"

"तब ?"

"यह लोग दूसरी परिगणित जाति के हैं।"

"लेकिन कुछ मुंडा दिखायी पड़ रहे हैं !"

"वे निमंत्रित हैं।"

"ताज्जुब है, ताज्जुब है ! परिगणित लोग ही अलग-अलग क्यों नहीं रहते ? उनके निमंत्रण पर मुंडा क्यों आते हैं ? सोचने में ही तकलीफ़ होती है। मेरे लिए इंडिया बहुत जटिल है।"

उनकी पत्नी बोली, "हम तो 1976 में बाहर चलेंगे, डार्लिंग !"

"एँड आई मी चोट्टि—मैं चोट्टि को देख रहा हूँ—चोट्टि !"

"महाराज !"

"एक मेला चाहिए।"

"क्या कहा, महाराज ?"

"मेला चाहिए।"

"मेला क्या यों ही मिल जाता है महाराज ?" चोट्टि हँसने लगा।

केरलीय सेक्रेटरी अब इस अचल की देहाती हिन्दी में बोला, "यह एक मेले में सिनेमा बनाना चाहते हैं। उसमें तीर चलाने का खेल रहेगा, लड़के-लड़कियाँ नाचेंगे। देउता भूत भगायेंगे, सूर्य को सूअर की बलि दी जायेगी।"

चोट्टि बोला, "ऐसी बात है !"

"क्या हुआ ? सारा बंदोबस्त कर दो। पैसे मिलेंगे।"

"महाराज ! तुम तो बच्चों की-सी बातें करते हो। सुना है कि सहर में सब-कुछ मिलता है। सो महाराज, हम लंगोटी पहनने वाले कंगाल हैं। हममें क्या सामर्थ है, बताओ कि माघ में बेर और जेठ में पका आम ला दें ? पैसा देकर तुम आम के पेड़ से कहो, बेमौसम फल दे, तो देगा ?"

यह बात सुनकर सेक्रेटरी हँसने लगा। बोला, "कैसी ग़लत बात कह दी, चोट्टि ? निश्चय ही जो कुछ कहा वह गलती थी।"

"महाराज, दसहरा के दिन इस चोट्टि में मेला होगा। उस मेले की देखने लायक सोभा है। उसमें तमाम गाँवों के बहुत-से मुंडा आयेंगे। खूब नाचेंगे, खूब नगाड़े बजेंगे, उसके बाद सब तीर चलाने आयेंगे। वह मेला होगा। उसके बाद, तुम लोगों की दीवाली के दिन सब कुरमी पहाड़ के ऊपर जायेंगे, वहाँ देउ और पहान भूत को भगायेंगे, उसके बाद सूरज देवता को बुलाकर सूअर बाँधकर बलि देंगे—वह पहाड़ के ऊपर होगा। एक काम और है। तुमने कहा सब बेवस्था कर दो, रुपये देंगे। वह होगा ?"

सेक्रेटरी ने अमलेश से सब कहा और चोट्टि से बोला, "मेले के समय तसवीर खींची जायेगी। तुम क्या अब भी तीर चलाते हो?"

पहान बोला, "नहीं, वे निर्णायक बनते हैं।"

अमलेश बोला, "अब नहीं चला सकते?"

चोट्टि के ओंठों पर हलकी मुसकराहट खेल गयी। वह बोला, "क्या पता! कब से धनुक नहीं उठाया है!"

"ज़रा दिखाओ न।"

सबने चोट्टि को पकड़ा। चोट्टि ने अन्त में अमलेश के सिर पर से बेंत की टोपी उड़ा दी और पेड़ की डाल से लटकता फल ज़मीन पर गिराकर सबको संतुष्ट कर दिया। अमलेश ने जेब से दस-दस रुपये के दो नोट निकाल कर दिये। बोला, "सब मद पियो, आनन्द मनाओ।"

वे लोग चले गये। चोट्टि बोला, "जा, मद ले आ। यह आदमी लड़कों की तरह है।"

यह एक दिन बीता। और दिन भी आये और गये। उसके बाद एक दिन डुग्गी पिटी। चोट्टि मेला के तुरन्त बाद। डुग्गी सुनकर सब लोग स्टेशन चले आये। दारोग़ा सूखे हुए ओंठ चाटकर बोला, "तुम लोगों को बता देने का हुक्म है।"

"क्या हुआ?" सना ने घबराकर सोचा।

"जो हो रहा है बाप लोगो, उसे सोचकर मेरा सिर चकरा रहा है। कभी पता नहीं था, सोचा भी नहीं था कि ऐसा होगा।"

"क्या हुआ?"

"ठहरो, उसके पहले नोटिस पढ़ दूँ।" दारोग़ा ने थूका और बोला, "पहले थोड़ा पानी पी लूँ। गौरमेन ने तुम लोगों को राजा बना दिया है।"

अब उसने पढ़ा: "24 अक्टूबर, 1975 को यह आर्डिनेंस जारी होता है, जिसके अनुसार आज की तारीख़ से बेगार प्रथा बन्द होती है, वह ग़ैर-क़ानूनी है। सब बेगार अब आज़ाद हैं, अब उन्हें बेगारी नहीं देनी होगी। अब—किसी तरह किसी से ज़बरदस्ती बेगार नहीं करायी जा सकेगी। उसके बाद क़ानून की हज़ारों किचकिच हैं, उन्हें नहीं पढ़ूँगा। असली बात है, मालिक और महाजन के जो दस्तावेज़ थे, पुराना कर्ज़ था, वह भी खत्म हो गया। कोई कर्ज़ अदा नहीं करना होगा, किसी मालिक को बेगार नहीं देनी होगी। पुराने क़र्ज़ के एवज़ अगर महाजन के पास मकान या ज़मीन गिरवी होगी, उसे महाजन लौटा देगा।"

"महाराज!" चोट्टि ने हाथ उठाया।

"कहो, चोट्टि !"

"मालिक अगर बेगार ले, घर-जमीन न लौटाये, करजे के लिए हमला करे, तो करजदार बेगार क्या करेगा ?"

"अदालत में नालिश करेगा।"

"इसकी क्या सजा है ?"

"तीन बरस जेल और जुर्माना।"

चोट्टि हँसा, हँसता ही रहा।

"हँस क्यों रहे हो, चोट्टि ?"

"महाराज, कानून बनाया। कानून तो बना, किन्तु कानून में रख दिया पत्थर, उससे कानून ठोकर खा जाता है। करजदार, बेगार, मालिक के नाम पर नालिश करेगा ? किस जोर पर, महाराज ?"

सिर हिलाया, चोट्टि ने सिर हिलाया। दारोगा चला गया। अब छगन और दूसरे मुंडा दौड़कर पास आ गये। बोले, "दरोगा यह क्या कह गया ? यह तो समझ में नहीं आ रहा है, चोट्टि !"

"हमें कौन समझायेगा ? कानून जारी किया है हमारी भलाई के लिए, किन्तु उसका कभी पता नहीं चलता है।"

"चलो, तोहरी चलें। वह औरमेन सच्ची है। समझा देगी। कल ही वहाँ चलें।"

"पहले चड्डा के पास चलें।"

हरबंस को शाम की गाड़ी से अखबार मिला था। उसने चोट्टि को बताया, "खबर तो अच्छी है चोट्टि, लेकिन ...।"

"इतनी अच्छी कि विश्वास नहीं होता।"

"जैसा कह रहे हो। सुनो, मैं सदर तो हमेशा जाता रहता हूँ, पता लगा आऊँगा। एक नया अफसर आया है, उससे पूछ आऊँगा।"

"पहले वाला आदमी अच्छा था।"

"यह भी बुरा नहीं है। इसने जो कल-कब्जे हिलाये हैं, उसी से तो दारोगा आकर बता गया, नहीं तो यह दारोगा हिलता ?"

"उसे भी पता चल गया है कि कानून से कुछ नहीं होगा। इसी से मजाक में बोला, तुम राजा हो गये।"

"कानून तो बुरा नहीं है, चोट्टि ! लेकिन कानून से कुछ काम नहीं होता, क्योंकि कानून कभी काम में लाया नहीं जाता।"

"सब पता है, महाराज !"

"पता लगाकर तुम्हें बताऊँगा। काम का होने से मैं बहुत खुश होता. यह क्या किसी सभ्य देश में होता है ?"

"होता है, महाराज ! हमेसा होता रहेगा। वताइये तो क्यों न होगा? हमारा क्या है? जव हम हक चाहेंगे, तो पार्टी के लड़के मारेंगे, और पुलुस उनके कहने पर चलेगी।"

"हाँ।"

हरवंस का चेहरा कठोर हो गया। उसकी और राजवंस की जानकारी वहुत ही आधुनिक और कड़वी थी।

दूसरे दिन चोट्टि और कई आदमी तोहरी गये।

अमलेश वोला, "यह तो वहुत साफ़ वात है, चोट्टि ! वेगार नहीं। पिछला कर्ज चुकाना नहीं पड़ेगा। यह पहली...ठहरो, ठहरो। शंकर !"

"येस ?"

"आह ! आह ! कैसा मौक़ा है !"

"किस वात का ?"

"अख़वार में वांडेड लेवर ऐक्ट निकला है।"

"हाँ।"

"यह अभी तक जरख़रीद गुलाम थे। आज हम कुछ आजाद लोगों को देख रहे हैं। तुम इनको वैठाओ। मैं मूवी लेता हूँ। तुम टेपरिकॉर्डर में इनकी प्रतिक्रिया सुनो, माने उसे ले लो।"

शंकर वोला, "खूब कहा खुराना, हम उसे सिंडिकेट कर सकते हैं—एक साथ कई जगह प्रकाशित कर सकते हैं खूब, खूब ! इन्हें वैठाओ, चाय पिलाओ।"

चोट्टि ने हाथ उठाया। वोला, "पहले समजा दो, महाराज ! अगर करजदारों पर अत्याचार कर मालिक सूद ले, वेगार ले, तो क्या करेंगे ? कानून में ऐसी कोई वात है ?"

"एस० डी० ओ० की अदालत में शिकायत करेंगे।"

"उसके वाद ?"

"क़ानून के मुताविक़ सजा होगी।"

चोट्टि चुप रहा।

"क्या हुआ ? चुप हो गये ?"

"वताओ तो, क्या कहूँ ?" चोट्टि की आवाज में युगान्त के वाद युगान्त की वेदना का हाहाकार था। और शंकर ने टेपरिकॉर्डर चलाया। चोट्टि वोला, "क्या कहूँ, वताइये महाराज ! सालों पहले किसी दिन किसी ने लिये पाँच सेर धान, दस सेर मक्का, तीन रुपये। उसकी कीमत, वाप रे ! सोने से जादा। उस करज को चुकाने में पीढ़ी के वाद पीढ़ी वेगार देती, करज नहीं चुकता। सूद देते, देते चलते, असल नहीं चुकता। पेट के लिए

खाने को करज-पर-करज लेना पड़ता...।"

"कहो, कहो।"

"नालिस करें तो न्याय मिलेगा! कौन नालिस करेगा? तुम गौरमेन हो, तुमसे पूछता हूँ, कौन नालिस करेगा? मालिक-महाजन को जान से मार डालने पर थाना उसका कसूर नहीं देखता। करजदार बेगार एक बात कहे तो उसे पकड़ लिया जाता है। मेरे बाप ने उस लाला के बाप के जुलुम से पागल होकर फाँसी लगा ली। मेरे लड़के, उस हरमू को इस लाला ने जमीन के जुलुम पर जेहल भेज दिया। लाला के नाम पर कोई नालिस करेगा, महाराज? सूखा और अकाल लगे रहते हैं। लाला के पास जाकर खाना-करज लेना पड़ता है। अदालत!" चोट्टि की आवाज़ वेदना से भारी और ऊँची हो गयी। "गाँव में रहते हैं मुंडा, अछूत। उन्हें लिखना-पढ़ना आता है कि जिसमें कानून और हक समझ सकें? यहाँ उकील-पेसकार मुंडा उराँव-अछूतों की चमड़ी नहीं छील लेते हैं?—यह कानून कौन बनाता है?"

"गवर्नमेंट।"

"कहाँ रहती है यह गौरमेन?"

"दिल्ली में।"

"वह बहुत दूर है न?"

"हाँ।"

"बनाये कानून, अच्छा करती है, दूर रहती है। किन्तु जंगल में रहने वाले आदिवासी-अछूत मरते हैं, यह नहीं जानती?"

"नहीं, यह ठीक नहीं है।"

"जानना चाहती तो जान सकती थी।"

"चुप रहो।"

चोट्टि चौंक कर चुप हो गया। अब शंकर ने रिकार्डर बजाया। चोट्टि की आवाज़ सुनायी दी। सब अचंभे में आकर हँसने लगे। सुनते रहे। अमलेश बोला, "बहुत अच्छा। अब इनकी बात सुनो।"

सबकी आवाज़ें रेकार्ड की गयीं और सभी ने वह सुनी। शंकर बोला, "फिर किसी दिन फिल्म खींची जायेगी।"

वक्त पर कैसेट भारत में और विदेशों में प्रचारित हुआ। उसमें चोट्टि की बातें नहीं थीं और छगन का उल्लसित वक्तव्य था।

सारी जानकारी ने चोट्टि के लोगों को बहुत ताज्जुब में डाल दिया, खुशी भी दी। छगन बोला, "आज कैसा दिन है, बताओ तो, चोट्टि?"

सना बोला, "चोट्टि के मन में खुशी नहीं है।"

छगन बोला, "यह तो बेगार नहीं है। हम लोगों की खुशी उनकी हो सकती है या नहीं; बताओ तो, चोट्टि !"

चोट्टि बोला, "आम कैसे हैं, यह तो खाकर ही मालूम होगा।"

"उसके मतलब ?"

"कानून को मालिक-महाजन मान लें, तब तो कुछ बात ही नहीं है। वे क्या मान लेंगे ? मुझे नहीं लगता। इस कानून से आग लग जायेगी।"

सब लोग अपने-अपने घर गये। लेकिन चोट्टि की जानकारी फिर भी ख़त्म नहीं हुई। हरवंस ने उसे दूसरे दिन बुलाया। बोला, "चोट्टि, अभी भी आदिवासी अफ़सर हैं, और कुछ नहीं जान पाये हैं। नया कानून है न ! कहा कि जान सकने पर बताने की कोशिश करेंगे...एक बात है।"

"क्या, महाराज !"

"चोट्टि, तुम तो बेगार नहीं हो ?"

"ना, महाराज !"

"तो इस कानून के लिए इतनी दौड़-धूप क्यों कर रहे हो ?"

चोट्टि फ़ौरन बोला, "मैं नहीं हूँ महाराज, किन्तु सना, बुधा, मितुआ बेगार हैं। और भी मुंडा, छगन आदि के कितने ही लोग हैं। इसी से चक्कर लगाता हूँ। किसी के घर मे आग लगने पर क्यों बुझाते हैं ? तुम्हारा घर भी जल सकता है। मैं नहीं किन्तु कितने लोग हैं, हरमू का लड़का भी हो सकता है।"

"कानून तब तक ठीक हो जायेगा।"

"कानून ही तो है, महाराज ! उसी से मोतिया और पहान मरे थे ! किसी को जेहल—सजा हुई ? हरमू ने क्या किया था कि जेहल गया ? ना महाराज ! जब तक दिकू लोगों के हाथों में कानून चलाने की सामर्थ है, तब तक दिकू का ही हक देखेंगे।"

सहसा हरवंस को लगा कि चोट्टि की नजरों में वह भी 'दिकू' है और संभवतः चोट्टि उस पर भी विश्वास नहीं करता है। उसके बाद बोला, "मैं कह रहा था...।"

"कहो महाराज !"

"मेरा एक दोस्त है। वह जमींदार जरूर है,—कालेज में मेरे साथ पढ़ता था। अब गोमोह-धनबाद में आदिवासियों की भलाई के लिए जाने क्या काम किया करता है। ठहरो, 'आदिवासी मंगल भारती' या ऐसा ही कुछ है। उससे अचानक भेंट हो गयी। पिता के घर आया था। वह एक बार तुमसे मिलना चाहता है।"

"क्यों ?"

"पता नहीं। यह बात किसी से बताना मत।"

"वह भी नक्सली है?"

"न-न, लेकिन आजकल जमाना अच्छा नहीं है। यहाँ उपद्रव कम है यहीं आयेगा। आने पर खबर दूंगा।"

"महाराज, उससे कुछ जुलुम तो नहीं खड़ा हो जायेगा? जो बुरा करते हैं, सो तो करते ही हैं। आदिवासी-अछूतों की बुराई करने का हक सबको है। जो भलाई करना चाहते हैं, वे भी नहीं समझते। इससे पुलुस जुलुम करती है। घर जलाना, लहास गिराना, अब अच्छा नहीं लगता, महाराज!"

"न,न, मैं भी सावधानी से आना-जाना करता हूँ—चोट्टि! मुझसे भी तो कोई खुश नहीं है।"

हरबंस की बात से लगा कि उसने दोस्त से 'हाँ' कह दिया है, लेकिन अब उसके लिए पछतावा है।

हरबंस का दोस्त जब आया तो दिखायी पड़ा कि वह गेरुआ कुर्ता और पाजामा पहने है, लेकिन उसका अन्तर वैसा गेरुआ न था। चोट्टि से बातें करते-करते वह दूर ईंटों के भट्टे की ओर निकल गया। उसके बाद बोला, "तुमसे मेरी जान-पहचान न थी, लेकिन तुम्हारे बारे में बचपन से सुनता आया हूँ। धनबाद में पुराण मुंडा जब मरा था, तो मैं ही उसकी देखभाल किया करता था।"

"पुराण! पुराण मर गया! कब?"

"पाँच बरस पहले।"

"क्या हुआ था?"

"तपेदिक।"

"पुराण मर गया?"

"उससे सुना था। और भी सुना था। आनन्द महतो ने तुम्हारे पास से आकर मुझे सब बताया था।"

"तुम उसके आदमी हो, महाराज?"

"न, वह अखबार निकालते थे। मेरे दोस्त थे।"

"तुम क्या करते हो?"

"मेरा नाम स्वरूप है। मैं...क्या बताऊँ!"

"नक्सली हो?"

"उनकी तरह कुछ-कुछ काम तो करता हूँ, लेकिन नक्सल नहीं हूँ। पुलिस जरूर मुझे नक्सल ही कहती है। लेकिन मेरा उद्देश्य है कि जहाँ तक

हो सके, आदिवासियों के अधिकारों को देखना और उनकी रक्षा की कोशिश करना। हमारा लक्ष्य है, आदिवासियों के लिए एक अलग राज्य बनाना।"

"महाराज, सपना देख रहे हो !"

"सपना भी तो देखना ही होता है, चोट्टि !"

"वीरसा ने देखा था। भगवान बन गया। कभी सदर में उसकी मूरती के पैरों के पास बैठा रहता था। लड़का जेहल में था। वह भगवान बन गया, और उसके मुंडा वैसे ही मरते रहते हैं।"

"सपने भी देखने होते हैं।"

"बुरा न मानना, महाराज, आदिवासियों को राज्य दोगे, पर अछूत कहाँ जायेंगे ? वे भी हमारे मरने पर मरते हैं।"

"उनकी और तुम्हारी समस्याएँ क्या एक हैं ?"

"जहाँ मुंडा-ग्राम और उराँव-ग्राम और हो- ग्राम हैं, वहाँ तो तुम्हारी बात ठीक है। किन्तु सारे आदिवासी वैसे ग्रामों में नहीं रहते हैं, महाराज ! हमारे चोट्टि ग्राम में अछूत-आदिवासी रहते हैं। काम-काज में, सुख-दुख में हम एक हैं। देखो महाराज ! आदिवासी-अछूत के सिवा कोई घर-जमीन छोड़कर नहीं जाता, डूब नहीं जाता। तुम अपने उस राज का सपना देखो। क्या इस राज में दिकू नहीं होंगे ?"

"ना। दिकू नहीं, महाजन नहीं, जमींदार नहीं, पुलिस नहीं। वहाँ कोई अत्याचार नहीं होगा।"

"महाराज ! तुमने वह राज बताया। मैंने मन-ही-मन देख लिया। देखा कि वहाँ बहुत जमीन है।"

"हाँ, चोट्टि !"

"तो उनको भी वह जमीन दो। हाथों में न दे सकोगे, सपने में दो। उसमें तो कुछ खर्च नहीं होता।"

"समझ लिया। लेकिन यह सपना नहीं रहेगा।"

"एक टोकरी गेहूँ के लिए आदमी जिनको जनम-जनम खरीद रखता है, वे एक कट्ठा जमीन छोड़ेंगे, महाराज ?"

चोट्टि की बातें उस आदमी को बार-बार विचलित कर रही थीं। क्यों कर रही थीं, यह चोट्टि की समझ में नहीं आ रहा था। वह मुंडा था, धैर्य और स्थिरता उसके खून में थी। वह आदमी बोला, "मेरी बात सुनो जिसके लिए तुमसे बात करने आया हूँ !"

"कहो, महाराज !"

"बेगार बन्द करने का कानून बन गया। अब यह कानून चलाना तो

दूर रहा, कानून बन जाने से ही मालिक-महाजन बिगड़े रहेंगे।"

"मैं तो सबसे यही कह रहा हूँ।"

"उनको सरकार मदद देगी। युवलीग के गुंडे-दादा मदद देंगे, गवर्नमेंट आँखें बन्द किये रहेगी।"

"वह भी जानता हूँ।"

"तुम्हारे यहाँ चोट्टि से कोमांडि तक अच्छा जंगल है। वहाँ हमारी चौकी है। गड़बड़ होने पर हम आकर लड़ेंगे।"

"उसके बाद ?"

"देखा जायेगा।"

"छिपकर क्यों रहते हो ?"

"सरकार का एक कानून है—मीसा। मीसा में सबको पकड़ रही है। हमारा अस्पताल, सेवा-प्रतिष्ठान भी है। शुरू में उन सब में ही काम शुरू किया। फिर भी अब हमको पकड़ते हैं।"

"इसीलिए बुलाया है ?"

"चोट्टि, बासमती उराँव की घटना के बाद चोट्टि ग्राम में गड़बड़ होने की संभावना कम है। बेगार कानून को चालू करने का आन्दोलन यहीं से शुरू किया जाये।"

"किसको लेकर, महाराज ?"

"तुम लोगों को लेकर।"

"महाराज ! तुम्हारी बात पर सबने बलोया-आन्दोलन किया। उसके बाद ? पार्टी के बाबू मारेंगे, पुलुस औरतों को नंगा करेगी, फटाफट जेहल भेजेगी, तब ? तब कौन बचायेगा, कौन वकील देगा, कौन मालिकों के जुलुम से घर बचायेगा ?"

"तुम्हारी बात झूठ नहीं है। फिर भी...।"

"तुम दिकू होकर हम लोगों की बात सोचते हो, यह तो अच्छी बात है। किन्तु हमारे लिए काम करना चाहो तो हम लोगों के बीच रहो। हम लोगों को सिखाओ जिससे कि अपना हक हम खुद समझें।"

"यहाँ मौका था, चोट्टि !"

"फिर महाराज ! दुसाध-गंजू लोगों की भलाई के लिए भी सोचते हो ? मैं बुढ्ढ मुंडा हूँ, बेगार न करके भी उन लोगों की बात सोचता हूँ, बेगारों को, और तुम अपने उस सपने के राज में भी उन लोगों को थोड़ी-सी जमीन नहीं दे सकते हो ?" चोट्टि हँसने लगा।

"सोचकर देखता हूँ।"

"तुम मदद दोगे, पुलुस पकड़ेगी नहीं ?"

"पुलिस ? 'इयाड' लग गया है।"

"वह क्या है, महाराज ?"

"हमारे जैसे लोगों के पकड़ने के लिए विशेष पुलिस।"

"यह देखो। दिकू के भला होने पर भी दिमाग ठीक नहीं रहता। तुम्हारे पीछे पुलिस के आदमी हैं, और तुम हमको मदत दोगे ?"

"डरने से काम चलता है ?"

"बलि के बकरे की तरह मरने से भी फायदा नहीं। बुरा मत मानना।"

इसी तरह बिना किसी निर्णय पर पहुँचे बातें चलती रहीं। स्वरूप साइकिल पर बैठकर चला गया। चोट्टि और भी दुखी और गंभीर होकर लौटा। हरमू बोला, "तोहरी के उस पगले गौरमेन ने खबर भेजी है। कल तुम्हारे साथ कुछ बातचीत करने आयेगा।"

"फिर बातचीत ! दिकू बातें करना खूब जानते हैं। बहू ! तेल गरम कर दे, पैर दुख रहे हैं।"

दूसरे दिन वह तोहरी गया। अमलेश बोला, "मैजिस्ट्रेट और एस० डी० ओ०—जो हो, यह सब कमेटी करेंगे।"

"कर सकते हैं।" शंकर ने संशोधन किया।

"कर सकते हैं ! परिगणित और आदिवासियों में से तीन-तीन आदमी लेकर एक कमेटी बनाने की बात है। उसमें तुम रहोगे।"

"उसमें क्या होगा, महाराज ?"

"तुम देखोगे कि बेगार कानून को लागू करने में कौन रुकावट डालता है, कौन गड़बड़ करता है ?"

"महाराज, यह सब क्या बातें हैं ?"

"क्यों ?"

"यह क्या तमासा कर रहे हो ?"

"तमाशा कर रहे हैं ? यह तुम क्या कह रहे हो ?"

"अगर सारे मालिक बेगार लें, गौरमेन पुलुस से, पार्टी के लड़कों से उन्हें मदत मिलेगी, यह तुम्हें नहीं मालूम है ? उस दिन यहाँ लकड़ी के गोदाम में जो कुछ हुआ, तुम न होते तो हमारी लहासें निकलतीं। फिर भी कहते हो, चोट्टि, तुम देखो, किस तरह कानून लागू किया जाये ? यह कैसा तमासा है ?"

शंकर बोला, "वह ठीक कह रहा है।"

"तो कैसे होगा ? मैंने रिपोर्ट दे दी है...।"

"खुराना, कोई स्टेट नहीं मानना चाहती कि बेगार है। और क़ानून जो बना है...मीटिंग में जाने पर ही समझोगे।"

राज्य के अनुसार उच्च स्तरीय मीटिंग में अमलेश खुराना ने अपनी सारी अनजानी बातों को बताया, इस सबकी उसको जानकारी ही न थी। दिल्ली और बाहरी दुनिया में उसकी काफी प्रसिद्धि हो सकती थी—भारत सरकार उसे किसी योजना के बनाने के लिए सर्वेक्षण करने किसी अंचल में भेज सकती थी—किन्तु राज्य के काम में इन सब मामलों का कोई महत्व नहीं।

पहले अमलेश को ही बोलने दिया गया और अमलेश ने पहले चोद्रि

प्रदेश में तो बहुत हुआ—तेलगाना, गिरिजन, नक्सल—कुछ कर सके? आन्ध्र में हमेशा ऊँची जाति वालों का शासन रहेगा। बेगार रहेगी।"

अमलेश बोला, "यह तो आपका बहुत गलत और अन्याय का रुख है। आपके हाथों कानून मजबूत होगा।"

"क्यों?"

"पढ़कर देखिये।"

"देखा है। आप बहुत अच्छे आदमी हैं। स्कॉलर—विद्वान। मैं भी इकोनॉमिक्स में फ़र्स्ट क्लास पाकर आई० ए० एस० बना। मैं जानता हूँ, स्कॉलर के दिमाग़ में किस तरह के विचार आते हैं। लेकिन मैं कानून को शक्तिशाली क्यों बनाऊँ? यह मंत्री है। इनसे कहियें। ये तो राज्य सरकार के आदमी हैं।"

मंत्री बोले, "डॉक्टर खुराना, ऐडमिनिस्ट्रेशन यानी प्रशासन बड़ी गड़बड़ की चीज है। यह स्कॉलर लोगों का काम नहीं है।"

अमलेश समझ गया कि जिस पर जिले के सर्वेसर्वा कानून मजबूत करने का हुक्म देने की बात है, वही मंत्री प्रशासनिक कार्यों में विद्वान व्यक्ति का आना नहीं चाहता। जो जिले के सर्वेसर्वा है, वे आदिवासी या परिगणित बेगारी को खत्म करने काबिल कीड़े-मकोड़े समझते है। उसे लगा, इन सब नासमझ, अंधे और हिंसक लोगों से यह कानून शक्तिशाली न बन सकेगा और वह इस खबर को यथासमय यथास्थान भेज देगा।

मंत्री बोले,
जल्दी इतनी ज़रू
डॉक्टर खुराना
क्या यह कानून काम में लाया जा रहा है?"

अब शंकर ने उँगली उठायी और रूखी आवाज में बोला, "सब स्टेटों

में डॉक्टर खुराना नहीं हैं। इस स्टेट में बांडेड लेबर ऐक्ट काम में लाने का कारण अधिक है, क्योंकि आंध्र-बिहार-उत्तर प्रदेश में नीची जाति वालों पर अत्याचार भी बहुत होते हैं। आपका राज्य पश्चिमी बंगाल के पास है। यहाँ भी सशस्त्र युद्ध होने की संभावना बहुत ज़्यादा है।"

मंत्री हँसने लगे और बोले, "क़ानून को कौन सफल बनाना चाहता है? कोई चाहता है? देखिये, न, शब्दावली हमें कितना मौक़ा दे रही है—राज्य सरकार ज़िला मैजिस्ट्रेट को ऐसी क्षमता का भार दे सकती है, 'मेकन्फ़र'—परामर्श ले सकती है—इस आर्डिनेंस की सारी धाराएँ सफल करने की जैसी ज़रूरत है। 'ले सकती है,' 'परामर्श ले सकती है' क्यों? 'विल कन्फ़र'—परामर्श लेगी—क्यों नहीं? मुझे तो इस शब्दावली में अपने बच निकलने की राह दिखायी दे रही है। अब आप कहिये।"

'ख' को देखकर 'क' बोले, "माननीय मंत्री, मुझे सुनिश्चित भार दें, मै भी उनको वह भार दूंगा।"

अमलेश बोला, "ऐक्ट या आर्डिनेंस की भाषा ठीक कर देने से आप ऐक्ट को सफल बनायेंगे?"

मंत्री बोले, "नहीं डॉक्टर खुराना! सेंटर कुछ समझता नहीं। ऐक्ट पास कर बैठा रहता है। देखिये, क्या अछूत, क्या आदिवासी—इनकी भलाई के लिए कोई ऐक्ट बनाने पर, सेंटर को मालूम है, वह कभी काम में नहीं आता। क्यों नहीं आता? उससे आग लग जायेगी। अछूत और आदिवासी क्या कोई 'फ़ैक्टर' हैं? और ज़मीन के मालिक, महाजन, ज़मींदार—ये सरकार के सहारे हैं। चुनाव में रुपये कौन देता है? वोटों को कौन अपने अधिकार में रखता है?"

"मेरे पास सब डिटेल्स हैं। ये अमीर जमींदार और महाजन सरकार को दस हज़ार रुपये देकर, टैक्स का धोखा देकर, मौक़े से दस लाख रुपये कमा लेते हैं।"

"डॉक्टर साब! यह तो होता ही है। भारत के स्वतंत्र होने से लेकर अब तक यही चला आ रहा है। नेता लोग क्या इसे नहीं जानते? या विजया मोदी को नहीं मालूम है? देखिये न, खेत-मज़दूरों का मिनिमम वेज ऐक्ट। भारत के किसी राज्य में स्टेट लेबर डिपार्टमेंट ने उसे लागू नहीं किया है। और क्या केवल सरकार? जो लाल झंडा उठा कर किसान आंदोलन करते हैं, वे भी मिनिमम वेज पर एक बात भी नहीं कहते। कम्युनिस्ट होने पर भी वे सच्चे इंडियन हैं, और इस बात को जानते हैं कि मिनिमम वेज देने पर बड़े-बड़े किसान बिगड़ जायेंगे। और अमीर किसानों

को खफा करने पर कृपक आंदोलन नही चलता।"

"यह बहुत भयकर बात है !"

"आप लोग भारत को मध्ययुग मे रख देंगे !"

'अरे, कोई अछूत-आदिवासियो के लिए कुछ करता क्यो नही ? इसलिए कि उन्हे चाहता है। फिर भी तो, मिस्टर शकर ने जो कहा, बिहार मे, आंध्र मे, उत्तर प्रदेश मे हरिजनो पर अत्याचार कम हो गये हैं। व्यावहारिक बनिये।"

"तो आप लोग इस ऐक्ट को काम मे न लायेंगे ?"

"आदर्शवाद नही चाहिए डॉक्टर खुराना, यथार्थ चाहिए। मैं बिहार के अछूत और आदिवासियो को जान से ज्यादा प्यार करता हूँ। लेकिन मैं यथार्थवादी हूँ। आजकल इमर्जेंसी चल रही है। पुलिस के पास काफी ताकत है, युवलीग के पास बदूकें है, अखबारो की जबान भी बन्द है। आजकल कानून को लागू करने की बात आये तो क्या मैं अपने बिहार के अछूत-आदिवासियो को शेर के मुँह में झोंक दूँ ? वह कैसे होगा ?"

"बुलशिट् !—निकम्मा !" कहकर अमलेश निकल आया। बोला, "शकर, मैं रिपोर्ट दूँगा कि इन सबको मनोचिकित्सा की जरूरत है। बहुत मनोरंजक है, समझे ? इनकी मानसिकता मे मध्ययुग और सामन्ती विचार घुसे हुए हैं। यह है अमरीका के नीग्रो-भक्षको की तरह।"

"हाँ, रिपोर्ट देना।"

"शकर, उन लोगों ने जो कहा, वह क्या ठीक है ?"

"परिगणित और आदिवासियों की उन्नति या भले के लिए बना कोई कानून काम में क्यों नहीं आता ?"

"सुना तो।"

"उनकी बातों मे कोई जवाब नही मिला।"

"कह सकते हो।"

"ऐक्ट फलदायक न होगा, यह जानकर भी इस इमर्जेंसी के वक्त मे प्रधानमत्री ने यह ऐक्ट क्यों बनाया ?"

"क्यो न बनाती ?"

"क्यों बनाती ?"

"नाइस ऐक्ट—बढ़िया क़ानून है। सुनने में अच्छा है। भारत के बाहर उनका सम्मान बढ़ गया। अब वे ग़रीब की लिबरेटर हैं, यह समझा जाता है।"

"मज़ाक कर रहे हो?"

"बिलकुल नहीं, हज़ार सब-कुछ होने पर भी, क़ानून बनाने के पीछे उद्देश्य तो अच्छा है। यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता है।"

"ऐक्ट में 'हो सकता है' को 'किया जायेगा' नहीं किया जा सकता?"

"देखो, जब कोई क़ानून ब़नता है, तो उसकी भाषा के बारे में जानकारों से सलाह ली जाती है।"

"चोट्टि मुंडा को कमेटी में लेने से अच्छा रहता।"

"न, कोई ब्लडी—बदमाश—युवलीग वाला उसे मार डालता। उसके सिवा, चोट्टि भिन्न मत का है।"

"अरे इसीलिए तो। डिसीडेन्ट—भिन्न मत के आदमी को थोड़ी शक्ति दो, थोड़ा महत्व दो, वे ठंडे पड़ जायेंगे।"

"चोट्टि उस तरह का आदमी नहीं है।"

"न। सच्चा आदमी है।"

"हाँ। लेकिन वह सच्चा आदमी ही देश की सुरक्षा के मामले में बहुतेरे उजबक मंत्रियों से डेंजरस हो सकता है।"

"क्यों?"

"वे ही हिंसा करते हैं।"

"शंकर, हम लोग क्या उसे मार डालेंगे?"

"न, न। उसके ज़िन्दा रहने की ज़रूरत है उसके रहने से कभी-न-कभी हम दूसरे हिंसा पैदा करने वालों को पकड़ सकते हैं।"

"उनका क्या करेंगे?"

"मार डालेंगे।"

"चोट्टि को?"

"तब देखा जायेगा! सुनो, तुम अपनी थियरी और सर्वे लिये रहो। कार्रवाई के स्तर पर तुम्हारी तरह के आदमी रुकावट ही पैदा करते हैं।"

अमलेश बच्चों की-सी सरलता से बोला, "लेकिन मुझे ऐक्शन-आपरेशन देखना अच्छा लगता है। हिंसा बहुत ज़रूरी है।"

"जब बन्दूक का कुन्दा अपने हाथ मे हो तो ज़रूरी है। नॉट द अदर वे राउंड...।"

"शंकर, तुमने कितने लोगों को मारा है?"

"आः! छोटे बच्चे इतने सवाल नहीं करते। घर चलो, गोली खाओ

"तुम साले बड़े चालाक हो।"

"ब—हुत। देखा नहीं, दालान-कोठा खड़ा कर लिया? छगन! अब मेरा जिन्दा रहने को मन नहीं होता रे।"

"क्यों?"

"इस कानून के पीछे-पीछे चली आती हुई कोई गड़बड़ है। मैं अब देख नहीं सकता, छगन! मेरा मन दुखी होता है।"

"चोट्टि, तेरे और मेरे मुँह से यह बातें नहीं सोहतीं।"

"चल, कहीं चलें, मैं तो जा रहा हूँ।"

"यह क्या देख रहा हूँ, चोट्टि? यह तो फूस की रस्सी है! वाह रे बहार! लाल धागे से लपेट दी है, देखने में कैसी अच्छी लगती है!"

"हरमू की माँ का काम है। आजकल खाना बनाने का काम पतोहू करती है, नतपतोहू। सो वह बैठी तो रह नहीं सकती। वही लकड़ी लाती है, वही आँगन बुहारती है। और क्या करती है सो तो तुझे पता है।"

"खूब जानता हूँ।"

चोट्टि की पत्नी कुछ महीनों पहले सहसा एतोया के घर गयी थी। वहाँ जाकर उसने क़ायदे के मुताबिक़ एतोया और उसकी बहू के साथ झगड़ा किया था। आज कोयेल मर गया है। एतोया का बाप नहीं था तो क्या ताऊ नहीं था? एतोया की माँ मुँगरी मर गयी थी तो क्या ताई नहीं थी? एतोया की लड़की सात बरस की हो गयी है। उसे लेकर बीच-बीच में चोट्टि जाना नहीं होता? जैसा एतोया है, उसकी बहू भी वैसी ही है।—यह सब कह कर बकते-झकते चोट्टि की बहू एतोया की लड़की को लेकर चली आयी। लड़की बड़ी चंचल और मनमोहिनी थी। इस घर में सबका दुलार पाकर उसके दिन अच्छे बीत रहे थे। लेकिन उस लड़की का पेट दर्द से ऐंठा जा रहा था। चोट्टि की पत्नी उसे अस्पताल ले गयी। डाक्टर ने कोई दवा दी जिससे लड़की के पेट से एक बड़ा-सा कीड़ा निकला।

चोट्टि की पत्नी दूसरे ही दिन सना की बहन की नातिन को लेकर अस्पताल पहुँची। बड़ा ताज्जुब है कि उसके पेट से भी एक या दो कीड़े निकले। धीरे-धीरे चोट्टि की पत्नी का इस बुढ़ापे में अस्पताल पर गहरा विश्वास हो गया। अब वह लड़के-बच्चों को अस्पताल ले जाने, उनका टिकट बनवाने, डाक्टर को दिखाने, दवा लेने वाली एक जोशीली औरत बन गयी थी। छगन, चोट्टि, उराँव या किसी के भी घर में कोई बीमारी होने पर अब वे चोट्टि की पत्नी के पास चले आते थे। चोट्टि की पत्नी फ़ौरन उनको लेकर अस्पताल चली जाती।

चोट्टि ने कहा, "अच्छा काम हो रहा है रे !"

"क्यों ? तुम अच्छा काम करो, मैं भी कर रही हूँ।"

"घूम भी आती है।"

"हाँ जी, अच्छा लगता है। गयी-आयी, अस्पताल में भी तरह-तरह के आदमी आते है। जरा बातचीत हो जाती है। उसके बाद लौटने में टीसन में बैठ गयी, थोडी-सी चाय पी, अच्छा लगता है जी !"

"तू चाय पीती है ?"

"वे पिला देते हैं।"

"कौन ?"

"जिनको ले जाती हूँ।"

"तू काम करती है, दाम भी लेती है।"

"जरूर। चाय पिऊँगी, बीडी पिऊँगी। टरेन आयेगी उसे देखूँगी। अच्छा लगता है।"

रोज तो अस्पताल जाना-आना होता नही था। उसके बाद बाक़ी समय में चोट्टि की पत्नी लकडी इकट्ठा करती। कपडे सीती थी, मुर्गियों और बकरियों की देखभाल करती, आँगन में मिर्चें और बैंगन लगाती। फूस बटकर रस्सी बनाती। लकडी के अड्डे बनाकर डोरी से बाँध, बैठने के लिए चौकी बनाती। बैठी न रहती।

छगन और चोट्टि पहान के घर पर ही बैठे। चोट्टि बोला, "आज हमारे पास बात करने के लिए एक ही चीज है—बेगार। कानून बना है, यह सबको पता है। मैं या मेरे बेटे और नाती बेगार नही है, यह भी पता है। फिर भी मुझे आना पडा, क्योंकि मैं डर गया हूँ।"

"कैसे ?"

"बासमती उराँव के साथ जो कुछ हुआ, उस समय यह सब गौरमेन के सामने हुआ। उस गौरमेन का बहुत रोब-दाब है। उसी में लीग के लड़कों ने कोई जुलुम नही किया। नही तो आज उनकी जितनी ताकत है, उतना ही रोब है, और हाथों में बंदूक भी है। पहले के मेंबर को मार डाला। चोट्टि ग्राम में क्या किया, कोई भूला नही है !"

"तो उससे क्या ?"

[illegible]

"अब कानून बन गया है। नही बना है ?"

"बना है।"

"तब बेगार क्यों देंगे ? तुम तो देने को कहोगे।"

"तू यह ठीक नहीं कह रहा है। चोट्टि कभी किसी को हुकुम नहीं देता।"

"अरे उपा !" उपा का बाप दुखी मुंडा गरज उठा, "जब वह हमसे वैसी बात कहे, तब कहना, तू अभी कल का लड़का है।"

चोट्टि बोला, "दुखा रे ! पंचायत न होने पर भी, सब लोग तमाम बातें जरूर कहें। बोल उपा !"

"मुझसे गलती हुई। तुम कहो।"

"तो अब कह रहा हूँ। मोतिया और पहान-पहानी, रेल का कुली मरे तब आदिवासी अफसर, पुलुस के बड़े साहब ने हमारी बात कुछ सोची थी। उससे ही फिर उन लोगों ने जुलुम नहीं उठाया। नहीं तो बाढ़, धुतरा, सराहि गाँवों में ऐसा जुलुम हुआ, घर जले, लहास गिरीं, औरतों को—कहने में जबान रुकती है, औरतों को बच्चे वाली बना दिया, और पुलुस खड़ी तमासा देखती रही। कोई न्याय नहीं हुआ। जले-झुलसे घर बनाते-बनाते वे फिर आ गये। हाँ ! महाजन की ओर से ! पार्टी के लड़के ! उन्होंने फिर जुलुम उठाया।"

"कहो, कहो, चोट्टि !"

"चोट्टि में जब हुआ तब हम गये। अफसर, पुलुस ने हमारा दुख समझा, इसी से फिर जुलुम नहीं उठा और कुली के कारन रेल यूनियन ने भी मदत दी थी। बासमती की बेला गौरमेन आ खड़ी हुई। उसी से फिर जुलुम नहीं उठाया। किन्तु उपा, और लड़को-जवानो, सोचकर देखो, जिन्होंने ऐसे जुलुम किये, उनको क्या जेहल हुई, या जरीमाना हुआ ?"

"कुछ नहीं हुआ।"

"जुलुम-पर-जुलुम उठाकर, गरीबों की लहास गिराकर जिन्हें सजा नहीं होती, वे जब चोट्टि ग्राम के लोगों पर किसी रोब से—किसी बड़े आदमी की मुराद के बाद जुलुम नहीं कर सके, तब वे यह नहीं भूल गये थे, मन में गुस्सा रखे रहे। वह गुस्सा भी लाला के सूद की तरह सौ गुना होकर बढ़ा। अब तोहरी में वह गौरमेन रहते हुए चुप रहेंगे ?"

"उसके बाद ?'

"जुलुम उठायेंगे।"

"हाँ, वह तो उठायेंगे।"

"अब क्या करें, यह बताओ ?"

"दो काम कर सकते हैं।"

"क्या, क्या ?"

चोट्टि अब निर्मल हँसी हँसा और बोला, "एक काम दस तरह है। 'बेगार नहीं देंगे' कहने से वे आकर लहाम गिरा देंगे, घर जला देंगे। आजकल काला कानून चल रहा है, उसमें पुलुस को बेसी सुविधा है। पुलुस कुछ करेगी नहीं और उनको मदत देगी। जैसा न्याउ चाहिए, हमें अदालत जाना पड़ेगा। मैंने बहुत लोगों से पूछकर जान लिया है, और तोहरी के गौरमेन से कह आया हूँ, इस कानून में चोरगली है। हम लोगों को लेकर गौरमेन तमासा कर रही है। पूछा, कोई मालिक अगर फिर भी बेगार चाहे तो हम क्या करेंगे? किस राह जायेंगे? कानून क्या कहता है? गौरमेन ने कहा, क्यों? अदालत चले जाओगे। तुम समज लो! मुंडा अदालत जायेगा! मुंडा, उरांव, दुसाध, गंजू—पेट के लिए करज लिये बिना जिनके दिन नहीं बीतते, वे मालिक-महाजन के नाम नालिस करने जायेंगे! इसी से, हर साल की तरह तुम लोग बेगार दो। उससे मालिक गुंडे-दादा लोगों से सिकायत-उकायत न करेगा, वे भी जुलुम नहीं उठायेंगे।"

छगन बोला, "उससे क्या हम लोग बच जायेंगे? बाड, धुनरा, सराहि में क्या किसी ने कहा था 'बेगार कानून नहीं मानते'? वहाँ क्यों जुलुम हुआ?"

'छगन! सब-कुछ जान-बूझकर ऐसी बातें कर रहे हो! क्यों हुआ? क्यों होता है? होता है, हर बरस होता है। हमेशा से होता है। वहाँ बेगार और खेत-मजूरी पर महाजन के जुलुम की बात रहती है, तुम पर बनिया-राजपूत-बरामन के जुलुम की बात रहती है। पुलुस-महाजन एक थैली के हैं, यह बात रहती है। गौरमेन के दल के दिकू महाजन को मदत देंगे की बात म रहते हैं, सब बातें एक-साथ होने पर आग लगती है। जितनी बातें बतायी इनमें कौन-सी सही नहीं है, बताओ? यह सब है, इसी से बाड और धुरता और सराहि में आग लगी।"

"चोट्टि! मैं तेरी तरह इतनी बातें नहीं समजता। तू कहता है एक बात, जुलुम के डर से हम बेगार देते रहें। यह भी कहा, बेगार देते रहने से, छोटी जात होने से, ऊँची जात को मान देते रहने से भी जुलुम होता है, क्योंकि महाजन-पुलुस-पार्टी एक मेन के होते हैं।"

"सच कह रहा हूँ या गलत?"

"सच।"

"और काम कैसा है? चोट्टि, मैं इतना नहीं समझता। तू बता, छगन, जात-पांत के आदमियों के लिए मैं यह काम करूँगा।"

"ना, छगन! मैं बेगार नहीं हूँ। इसलिए बेगार क्या करे, यह मेरा

वताना ठीक नहीं है। मैं कह सकता हूँ, यह एक रास्ता है। तुम सोच लो। तुम खुद सोचकर काम करो।"

"और काम क्या है, सुनें ?"

"वह ऐसे है। थोड़ा पानी पिऊँगा पहानी, वहुत प्यास लग रही है।"

पहान ने कहा, "सव पानी पियो। वातें वहुत हैं।"

पहानी पीतल की थाली में भीगे चने, राव, मिट्टी के घड़े में पानी, अलमुनियम का गिलास ले आयी। सवने चना-राव चवाये, ऊपर से गिलास से पानी पिया। चोट्टि वोला, "कुएँ का जल वड़ा मीठा है। या हमारे कलेजे का खोदा पानी है, पहानी ?"

"तुमने समज लिया ! चोट्टि नदी के गड्ढे का पानी है।"

"यह गड्ढा खोदने की अकल तव हुई थी। नहीं तो जल के वहाने लाला हमें जरूर मारता। हाँ देखो, अभी सव मौजूद हैं, वताऊँ। आसमान की हालत वहुत खराव है। कई साल हम माफ किये गये, इस साल लगता है सूखा आ रहा है। नदी का कलेजा अच्छी तरह खोदकर रखना अच्छा है, ऐसा लग रहा है।"

छगन वोला, "चोट्टि, तू मरना मत रे ! तेरे मरने पर हम डूव जायेंगे। जो अभी मालूम है, वह भी याद नहीं आता।"

"तुम सव देखो, छगन मुझे मीठी वातों में कैसे भुलाता है। जहाँ चोट्टि मुंडा नहीं है, वहाँ सव डूव जाते हैं, पानी-आकास का हाल नहीं समजते।"

"और वात कहो।"

"कहूँ, उपा ? वह काम वहुत सीधा है !"

"क्या ?"

"कोई वेगार न देना।"

"नहीं देंगे। तुम वताओ, न देने पर वहुत जुलुम होगा।"

"निस्चय जुलुम होगा। उसमें भूल नही है। फिर भी हमारे दिमाग में खचड़ई घूम रही है। दारोगा आकर कह गया है, वेगार गैरकानूनी है। वस। कोई वेगार मत दो। अव तो चड्ढा के यहाँ चलो। लकड़ी काटने का काम हो। कुछ काम मिल रहा है। सव काम किया। चिरंजीलाल गोमोह से आ रहा है। कुरमी पहाड़ पर पत्थर तोड़ना, लाल मिट्टी—मोरम—वनाने का काम करायेगा। वहाँ भी जायेंगे।

"तुम लोग वताओ, यह वात अच्छी लग रही है ?

"लाला के पूछने पर तुम कहना, यह क्या ? दारोगा वता गया है, अव वेगार गैरकानूनी हैं। इसीलिए नहीं करेंगे।"

"वह जुलुम उठाये तो ?"

"वह बात बता रहा हूँ। देखो, हम लोगों के कहने की बात यह है। कानून तो हम कभी जान नहीं सकते। दोनों चड्ढा भाई अच्छा बेवहार

किन्तु वे

हम वह

गार नहीं

कानून है।

नवा दो

सेर चावल और पौन सेर सत्तू नहीं। सब औरत-मर्दों के लिए। और बच्चों-लड़कों को देने की बात साढ़े चार सेर धान और पौन सेर सत्तू, पौने दो सेर चावल और पौन सेर सत्तू नहीं। जो मालिक यह नहीं देगा, वह कीमत लगाकर रुपये देगा। अब बताओ, यह कानून जो बना है, उसे सब जानते हैं। किन्तु किसी दिन हमें बताया नहीं। और कोई मालिक-महाजन उस हिसाब से मजूरी नहीं देता।"

"यह कानून कब बना?"

"छगन के गोद के नाती की उमर से। दो बरस हुए।"

"कुछ पता नहीं।"

"बताना चाहते नहीं, इसलिए नहीं जानते।"

"कुछ नहीं मालूम। लाला जब जो कुछ देता है, ऐसा भाव दिखाकर देता है, जैसे बड़ी दया कर रहा हो।"

"हम लिखना-पढ़ना जो नहीं जानते। हरमू जब जेहल गया, बहुतेरे मुंडा, उराँव, दुसाध-धोबियों को जेहल में देखा, उससे पूछो। वे जमीन के मामले में जेहल में थे, किन्तु उनके क्या कसूर है, वे नहीं जानते। दो आदमी खेतमजूर थे, वे जिसकी खेती पर काम करते थे, उस मालिक ने खेत की जमीन बेच दी। यह उन्हें मालूम नहीं था। खेत जोतने जाने पर नये मालिक के जुलुम से जेहल गये।"

हरमू बोला, "जेहल में रहते-रहते बुड्ढे हो गये।"

"ऐसी बात है! हम कानून नहीं जानते। पुलुस बेकानून मारती है, इसलिए पुलुस को दिकू लड़के अदालत में ले जाते हैं, यह भी देखा। कैसे ले जा सकते हैं? वे कानून जानते हैं, इसलिए ले जा सकते हैं।"

"अब बताओ।"

"खेतमजूरी कानून नहीं पता। किन्तु यह कानून तो दारोगा बता ही गया। इसी से कहता हूँ, कोई बेगार मत दो। लाला काम कराये तो मजूरी दे, जिस तरह सब देते हैं, उस तरह मजूरी लेकर काम करना। लाला अगर राजी न हो तो मत करना।"

उषा ने पूछा, "जुलुम करे तो?"

"उसे भी तुम खुद सोचो।"

"मारेगा? पार्टी के लड़के, पुलुस आयेंगे।"

"जरूर, यह तो उनके लिए परब है।"

"तब?"

"खुद सोचो।"

"हम भी मारेंगे।"

"सब एक रहोगे, या फूट जाओगे?"

"एकजुट रहेंगे।"

"तुम्हारे अकेले की बात नहीं है। छगन क्या कहते हैं, देखो?"

छगन बोला, "अगर हम भी एक रहें तो तू क्या करेगा?"

चोट्टि बोला, "तू अगर पहली राह चलेगा, तब तो मेरा कोई काम नहीं।"

"तू बुड्ढा सियार! दूसरी राह पर है?"

"सो तो हूँ। बुड्ढों से कोई काम होता है?"

"तुझे इस बात का जबाब नहीं मालूम?"

"समजता हूँ। किन्तु सब बाप अपने-आप समज गये। जुलुम उठने पर लड़की-लड़के, बुड्ढे-बुढ़िया, नन्हे बच्चे भी मरेंगे।"

"अरे, पहले ही मरने की बात! वह बात लाला के साथ हो। उठे जुलुम। तभी न?"

"बुराई को पहले सोच लेना अच्छा है, रे छगन! मैं चलूँ।"

"कहाँ?"

"घर चलूँ। तुम लोग सोचकर देखो, मुझे बताना। बेगार लोगों से बात करो, तुम लोगों को सोचकर देखने की जरूरत है।"

"अगर कह दूँ, बेगार नहीं!"

"पहले सोच देखो तब मेरा काम है।"

"बेगार नहीं दो-चार घर। फिर अभी तो बँधुआ हैं। हिसाब के खाते तो जल गये, फिर बनवाकर ला रहा है।"

"वह खाता उसकी जान है, उसी लिए बनवा रहा है।"

दो घंटा बाद हरमू आकर बोला, "वे लोग आ रहे हैं। बेगार नहीं देंगे, और जो ठीक करेंगे, आकर बतायेंगे। किन्तु...।"

"क्या? कहो।"

"तुमको कौन समजायेगा? किन्तु हम तो बेगार हैं नहीं, आबा? फिर भी उनके साथ सामिल होंगे...!"

"वे जायेंगे, मुद्दा भी कितने हैं, शरीर बचायेंगे ? बचाया जायेगा ?"

"नहीं, बचाया नहीं जायेगा।"

"अभी मिट्टी का तेल तो ला, जरा देखें।"

"क्यों ?"

"पैर दुखते हैं। गरम कर लगाऊँगा।"

हरमू की माँ नमक और किरासिन के तेल की कटोरी लालटेन पर रखकर ले आयी। बोली, "इस तरह का काम मैं करूँगी ? लड़ने जायेगा बाप, सो लड़ने वालों को मालिस करूँ, यह काम मेरा है !"

"लड़ाई कहाँ है, माँ ?"

"यह लोग करेंगे।"

"धुत् !"

"मैं तुझसे जादा समझती हूँ।"

"सपना देखती है।"

"हरमू ! तू मेरे पेट में था, या मैं तेरे पेट में ?"

चोट्टि की पत्नी ने लड़के को डाँटकर भगा दिया और चोट्टि से बोली, "कहाँ गये, क्या किया, जिन्दा लौटेंगे या नहीं, यह सोच-सोचकर हमेशा पागल रही। तब कोयल था, उसके बाद मुंगरी थी। अब मेरी बात तो थोड़ी सोचो !"

"किसकी बात की फिकर करूँ, बता ?"

"यह मैं जानूँ ?"

"बहू !"

"कहो।"

"सोमचरी !"

चोट्टि की पत्नी ऐसी अचंभे में आयी कि लगा, खड़े-खड़े गिर पड़ेगी। होश आया तो उसे बड़ी शर्म लगी। उसने झटपट चारों ओर देखा। नहीं, आस-पास कोई न था। उसके बाद बोली, "तुमको लाज नहीं आती ? माँ बन गयी, नाती का बच्चा होने पर दादी बनूँगी, ऐसी बुढ़िया को नाम लेकर कोई बुलाता है ?"

"मैं बुलाता हूँ।"

"नहीं, लाज आती है।"

"नहीं, झूठ बोलती है, बड़ी खुश है।"

"चुप रहो। यह क्या बुढ़मस है ?"

"बूढ़ा ? तुझे उठा-चिपटाकर नाचूँगा।"

"चुप रहो।"

"अब क्या हो, पता नहीं। क्या करूँगा, पता नहीं। पर सब सोचते हैं कि चोट्टि मुंडा सच्चा आदमी है।"

"सच्चा तो है ही।"

"दूसरों की बात नहीं। खुद सच्चा रहने के लिए बीच-बीच में सच्चा काम करना होता है।"

"क्यों करते हो ? कभी 'ना' कहा है ? पुराण के लिए नहीं गये ? नक्सली लड़के को घर नहीं ले आये ? पहान, कुरमी के पहान को बचाने नहीं गये ? 'ना' नहीं कहा, 'ना' कहूँगी भी नहीं, किन्तु मेरा कलेजा फट जाता है। कोयेल नहीं रहा, मुंगरी नहीं है, जो मेरे पास थे, उनमें से कोई नहीं रहा। कलेजा सुन्न हो गया लगता है। मैं चलूँ, जाकर उन सबको देख आऊँ। बहू ! तू कहाँ है ? हरमू ! चटाई ला दे।"

हरमू ने एक खूब बड़ी चटाई लाकर धम्म से डाल दी। बोला, "माँ, घास से चटाई सब लोग बुनते हैं। ऐसी बड़ी-बड़ी कोई नहीं बुनता। जब खेती नहीं रहेगी, तो मैं हाट में जाकर तेरी बिनी चटाई बेच आऊँगा।"

"बेच देना।"

"वह बहारदार रंगों के तागे कैसे लगाये हैं !"

"इसे न लेना, हरमू !"

"क्यों ?"

"इसे तोहरी में गौरमेन ने माँगा है।"

सब आकर चटाई पर बैठ गये, सना और छगन ने दोनों दलों की बात बतायी—ना, वे बेगार देने नहीं जायेंगे। देखा गया कि उपा मुंडा, युगल गंजू—यह सारे जवान लोग और आगे की सोच रहे हैं।

उपा बोला, "बाहर से खेत-मजूर नहीं लाने देंगे। हम से ही काम कराना पड़ेगा।"

चोट्टि बोला, "अच्छा है। अब और भी काम है।"

"क्या ?"

"यहाँ जो बात होगी उसे बाहर ले जाने पर मैं वैसा करने वाले बेईमान की जीभ पकड़ कर खींच लूँगा।"

"बता, तू क्या कह रहा था ?"

"क्या कर रहे हैं, यह तोहरी को गौरमेन को बता कर रखूँगा।"

"यह बात !"

"बातें और भी हैं।"

चोट्टि ने स्वरूप से अपनी आलोचना की बात भी बतायी, और कहा, "मैं खुद जंगल जाऊँगा। वे कहते हैं, हमें मदत देंगे।"

"वह बात मालूम हो जायेगी।"

"और भी बात है। अगर वैसा हो तो उन दो-चार लोगों को शायद छिप कर रहना पड़े, तब उनके पास रह सकेगा।"

दूसरे दिन चोट्टि ने घर पर बताया, "कोई पूछे तो बता देना कि मैं ढाइ गया हूँ।"

स्वरूप ने बताया कि चोट्टि से कोमाडि के बीचोबीच जगल में उनका डेरा है। वह बिलकुल फैला हुआ जगल है। पहाड के ऊपर जगल छितरा है, नीचे घना है। चोट्टि के पास का सारा जगल चोट्टि का जाना हुआ था। वह बलोया लेकर घुस जाता। वहाँ भटकने के लिए नहीं घूमता था, जहाँ-जहाँ छोटे कुड थे, वही जाता। अपने को छिपाये रखने वाला इसान, जलाशय के पास ही रहेगा।

पहले दिन पता नही चला। शाम को घर लौट कर बोला, "पाँव दुख रहे है। अब पहले की-सी सक्ति नही रही।"

पत्नी बोली, "कल हरमू साथ जायेगा। अकेले नहीं जाने दूँगी।"

हरमू का साथ रहना अच्छा है। हरमू बोला, "चलो, चलकर भेंड़िया मारें। उस पहाड के पीछे उतर कर गहरी कुडी है, बाबा! अभी भी हाथी-डुबाऊ है।"

"अब हाथी! पहले जगल में घुसते थे तो, कहाँ बाघ, कहाँ हिरन, बहुतेरे जानवर थे। अब अकेला हाथी नही दिखायी पडता।"

"चलो, दिखा दूँगा।"

जगल गहरे से गहरा होता गया। सचमुच चोट्टि के आगे से हिरन भागा। आहा, ठहरो! चोट्टि किसी से उसकी बात नही बतायेगा। जगल में यहाँ पतले रास्ते भी नही है। सडे पत्तों में पैर धँस जाते हैं, जमीन ठढी है। कुडी बहुत बडी है और किनारे की ओर गहरी नही है। चोट्टि बोला, "पहले तो मालूम न था।"

"अभी भी हाथी उतरते है।"

कुडी पार कर स्वरूप से भेंट हुई। स्वरूप के बदन पर हरी शर्ट और हरी पैंट थी। उनका अड्डा पहाड की गुफा में था। स्वरूप उनको ले गया, ले जाकर बैठाया। चोट्टि ने देखा कि तीस व्यक्ति हैं और सभी दिकू नही है। लगभग दस लोग आदिवासी हैं। स्वरूप बोला, "पहले पानी पियो।"

चोट्टि ने पानी पिया। सब बातें खुलकर कही। स्वरूप बोला, "अब की बार ठुकाई होगी। अपने बेटे को भेज देना। ये पद्रह आदिवासी तुम्हारे बेटे के साथ गाँव चले जायेंगे और हर घर में छिप कर रहेंगे। लडाई के वक्त वे भी इनको देखेंगे। ऐसा होने पर आसानी से बाहरी

आदमी नहीं समझे जायेंगे। यहाँ सब नहीं हैं। खबर रोज दी जायेगी।"

"जरूरत होने पर लड़कों को दोगे?"

"जरूर। अरे, यहाँ इस अंचल का यह डेरा है, कुरमी पहाड़ के ढाल के जंगल में एक और है।"

"ये लड़ेंगे?"

"तुमसे सीखे हैं, लड़ेंगे क्यों नहीं?"

"क्यों रे, तू नरसिंगगढ़ का विशाई है?"

"हाँ जी, खूब निशाना मारना सिखाया था।"

"और कौन है?"

"पहचान के बहुत लोग हैं, सब तुम्हारे चेले हैं।"

चोट्टि के मन में अजीब उलट-पलट होने लगी। स्वरूप बोला, "अच्छा हुआ, आज मैं था। कल आते तो मुझे न पाते।"

विशाई बोला, "जो खबर दे वह पिसी मिर्च और थोड़ा नमक ले आये। कम पड़ गया है।"

"तुम लोग खाली सत्तू खा रहे हो?"

स्वरूप बोला, "राँधना नहीं होता। धुआँ उठेगा।"

"तुम अभी भी भागे हुए हो?"

"अब हम कीमती आदमी हैं, चोट्टि! सिर पर कीमत लगी है।"

स्वरूप उनको शॉर्टकट से रास्ता दिखा लाया। बोला, "सिराही की खबर मालूम है? कुछ सुना है?"

"लक्ष्मण साहू ने युवलीग को बुलाकर दो बार गाँव जला दिया है।"

"दो युवलीग वाले बहुत घायल हो गये हैं, लक्ष्मण का लड़का भी घायल हुआ है।"

"तुम वह काम करते हो?"

"गाँव के भी कई लोग थे। सिराही के आस-पास कोई जगह मिलती तो अच्छा रहता। अब पुराना डेरा छोड़ना ठीक होता।"

"सिराही से थोड़ी दूर उत्तर में एक वेला का रास्ता है। दमोह में जंगल भी है, और मुंडा लोगों के श्मशान के पत्थर भी बहुत हैं। वह कभी मुंडा ग्राम था।"

"अच्छा बताया। तो यही बात रही।"

"बुड्ढा हो गया हूँ न, इसी से सोचता हूँ।"

"फिर भी तो आये हो।"

"उनसे सोचने को कहा था, वे ठीक कर रहे हैं, इसीलिए आया हूँ।"

"इन्होंने अपने-आप ठीक किया ?"

"हाँ, महाराज, वह सब बातें बाद में होंगी।"

"दो दिन आराम करो, चोट्टि! उसके बाद हरमू की माँ की बुनी हुई चटाई सिर पर रख कर तोहरी चलेंगे।"

अमलेश घास की बुनी चटाई देखकर ताज्जुब में पड़ गया। उसकी पत्नी ने महसूस किया कि अमरीका के नावाहो-इंडियन[1] लोगों के बने कम्बलों के अतिरिक्त ऐसी आश्चर्यजनक आदिवासी कला उन लोगों ने नहीं देखी थी और उस चटाई का पैसा लेने के लिए दोनों चोट्टि से ज़िद करने लगे। वे उसका दाम जानना चाहते थे।

चोट्टि बोला, "इसके दाम नहीं होते।"

"क्यों ?"

"पहले चीज को अच्छी तरह देख लो।"

चोट्टि की पत्नी ने टुकड़े-टुकड़े कर चटाई बुनी थी। उसके बाद लाल-पीले धागों के टुकड़ों से उन्हें जोड़ा था। लाल और पीले धागों का नमूना बड़ा सुन्दर था।

"हम तो बार-बार कह रहे हैं कि खूबसूरत बनी है।"

"इसके दाम नहीं होते, महाराज!"

अमलेश बहुत ही बड़े आदमियों की-सी हँसी हँसा और वह हँसी देख कर समझ में आता था कि ऊपर से चाहे जितना दोस्ताना करे, असल में चोट्टि को और चोट्टि के-से सारे लोगों को वह कीड़े-मकोड़ों-सा तुच्छ समझता था। अमलेश बुद्धि से, वृत्ति से नीचे पड़े इन्सान के प्रति करुण होकर बोला, "दाम न हो, ऐसी कोई चीज नहीं होती, चोट्टि! जो इन्सान की मेहनत से बना हो उसका दाम होगा ही होगा।"

चोट्टि सहिष्णुता की सुन्दर मुसकराहट के साथ बोला, "महाराज! जंगल की घास से मेरी पत्नी ने चटाई बनायी है। मेरे भाई की नातिन, भाई नहीं है, ने लाल-पीले धागे दिये हैं। मैं सिर पर लाद कर लाया। अब बताइये, इसका दाम कैसे चुकेगा? जंगल की घास के दाम नहीं। और हरमू की माँ की बिनाई का दाम आँका नहीं जा सकता। वह बुढ़िया सबको प्यार से बिन कर देती है।"

शंकर बोला, "ठीक कहा, चोट्टि! मेरी माँ की सिलाई की हुई एक डिज़ाइनदार बिछावन है। उसमें बहुत बढ़िया ढंग के बेल-बूटे हाथी-घोड़े

---

1. अब अमरीका में रेडइंडियन की समाप्तप्राय एक जाति।

के नक्शे हैं। मैं इनका दाम नहीं लगा सकता। लेकिन कई चटाइयाँ होने से घर के फ़र्श पर बिछायी जायेंगी।"

"बाजार में खरीद लो, महाराज ! औरतों को दो पैसे मिल जायेंगे।"

"कहो, और क्या ख़बर है ?"

चोट्टि ने स्वरूप की बात नहीं बतायी। तीरथनाथ को उषा आदि बाहरी खेत-मजूर नहीं लेने देंगे—यह भी नहीं बताया। सिर्फ़ यह कहा, "अब तुम्हारी मदत चाहिए, महाराज ! कभी किसी ने बताया नहीं, इसीलिए पता नहीं कि खेत-मजूरी कानून हुआ। मुझे उस दिन पता चला। किन्तु वह बात जाने दें। इस कानून की बात दारोगा बता गया, इससे मालूम हुआ। अब चोट्टि के बेगार कह रहे हैं कि दारोगा भी तो गौरमेन है, वह जब बता गया, तो अब बेगार न देंगे। और पिछला करज भी न चुकायेंगे।"

अमलेश और शंकर बोले, "ठीक।"

"किन्तु मैं कह रहा हूँ, तुम्हें बता रखूँगा।"

"सोच रहे हो, कोई गड़बड़ होगी !"

"महाराज ! चोट्टि की जबान से क्यों कहलाना चाहते हो ?"

शंकर बोला, "कहो न।"

"कोई बात न कहने से भी जुलुम होता है। बेकसूर, बेपाप की लहास गिरती है, यह तो बड़ी बात है, कानून बना है, बेगार न देंगे।"

"समझे।"

"बताये जा रहा हूँ।"

"देख रहे हैं, दारोगा को बता रखना होगा।"

"पार्टी के लड़के और पुलिस मिले हुए हैं।"

"हम तो हैं।"

चोट्टि चला गया। अमलेश बोला, "क्या करें, शंकर ?"

"थाने से कहेंगे कि बेगार लोगों को मदद दे, यानी जो मारे उसे पकड़े और मारे। मतलब युवलीग के तीनों गुंडे।"

अमलेश छोटे बच्चे की आवाज में बोला, "क्यों ?"

"इस तरह का संघर्ष होने पर स्वभावतः दूसरे संघर्षशील लोग साथ देना चाहेंगे। मेरा काम बहुत आसान हो जायेगा।"

"यह कौन हैं ? सी० पी० एम० एल०—मार्क्सवादी-लेनिनवादी साम्यवाद वाले ?"

"उस नाम के झंडे में यह लोग काम नहीं करते। लेकिन उद्देश्य मोटे तौर पर एक ही है। किसान के हाथों में जमीन रहेगी। जमींदार और

महाजन को हटाना होगा। अपने अधिकार के लिए किसान सशस्त्र संग्राम में योग देंगे।"

"यह तो अच्छी बात है।"

"बिलकुल।"

"सक्रिय संघर्षशील लोगों को पकड़ कर क्या करेंगे?"

"उनका सफ़ाया करेंगे—एलिमिनेट।"

"वे लोग तो रोमियों में बहुत अच्छे लोग हैं।"

"ज़रूर।"

"तब?"

"हर खेल का एक नियम होता है, खुराना!"

"मुझे तुमसे बीच-बीच में डर लगता है।"

"उसमें साबित होता है कि तुम अक़्लमंद हो।"

शंकर ने एस० डी० ओ० को बताया, थाने को बताया। दारोग़ा ने नाकुर-नूकुर किया और तीसरे पहर के क़रीब उसे आई० जी० का टेलीफ़ोन मिला, "ईडियट—जाहिल! अपनी हद नहीं पहचानते? शंकर जो कुछ कहे वह करना।"

"हाँ सर! करूँगा।"

लाचार होकर दारोग़ा ने फ़ोन रख दिया कहा, "ताज्जुब है। हमेशा बंदूक की नली अछूत-आदिवासियों की ओर रखो। अब नली घुमानी होगी!"

शंकर फिर आया और बोला, "जिस दिन ज़रूरत होगी उस दिन 'दूसरे केस में दूसरी जगह गया था'—यह बात नहीं सुनना चाहता।"

'नहीं, सर!"

दारोग़ा ने समझ लिया कि शंकर और खुराना कोई बड़े लोग होंगे। बोला, "सर्विस दूँगा सर, लेकिन तब आप एक सर्टिफ़िकेट दीजिएगा।"

"यह बातें युवलीग के कानों में पड़ने पर...।"

"नहीं पड़ेंगी, सर!"

शंकर बहुत पुलकित होकर तेज़ नोकवाली लम्बी घास में लपेटी बहुत-सी मछलियों को हाट से ख़रीद कर घर लौटा। मेरी से बोला, "इन्हें पकाने को कहो। बहुत ताज़ी और ज़ायकेदार मछलियाँ हैं।"

अमलेश बोला, "सारी बातें हो गयीं?"

"हाँ।"

"काम होगा?"

"पता तो है, हम दिल्ली के सिवा किसी को किसी सवाल का जवाब

देने को लाचार नहीं हैं।"

इस तरह सारी बातें हुईं। उधर तीरथनाथ ने रोमियो से कहा, "कुछ समझ में नहीं आता। सब चुपचाप हैं।"

"बेगारों को बुलवा भेजो। कहो, जो कहना है बता जाओ। उसके बाद जो, करना होगा, हम करेंगे।"

तीरथनाथ के गुमाश्ते ने छगन और सना आदि को बुलवाया। छगन और सना ने तीरथ से कहा, "क्या बात है, महाराज?"

"धान कटाई का समय हो रहा है न।"

"तो हम क्या करें?"

"हर बरस क्या करते थे?"

"हर बरस बेगार देते थे।"

"इस बरस क्या नया हो गया?"

"सो क्या है ,महाराज!—दारोगा गौरमेन है, बता गया कि इस साल से बेगार गैरकानूनी है। फिर बेगार क्यों दें?"

"नहीं दोगे?"

"नहीं, महाराज!"

"धान पड़ा रहेगा?"

"ना, हम ही काटेंगे। मजूरी लेंगे।"

"अच्छा!"

"हाँ, महाराज!"

"बेगार न देने से बाहर के मजूर लेंगे।"

"ना महाराज। वह न होने देंगे।"

"नहीं होने दोगे?"

"ना महाराज, वह नहीं होने देंगे। खेत-मजूर की आमदनी का भी कानून है। चोट्टि न बताता तो न जानते। उसे रेट से नहीं चाहिए, जो दो वही देना।"

"ठीक, सुन लिया।"

"हम कहलाने से ही आ जायेंगे।"

"चोट्टि का नाम क्यों लिया? वह तो बेगार नहीं है। और हरमू

देने के दिन लगेगा।" वह फिर तोहरी गया और हरमू पिसी मिर्च और नमक और करौंदे का अचार लेकर जंगल गया। धान की कटाई चलती रही। हफ़्ता देने का दिन आया।

छगन, सना आदि कचहरी गये। स्वरूप के भेजे मुंडा और उरांव घर-घर राह देख रहे थे। वह बहुत ही शान्त और धीर थे। बहुत देर राह न देखनी पड़ी। प्रचंड गर्जन-तर्जन सुनायी पड़ा। हरमू के लड़के के बाल तांबे-से लाल होने से वह 'लाल' नाम से ही परिचित था। लाल चीखता-चिल्लाता आया। "बीस लोग बन्दूक उठाये हैं। एक पैसा नहीं देने देंगे। हम थाने जा रहे हैं।"

थाने से दारोगा और जीप से चढ़कर शंकर के आने के पहले ही रोमियो की गोली से उषा का पिता दुखा गिर पड़ा, और अब छगन आदि पत्थर फेंकने लगे, और मुंडा तीर छोड़ने लगे। तीरथनाथ ने भागने की कोशिश की और सुना, "कहाँ जा रहे हो, महाराज? मेल से सबको उतारा, खेल नहीं देखोगे?" तीरथ ने चोट्टि के हाथों में तीर और धनुष देखा।

पुराने डर ने उसे पकड़ लिया और वह 'मारना मत चोट्टि' कहते हुए गिर पड़ा। उधर रोमियो आदि कचहरी-घर में मानो अटक गए और धान के ढेर में आकर आगवाला तीर गिरा, घर के बीच। पहलवान, रोमियो और दिलदार ने दूसरे जवानों से कहा, "गोली चलाते हुए निकलो।" वे निकले और उन्हें तीर लगे। तीर छोड़ते और पत्थर चलाते हुए वे धान के ढेरों के पीछे बैठ गये। एक तीर लगने पर एक आदमी चिल्लाया, "तीर में विष है, विष है तीर में।" चोट्टि खंभे की ओट में निश्चित लक्ष्य पर "तीर छोड़ रहा था, सना से कह रहा था, "बन्दूक वाले हाथ को पहले घायल कर दे।" उसने तीर से रोमियो, दिलदार, पहलवान तीनों के बन्दूक चलाने वाले हाथों के कंधों में तीर मारे, बन्दूक गिर गयी। दूसरे युवक नेताओं को बैठते देख घबड़ा गये और उनके फटाफट तीर लगे। पेड़ के ऊपर से उषा का भाई चिल्लाकर बोला, "पुलिस!" और स्वरूप के दल के आदिवासी लोग पल भर में भाग गये। पुलिस के आते ही युवक फिर पवित्र संकल्प में जल उठे और एक साथ जोरों से चिल्ला पड़े। तीरथनाथ का गल्ले का गोदाम खोल कर छगन आदि मुट्ठियाँ भर-भरकर पिसी मिर्चे फेंकने लगे।

दारोगा, पुलिस, एस० डी० ओ०, शंकर! अब क्रम से तीर बरसना रुक गया और आगे बढ़कर चोट्टि ने एस० डी० ओ० से कहा, 'दारोगा ने कहा था, इसलिए इन्होंने बेगार नहीं दी। लाला के साथ मजूरी की बात थी। उनकी बात पर यह लोग हफ़्ता लेने आये थे। लाला

ने इनको घर में छिपा रखा था। उसने वन्दूक उठायी।" रोमियो को दिखा कर कहा, "उसने दुखा को मार डाला। जव दुखा 'पानी' चिल्लाया तो उसने दिलदार की ओर दिखा कर कहा, 'इसके मुँह में मूत दो।' तव हम धनुष ले आये। अव दुखा तो नहीं है। युगल दुसाध भी देखो वदन में तीर लगने से मर गया।"

"तीर से ऐसा जखम होता है!"

"मेरे हाथ में धनुक था, महाराज! इनकी तकदीर अच्छी है कि वन्दूक चलाने वाले हाथ को जखमी किया है। तुमने, 'महाराज, तीर का जखम तो देखा, और गोली का जखम नजर नहीं आया?"

"आया, चोट्टि!" शंकर बोला।

"अव?"

एस० डी० ओ० वोले, "घायलों को अस्पताल ले जाना होगा। यह क्या? यह तो मर गया? तीर में ज़हर था?"

"हो सकता है। गोली में वारूद नहीं रहती?"

"तीरथनाथ कहाँ है?"

"मुझे क्या मालूम?"

शंकर वोला, "चोट्टि, अव छोड़ दो। हम आ गये है।"

चोट्टि जैसे पिछले डेढ़ घंटे में नया आदमी वन गया हो। वह बोला, "छोड़ क्यों दूं? अभी समज लो। मालिक के पास खेत-मजूर हफ्ता लेने आये थे। उस पर मालिक ने इन दुसमनों को बुलाकर क्यों तैनात किया था? पहले गैरकानूनी काम किसने किया? उसके वाद महाराज, हफ्ता? उसे लिये विना कोई नहीं जायेगा। पहले तुम हफ्ता वाँट दो।"

दो पुलिस वालों ने वीस वन्दूकें और गोलियाँ उठा लीं। शंकर वोला, "सव इकट्ठा करो। घायलों को उठाओ।"

'इयाड' के दवाव में यह पहले का न किया हुआ काम करना पड़ रहा था, इसलिए एस० डी० ओ० खफ़ा हो गये और तीरथनाथ से वोले, "आपको साथ ले जायेंगे। साफ़ पानी को गन्दा कर तूफ़ान खड़ा कर दिया, अव म्याऊँ का ठौर कौन पकड़ेगा?"

शंकर वोला, "यह सव वातें वाद में।"

रोमियो ने शंकर से कहा, "इयाड हो या कुछ भी हो, हरामी के वच्चे, तुझे मैं देख लूँगा।"

"आह! दैट नाइस गाई!"

शंकर ने तीन गुंडे-दादा लोगों के कंधे में लगे तीरों को पकड़ कर हिलाया, वे चीख पड़े। शंकर वोला, "वढ़िया, वढ़िया काम, चोट्टि! तीनों

के दाहिने हाथ शायद अलग करने पड़ेंगे।"

ज़ख्मी लोगों और लाशों का चालान किया गया। सबने समझ लिया था कि युगल भी जल्दी ही लाश हो जायेगा। अब औरतें, लड़के-लड़कियाँ और बच्चे आ पहुँचे। काले-काले चेहरों की भीड़ बहुत घबराने वाली थी। चोट्टि की पत्नी आकर चोट्टि का हाथ पकड़कर खींच रही थी। धीमी आवाज़ में बोली, "वे लोग चले गये हैं।" चोट्टि ने सिर हिलाया। चोट्टि ने ज़िद न छोड़ी। जले धान, उलट-पलट कचहरी, घायलों की चीख़-पुकार, दुखा की पत्नी का करुण रुदन—सारा कुछ चारों ओर लिये तीरथनाथ ने हफ़्ता बाँट दिया। उसके बाद थाने में इज़हार देने गया। चोट्टि भी साथ गया। बोला, "मैं बेगार नहीं हूँ, खेत-मजूर भी नहीं हूँ, लेकिन दुखा को जिस तरह गोली मारी है, उससे दिमाग़ पर खून चढ़ गया है।"

घायल लोग अस्पताल गये, और चोट्टि, छगन और तीरथनाथ थाने गये। शकर के रहने से रिपोर्ट में कुछ बारीकी न हो सकी। युवलीग के सेक्रेटरी और पार्टी के सेक्रेटरी से शकर बोला, "ज़िले का सारा कुछ तो आपके अधिकार में है। इस केस में दखल मत दीजियेगा।"

युवलीग के सेक्रेटरी ने जब सुना तो समझा, ज़िन्दगी की सारी चीज़ों की तरह अमरूद-शरीफ़ों का मौसम, फ़िल्म 'सपनों का सौदागर', लड़कियों के बालों में पीली टेप बाँधने का फ़ैशन, जीवन में आयी सारी चीज़ों की तरह, शकर और खुराना का आंचलिक निवास भी क्षणस्थायी है, तब उसने उन तीन गुंडों से कहा, "फ़िकर मत करो, भैया। यह लोग चले जायें तो चोट्टि गाँव जला देंगे। लेकिन तुम्हारा भाग्य अच्छा है। चोट्टि मुंडा अगर चाहता तो तुम्हारा गला छेद डालता।"

रोमियो गरज कर बोला, "दाहिना हाथ अलग कर दिया जायेगा। तीर के लोहे में ज़ंग लगी थी, उससे टिटनेस हो सकता है।"

"चोट्टि के हाथ में तीर! सीधी बात है?"

"भैया, बन्दूक की गोली से भी ज़ोर से और एक के बाद दूसरा तीर चलाये जा रहा था। देखकर भी आँखों को विश्वास नहीं होता था।"

"तीरथनाथ को मैं न छोड़ूँगा। सर पर 'इयाड' लेकर उसका तुम लोगों को बुलाना ठीक नहीं था।"

"वह खचड़ा है।"

चोट्टि-आपरेशन के बहुत ही ज़हरीले परिणाम हुए। दिलदार धनुष्टंकार से मर गया। रोमियो का दाहिना हाथ कंधे से अलग कर देना पड़ा। पहलवान का दाहिना हाथ कोहनी से अलग करना पड़ा। दिलदार और तीरों की चोट से मरे युवकों के परिवारों को एक-एक लाख

रुपये और एक-एक पेट्रोल पंप मिले। रोमियो इन दो व्यक्तियों को मरणोत्तर 'परमवीर चक्र' भी दिलाना चाहता था, पर वह न मिला।

किसी को जेल-हवालात नहीं हुई। अपमानित तीरथनाथ ने गुमाश्ते को ठीक ढंग से मजूरी देकर धान काटने को कहा, और परिवार के साथ लाला तीर्थयात्रा को चला गया। युगल और दुखा के परिवार को अमलेश ने पचास-पचास रुपये सहायता देकर 'महानुभाव' नाम पाया। इसके सिवा अकेले, इस जगह से अपरिचित शंकर चोट्टि के घर आये और बोले, "उस हंगामे के दिन बाहर का कौन-कौन था, चोट्टि ?"

"बाहर का ? कौन था ? कोई नहीं था।"

"तुम्हारे तीरों में भी जहर रहता है ?"

"रह सकता है।"

"खुद जो करना हो करो चोट्टि, बाहर के लोगों की बात में मत आना। वे तुम्हारे दोस्त बनकर आते हैं। वह धोखा है।"

"यह तो बताओ कि वह कैसे मानूं ? मेरे पास बाहर के लोगों की तुम पूछते हो। और तुमने तो मदत दी।"

"बस इतना कह कर जा रहा हूँ।"

"कहाँ आओगे ?"

"ढाइ की तरफ़।"

"अच्छा।"

"हमारे न रहने से वे लोग अत्याचार कर सकते हैं। लेकिन बताओ तो, उससे क्या ! तुम भी लड़ सकते हो, हाकिम और थाने की मदद मिलेगी।"

चोट्टि जरा मुसकराया। बोला, "मजाक कर गये, महाराज !"

"नहीं-नहीं।"

शंकर और खुराना ढाइ चले गये और इस तरह युवलीग को हरी रोशनी दिखा गये। अब चोट्टि ग्राम खुला मैदान था।

सत्रह

इन बातों को सुनकर स्वरूप मामूली-सा हँसा और बोला, "डेरा अच्छा था, छोड़ना पड़ा। अब भी कुरमी पहाड़ के उस ओर तो रहना हो ही सकता है।"

"चल सकोगे ?"

"पैदल ही तो आता-जाता हूँ।"

"तो ध्यान से सुनो। चोट्टि नदी दक्खिन से बहते-बहते कुरमी घूमकर कोठी के जंगल में घुस गयी है। वह कोठी कब किसकी थी, पता नहीं। जंगल दो मील तक बहुत घना है। ज़मीन बराबर है, नदी अलग हो गयी है। हाथियों का झुंड उस रास्ते से होकर पलामू के रिज़र्व फॉरेस्ट जाते हैं। इसी से कोई घुसता नहीं।"

"पहाड़ नहीं है?"

"न। पहाड़ पर रहेंगे। मचान बाँधकर। उस जंगल में बहुधा कोई आता-जाता नहीं, क्योंकि जंगल नदी के बीच है, पानी में ज़मीन दलदली है, साँप भी बहुत है।"

"इनको वहीं ले जाऊँगा।"

"तुम कहाँ जाओगे?"

"दूसरे अड्डे पर। होशियार रहने की ज़रूरत है। हम लोगों की हालत ठीक नहीं है। यह बात तो सच ही है कि हमारे संगठन की तरह कई संगठनों को समाप्त करने के लिए अंचल में 'इयाड' घुस आया है।"

"वहीं चले जाओ।"

"ज़रूरत होने पर बताऊँगा कैसे?"

"अगर मौका मिलेगा तो आदमी भेज दूँगा। नहीं तो नदी जहाँ जंगल में घुसी है वहाँ पच्छिम में एक बहुत ऊँचा आसमान-फोड़ सिमु पेड़ है। उसके नीचे एक बड़ा-सा पत्थर है। पत्थर पर पेड़ की डाली तोड़कर लड़के रख जायेंगे। रोज़ नज़र क्यों रखोगे? मेरा घर तो बिशा को मालूम है। चला आयेगा।"

"वही अच्छा है।"

"और तुम सब भागते क्यों हो?

"सबके नाम पर बहुत-से मामले जमा कर लिये गये हैं।"

"देरी मत करो। हवा अच्छी नहीं है।"

हवा अच्छी नहीं है। रहती ही नहीं। स्वरूप आदि के हट जाने के बाद ही मानो हवा से हाल-चाल मालूम कर परित्यक्त जंगल में पुलिस की सेना घुस पड़ी। जंगल का कोना-कोना खोज डाला और निकल गये।

रिपोर्ट चोट्टि-कोमांडि फॉरेस्ट के गिर्द उस दिन भी कोई भूमिगत दल था। एक गुफा में जली बीड़ी, दियासलाई के खाली डिब्बे, मोमबत्ती के टुकड़े और क़ाग़ज़ के ठोंगे मिले। स्मरणीय है कि चोट्टि गाँव की घटना में कम-से-कम पैंतीस आदिवासियों ने तीर चलाये थे। वे क्या सब उन

गाँव के रहने वाले थे ? युवलीग के मरे जवानों के शरीरों में था काफ़ी तेज़ कुचला ज़हर। ध्यातव्य है कि पतले और छोटे तीरों के फनों में कुचला ज़हर था। 'आदिवासी जंगल भारती', 'वीरसा दल', 'आदिवासी सेवक समिति' में इस तरह के तीर देखे गये हैं—इन सारी संस्थाओं के हमलों—कारंवाइयों में। द्वितीय और तृतीय दलों के अस्तित्व तो क़रीव-क़रीव नष्ट हो चुके हैं। पहले दल का ही संगठन शक्तिशाली है। आदि-वासियों की सहायता से दल मज़वूत है और स्वरूपप्रसाद अभी भी सक्रिय है...।

शीघ्र ही 1976 आया। जुलाई। वरसात देर से हुई, फिर भी हुई तो। पानी की टेढ़ी-मेढ़ी धाराएँ कलकल कर चोट्टि नदी की खुली छाती पर कूद पड़ीं। हरी-हरी दूव से धरती लहलहा उठी। जंगलों और गाँवों के पेड़ वर्षा में स्नान कर जीवित हो उठे और टाहाड़ के शिवमन्दिर के पुजारी का हाथी स्टेशन के पास के तालाव में घुस गया और उसमें से निकलना नहीं चाहता था। स्टेशन पर एक पेड़ गिर गया। तीरथनाथ गाँव को लौट आया। इस समय वर्षा से सींची हुई सरस धरती में वीज छिड़कने की वात थी। तीरथनाथ कुछ वोरे सरकारी वीज लेकर ट्रेन से उतरा। इन्हीं दिनों एक दिन व्रिक-फ़ील्ड होकर ऊधम शार्ट कट से जा रहा था कि उसे धारीदार साँप ने काट लिया। मोटे मोज़े पर से साँप को दाँत गड़ाने का मौक़ा न मिला, लेकिन ऊधम डर के मारे लुढ़क गया। ख़वर सुनकर चोट्टि भी भागा और साथ में तोहरी के अस्पताल गया। वह ऊधम से कहता जा रहा था, "महाराज, वच जाओगे। डर नहीं है, महाराज ! ठीक से काटा नहीं है, महाराज !" डॉक्टर ने भी डॉक्टरी भाषा में चोट्टि की वात ही कही। इसके वाद वे ऊधम को लेकर घर लौटे। हरवंस घवराकर वोला, "स्वरूपप्रसाद के साथ मैं ही तुमको मिला दूंगा, किसी से वताना मत।"

"ना, महाराज !"

"उसकी तलाश वहुत चल रही है।"

"ऐसी वात है ?"

घर लौटने पर चोट्टि का छोटा लड़का, सोमचर, वोला, "विसाइ आकर वैठा है, आवा ! तुमसे कुछ कहना है।"

विसाई वोला, "पता, है स्वरूप कहाँ गया है ?"

"मुझे कैसे पता होगा ?"

"जंगल में जितना पानी था, उतने साँप थे। स्वरूप दवा ले आया।

मैं तीन दिन का भूखा हूँ, सत्तू-मिर्चें लाने को कहकर कहाँ गया ? कुछ सुन रहे हो ? मेरे दल का कोई कहीं पकड़ा गया है, कुछ सुना है ?"

"तुम लोगों के ठिकाने कहाँ-कहाँ हैं ?"

"नरसिंगगढ़ और ढाइ।"

"इसी में इसी पिट रही है कि अनजान आदमी को कोई सत्तू-मिर्चा नहीं बेचेगा।" चोट्टि ने सोचा और बोला, "अभी अँधेरा है। जरा ठहरो।" उसने अपना जमा किया हुआ देखा और बोला, "वहाँ तुम कितने लोग हो ?"

"तीन आदमी।"

"सब मुंडा हैं।"

"एक दिकू है। स्वरूप का भाई।"

"ठहरो।"

. . . .

चले। उनको लौटते-लौटते रात बीत गयी।

उसके बाद चोट्टि गाँव के मुंडा और अछूतों की तोहरी में राजबस के लकड़ी गोदाम में लगे बँगले में पुकार हुई जहाँ चोट्टि के जीवन का अधिकांश भाग किस्से-कहानी में, मजाक में, या चाय या कॉफी पीने में बीता था। अमलेश और शकर के साथ। स्वरूप के लेटे शव के सिरहाने एक अजनबी शकर बैठा था और बहुत ही अजनबी आवाज में वह बोला, "एक-एक कर अच्छी तरह देखो, पहचानते हो या नहीं ?"

स्वरूप के हाथों और पैरों में कोई नाखून न था, नंगे शरीर पर काले-काले छेद थे, पुरुषांग मांस का कीमा बना था। चोट्टि ही आगे बढ़ा। साफ़ आवाज में बोला, "न, कभी नहीं देखा, नहीं पहचानता हूँ।"

सबने यही कहा। रक्तहीन स्वरूप के शरीर से मक्खियाँ उड़ती थीं और फिर बैठती थीं।

उन लोगों ने वापस आकर देखा कि गाँव में पुलिस चौकी है। चोट्टि नदी के किनारे हरा पोलीथीन का तंबू लगा है। चोट्टि धीमी आवाज में बोला, "अपने-अपने घर चले जाओ। हालत बहुत खराब है। बहुत ही खराब। उषा, अँधेरा होने पर मेरे घर आना।"

उषा जब आया तो वह बोला, "उस बार तू और मेरा सोमचर आगे रहकर बार-बार तीर चला रहे थे। झट से घर जाकर कह आ, और

सोमचर को लेकर जंगल में भाग जा। उन लोगों को बता देना, यह मेरा कहना है, स्वरूप मर गया। सबके मरने में फायदा नहीं है। वे लोग कुरमी पहाड़ के जंगलों में चले जायें। वहाँ कोई न जायेगा। तुम भी चले जाओ। उनके साथ छिपे रहो। कुरमी का रतन मुंडा तुम लोगों को नमक और सत्तू दे जायेगा। जो लोग हैं उनको भी देगा।"

"चले जायेंगे।"

"तेरा बाप मरा, तू सामने था, सोमचर भी था।"

वे चले गये। यह जाना कितना मौक़े पर हुआ, यह दूसरे दिन समझमें आया। जब पुलिस ने गाँव के हर घर में उपा और सोमचर को तलाशा। "वे लोग धनबाद चले गये हैं।" सुनकर पुलिस ने पूछा, "किसके पास गये हैं?"

चोट्टि असंतुष्ट होकर बोला, "यह क्या मुझे मालूम है? इन दोनों की फड़फड़ाहट सबसे जादा है। मजूरी मिली तो इन्हें पीली बनियान ख़रीदनी ही चाहिए। ये बाबू साहब पैरों में रबड़ की चप्पलें भी पहनेंगे। धनबाद जाकर कोयला खोदेंगे, जादा रुपये लेंगे, छिनेमा देखेंगे। देखो महाराज! हाट में किसी ठेकेदार ने उन्हें लालच दिया था। इन ठेकेदार को पकड़ सकते हो? इन लोगों के भड़काने से मुंडा लड़के भाग जाते हैं।"

"ख़बर मिलने मे ख़बर देना।"

"जरूर देंगे। किन्तु क्यों, महाराज?"

"खबर देना।"

पुलिस के चले जाने पर चोट्टि ने पत्नी से कहा, "लड़कों को जंगल क्यों भेज रहे हो, कहकर रो रही थी न? अब समझी?"

"पकड़ने पर मार डालते।"

"जरूर। स्वरूप दिकू लड़का था, पढ़ा-लिखा लड़का, सुना है परेशनाथ में उन लोगों का घर है। पिता वकील है। उसे भी मार डाला।"

इसके बाद ही तीरथनाथ की तलबी आयी: "धान बोने का वक्त है। चले आओ, जो बेगार है वह आये।"

कोई नहीं गया। छगन ने तीरथ के गुमाश्ते से कहा, "बेगारी ग़ैरकानूनी है, इससे उस बार नहीं दी। इतना जुलुम हुआ। इस बार क्यों दें?"

"अकल होती तो देते।"

शंकर को नयी भूमिका में देखकर सरकार और प्रशासन के बारे में उसका पुराना अविश्वास दुगुना बनकर लौट आया और वह बोला, "इस बार अत्याचार और भी ज़बरदस्त होगा।"

चोट्टि बहुत कुछ समझता था, फिर भी सब-कुछ न समझता था। शंकर मूखी कठोर आवाज में बोला, "पहली स्टेज में कोई रुकावट नहीं होगी। मैं देखना चाहता हूँ कि स्वरूप के दल के लोग इनकी मदद करने आते हैं या नहीं? सिर्फ स्वरूप का पकड़ना ही काफी नहीं है। मैं उसके दल को पकड़ना चाहता हूँ। राजनीति में उतरकर जो हिंसा का सहारा लेगा, जिस दल का, जिस विश्वास का भी आदमी हो, उसे पकड़ना होगा। मुझे मालूम है कि स्वरूप के दल के साथ उनका कम-से-कम एक बार साथ हुआ था। इस बार भी होना स्वाभाविक है। इसी से, पहले स्टेज में युवलीग ऐक्शन करे। इस ऐक्शन के मौके पर उनकी मदद के लिए स्वरूप के दल का अगर कोई न आये, तो उन्हें देखकर युवलीग को हटा दूँगा। इससे उनके मन में विश्वास होगा, वे असावधान हो जायेंगे। बाद के ऐक्शन में स्वरूप के आदमी आयेंगे ही।"

"युवलीग को बताने की जरूरत है?"

"बिलकुल नहीं। लफंगों के साथ मेरा कोई मेल-जोल नहीं है। वे मेरे लिए तभी तक काम के हैं, जब तक स्वरूप के दलबल को पकड़ने में लगें। वे अशिक्षित, असभ्य और बदमाश हैं।"

छगन ने तीरथ के बुलाने का कोई जवाब न दिया। उसके बाद हथकटे रोमियो और पहलवान पचास गुंडों को लेकर पार्टी का झंडा उड़ाते हुए चोट्टि गाँव आये। पुलिस के अफसर रूखी आवाज में बोले, "यह क्या? आप लोग क्या चाहते हैं?"

पोलीथीन के तंबू से सिर निकालकर शंकर बोला, "यह क्या हो रहा है? पिकनिक है क्या? बंदूक क्यों नहीं लिये हुए हैं?"

रोमियो गुस्से के मारे अंधा हो रहा था, बोला, "आज एक पवित्र काम का दिन है। जितने गुलामों के बच्चे हैं, सबकी गर्मी निकाल दूँगा, और इस 'इयाड' को मारकर पिछला बदला लूँगा।"

हा-रा-रा-रा, भारत माता की जय, विजया मोदी अमर रहें, युवलीग जिन्दाबाद, इत्यादि स्लोगन लगाते-लगाते वे तीरथ के गुमाश्ते को खींचकर ले आये। बोले, "जरा दिखा दो कौन-कौन हरामी बेगार न देगा?" तीरथ भागा-भागा आया। बोला, "भैया, अब इस बार मत मारो। पहले बात करो। बात से काम आसान होता है। बाप रे! मुझे तो डर लग रहा है। उस बार तो भाग गया था। कब तक भागता रहूँगा?"

रोमियो बहुत उल्लास के साथ बोला, "भाग जा हरामी के बच्चे, डरपोक आदमी, तेरा कलेजा तो कबूतर का है।"

छगन का घर दिखाकर गुमाश्ता भाग गया और रोमियो वन्द दरवाज़े पर लाठी पीटने लगा। उसने भागते हुए छगन की पीठ पर गोली मारी और साथ ही छगन का मकान जलने लगा। औरतें खिड़कियाँ तोड़कर निकलीं। फिर गोलियाँ चलीं, जिसके वाद धुएँ के पीछे से तीर आने लगे। पैर में तीर लगने से तीरथ चिल्लाकर गिर पड़ा। पल भर में दृश्य मनोरंजक हो गया। धुएँ और आग में पड़े युवलीग वाले वेतहाशा गोलियाँ चला रहे थे और धुएँ को पार कर दिखायी दिया कि छगन के घर के पीछे ऊँची ज़मीन पर कई विना वैल के गाड़ियाँ थीं, उन पर भूसा लदा था। उनके पीछे कुल पंद्रह मुंडा थे, जिनके हाथों में तीर थे। शंकर ने उन्हें दूरवीन से देखा और वोला, "नहीं, वे लोग नहीं हैं।" तभी वर्षा होने लगी। युवलीग वाले थोड़ा वौखला गये। लेकिन तीर आते रहे। युवलीग का एक व्यक्ति चीख़ उठा, एक और। वे फिर गोली चलाने लगे। माइक पर शंकर की आवाज़ सुनायी पड़ी, "दोनों ओर के लोग रुक जाओ। पुलिस आ रही है।"

रोमियो ने अव एक युवलीग वाले की पीठ पर लाठी मारी। "उस 'इयाड' को मारो गोली !"

शंकर आ गया और रोमियो का वायाँ का हाथ पीछे की ओर मरोड़ दिया। युवलीग वाले के सिर पर रिवाल्वर का मुट्ठा मारा। पुलिस फ़ौरन युवलीग को निरस्त्र कर तेज़ वरसात में उन्हें धकियाती हुई कैंप ले गयी। शंकर ने युवलीग को मन-ही-मन गालियाँ दीं और पुलिस से कहा, "मुर्दों और ज़ख़्मी लोगों को उठाओ।"

छगन और युवलीग का एक आदमी ज़िन्दा तो थे, पर वहुत अधिक घायल थे। एक युवलीग वाले के कलेजे में तीर था, वह मरा हुआ था। छगन की भतीजी पुतली और रामकुमारी धोविन मर चुकी थीं। चोट्टि के तीर-कमान भी छीन लिये गये। चोट्टि ने शंकर की किसी वात का जवाव नहीं दिया और छगन को वड़े जोश के साथ वुलाता रहा। तीरथनाथ दूर पर सहारा लिये रोता हुआ वैठा था। वह वोला, "वाप ने कभी नहीं मारा। तुम लोगों ने मेरा पैर तोड़ दिया। ऐसी वेईमानी !"

चोट्टि दूसरी ओर देखकर वोला, "कई वरस हो रहे हैं, लाला टरेन से कट जाता, मैंने वचा लिया। अव ? जव उसने मेरे वेटे को जेहल भेजा था तव। आज इन अनवर आदि से हमारे लड़के-लड़कियों को मरवा रहा है और मेरे नाती को कहता है वेईमान !"

"तुम्हें नहीं कहा।"

"मैं मारता तो पैर में न मारता।"

दोनों औरतों की लाशों के आगे खड़े होकर शंकर युवलीग की नीचना
पर बार-बार सिर हिला रहा था। देखकर लगता था कि वह शोक
में विह्वल है। चोट्टि ने उसकी ओर देखा तक नहीं। शंकर खुश हुआ।
इसी तरह की निष्कलंक और शुद्ध, क्रुद्ध प्रतिक्रिया की ही उसे कामना
थी। चोट्टि, तुम चोट्टि ही रहो, उससे मैं स्वरूप के दल को पकड़ सकूंगा।

घायल और मुर्दे ट्रेन से एक ओर भेजे गये, दूसरे लोग दूसरी
ओर। शंकर ने बाक़ायदा एक केस खड़ा किया और युवलीग ही भड़काने
वाली है, ऐसा सिद्ध हुआ। किसी तरह केस अदालत नहीं पहुँचा और
घायल छगन और युवलीग वाले एक ही सदर में, एक ही अस्पताल में
बहुत आहिस्ता-आहिस्ता ठीक होने लगे। छगन बच जायेगा, यह जानकर
चोट्टि बोला, "अब जेहल दें, फांसी दें, दुख नहीं है।" किसी तरह चोट्टि
आदि सब डांट-डपट सुनकर लौट आये।

फिर पुलिस ने जंगल छाना, तलाश करती फिरी।

अब चोट्टि ने जैसे सब समझ लिया। चोट्टि में पुलिस चौकी रह ही
गयी। बरसात में ईंटों का भट्टा पानी में डूब गया। वहीं किन्हीं लोगों ने
तीरथ के गुमाश्ते को शाम के अंधेरे में कम्बल में लपेटकर और गिराकर
पीटते-पीटते बेदम कर दिया। तीरथ ने अस्पताल से लौटकर गुमाश्ते को
अस्पताल भेज दिया। गुमाश्ता किसी का नाम न बता सका। छगन बोला,
"न मैं जाऊंगा, न किसी को जाने दूंगा।"

इस घोर वर्षा में चोट्टि ही कुरमी गया। उसने रतन मुंडा से कहा,
"उस दिन गोरमेन अपनी आंखों में शीशा लगाकर हमें देख रहा था।
गोलियां चलीं, लाशें गिरीं, उस हरामी ने कांच नहीं हटाये। अब लगता
है, विसाई आदि को खोज रहा है। तू पता लगा आ, नरसिंगगढ़ टाड में
उत्तर में उनका बाद में कहां अड्डा है? मेरे ऊपर वह नजर रखे है। तुम
लोगों में से कोई उनको हट जाने के लिए कह दे। हमें छोड़ क्यों दिया है?
जब ज़रा-ज़रा-सी बात पर चमड़ी उधेड़ देते हैं, फिर मैंने तो एक लड़के
को मार दिया है।"

"सुना है, गोरमेन बहुत मदद दे रही है।"

"उजबक! बेवकूफ! गधे! गोरमेन तो बेकसूर मुंडा-दुसाध को मार
रही है। वह मदद क्यों देगी? लगता है सांप काट नहीं रहा है, चूम रहा
है। वह मुझे जेहल या फांसी देते तो विश्वास करता।"

"तुम जैसा कहो। हम तुम्हें जानते हैं।"

"फिर यह बात न सुनूं।"

"छगन बच गया।"

"अब रुपयों का खेल नहीं रहा। छगन का घर हम बना रहे हैं। चड्ढा और अनवर कुछ रुपये दे रहे हैं। चड्ढा से टूटी ईंटें माँगकर ले रहा हूँ। अब छगन पक्के घर में जायेगा।"

इस घटना के तीन महीने बाद, पवित्र देवी-पक्ष में फिर बहुत बड़ा पुलिस कैम्प लगा। शंकर फिर रंगमंच पर उतरा! वह मन-ही-मन थोड़ा घबराया हुआ था। उसने अपने को ख़ुद ही सेंसर किया था। 'इयाड' का प्रशिक्षण था। अपनी ग़लती या कमज़ोरी दिखायी देते ही 'इयाड' अफ़सर अपने को कर्म-क्षेत्र से हटा लेगा। 'इयाड' के दूसरे विश्लेषण करने वाले की राय में इन कारणों से शंकर की व्यर्थता प्रमाणित होती थी---(क) चोट्टि ग्राम में पहली बार कारवाई के वक़्त उसको समझना चाहिए था कि स्वरूप के आदमी ऐक्शन में थे। (ख) चोट्टि-कोमांडि जंगल के घेरे में पुलिस को पहले ही घुसना चाहिए था। (ग) स्वरूप को मार डालना बड़ी भारी मूर्खता थी। जिन्दा स्वरूप को पहले टॉर्चर देना, उसके बाद उसकी सुश्रूषा आदि करते रहना ठीक था। जिन्दा स्वरूप को मोहरे की तरह रखने से उसके दल-बल को पकड़ा जा सकता था।

शंकर को एक चांस दिया गया था। निश्चय ही वह अकसर उसे मिलता। इस बार एक ऐक्शन होगा और स्वरूप का दल आयेगा। अगर न आये, तो शंकर, ऐक्शन का असर मिट जाने पर, चोट्टि मुंडा और उसके गाँव को रोमियो आदि के हाथों छोड़कर खिसक आयेगा।

'इयाड' के अफ़सर ने युवलीग के सेक्रेटरी को बता रखा था कि रोमियो किसी भी कारण से शंकर के काम में अड़चन न डाले। 'इयाड' यों ही पलामू के जंगलों में नहीं क़ायम किया गया है।

रोमियो ने यह धमकी सुनी और ज्यों उसका मन मानो उलझा जंगल हो, वह अपने विश्वस्त साथी से बोला, "वह अगर 'इयाड' है तो मैं भी युवलीग हूँ। भारत में युवलीग के क़दमों को कौन रोक सकता है? उसने दो बार मेरा अपमान किया है। अब मैं उसका बदला लूँगा। इस जंगल में, एक बूढ़बक सदस्य का चमचा बन कर मैंने दाहिना हाथ तो खो दिया। जिसकी वजह से खोया, वह क्या जिन्दा रहेगा?"

"कौन? चोट्टि?"

"चोट्टि तो दूसरे नंबर का दुश्मन है। इनकी हमें तीर मारने की हिम्मत कहाँ से हुई? उसी शंकर के कारण। शंकर उसे मदद देने गया। शंकर और चोट्टि! तीरथ एक ही डरपोक है। साला न दादा लोगों को रखता है, न बंदूक। मैं इस बार उन दोनों को ख़तम कर दूँगा। उसके बाद चला जाऊँगा धनबाद। यहाँ क्या रखा है? रकम पीटो, लेबर को मारो,

यूनियन वर्कर्स को मारो, कोई किसी बात को पूछने वाला नहीं है।"

"गुरु ! जो कहो सो करूँगा। लेकिन कुछ न हुआ तो ?"

"अरे, अभी भी इस अंचल में जिन्दा शंकर से उसकी लाश में ज्यादा ताकत है।'

"ठीक है, गुरु !"

शंकर यह सब जरा भी न जान सका। इस बार 'इयाड' के अफ़सर भी आये। शंकर समझा कि उस पर भी अब नज़र रखी जा रही है। 'इयाड' ने शायद यह सोचा है कि शोषित आदिवासियों के संपर्क में रहते-रहते शंकर में डिमॉरलिजेशन आ गया है। आहा ! यह बात सच नहीं है, इसे प्रमाणित करने का मौका शंकर को मिल गया है।

और पुलिस की छावनी देखते ही चोट्टि ने अपनी ज़मीन से औरतों और बुड्ढों और बच्चों को नदी के उस पार अपनी ज़मीन पर भेज दिया। कहा, "और जो हो, गोलियों से न मरने दूँगा।"

उनके चले जाने के बाद ठंडी साँस लेकर चोट्टि बोला, "इस बार सब-कुछ ज्यादा खतरनाक होगा। अब मुझे जिन्दा नहीं छोड़ेंगे।"

उसने छगन को हटा दिया। छगन अभी गाँव में आया था। उसने सिर हिला कर कहा, "इस बार गोरमेन और पुलिस के सामने लाशें गिरेंगी। हम सबके घर जायेंगे।"

सामान्य घटना ऐसी ही लग रही थी और रेल के कुली चद्दा के ईंटों के भट्टे पर चले गये।

रोमियो और उसके साथी आये। इस बार व सौ से ज्यादा थे। शंकर प्रतीक्षा में परेशान, कान खड़े किये था। स्वरूप के आदिवासी क्यों नहीं आ रहे हैं ? वे पकड़े क्यों नहीं जा रहे हैं ? मरते नहीं ? पकड़े तो वे जायेंगे ही । उनको किसी तरह की हिंसा का अधिकार नहीं है। सारा अधिकार सरकार का है।

चोट्टि गाँव में सन्नाटा था। संकट का सन्नाटा।

शंकर ने समझा कि रोमियो आदि बिखर गये हैं, गाँव की ओर जा रहे हैं। वह तंबू से निकला, आँखों पर दूरबीन लगायी। आ ! चोट्टि आदि जरूर उस बैलगाड़ी के पीछे हैं, अभी बंदूकें चलेंगी, तीर आयेंगे। प्रत्याशा में उसके चेहरे पर मुसकराहट आयी। भयानक हिंसा की आपात-स्थिति में ही 'इयाड' अफसर पूरी तरह सहज महसूस करता है।

तभी विस्मयजनक बात सुनायी पड़ी, "अरे ? हरामी के बच्चे !" — और कहने के विस्मयजनक क्षण में पाशविक उल्लास में जवाब मिला, "साले, आज तुझे कौन बचायेगा ?"—क्या हो रहा है, यह समझने के पहले

ही शंकर के पास एक युवलीग वाला दौड़ कर आया और उसने छह नली रिवाल्वर की सारी गोलियाँ शंकर के उस कलेजे में उतार दीं जिसमें स्वरूप के दल को एकदम ख़त्म करने की कामना बसी थी। इसके साथ ही सीटी बजी, तेज़ सीटी। युवलीग वाले ने रोमियो को बताने के लिए सिर घुमाया और 'इयाड' अफ़सर की गोली से गिर गया। पुलिस, चारों ओर से स्पेशल पुलिस निकल पड़ी और बड़ी अजीब घटना हुई। पुलिस अब युवलीग के लड़कों का ही पीछा कर रही थी। ये मारने और पीछा करने और डराने के अभ्यस्त थे। मार खाने और पीछा किये जाने के नहीं। इसलिए वे 'इयाड' की हत्या के महापाप के कारण पुलिस द्वारा पीछा करा सकते थे, यह जान कर चौंधिया गये। इसके बाद वे ही रस्सी से बँधकर वैगन में बैठे। बन्द वैगन में पुलिस उन पर टूट पड़ी। दारोग़ा ने काँपते-काँपते रोमियो और पहलवान को डंडा मारने में लगे 'इयाड' अफ़सर से कहा, "सर, यह युवलीग वाले हैं।"

"मैं 'इयाड' वाला हूँ।"

सबको वैगन में चढ़ाकर इंजन के साथ उस अकेले वैगन को जोड़कर उसे छोड़ दिया गया। चोट्टि-लाइन पर से सुरक्षित दूरी पर खड़े खुशी से उछले पड़ रहे थे, तोहरी से जीप के बाद जीप में 'इयाड' के हेडक्वार्टर को, खुराना को बताया गया, 'पैक ऑफ़'—डेरा-डंडा उठाओ। इसके बाद 'इयाड' से नियम से जान बचाकर उनकी क्रमिक धुलाई चलती रही। धारावाही रूप से। परिणामस्वरूप युवलीग, कांग्रेस, पुलिस, 'इयाड'—चारों में जोरों का तनाव चला। पहले यह तीन दल तीन महीने तक लड़ते रहे, चुपचाप लड़ते रहे। कोई फ़ायदा नहीं हुआ। खुराना ने दिल्ली में श्रीमती को बताया कि पलामू पुनर्निर्वाचन में उनके दल को ही वोट देगा। पहले बताये चुपचाप युद्ध में 'इयाड' अविचल रहा। 'इयाड' से जवाब-देही का अधिकार राज्य के रूप में किसी को नहीं था। 1977 की जनवरी में आपात-स्थिति का अन्त हुआ। कुरमी के जंगल से निकल कर स्वरूप के दल के आदिवासियों में से एक-एक, दो-दो कर मुंडा-उराँव-प्रधान गाँवों में फैल गये। कालों में काले मिल गये। उसके बाद आया चुनाव। पाँसा पलट गया। उपा और सोमचर अब गाँव लौटे।

चोट्टि बोला, "डर और त्रास के दिन क्या बीत गये? कौन जाने?"

"कट रहे हैं, बाबा!"

"ना हरमू, अब मुझे विश्वास नहीं रहा।"

"कांग्रेसी लड़के तो गये।"

"ये नये लोग क्या करते हैं, सो देखो।"

हरवंस छिपकर चोट्टि को बता गया कि रोमियो और पहलवान जेल मे बद है।

"उससे क्या होगा ?"

"मुकदमा नहीं हो रहा है। जेल मे सड़ें।"

"छोड़ देंगे।"

"ना, ना। अब दूसरी सरकार है।"

"देखते चलें।"

"देखें।"

1978 के बीचोंबीच रोमियो और पहलवान जेल से निकले। टूटे शरीर से धनबाद मे सुविधा न होगी—यह जानकर वे जल्दी जनता दल के चारों ओर चक्कर काटते रहे। 'इयाड' के गुस्से से उन्हे युवलीग न बचा सकी। इसलिए उन्होंने युवलीग को 'चूतिया संगठन' कहा। कहा, "राजनीति बहुत खराब चीज है" और इफरात मे रुपये देकर राजवंस चड्ढा की ठेकेदारी बडी होकर चोट्टि मे कायम हुई। यह खबर पाकर चोट्टि क्षीण हँसी हँसा। बोला, "उपा, सोमचर, रहमू, तुम लोग समझो। इस चड्ढा ने यह काम किया। हमको उनके हाथों मे छोड दिया। एक बार भी नही बताया। दिकू-दिकू एक-से होते हैं।"

"यही होता है।"

चोट्टि गाँव के आदिवासी और अछूतपाड़ा मे फिर पुराना डर भरने लगा।

अठारह

1977 मे इस अचल से जो चुने गये, उन्होंने निर्वाचन के बाद ही चोट्टि मे मीटिंग की। ट्रेन रुकी, सदस्य उतरे। स्टेशन स्टाफ़ ने कुर्सी, दरी, फूलमाला और चाय-मिठाई का प्रबन्ध किया। सदस्य झुके हुए बीमार-से आदमी थे। उन्होंने बताया कि इन्दिरा गाधी का पतन और जनता सरकार का आना कितनी बड़ी घटना है। उसके बाद बोले, "पिछले राज की तरह जनता सरकार का भी विश्वास अहिंसा की नीति मे है। चोट्टि ग्राम मे सचमुच पिछले शासन में कई दुखद घटनाएँ हुई थी। लेकिन हिंसा का जवाब हिंसा नहीं, अहिंसा है। जिस तरह जनता सरकार सारे भारत की उन्नति चाहती है, उसी तरह चोट्टि की उन्नति भी चाहती है। इन आदिवासी और परिगणित गरीब इलाकों की उन्नति होगी ही। लेकिन

उसके लिए इन्तज़ार करना पड़ेगा। अंचल की शिकायतों की प्रार्थना वे ध्यान से देखेंगे और जितना हो सकेगा, करेंगे। लेकिन किसी समस्या के हल होने में देर हो रही है, इसलिए लोग धीरज न खोयें, क़ानून को अपने हाथों में न लें। सरकार और क़ानून में जनता का धैर्यपूर्ण विश्वास अटल है, इसी से गणतांत्रिक भारत में प्रजातंत्र सफल होगा।"

ये सारी बातें कह कर, कलाई पर बंधी घड़ी देखकर वे बोले, "भाई, तुम ग़रीब हो इसलिए दुख मत करो। तुम्हारे प्रधानमंत्री के पास भी दो-चार ही कपड़े हैं।" बात समाप्त करते ही उन्होंने सामने से एक नंग-धड़ंग रेल-कुली के बच्चे को गोदी में उठा लिया और नक़ली दाँत निपोरकर हँसने लगे। एक आदमी ने अभागी शक्ल वाले छोकरे के साथ उनकी तसवीर खींची। उसके बाद ही वे बच्चे को उतार कर सहसा गरज उठे, "इन बच्चों के हाथों एक सुन्दर भारत बनेगा। आइए, उस काम में हम हाथ लगायें।" उनका गरजना सुनकर दरी पर बैठे दो-एक नंगे लड़के रो पड़े। सभा समाप्त हो गयी।

चोट्टि सिर हिलाता रहा, हिलाता ही रहा। बोला, "चल, छगन! हम-तुम बहुत दिनों के साथी हैं। मेरा हरमू जब चार बरस का बच्चा था, तेरी माँ से शादी करना चाहता था तो तेरी माँ बहुत हँसी थी। चल, हम नदी के किनारे चलें, बैठ कर दो घूँट मद पियें, कुछ दुख-सुख की बातें करें।"

वे चोट्टि नदी की रेत पर बैठे। छगन बोला, "सब-कुछ बदल गया, किन्तु नदी नहीं बदली।"

"कुछ नहीं बदला है। बस जुलुम बढ़ता जा रहा है।"

"इस मेम्बर को जानता है?"

"नहीं।"

"धनबाद में ठेकेदारों की बहुत धूम है। वहाँ इसका भाई ठेकेदार है। ठेकेदार का जुलुम पुलिस के जुलुम से जादा रहता है। इसके भाई ने बहुत रुपये दिये। उसी से अब यह मेम्बर बना है। इसका भाई ठेकेदार है।"

"समझा।"

"क्य ासमझा?"

"ठेकेदार होने की वजह से यहाँ से अब लेबर लेगा। ठेकेदार लोग कोयला खान के जमींदार होते हैं। और हम लोगों जैसे देहाती मुंडा-दुसाध उनके बेगार होते हैं। स्वरूप कोयला खान में काम करता था। उसे मालूम था।"

"वही होगा। हमारे भाग्य में अच्छा क्या होगा?"

"ठेकेदार लोग तो कांग्रेसी होते हैं। बातों में लगता है यह कांग्रेसी है। किन्तु नाम बदल गया है।"

"सो तो है ही।"

"अब फिकर दूर हुई। फिर पकड़-धकड़ और जुलुम होगा ?"

"कौन जाने !"

चोट्टि थोड़ा हँस कर बोला, "हमें अपने-आपही पता चल जायेगा, छगन ! जेठ-असाढ़ भी आ रहे हैं, और लाला जमीन भी परती नहीं रखेगा। तब पता चल जायेगा। लाला तब जुलुम करेगा।"

तीरथनाथ ने 1977 के जून में बताया, "काफ़ी हो गया है। उनकी जमीन और किसानों को लेकर बहुत हंगामा हो चुका है। वह भी नयी सरकार का स्वागत करता है—नये जमाने का। अब बात-चीत कर काम शुरू करने की जरूरत है। यह सब बातें उसके और उसके खेत-मजूरों के बीच होना ही उचित है। चोट्टि मुंडा ने लम्बे समय से तीरथ के खेतों में काम नहीं किया था। उसकी उम्र हो चुकी थी, वह सम्मानित व्यक्ति था। उसे इन सब बातों में नहीं लाना चाहिए।"

छगन बोला, "बाद में जवाब दूंगा।"

"अभी बताओ, छगन !"

"महाराज, कोई बेगार नहीं देगा। मजूरी दो, पनपियाई दो, तब काम हो सकता है।"

तीरथ आवाज में बहुत ही अनुनय भरकर बोला, "ऐसी बात मत कर, छगन ! ऐसा कहने से फिर जुलुम होगा, और मान या न मान, मैं जैन हूँ। बूढ़ा हो गया, यहीं पैदा हुआ। मैं कोई जुलुम नहीं चाहता।"

"फिर कांग्रेसी लड़कों को लायेंगे, महाराज ?"

"कांग्रेसी ? इस इलाके में कांग्रेसी कौन है ? सब जनता हैं।"

"सब ?"

"सभी।"

"महाराज, तुम जुलुम चाहते नहीं, हम नहीं चाहते। फिर भी जुलुम होता है। तुम जुलुम नहीं चाहते तो क्या चाहते हो ?"

"बेगारी तो उठी नहीं, बाप।"

"कानून नहीं बना है ?"

"कानून है, बेगारी भी है।"

"तो हम भी कहते हैं कि बेगार कोई न देगा।"

"तुम लोग अपना भला नहीं समझते। लड़के आयेंगे।"

"बात बढ़ाने से फायदा नहीं, महाराज !"

खबरें निश्चय ही प्रापर चैनल द्वारा घूमीं—क्योंकि सहसा एस० डी० ओ० चोट्टि आये, लगभग घंटे भर के लिए। गहरी सहानुभूति चेहरे पर लपेट कर छगन से बोले, "सब समझ गया। इमर्जेंसी के वक्त ग़लत घटनाओं में जो लोग मर गये हैं उनके परिवारों को कुछ हर्जाना देने के लिए हम कोशिश कर रहे हैं। अब इमर्जेंसी नहीं है, लेकिन क़ानून मानकर चलने की ज़रूरत तो है ही। क्या बात हुई तीरथनाथ बाबू के साथ, सो सुना ?"

"मेरी बात हुई है।"

"क्या बात ?"

"महाराज बेगार लेंगे, मजूरी नहीं देंगे। मैंने कहा, हम बेगार नहीं देंगे। उस पर वह बोला, कांग्रेसी लड़के अब जनता के लड़के हैं। वे आयेंगे। ज़ुलुम करेंगे।"

"ऐसी बात है," एस० डी० ओ० सोच में पड़ गये। बोले, "इमर्जेंसी नहीं है। फिर भी इस तरह की बातें !"

"महाराज, क्या बताया, क्या नहीं है ?"

"इमर्जेंसी।"

"वह क्या है ?"

"वह बहुत बुरा समय बीता है। इमर्जेंसी खतम होते ही नये चुनाव हुए। तुम सबने वोट दिये। सो देखो, चोट्टि को लेकर तो बहुत हुआ। बेगार अब ग़ैरक़ानूनी है, यह जिस तरह सच है, उसी तरह यह भी सच है कि जितना संभव हो बातचीत से समझौता कर लेना चाहिए।"

'महाराज, बुरा न मानना। हमारे गोली लगी थी, नहीं सोचा था कि बच जाऊँगा। और तुम भी लाला की बात मान लेने को कह रहे हो ?"

"यह तो नहीं कहा।"

"लाला हमारी कोई बात नहीं सुनेगा। हम उसकी सारी बातें सुनें और मानें, तो ऐसा समय बुरा क्यों नहीं है, बताइये तो ?"

एस० डी० ओ० ने मन-ही-मन नोट किया कि छगन की बातों का तरीक़ा बाग़ियों का-सा है और वे बोले, "खुद कुछ मत करना। ज़रूरत होने पर खबर देना। और हाँ, स्वरूपप्रसाद के आदिवासी 'मंगल भारती' के लोग तमाम खून-डकैतियों के मामले में फँसे हैं और वे फ़रार हैं। उनका पता मिलते ही पुलिस को बताना, इनाम मिलेगा।"

"अच्छा, महाराज !"

चोट्टि सब सुनकर बोला, "बुरा समय कैसे काटा, वह तुम लोग

सोच लो।"

"सोचें क्यो, आँखों से देख रहे है।"

छगन कुछ देर तक चुप रहा। उसके बाद बोला, "और काम क्या है? अब सब लोग चड्ढा के ईंटों के भट्टे में काम करेंगे।"

"यही ठीक है।"

"जगल का काम कर नही सकेंगे। अब काग्रेसी लड़के उस ठेकेदारी को धर रहे हैं।"

किन्तु अचल मे लेबर का खिचाव हुआ। सदस्य बेकार के लिए सदस्य नहीं बने थे। उसका भाई इस समय धनबाद में बड़ा नामी ठेकेदार था। और बड़े भाई का लड़का ही उसका सबसे बड़ा रक्षा-कवच था। वह ट्रेड-यूनियन चलाता था। धनबाद की खानो के कुली उसके साम्राज्य मे थे। भाई मजदूर भरती करने वाले को और कुछ आदिवासियो और परिगणित जाति वालो को भेजता, विशेषत आदिवासी धनबाद जाते रहे थे। चोट्टि मुंडा हँसी-हँस कर बोला, "कोयला कुली इस खान में काम करेंगे, पुराण मुंडा बनकर निकलेंगे।"

अचानक तीरथनाथ ने भी समझा कि केवल अत्याचार से लेबर नही मिलेगी। पहले तो इस अचल को छितरी हुई बस्ती है। फिर खुद सदस्य की परोक्ष सहायता से अगर लेबर चली गयी तो सेन कौन जोतेगा? लाचार होकर उसे ही कहना पड़ा, "मजूरी दूँगा, काम करो।"

"दिन के दिन, हाथो-हाथ।"

"हफ्ता दूँगा।"

"हाँ, हफ्ता दोगे गुंडे बुलाकर!"

"वह सब हो चुका।"

छगन अपनी आदत के खिलाफ गुस्से में भरकर बोला, "हो गया? जो हो गया! युगल और दुखा—मेरी लड़कों की जान लौटेगी? मेरी पीठ सीधी होगी? क्या हो गया?"

तीरथ बोला, "दस दिन डाकू के मगर एक दिन साधू वाला हाल है। जो करना हो कर। किन्तु मेरे भी दिन आयेंगे।"

यह बात सुनकर उषा के घर मे रहने वाला स्वरूप के दल का मुंडा बोला, "न, न, और नहीं सह सकते।"

चोट्टि बोला, "तू फिर कुरमी के जगल में चला जा। तुम्हारे ऊपर इनाम है। लाला के उस लड़के के पास जाने पर मौत, गाँव में पुलिस आने पर मौत।"

उसकी बात ही सच हुई। तीरथनाथ टोहरी चला गया। सारी बात

सुनकर रोमियो ने कहा, "इस वक्त हमें लेवर की जरूरत है। इस वक्त तुम्हारी बात कौन सोचे?" रोमियो ने 'आप' नहीं कहा। "तुमको मदद देने में मेरा यह हाल हुआ। तो तुमको क्यों मुश्किल हो रही हो?" उसने ज़ोरों से कहा, "और तुम भी मान लो न!"

तीरथ खिन्न होकर बोला, "आप लोगों को तो हरजाना भी मिल गया, कुछ फ़ायदा ही रहा।"

"बापू 'इयाड' ने जो हमारी धुलाई की, उसकी आधी भी धुलाई होने पर तुमको पता चलता। रुपयों से उस धुलाई का हरजाना वसूल नहीं होता।"

लाचार तीरथ गाँव लौट आया। अब उसे लगा कि उसके बेटे जो कहते थे, वही ठीक है। क्या होगा ज़मीन-जायदाद का बेकार झमेला लेकर पड़े रहने से? बहुत उमर हो गयी। सब बेच-बाच कर पटना चले आओ। शायद उनकी बात ही ठीक है। उसे लगा, जैसे ज़मीन-जायदाद के मज़े में किसी ने कड़वाहट पैदा कर दी हो। अपने ही दुख से तीरथनाथ को रोना आ गया। सब-कुछ कैसा था! चोट्टि, छगन सब जिस तरह मामूली मजूरी लेते थे, बेगार देते थे, कभी व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं बिगड़ता था। गाँव के लोग कैसे बदल गये हैं! तीरथनाथ तो वैसा ही है। बेगार तो रिवाज है, या ज़ुलुम है? वे लोग बदल क्यों गये? कब से तीरथ उनके परबों पर नहीं गया? पहले देखने जाता था। जिनके साथ यह किचकिच हो, तीरथ आज भी उनके साथ खुलापन समझता था। उसे किताब पढ़ने या सिनेमा देखने या रेडियो सुनने का शौक नहीं था। दिल बहलाने के लिए वह मोतिया धोबिन से क़िस्से सुना करता था। धोबिन के नाम से प्रेमिका की बात याद आयी और तीरथ ने मन-ही-मन कहा, 'मेरे कलेजे में चोट पहुँचायी है, उसमे तुझे ही महापाप होगा।' और साथ-ही-साथ उसे खुशी हुई। उसके बाद लगा, इस बार रबी में अरहर बोना है। चोट्टि के पिता बिसरा के साथ उसके पिता तो कब कौन फ़सल बोनी होगी, इस पर सलाह लेते थे। उसने गहरी साँस ली, रोमियो ने मदद नहीं दी!

रोमियो और पहलवान हरबंस चड्ढा की ब्रिकफ़ील्ड में चोट्टि आये। उनके साथ जनता के युवक पक्ष के चार लोग थे। चोट्टि और छगन के पहचाने चेहरे थे। तब भी हाथ में बन्दूक रहती थी, अब भी थी। रहती ही थी।

रोमियो ने हरबंस से कहा, "यह हमारे लेबर हैं।"

"किस तरह?"

"घर बेचकर आपने उनके घुसने का दरवाज़ा भी तो बेच दिया।"

"इस बात के क्या मतलब हैं ?"

रोमियो महज भाव से झूठ बोलने में अभ्यस्त था, "भाई ने तो अच्छा कहा था कि जंगल की ठेकेदारी बड़े मुनाफ़े का रोजगार है। वह बरका था। कारबार नुकसान का है। सो जो भी हो, सारी जायदाद के साथ ही कारबार लिया है।"

"उससे क्या ?"

"तो जायदाद माने क्या लेबर नहीं होना ?"

"लेबर की बात लेबर के साथ है।"

"उनको कल भेज देंगे।"

"कभी नहीं। मेरे साथ बात कर वे काम कर रहे हैं।"

"अरे पंजाबी कारबारी ! तुम समझते नहीं !"

"खूब समझता हूँ, बिहारी ठेकेदार मुंडे।"

युवा जनता में से एक बोला, "नहीं बड्डा, तुम समझते नहीं। बाद में समझोगे।"

वे चले गये, हरबन्स एम० डी० ओ० के पास गया। वे बोले, "वे लेबर खचड़े हैं। मुझे पता है कि वे रोमियो और पहलवान से पेशगी रुपये लेकर भी आपके यहाँ काम से लग गये हैं। आप उनको छोड़कर दूसरा लेबर लें।"

"यह कह क्या रहे हैं ? वे एक दिन के लिए भी नहीं गये।"

"आपको बताकर जायेंगे ? आदिवासी और तफ्सीली लोगों की बदमाशी आप नहीं समझते। आप उनकी तरफ़दारी लेकर बात न करें। स्वरूपप्रसाद का नाम कभी सुना है ?"

"सुना है।"

"उसके दल के साथ आपके लेबर की साँठ-गाँठ है। उस दल को पकड़ने में ही तो भकर मारा गया।"

"इन्होंने ही तो मारा।"

"ओ हो, उन लोगों ने तो उसकी क़ीमत भी चुकायी, चड्ढाजी ! वह बात मत भूलियेगा। देखिये, जो कुछ कह रहा हूँ।"

हरबंस ने बहुत देर में समझा कि रोमियो के गड़बड़ करने पर एस० डी० ओ० इस शासन में उसे मदद न देंगे। ठंडी साँस लेकर उसने कहा, "क्या करूँ ? चुटकी बजाते लेबर कैसे मिलेगा ?"

"टाइम ले लीजिये, टाइम। म्यूचुअल किये दे रहा हूँ। आपस में।"

"म्यूचुअल—आपस में ?"

"हाथ का काम पूरा कर लें। वे भी तो ठेकेदारी लेने के बाद जंगल

में नहीं घुसे हैं। देख-दाख लें।"

उन्होंने ही रोमियो को सब बताया। रोमियो बोला, "ठीक है। मैं उन्हें बस एक बार हाथ में पाना चाहता हूँ। चड्ढा नहीं, लाला नहीं, मैं अकेला हूँ, ऐसी हालत करना चाहता हूँ। उसके बाद मैं देख लूँगा कि उन्हें किस तरह क़ाबू में किया जाता है। उनकी चमड़ी उधेड़कर जूते बनवाऊँगा।"

रोमियो उस मौक़े का इन्तज़ार कर रहा था। बरसात आयी। बरसात में पेड़ों की कटाई नहीं होती। ब्रिकफ़ील्ड का काम भी नहीं होता। रोमियो मौक़ा देखने गया कि कोई हमला या कारंवाई करने पर किस तरह मदद मिलेगी, और सरकार की तरफ़ से लकड़ी जमा करने का ठेका ढँग से मिले। वे लोग बहुत दिनों के लिए ग़ायब हो गये और हर तरफ़ से झगड़ा ख़त्म हो गया, यह सोचकर सबको चैन आया। लेकिन वे अक्टूबर के शुरू में लौटे। पवित्र देवी-पक्ष चल रहा था। चोट्टि स्टेशन के कर्मचारी दुर्गापूजा करेंगे, इसलिए मूर्ति का ऑर्डर कलकत्ते गया। इस उपलक्ष में 'संकट-तारिणी दुर्गा' और 'छिपा रुस्तम' तसवीर लाने की बात हुई। और पहले की बातों को भूलकर रोमियो ने बताया कि पूजा के बाद ही उसे जंगल में लेबर की जरूरत है। चड्ढा के खाते में जितने लोगों के नाम हैं, सबकी ज़रूरत है। एस० डी० ओ० ने कहा, "बात थी कि चड्ढा और लाला के काम हो गये हैं...।"

"न, न, मेरा सरकारी कंट्रैक्ट है।"

बात चोट्टि ग्राम में फैली। कई दिन सब चुप रहे। उसके बाद दिशा ने कहा, "मैं, उपा और सोमचर चले जायें। इस जुलुम में पुलुस आयेगी। हमें स्वरूप बना देंगे। सारे जवान लड़कों का जाना ही अच्छा है।"

चोट्टि बोला, "जाओगे कहाँ ?"

"देखें।"

वे लोग कब गये, कितनी रात को, किसी को पता न चला। चोट्टि ने समझ लिया कि अब सोमचर से उसकी भेंट न होगी, भेंट नहीं होगी हरमू के बेटे लाल के साथ। अब वे लौट न सकेंगे। रोमियो, पहलवान और चार आदमी जंगल देखने गये। चड्ढा के आदमी ही उन्हें ले गये। रोमियो बोला, "तुम चले जाओ। इस तरह के जंगल में हम खो नहीं जायेंगे।'

हँसते-हँसते वे जंगल में घुसे, घुसते ही गये। चारों युवक लौट आये। वे जीप लेकर तोहरी के बँगले से शराब लेने गये।

उन्होंने ही रोमियो और पहलवान को अन्तिम बार जीवित देखा था। उसके बाद बाज़ार से और भी शराब लेकर वे गये थे। 'गुरु' की आवाज़

लगाकर सब अपने-अपने ढंग में हरी घास पर लुढ़क गये थे। तब उन्होंने एक गुर्राहट सुनी और चूंकि वे कायर थे, इसलिए 'भालू है' कह कर जीप पर बैठकर लौट आये। उसके बाद बाकी शराब समाप्त की। नशे की हालत में उन्हें लगा कि जंगल में अगर रोमियो और पहलवान भालू के हाथों पड़ जायें तो मर सकते हैं, नहीं भी मर सकते हैं। जिन्दा लौटने पर दोनों गुरु उनसे बुरा बदला लेंगे। इसी बार कंट्रैक्ट लेने में पहलवान ने एक पिछली मुस्लीम वाले के पेड़ू में ऐसा डंडा मारा था कि वह खून का पेशाब करते हुए अस्पताल में मर गया। उस पर भी पहलवान का कुछ नहीं हुआ। इन चारों को मारने पर भी उन लोगों का कुछ न होगा। इसलिए जान बचाने के लिए धनबाद चलो। तोहरी में धनबाद जाने के वक़्त नशे में चूर वे एक आदमी की खान में धँस गये। दूसरे दिन निकलने में दोपहर हो गयी। ड्राइवर मारा गया, एक आदमी दिमाग में चोट लगने से बेहोश होकर अस्पताल में पड़ा रहा। बाकी दो आदमियों ने तरह-तरह की चोटों के साथ अस्पताल में बिस्तर पकड़ा।

इसका परिणाम हुआ कि रोमियो और पहलवान की कोई खबर ही नहीं मिली। दुर्घटना की रात को ही चोट्टि गाँव के लड़के घर लौटे। सोमचर और लाल बोले, "हम गये थे, इस बात को कोई न जाने। दिशा चला गया।"

"कहाँ गया ?"

"कुरमी।"

"क्यों ?"

"वह फिर अड्डे को भागेगा।"

दुर्घटना के दूसरे दिन तलाश करने पर रोमियो और पहलवान नहीं मिले। उनका क्या हुआ, यह कोई न बता सका। अंत में जंगल में गायें चराते एक उरांव लड़के ने लकड़बग्घे और सियार की खींचतान सुनी। कुतूहलवश आगे बढ़ने पर उसने रोमियो और पहलवान की लाशें देखीं। दोनों के शरीरों में तीर लगे थे।

इसके परिणामस्वरूप जैसा शोरगुल हुआ, वह अप्रत्याशित था। उनके शरीरों का दाह-संस्कार प्रधानमंत्री के हाथों किया गया। कांग्रेस और जनता—दोनों ही कार्यालयों से शव पर मालाएँ चढ़ायी गयीं। और सदर के पुलिस-शिकारी कुत्ते लेकर जंगल में घूमे। सबने इस घृणित हत्या को धिक्कारा। पुलिस ने कहा, "जब तीर है तो आदिवासियों ने मारा है।"

पुलिस गाँव-के-गाँव छानती रही। अन्त में पुलिस ने आशा छोड़ दी। जानवर की तरह हूटे मारने पर भी किसी ने कुछ क़बूल नहीं किया। एन०

डी० ओ० से हरबंस और तीरथ बोले, "किसने मारा है ? यह क्या आसान बात हुई ? इसके बाद हम तीर खायेंगे ?"

एस० डी० ओ० पवित्र संकल्प से वज्र के समान कठोर होकर बोले, "इतना बड़ा अन्याय सहन नहीं किया जायेगा।"

"क्या करेंगे ?"

"सारे तीरंदाज़ आदिवासियों को चोट्टि के मेले में लाऊँगा। पुलिस से घिरवाकर रखूँगा। उसके बाद देख लूँगा।"

"अरे, पहले हम लोगों की हिफ़ाज़त का इन्तज़ाम कर दीजिये। हम और लालाजी अब डर गये हैं।"

"कर रहा हूँ।"

"चलिये, लालाजी !"

दोनों एक साथ घर लौटे। इस तरह रोमियो और पहलवान की मृत्यु सार्थक हुई। लाला और हरबंस दोनों दो युगों के आदमी थे। उनकी महान मृत्यु से यह दोनों मिल गये। हरबंस बोला, "आपके घर में तो नौकर-चाकर ही हैं। अब आप मेरे घर में क्यों नहीं रहते ? आप अकेले पड़े हैं, यह जानकर मुझे तो चैन नहीं आयेगा।"

"जैसा कहो, भैया !"

एस० डी० ओ० ने तहसीलदार को बुलाकर गाँव में डुग्गी पिटवाने की बात कही। इस बार चोट्टि के मेले में आना ज़रूरी था। जो न आयेगा उसे दोनों महानायकों का हत्यारा समझकर पकड़ लिया जायेगा।

चोट्टि गाँव में भी डुग्गी पिटी। स्टेशन पर पूजा का ढोल बजा। वहाँ भीड़ नहीं थी। मुंडा और परिगणित लोगों की उपस्थिति वहाँ अवांछित थी। यह समझा गया कि सबको ही आघात लगा है। रोमियो और पहलवान के अंचल के सारे आदिवासियों को मार डालने पर किसी को 'अप्रत्याशित' न लगता। आदिवासी हों, तफ़सीलो-परिगणित जाति वाले हों, रोमियो उन्हें मारे, यह तो होता ही है। लेकिन किसी एक या कई आदिवासियों का रोमियो आदि को मारना अप्रत्याशित घटना थी। रोमियो आदि मारते थे, मरते नहीं थे। सारे शासनों में यही नियम है।

ढोल की आवाज़ चोट्टि के घर में आयी। दूर से आदिवासी और तफ़सीलो औरतें और बच्चे ललचायी नजरों से स्टेशन की ओर देख रहे थे। चोट्टि ने कुछ सोचा, सोचा और सोचता ही रहा। उसके बाद बोला, "सोमचर, चल, श्मशान के पत्थर पर फूल चढ़ायें।"

चोट्टि ने कोयेल, मुंगरी, बाबा, माँ की समाधियों के पत्थरों पर फूल चढ़ाये। उसके बाद हवा की ओट होकर झुककर बीड़ी सुलगायी। बोला,

"सोमचर !" बहुत धीमे स्वर में, "तुम लोगों ने उन्हें मारा ?"

"हाँ, आबा !"

"कौन-कौन था ?"

"मैं, दिशा, उषा और लाल।"

"और कोई न था ?"

"नरसिंगगढ़ के मुंडा रास्ते पर नज़र रखे हुए थे।"

"कैसे मारा ?"

सोमचर ने सब साफ़-साफ़ बताया। "इस हत्या की योजना दिशा की थी। उसने पहले ही कहा था, कि ये जिन्दा रहे तो फिर जुलुम होगा। जुलुम करने के लिए स्वरूप के मारे दल को पकड़ना था। इनके मरने पर भी जुलुम होगा। जब जुलुम से बचा नहीं जा सकता तो इनकी हत्या ही ठीक है।"

"सारी बातें दिशा ने अकेले कही थी ?"

"पहले अकेले। उसके बाद सब ने ही राय दी। पहले वे चले गये और नरसिंगगढ़ के मुंडा लोगों से बातें की। तीर-धनुष एक बरगद की डाल पर छिपाकर रख दिये गये। उसी गाछ पर वे छिपे रहे। राजबस चढ्ढा के पुराने आदमी जंगल दिखायेंगे, यह अन्दाज़ उन्होंने लगा लिया था। रोमियों और पहलवान ने जंगल में बहुत घने घुसकर उनके लिए सुविधा कर दी। सोमचर के चारों आदमी चारों ओर से घिर आये। पहलवान ने जान की भीख माँगी थी। रोमियों ने उन लोगों को गालियाँ दीं।"

"मारा किसने ?"

"जिनका हक था। स्वरूप के कारण दिशा ने एक को, दुखा के कारण उषा ने दूसरे को।"

चोट्टि चुप रहा। उसके बाद बोला, "चलो, घर चलें। और किसी को मत बताना।"

"ना।"

"दिशा नहीं, तू, उषा और लाल मेरा पैर छूकर किरिया खा कि किसी से नहीं कहूँगा।"

उन्होंने क़सम खायी। चोट्टि ठिठककर गुमसुम रहा। वह बहुत ही भिन्न प्रकार का हो गया। खेत पर बैठे आवाज़ ने सहसा बहुत ही गंभीर लाकर हरमू से बोला, "एतोया तुम्हारा एक भाई है। यह बात किसी दिन भूलना मत, हरमू !"

"नहीं, आबा !"

अचानक वह हरमू की माँ ने रात में बोला, "तुझे पता नहीं, लेकिन

मचान के सिरहाने दीवार में एक डिब्बा गड़ा है। उसमें रुपये हैं। बहुत दिनों के जमा किये हुए हैं। तीन बीसी ऊपर एक रुपया है।"

हरमू की माँ से फिर दिन में कहा, "अब काम मत कर। थोड़ा पास बैठ।"

हरमू चिन्ता में पड़ गया। बोला, "आबा, तबियत कैसी है? कैसा लग रहा है, क्यों आबा?"

"वयस तो हो रही है, बाप! बाप गया, माँ गयी, कोयेल, मुँगरी—तमाम लोगों को मरते देखा, सबकी याद आ रही है।"

"नहीं, आबा! सहा नहीं जाता। तुम नहीं तो चाँद-सूरज नहीं। उस दिन की बात सोच नहीं सकता।"

"हरमू! बीरसा भगवान मर गये, धानी मर गया, स्वरूप मरा, चाँद-सूरज निकलते हैं बाप, मेरे मरने पर भी निकलेंगे। एक बात है।"

"क्या?"

"छगन भी बूढ़ा हो रहा है। उससे कहना कि मेले के दिन वह ढोल लेकर जाये। उसका बहुत दिनों का शौक है।"

"कह दूंगा।"

"और लाल सबसे कह आये, जो बूढ़े हैं, वे भी मेले में आयें।"

"सब डरे हुए है, आबा!"

चोट्टि हरमदेउ बन गया और अलौकिक मुसकराहट से चेहरा दीप्त कर बोला, "डर क्या है, बाप? मैं हूँ न?"

"डर गया।"

ढोलक सुनते-सुनते चोट्टि बोला, "डरना मत। पूजा नहीं देखने दी, ढोलक से डर रहे है। इस बार मेले में क्यों बुला रहे हैं? ना, कोई तीर छोड़ रहा है, उन्हे मार रहा है, पकड़ लेंगे।"

"हाँ, आबा!"

"इस तरह डरने से तो काम नहीं चलता।"

चोट्टि की खबर पर सब लोग उसके घर आये। चोट्टि बोला, "इस बार मेले में क्यों बुला रहे हैं, यह सब लोगों को मालूम है?"

"मालूम है।"

"किन्तु सब जाओगे।"

"सब?"

"हाँ, कुत्ते-कौए के सिवा गाँव में कोई न रहेगा। लड़के-लड़कियाँ भी जायेंगे। मुझे तुम लोगों ने बहुत काल तक बहुत मान दिया। सो यह मेरा हुकुम है। सब मेले में जायेंगे।"

"जायेंगे, जायेंगे।"

"एक हुकुम और है।"

"कहो, हे चोट्टि !"

"तीर-खेला के पहले नाच-गान है। तब तुम सबको बता देना, खुद भी जाने रखो, खेला के समय कोई तीर से निशाना नहीं लगायेगा।"

"तो यही होगा।"

"सब जाना, कोई डर नहीं है।"

सब आये थे। युवक लोग बहुत बुड्ढों को पीठ पर लादकर लाये थे। 1978 के विजयादशमी के दिन मेले में बहुतेरे आदिवासी आये थे। उतने आदिवासी किसी दिन किसी मेले में नहीं आये थे। सभी धनुक और तीर लाये थे। और हजार आदिवासियों पर नजर रखने के लिए आये थे—ढाई सौ हथियारबन्द पुलिस। एस० डी० ओ०, दारोगा, तीरथनाथ, हरबंस—सभी आये थे। हवा में बहुत तनाव था।

नाच और गान बहुत थोड़े समय चला। उसके बाद शुरू हुई तीर चलाने की प्रतियोगिता। भिन्न-भिन्न गाँव के और कुलों के मुडा और उरांव नगाड़े पर चोट मार रहे थे, डिम-डिम-डिम। लेकिन कोई आदिवासी आगे नहीं बढ़ा। एस० डी० ओ० तीखी निगाहों से देखते रहे, और मन-ही-मन उनका गुस्सा उमड़ता रहा।

मुँह के आगे भोंपू लगाकर वे चिल्ला उठे, "कोई क्यों नहीं आ रहा है? समझा है कि नहीं आओगे तो पार पा जाओगे? हर बुड्ढे को पिटवाऊँगा, जवान को पिटवाऊँगा, गोद के बच्चे को छीनकर थाने में जमा रखूँगा। बच्चों को वापस चाहोगे तो खूनियों को पकड़वाना होगा।"

सब चुप! बहत्तर नगाड़े बजने लगे, डिम-डिम-डिम। बहत्तर गाँव के आदमी आये थे।

"मत सोचो कि कोई मेले से घर लौटेगा। तीर खेलने क्यों नहीं आ रहे हो? क्यों नहीं आ रहे हो?"

चोट्टि अपनी पत्नी की ओर देख रहा था। हरमू की माँ की आँखें फैल गयीं। वह छगन की ओर देख रही थी। उसके बाद सबके ऊपर आँखें फिर गयीं। सब उसकी ओर देख रहे थे।

"क्यों नहीं आ रहे हो?"

चोट्टि निर्णायक लोगों की जगह से उठ खड़ा हुआ। हवा में ठंडक थी। ठंडक से भरी हवा में चोट्टि अठत्तर बरस का बुड्ढा मुड़ा दिखायी दे रहा था। उसके सारे चेहरे पर और बदन पर अनगिनत रेखाएँ थीं। उसके

सफेद वाल पीछे की ओर गरदन के पास पीतल के छल्ले में लगे थे। कानों में सोला खोंसा हुआ था, उजली छोटी-सी धोती पहने था। धनुक और एक तीर। अपना तीर, वह हर वार व्रत पूजा के आचार के नियम से निर्णायक वनने के समय साथ लाता और ले जाता। मंत्रपूत तीर था। उसका उठ खड़ा होना ऐसा हुआ कि पल-भर में सारे नगाड़े रुक गये। अकेले छगन का चेहरा चमक उठा। उसका सिर नीचा हुआ और बड़ी गहरी ममता से वह हलके-हलके नगाड़ा वजाने लगा, अविच्छेद्य गम्भीर वेदना के साथ। चोट्टि ने उसकी ओर देखा और मुँह फेर लिया।

वह वोला, "कोई नहीं आयेगा महाराज, उन्हें मार दो।" एस० डी० ओ० अचानक चौंक पड़े और भोंपू उसके हाथों में देकर वोले, "तुम, तुम उनसे कहो।"

"वात तो उनसे कहने की नहीं है महाराज, तुमसे कहने की है। कौन मर रहा है, महाराज? खूनी को पकड़ने के लिए सव मर्दों को मारेंगे, सारे वच्चों को माँओं के कलेजे से खींचकर थाने में रखेंगे?"

"चोट्टि!"

"ठहरो महाराज! आज यहाँ खड़े-खड़े सारी वातें याद आ रही हैं। उस लाला के वाप के कारण मेरा वाप मरा। किसी दिन धोखे-अविश्वास की कोई वात नहीं हुई, फिर भी मेरे लड़के को जेहल भेजा, और उसे मैंने रेल के पहियों से वचाया। किसी दिन मुंडा, उराँव, दुसाध, धोवी अविश्वासी नहीं हुए। उससे क्या मिला, महाराज? हमें क्या दिया? हमें क्या दिया? जिनके खून के लिए हमारे ऊपर जुलुम होगा, उन्होंने जुलुम नहीं किये? लड़के-लड़कियों की इज्जत लेने गये थे, पहान-पहानी-मोतिया-रेल कुली-दुखा-युगल—छगन के घर के लड़के-लड़की सव मर गये, तव तो पुलुस आयी नहीं, महाराज? इस तरह का काम नहीं—इस तरह काम नहीं दिखाया।"

चोट्टि थोड़ा रुका। गला साफ़ किया। काले-काले चेहरों में जान आ गयी थी।

चोट्टि वोला, "तुम किसी को कैसे पकड़ोगे? इन्हें क्या मालूम है? अव सुनो, उनको मैंने मारा है।"

"ना—!" हज़ार गले वोल उठे।

"तुमने!"

"हाँ महाराज! अव मेले के जितने दुकानदार हैं, तुम सव मुंडा—उराँव—दुसाध—धोवी—सव-के-सव साक्षी हो। मैं वह काम कर रहा हूँ। जंगल में छिप आया और मन-ही-मन कहा, अव उनके हाथों किसी दिन

मुंडा-तपसीली लोगों की सफाई नहीं होगी, तब उनकी जान नहीं छोड़ूंगा। उन्होंने बहुत जुलुम उठाये हैं, बहुत लहासें गिरायी हैं, गोरमेन ने उन्हें बहुत मदद दी।" कहते-कहते चोट्टि की आवाज ऊँची होती गयी और फटने लगी, "किस तरह मारा, जानते हो? पिछली रात को जब सब सो रहे थे, तब जाकर गाछ में धनुक छिपा दिया। दूसरे दिन 'कुरमी जा रहा हूँ' बता कर वहाँ चला गया। जब लड़के चले गये तो बहुत सुविधा हुई। तभी दोनों को 'माँ' नहीं कहने दिया महाराज!" चोट्टि ने चोगा छोड़ दिया। छाती पर हाथ ठोककर कहा, "मैंने मारा, हाँ, मैं चोट्टि मुंडा हूँ। फिर इनके लिए एक बार जुलुम करो तो चोट्टि ग्राम से लाला और चड्ढा, तुम लोगों में कोई भी अपनी कचहरी में जिन्दा नहीं बचेगा। पुलुन? अँधेरे में जब स्वरूप के दल के लोग तीर मार कर कुत्तले विष को लहू से बुलायेंगे तो कौन पुलुन किसे बचायेगी? कोई जुलुम नहीं।"

चोट्टि की पत्नी किनारे हो गयी। छगन नगाड़ा बजाता रहा। उनकी मुसकराहट दुर्बोध थी।

एम० डी० ओ० उतरे चेहरे से बोले, "तुम! तुमने तीर मारे? तुम क्या निशाना देख सकते हो?"

चोट्टि निर्मल मुसकराहट में मुसकराया और बोला, "दिखाता हूँ।" उसके बाद मुंडारी भाषा में जल्दी से बोला, "धानी मुंडा! अपने निकट अपनी सच्चाई के लिए तुम्हारा नाम लेकर आज तुम्हारा तीर चला रहा हूँ।"

चोट्टि छोटे और तेज कदमों से निशाने के विपरीत चला गया। सबसे कहा, "तुम लोगों को कोई डर नहीं है।" उसके बाद तीर छोड़ा। लक्ष्य-वेध किया।

उसके बाद वह निरस्त्र खड़ा रहा। खड़े-खड़े ही वह चिरकाल के लिए नदी, किंवदन्ती, अविनश्वर में घुल-मिल गया। जो एकमात्र मनुष्य ही हो सकता है। सारे आदिवासी आन्दोलनों को वर्तमान में ले आया, इस वर्तमान में जहाँ आदिवासी और परिगणित लोगों का संयुक्त आन्दोलन है।

कुछ पल और बीते। चोट्टि ने धनुक हरमू को दे दिया। हरमू ने उसे उठा लिया। बोला, "अ—ब मुझे पकड़ लो। मेरा एक ही तीर था।"

एम० डी० ओ० जादू-मंतर के प्रभाव को काट कर उठ खड़े हुए, आगे बढ़े।

किन्तु तभी आकाश में धनुक के साथ हाथ उठाकर हजारों आदिवासी

चिल्ला उठे, "नहीं !" जो आदिवासी नहीं थे, उन्होंने भी निषेध में हाथ उठाये।

एक ओर चोट्टि, दूसरी ओर एस० डी० ओ०, बीच में शून्य में उठे हज़ारों धनुक थे। और भी हज़ारों उठे हाथों में सावधान रहने की घोषणा !

• •